आचार्य श्रीमन्महेश्वरानन्दपरमहंसविरचितम्

श्रीदुर्गामन्त्रराजकल्पतन्त्रम्

आचार्य अजयकुमार उत्तम



भारतीय विद्या संस्थान

प्रस्तुत ग्रन्थ में भगवती दुर्गा से सम्बन्धित अत्यन्त ही गोपनीय एवं उपयोगी सामग्री तान्त्रिक ग्रन्थों से संग्रहीत है ।

इस ग्रन्थ में कुल मिलाकर ६ अध्याय है, जिनमें नवरात्र-विधि, पञ्चतत्त्व, सप्तशती मन्त्र प्रयोग, चण्डी-विधान, महाकाल-संहिता में वर्णित पाठविधि, वाराही मन्त्र की पाठविधि, कात्यायनी तन्त्र-प्रयोग, प्रपञ्चसार तन्त्र का मन्त्र विधान, दुर्गा के मन्त्र विधान, वनदुर्गा मन्त्र-विधि, शारदा तिलक के मन्त्र विधान, दुर्गा पञ्चाङ्ग, श्रीदुर्गा के १०८ नाम, श्री दुर्गोत्सव विधि, श्रीरुद्र-चण्डीपाठ एवं काम्य प्रयोगों का वर्णन किया गया है।

इस ग्रन्थ की मुख्य विशेषता श्रीरुद्रचण्डी का पाठ है। यह पाठ तन्त्रशास्त्र के महान् ग्रन्थ श्रीरुद्रयामल तन्त्र से यहाँ उद्धृत किया गया है ।

यह ग्रन्थ श्री महेश्वरानन्द की रचना है । श्री महेश्वरानन्द हिमालय के उच्चकोटि के योगी श्री निखलेश्वरानन्द जी महाराज के शिष्य है । वे वर्तमान समय में उच्च हिमालय की कन्दराओं में साधनारत हैं।

ISBN : 81-87415-89-4



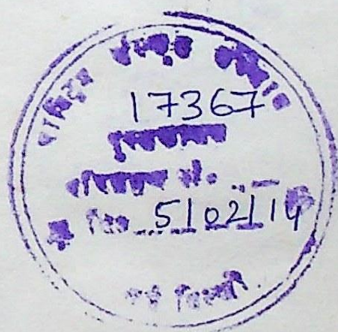
Rs. 350.00

आचार्य श्रीमन्महेश्वरानन्दपरमहंसविरचितम्

श्रीदुर्गामन्त्रराजकल्पतन्त्रम्

सम्पादक :

आचार्य अजयकुमार उत्तम





प्रकाशक :

भारतीय विद्या संस्थान

वाराणसी - 221002

प्रकाशक

भारतीय विद्या संस्थान

प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

सी. २७/५९, जगतगंज, वाराणसी-२२१००२

फोन : (०५४२) २२०१६५५

ISBN - 81-87415-89-4

संस्करण : प्रथम, २०१०

मूल्य : ३५०/-

अक्षर संयोजक :

ज्योति कम्प्यूटर्स

जैतपुरा, वाराणसी-२२१००१

SHRI D̄URGĀMANTRARĀJKALPATANTRAM

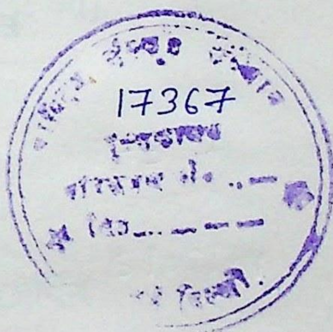
of

Achārya Shriman-Maheshwarānand Paramhansa

Disciple of Paramhansa Shri Nikhileshwarānand
of
Siddhāshram

Edited by

Āchārya Ajay Kumar Uttam





Publisher

BHĀRATIYA VIDYĀ SANSTHĀN

VĀRANĀSI-221002

Publisher :
BHARATIYA VIDYA SANSTHAN
(Publisher & Booksellers)
C. 27/59 Jagatganj, Varanasi-221002
(INDIA)
☎ 0542 - 2201655

ISBN - 81-87415-89-4

Edition : 1st 2010

Price : Rs. 350/-

Computer Composing :
JYOTI COMPUTERS
Jaitpura, Varanasi-221002

समर्पणम्

परम पूज्य गुरुदेव

परमहंसस्वामीश्रीनिखिलेश्वरानन्दजी

(डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी)

के

दिव्य चरण कमलों में समर्पित

सम्पादकीय

श्रीदुर्गामन्त्रराजकल्पतन्त्रम् श्री महेश्वरानन्द द्वारा संग्रहीत एक अत्यन्त ही उपादेय एवं श्रेष्ठ ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में भगवती दुर्गा से सम्बन्धित अत्यन्त ही गोपनीय एवं उपयोगी सामग्री तान्त्रिक ग्रन्थों से संग्रहीत है।

इस ग्रन्थ में कुल मिलाकर ६ अध्याय है, जिनमें नवरात्र-विधि, पञ्चतत्त्व, सप्तशती मन्त्र प्रयोग, चण्डी-विधान, महाकाल-संहिता में वर्णित पाठविधि, वाराही मन्त्र की पाठविधि, कात्यायनीं तन्त्र-प्रयोग, प्रपञ्चसार तन्त्र का मन्त्र विधान, दुर्गा के मन्त्र विधान, वनदुर्गा मन्त्र-विधि, शारदा तिलक के मन्त्र विधान, दुर्गा पञ्चाङ्ग, श्रीदुर्गा के १०८ नाम, श्री दुर्गोत्सव विधि, श्रीरुद्रचण्डीपाठ एवं काम्य प्रयोगों का वर्णन किया गया है।

इस ग्रन्थ की मुख्य विशेषता श्रीरुद्रचण्डी का पाठ है। यह पाठ तन्त्रशास्त्र के महान् ग्रन्थ श्रीरुद्रयामल तन्त्र से यहाँ उद्धृत किया गया है। श्रीरुद्रचण्डी का विस्तृत पाठ श्रीरुद्रयामल तन्त्र में ही प्राप्त होता है। परवर्ती ग्रन्थों मन्त्रमहार्णव आदि में इसका एक छोटा सा ही अंश प्राप्त होता है, सम्पूर्ण अंश यहीं पर ही प्राप्त होता है, इसके साथ ही श्रीरुद्रचण्डी कवच, रुद्रचण्डी त्रैलोक्यमंगल कवच एवं श्रीलघुचण्डी भी यहीं पर उद्धृत है।

यह ग्रन्थ श्री महेश्वरानन्द की रचना है। श्री महेश्वरानन्द हिमालय के उच्चकोटि के योगी श्री निखलेश्वरानन्द जी महाराज के शिष्य है। वे वर्तमान समय में उच्च हिमालय की कन्दराओं में साधनारत हैं। आठ वर्ष पूर्व उनसे पाण्डुलिपि मूल रूप में प्राप्त हुई थी, इसके अतिरिक्त स्तोत्र-महार्णव नामक एक विशाल स्तोत्र ग्रन्थ भी प्राप्त हुआ था। इन दोनों ग्रंथों की मूल पाण्डुलिपियाँ उन्हीं के पास सुरक्षित हैं। समय मिलने पर उनकी आज्ञा प्राप्त कर मैंने इनकी प्रतिलिपि कर ली थी।

कई वर्ष पहले इस ग्रन्थ को सम्पादित कर वाराणसी स्थित **भारतीय विद्या संस्थान** के संचालक **श्री कुलदीप चन्द जैन** को प्रकाशन के लिये दिया था। प्रकाशक महोदय की विवशताओं के कारण यह ग्रन्थ समय से प्रकाशित नहीं हो सका। अब यह ग्रन्थ प्रकाशित होकर तन्त्र साधकों एवं पाठकों के समक्ष आ रहा है। पाठक अपने विचारों से हमें अवश्य ही अवगत करायें।

विद्वगणशुभाकाङ्क्षी

२३ जुलाई २००८ **आचार्य अजयकुमार उत्तम**

विषयानुक्रमणिका

●

आचार्यश्रीमन्महेश्वरानन्दपरमहंसविरचित

श्रीदुर्गामन्त्रराजकल्पतन्त्रम्

प्रथमोऽध्यायः

मङ्गलाचरणम्

गणेशं भजेऽहं सदाभावगम्यं लक्ष्मीमुदारां सौभाग्यरूपं।
मानं यशस्तं परिचायमानः श्रीमद्गुरुं सन्ततमानतोऽस्मि ।।१।।
योगाभ्यासात् सततमखिलं साधयेत् दोषनाशम्
विक्षेपाणां त्वरितप्रशमनात् चित्तशुद्धिः समेषाम्।
चित्ते शुद्धौ ललितललिते जीवभावः शिवोऽहम्
सौन्दर्यश्रीधराख्यं वितरतु निखिलः देवदेवाभिगेयः ।।२।।
दौर्भाग्यं येन भित्वा प्रभवति सुभगं तच्च तंत्राख्यरूपम्
दत्त्वा ऐश्वर्यमय्यं नृपयति रंकं सर्वतंत्रार्थशक्यम्।
दानं मानं प्रमेयं विभूषति सत्यं तच्च तन्त्राभिधेयं
तन्त्रार्थं सः तनोति सततं तपसा नौमि तन्त्रावतारम् ।।३।।
अहोभावपूतं भावप्रसूतम् इद्धं परेव[illegible] ईड्यं तथैव।
आराध्यरूपम ईशान सिद्धं निखिलेश्वरत्वं प्रणम्यं गुरुत्वम् ।।४।।
ध्येयं ध्येयं पुनरपि पुनः भावगम्यं मनोज्ञम्
गेयं गेयं पुनरपि पुनः चित्तचैतन्य कान्तम्।
धन्यं धन्यं पुनरपि पुनः सर्वसर्वमांगल्य सम्पत्।
ध्येयं गेयं च धन्यं जनिभयहरं पाद्मं त्वदीयम् ।।५।।
हिमालयोऽपि नतमस्तकोऽस्ति
संदर्शनेन भवति हृदयं प्रसन्नम्।
गङ्गावगाहनं सुखं लभते च चित्तं
सौभाग्यदं सद्गुरुं प्रणतोऽस्मि नित्यम् ।।६।।
माया मानुषरूपिणं शशिधरं कैलासवासप्रियम्
संसारार्णवतारणं प्रियकरं ज्ञानैकबोधामृतम्।

अज्ञानान्धविनाशिकेन विधिना शिष्यान् सदाभाविन्द्रम्।
सोऽयं नो विदधातु तत्पदमिति निखिलेश्वरः मद्गुरुः।।७।।
ध्यायेत्सदा सद्गुरुं श्रुतिशास्त्र पारग।
वेदान्त वेद्यमनद्यं परमार्थरूपम्।
संसार सागर समुत्तरणाय पोतम्
चैतन्यमप्रतिरोधं निखिलं नमामि।।८।।
वन्दे नारायणं कृष्णं कृष्णं वन्दे परात्परम्।
कृष्णं निखिलेश्वरं वन्दे कृष्णं वन्दे जगद्गुरुं।।९।।
स्वात्मारामः कलितरमणः पुण्यभाजां मुनीनाम्
विभ्राजन्ते सवनकर्मणि दिव्यदेवाश्च यत्र।
चैतन्योऽयं परमगुरुणा तेजसा चायनीयः
वन्देऽहं सिद्धसंघं निखिल परिगतं भावगम्यम्।।१०।।

मेरुतन्त्रे-

वक्ष्येऽथ नवरात्रस्य विधिं सर्वेष्टदायकम्।
आश्विनस्य सिते पक्षे प्रतिपद्येकवार्षिकीम्।।१।।
द्विवर्षीणा द्वितीयायामेवमग्रे प्रवर्धयेत्।
नवम्यां नववर्षा च सुरूपा व्यङ्गवर्जिता।।२।।
शुद्धा बाला च ललिता मालिनी च वसुन्धरा ।
सरस्वती रमा गौरी दुर्गा च नवकीर्तिताः।।३।।
प्रातर्निमन्त्रितां भक्त्या देवतार्चां समाप्य च।
अभ्यङ्गस्नानशुद्धां तां पूजायतनमानयेत्।।४।।
देवतासन्निधौ बालामुपवेश्य समर्चयेत्।
गन्ध-पुष्पाऽक्षतैर्धूप-दीपैश्च कुलदीपकैः।।५।।
भक्ष्यभोज्यान्नपानाद्यैः क्षीराज्यमधुमांसकैः।
कदलीनारिकेरादिफलैस्तां परितोषयेत्।।६।।
सशक्तिः स्वयं देवि! यौवनोल्लाससंयुतः।
यथाशक्ति जपेदेकोत्तरवृद्धया स्वकं मनुम्।।७।।
बालामलंकृतां पश्चाच्चिन्तयेत् स्वेष्टदेवताम्।
ततस्ता देवताबुद्ध्या नमस्कृत्य विसर्जयेत्।।८।।
त्रितारा‌द्यैर्नमोऽन्तैश्च देवतापदपश्चिमैः।
नामभिः सचतुर्थ्यन्तैः पूजयेत्ताः पृथक्पृथक्।।९।।

बटुकं पञ्चवर्षं च नववर्षं गणेश्वरम्।
क्रमादन्ते तथादौ च गन्धाद्यै परिपूजयेत्।।१०।।
नवरात्रकृतां पूजां ततो देव्यै समर्पयेत्।
ताम्बूलं दक्षिणां दत्त्वा कुमारीं तां विसर्ज्जयेत्।।११।।
एवं नवकुमारीणां पूजनं प्रतिवत्सरम्।
यः करोति सुखी चात्र मृतो देवो भवेत्सु तु।।१२।।

मातृकभेदतन्त्रे-

श्रीचण्डिकोवाच

चामुण्डाया महामन्त्रं कीदृशं परमेश्वर!।
आराधनं कीदृशं वा तद्वदस्व दयानिधे!।।१३।।

श्रीशंकर उवाच

श्रृणु चार्वङ्गि! सुभगे! चामुण्डामन्त्रमुत्तमम्।
यस्य विज्ञानमात्रेण पुनर्जन्म न विद्यते।।१४।।
कालीबीजयुगं देवि! कूर्चबीजं ततः परम्।
त्र्यक्षरी परमा विद्या चामुण्डा कालिका स्वयम्।।१५।।
सप्ताहं पूजयेद् देवीमुपचारैश्च षोडशैः।
पूजान्ते प्रजपेन्मन्त्रं त्रिसहस्त्रं वरानने!।।१६।।
रात्रौ तु पञ्चतत्त्वेन पूजयेत्परमेश्वरीम्।
तथा रात्रौ जपेन्मन्त्रं कुलशक्तिसमन्वितम्।।१७।।

पञ्चतत्त्वमुक्तं गुप्तसाधनतन्त्रे सप्तम पटले-

श्री- शिव उवाच

श्रुणु देवि प्रवक्ष्यामि तत्त्वं परमदुर्लभम्।
मन्त्रोद्धारक्रमेणैव तत्सर्वं कथयामि ते।।१०।।
भान्तमकारसंयुक्तं थान्तं वायुयुतं कुरु।
विन्दुयुक्तं पुनर्भान्तमाकारं बिन्दुसंयुतम्।।११।।
चन्द्रबीजं समुच्चार्य अङ्कारं तदनन्तरम्।
पुनर्भान्तं तकारं च चन्द्रवायुयुतं कुरु।।१२।।
पुनार्भान्तं महेशानि! पञ्चमस्वरसंयुतम्।
थान्तं वह्निसमारूढमाकासंयुतं कुरु।।१३।।
पुनर्भान्तं महेशानि! सूर्यस्वरविभूषितम्।
तान्तुमकारसंयुक्तं धान्तमविन्दुसंयुतम्।।१४।।
पञ्चतत्वमिदं देवि! सर्वतन्त्रेषु गोपितम्। इति।

कालीकुलार्णवे च-

मद्यं मांसं तथा मत्स्यं मुद्रा मैथुनमेव च।
पञ्चमात्तु परं नास्ति शाक्तानां भोगमोक्षयोः।।१६।। इति।
यन्त्रनिर्माणयोग्यं हि पीठं दद्यात्सुविस्तरम्।
भोगयोग्यं प्रदातव्यं मधुपर्कं यथोचितम्।।१७।।
शक्तेर्यथा विधेयं स्याद् युवत्याः परमेश्वरि!।
तथा वस्त्रं प्रदातव्यं सर्वकल्याणहेतवे।।१८।।
अलङ्कारं यथायोग्यं तत्र तत्र नियोजयेत्।
नैवेद्यं विविधं रम्यं नानाद्रव्यसमन्वितम्।।१९।।
सामिषान्नं प्रदातव्यं परमान्नं सशर्करम्।
पूजयेत् परया भक्त्या बलिदानं ततः परम्।।२०।।
प्रत्यहं परमेशानि! चाद्यन्ते वा बलिं हरेत्।
साङ्गे जाते महेशानि! चाथवा बलिमाहरेत्।।२१।।
एवं कृते महासिद्धिं लभते नात्र संशयः।
धनार्थी धनमाप्नोति पुत्रार्थी पुत्रवान्भवेत्।।२२।।
विवादे जयमाप्नोति राजद्वारे जयी भवेत्।
सर्वत्र विजयी भूत्वा देवीपुत्र इव क्षितौ।।२३।।
रोगेभ्यो घोररूपेभ्यः पूजयित्वा प्रमुच्यते।
इच्छासिद्धिर्भवेत्तस्य सर्वसिद्धिर्न चान्यथा।।२४।।
कारागारगते देवि ! मुच्यते नात्र संशयः।
प्रयोगं परमेशानि ! सारं परमदुर्लभम्।।२५।।
अतिस्नेहेन देवेशि! तव स्थाने प्रकाशितम्।
अथवा परमेशानि! पठेच्चण्डीं सनातनीम्।।२६।।
पूजयेच्चण्डिकां देवी सुगन्धिपुष्पसंयुतैः।
धूपदीपेन गन्धेन नैवेद्येन सुरेश्वरि! ।।२७।।
अवश्यं पञ्चतत्वेन पूजयेच्चण्डिकां पराम्।
आदावृष्यादिसूक्तेन चार्घ्यान्ते परमेश्वरि।।२८।।
पञ्चतत्त्वं समानीय शोधयेच्छास्त्रवित्तमः।
तर्पणं च ततः कृत्वा चार्घ्यपात्रे विनिक्षिपेत्।।२९।।
अर्घ्योदकेन सम्प्रोक्ष्य पूजयेत्पीठदेवताम्।
प्रणवञ्च समुद्धृत्य मायाबीजं ततः परम्।।३०।।

प्रभां मायां जयां सूक्ष्मां विशुद्धां नन्दिनीं तथा।
सुप्रभां विजयां सर्वसिद्धिदां परिपूजयेत्।।३१।।
वज्रनखदंष्ट्रायुधाय हूं फडित्यन्ततस्ततः।
नमोऽन्तेन तु देवेशि! आसनञ्च समर्च्चयेत्।।३२।।
गुरुपङ्क्तिं पूजयित्वा पुनर्ध्यानं समाचरेत्।
आवाहनं ततोमुद्रां जीवन्यासं प्रपूजनम्।।३३।।
षडङ्गेन तु सम्पूज्य परिवारान् प्रपूजयेत्।
शङ्खनिधिं पद्मनिधिं तथा ब्राह्म्यादिकं यजेत्।।३४।।
इन्द्रादींश्चैव वज्रादीन् पूजयेत्साधकोत्तमः।
प्रणवादिनमोऽन्तेन पूजयेत्साधकोत्तमः।।३५।।
पुनर्देवीं महेशानि! पञ्चतत्वेन पूजयेत्।
प्राणायामं ततः कृत्वा गुरुमन्त्रैष्टदेवताम्।।३६।।
ऐक्यं विभाव्य देवेशि! मूलमन्त्रं जपेच्छतम्।
प्राणायामं ततः कृत्वा कारणादीन्समाहरेत्।।३७।।
तस्यै दत्त्वा स्वयं पीत्वा पठेच्चण्डीं सुरेश्वरि।
साङ्गे जाते तु माहात्म्ये पुनः पानं समाचरेत्।।३८।।
ततस्तु प्रपठेद्धीमान् क्रमेण पानमाचरेत्।
समाप्ते तु विलोमेन पुनर्मन्त्रं शतं जपेत्।।३९।।
यदि भाग्यवशाद्देवि! शक्तियोगं लभेन्नरः।
तत्क्षणे हि विजानीयात्सर्वसिद्धिः करे स्थिता।।४०।।
एवं कृत्वा महेशानि! यदि पाठं समाचरेत्।
माहात्म्यं तस्य पाठस्य किं वक्तुं न शक्यते यया।।४१।।
शतवक्त्रं यदि भवेत्तदा वक्तुं न शक्यते।
पञ्चवक्त्रेण देवेशि किं वक्तुं शक्यतेऽधुना।।४२।।
सकृत्पाठेन देवेशि किं पुनर्ब्रह्म केवलम्।
अवश्यं लभते शान्तिं सर्वत्र परमेश्वरि!।४३।।
यदि शान्तिं न लभते मम वाक्यं मृषा तदा।
षोडशेनोपचारेण प्रथमं पूजनञ्चरेत्।।४४।।
द्वितीये पञ्चतत्त्वेन पूजयेच्चण्डिकां प्रिये।
सहस्रावृत्तिपाठेन यत्फलं लभते नरः।।४५।।
सकृत्पाठस्य देवेशि कलां नार्हति षोडशीम्।
ध्यानमस्याः प्रवक्ष्यामि यथा ध्यात्वा पठेन्नरः।।४६।।

ॐ या चण्डी मधुकैटभादिदैत्यदलनी या महिषोन्मादिनी।
या धूम्रेक्षणचण्डमुण्डमथनी या रक्तबीजाशनी।।४७।।
शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्यदलनी या सिद्धिलक्ष्मीःपरा।
सा देवी नवकोटिमूर्त्तिसहिता मां पातु विश्वेश्वरी।।४८।।
ध्यानमेतच्चण्डिकायाः श्रृणुष्व वीरवन्दिते।
श्रृणु मन्त्रं प्रवक्ष्यामि त्रैलोक्येषु च दुर्लभम्।।४९।।
वेदाद्यं वाग्भवं मायां कामबीजं ततः परम्।
स्थिरमायां महामायां कामबीजं ततो नमः।।५०।।
नवाक्षरं महामन्त्रं जपेदादौ शतं प्रिये!।
"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं ह्रीं क्लीं नमः" इति मन्त्रो भवति।५१।।
विपरीतं महामन्त्रं पाठान्ते तु शतं जपेत्।
श्रृणु देवि! प्रवक्ष्यामि ऋषिच्छन्दः सुदुर्लभम्।।५२।।

ॐ सप्तशतीमहास्तोत्रस्य मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्र्यनुष्टुब्बृहतीपंक्तित्रिष्टु-ब्जगत्यश्छदांसि महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीदेवतास्तवकं ऐं ह्रीं क्लीं बीजानि क्ष्रौं शक्तिः ममामुककामसिद्ध्यर्थे विनियोगः।

प्रणवेन महेशानि! षडङ्गन्यासमाचरेत्।
इति ते कथितं कान्ते! चण्डीपाठस्य लक्षणम्।।५३।।
सावर्णिः सूर्य इत्यादि सावर्णिर्भविता मनुः।
एतन्मात्रं पठेद्देवि! किञ्चिन्न्यूनाधिकं न हि।।५४।।
वारत्रयं पठेद्देवि सञ्जप्य तु दिनत्रयम्।
महारोगे महादुःखे राजपीडादिदारूणे।।५५।।
नानाव्याधिगते वाऽपि राज्यनाशे तथा भये।
ग्रहपीडादिसंजाते ब्रह्महत्यादिपातके।।५६।।
एवं पाठेन देवेशि! मुच्यते नात्र संशयः।
बहु किं कथ्यते देवि! सर्वशान्तिं लभेन्नरः।।५७।।
सर्वशङ्काविनिर्मुक्तो जायते मदनोपमः।
एवं कृते महेशानि! यदि सिद्धिर्न जायते।।५८।।
पुनस्तेनैव कर्त्तव्यं ततः सिद्धो भवेद् ध्रुवम्।।५९।।

अथ चण्डीविधानम्

मन्त्रमहोदधौ—

अथ नवाक्षरं मन्त्रं वक्ष्ये चण्डीप्रवृत्तये।
वाङ्माया मदनो दीर्घालक्ष्मीस्तंद्रीश्रुतींदुयुक्।।६०।।

डायैसदृग्जलं - कूर्मद्वयं - झिंटीश - संयुतम्।
नवाक्षरोऽस्यत्रृषयो ब्रह्म - विष्णु - महेश्वराः।।६१।।
छन्दांस्युक्तानि मुनिभिर्गात्र्युष्णिगनुष्टुभः।
देव्यः प्रोक्ता महापूर्वाः काली लक्ष्मीः सरस्वतीः।।६२।।
नन्दाशाकम्भरीभीमाः शक्तयोऽस्य मनोः स्मृताः।
स्याद्रक्तदन्तिका दुर्गा भ्रामर्यो बीजसञ्चयः।।६३।।
अग्निर्वायुर्भगस्तत्त्वं फलं वेदत्रयोद्भवम्।
सर्वाभीष्टप्रसिद्ध्यर्थ विनियोग उदाहृतः।।६४।।
ऋषिश्छन्दो देवतानि शिरो मुखहृदि न्यसेत्।
शक्तिबीजानि स्तनयोस्तत्त्वानि हृदये पुनः।।६५।।
तत एकादशन्यासान् कुर्वीतेष्टफलप्रदाम्।
प्रथमो मातृकान्यासः कार्यः पूर्वोक्तमार्गतः।।६६।।
कृतेन येन देवस्य सारूप्यं याति मानवः।
अथ द्वितीयं कुर्वीत न्यासं सारस्वताभिधम्।।६७।।
बीजत्रयं तु मन्त्राद्यं तारादि हृदयान्तिकम्।
क्रमादंगुलिषु न्यस्य कनिष्ठाद्यासु पञ्चसु।।६८।।
करयोर्मध्यतः पृष्ठे मणिबन्धे च कूर्परे।
हृदयादिषडङ्गेषु विन्यसेज्जातिसंयुतम्।।६९।।
अस्मिन्सारस्वते न्यासे कृते जाड्यं विनश्यति।
ततस्तृतीयं कुर्वीत न्यासं मातृगणान्वितम्।।७०।।
मायाबीजादिका ब्राह्मी पूर्वतः पातु मां सदा।
माहेश्वरी तथाऽऽग्नेयां कौमारी दक्षिणेऽवतु।।७१।।
वैष्णवी पातु नैर्ऋत्ये वाराही पश्चिमेऽवतु।
इन्द्राणीपावके कोणे चामुण्डा चोत्तरेऽवतु।।७२।।
ऐशाने तु महालक्ष्मीरूर्ध्वं व्योमेश्वरी तथा।
सप्तद्वीपेश्वरी भूयौ रक्षेत्कामेश्वरी तले।।७३।।
तृतीयेस्मिन्कृते न्यासे त्रैलोक्यविजयी भवेत्।
न्यासं चतुर्थं कुर्वीत नन्दजादि समन्वितम्।।७४।।
नन्दजा पातु पूर्वाङ्ग कमलाङ्कुशमण्डिता।
खड्गपात्रकरा पातु दक्षिणे रक्तदन्तिका।।७५।।
पृष्ठे शाकम्भरी पातु पुष्पपल्लव संयुता।
धनुर्बाणकरा दुर्गा वामे पातु सदैव माम्।।७६।।

शिरः पात्रकराभीमा मस्तकाच्चरणावधि।
पादादि मस्तकं यावद् भ्रामरीचित्रकान्तिभृत्।।७७।।
तुर्य्यं न्यासं नरः कुर्याज्जरामृत्यूं व्यपोहति।
अथ कुर्वीत ब्रह्माख्यं न्यासं पञ्चममुत्तमम्।।७८।।
पादादिनाभिपर्यन्तं ब्रह्मा पातु सनातनः।
नाभेर्विशुद्धिपर्य्यन्तं पातु नित्यं जनार्दनः।।७९।।
विशुद्धेर्ब्रह्मरन्ध्रान्तं पातु रुद्रस्त्रिलोचनः।
हंसः पातुपदद्वन्द्वं वैनतेयः करद्वयम्।।८०।।
चक्षुषी वृषभः पातु सर्वाङ्गानि गजाननः।
परापरौ देहभागौ पात्वानन्दमयो हरिः।।८१।।
कृतेऽस्मिन् पञ्चमे न्यासे सर्वान्कामानवाप्नुयात्।
षष्ठंन्यासं ततः कुर्यान्महालक्ष्म्यादि संयुतम्।।८२।।
मध्यं पातु महालक्ष्मीरष्टादशभुजान्विता।
ऊर्ध्वं सरस्वती पातु भुजैरष्टाभिरूर्जिता।।८३।।
अधः पातु महाकाली दशबाहुसमन्विता।
सिंहो हस्तद्वयं पातु परं हंसोऽक्षियुग्मकम्।।८४।।
महिषं दिव्यमारूढ़ो यमः पातु पदद्वयम्।
महेशश्चण्डिकायुक्तः सर्वाङ्गानि ममाऽवतु।।८५।।
षष्ठेऽस्मिन्विहिते न्यासे सद्गतिं प्राप्नुयान्नरः।
मूलाक्षरन्यासरूपं न्यासं कुर्वीत सप्तमम्।।८६।।
ब्रह्मरन्ध्रे नेत्रयुग्मे श्रुत्योर्नासिकयोर्मुखे।
पादौ मूलमनोर्वर्णास्तिाराद्यान्नमसान्वितान्।।८७।।
विन्यसेत्सप्तमे न्यासे कृते रोगक्षयो भवेत्।
पायुतो ब्रह्मरन्ध्रान्तं पुनस्तानेव विन्यसेत्।।८८।।
कृतेऽस्मिन्नष्टमे न्यासे सर्वं दुःखं विनश्यति।
कुर्वीत नवमं न्यासं मन्त्रव्याप्ति स्वरूपकम्।।८९।।
मस्तकाच्चरणं यावच्चरणान्मस्तकावधि।
पुरो दक्षे पृष्ठदेशे वामभागेऽष्टशोन्यसेत्।।९०।।
मूलमन्त्रकृतो न्यासो नवमो देवताप्तिकृत्।
ततः कुर्वीत दशमं षडङ्गन्यासमुत्तमम्।।९१।।
मूलमन्त्रं जातियुक्तं हृदयादिषु विन्यसेत्।
कृतेऽस्मिन्दशमे न्यासे त्रैलोक्यं वशगं भवेत्।।९२।।

दशन्यासोक्तफलदं कुर्यादेकादशं ततः।
[1]खड्गिनीशूलिनीत्यादि पठित्वा श्लोकपञ्चकम्।।६३।।
आद्यं[2] कृष्णतरं बीजं ध्यात्वा सर्वाङ्गकेन्यसेत्।
शूलेन[3] पाहि नो देवीत्यादि श्लोकचतुष्टयम्।।६४।।
पठित्वा सूर्यसदृशं द्वितीयं सर्वतो न्यसेत्।
[4]सर्वस्वरूपे सर्वेशे इत्यादिश्लोकपञ्चकम्।।६५।।
पठित्वा स्फटिकाभासं तृतीयं स्वतनौ न्यसेत्।
ततः षडङ्गं कुर्वीत विभक्तैर्मूलवर्णकैः।।६६।।

---

१ ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा।।१।।
सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी।।२।।
यच्च किञ्चित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे मया।।३।।
यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पातयति यो जगत्।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां कः स्तोतुमिहेश्वरः।।४।।
विष्णुः शरीर ग्रहणमहमीशान एव च।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान भवेत्।।५।।
२. आद्यं ऐं बीजं कृष्णतरं ध्यात्वा सर्वाङ्गे विन्यसामि।
३. ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।१।।
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि।।२।।
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षाऽस्मांस्तथा भुवम्।।३।।
खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।।४।।
४. द्वितीयं ह्रीं बीजे सूर्यसदृश ध्यात्वा सर्वाङ्गे विन्यसामि।
ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।१।।
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्।
पातु नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तुते।।२।।
ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम्।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकाली नमोऽस्तु ते।।३।।

एकेनैकेन चैकेन चतुर्भिर्युगलेन च।
समस्तेन च मन्त्रेण कुर्यादङ्गानि षट् सुधीः।।९७।।
शिखायां नेत्रयोः श्रुत्योर्नसोर्वक्त्रे गुदे न्यसेत्।
मन्त्रवर्णान्समस्तेन व्यापकं त्वष्टाशश्चरेत्।।९८।।
खड्गं चक्रगदेषु चापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः।
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषवृताम्।।९९।।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकाम्।
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभं।१००।।
अक्षस्रक्परशुगदेषु कुलिशं पद्म धनुः कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्मजलजं घण्टां सुराभाजनाम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवालप्रभां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।१०१।।
घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशु तुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा
पूर्वामत्र सरस्वतीमनु भजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।१०२।।
एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षचतुष्कं तद्दशांशतः।
पायसान्नेन जुहुयात्पूजिते हेमरेतसि।।१०३।।
जयादि शक्तिभिर्युक्ते पीठे देवीं यजेत्ततः।
तत्त्वपत्रावृतत्र्यस्र षट्कोणाष्टदलान्विते।।१०४।।
त्रिकोणमध्ये सम्पूज्य ध्यात्वा तां मूलमन्त्रतः।
पूर्वकोणे विधातारं सुरया सह पूजयेत्।।१०५।।
विष्णुं श्रिया च नैर्ऋत्ये वायव्ये तूमया शिवम्।
उदग्दक्षिणयोः सिंह महिषं चक्रमाद्यजेत्।।१०६।।
षट्सु कोणेषु पूर्वादि नन्दजां रक्तदन्तिकाम्।
शाकम्भरीं तथा दुर्गां भीमां च भ्रामरीं यजेत्।।१०७।।
सबिन्दुनादाद्यर्णाद्यास्ताराद्याश्च नमोऽन्तिकाः।
नन्दजाद्या यजेच्छक्तीर्वक्ष्यमाणा अपीदृशीः।।१०८।।

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापभ्योऽनः सुतानिव।।४।।
असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम्।।५।।
तृतीयं क्लीं बीजं स्फटिकाभं ध्यात्वा सर्वाङ्गे न्यसामि।।इति।।

अष्टपत्रेषु ब्रह्माणी पूज्या माहेश्वरी परा।
कौमारी वैष्णवी चाथ वाराही नारसिंह्यपि।।१०९।।
पश्चादैन्द्री च चामुण्डा तथा तत्त्वदलेष्विमाः।
विष्णुमायाचेतना च बुद्धिर्निद्राक्षुधा ततः।।११०।।
छायाशक्तिः परा तृष्णा क्षान्तिर्जातिश्च लज्जया।
शान्तिः श्रद्धा कान्तिलक्ष्म्यौ धृतिर्वृत्तिः श्रुतिः स्मृतिः।।१११।।
तुष्टिः पुष्टिर्दया माता भ्रान्तिः शक्तिरिति क्रमात्।
बर्हिर्भूगृहकोणेषु गणेशः क्षेत्रपालकः।।११२।।
बटुकश्चापि योगिन्यः पूज्या इन्द्रादिका अपि।
एवं सिद्धे मनौ मन्त्री भवेत्सौभाग्यभाजनम्।।११३।।
मार्कण्डेयपुराणोक्तं नित्यं चण्डीस्तवं पठन्।
पुटितं मूलमन्त्रेण जपन्नाप्नोति वाञ्छितम्।।११४।।
आश्विनस्य सिते पक्षे आरभ्याग्नितिथिं सुधीः।
अष्टम्यन्तं जपेल्लक्षं दशांशं होममाचरेत्।।११५।।
प्रत्यहं पूजयेद्देवीं पठेत्सप्तशतीमपि।
विप्रानाराध्य मन्त्री स्वमिष्टार्थं लभेतऽचिरात्।।११६।।
सप्तशत्याश्चरित्रे तु प्रथमे पद्मभूर्मुनि।
छन्दो गायत्रमुदितं महाकाली तु देवता।।११७।।
वाग्बीजं पावकस्तत्त्वं धर्मार्थे विनियोजनम्।
मध्यमे तु चरित्रेऽत्र मुनिर्विष्णुरुदाहृतः।।११८।।
उष्णिक्छन्दो महालक्ष्मीर्देवताबीजमद्रिजा।
वायुस्तत्त्वं धनप्राप्त्यै विनियोगः उदाहृतः।।११९।।
उत्तरस्य चरित्रस्य ऋषिः शंकर ईरितः।
त्रिष्टुप्छन्दो देवतास्य प्रोक्ता महासरस्वती।।१२०।।
कर्मबीजं रविस्तत्त्वं कामाप्त्यै विनियोजनम्।
एवं संस्मृत्य ऋष्यादीन् ध्यात्वा पूर्वोक्तमार्गतः।।१२१।।
सार्थस्मृति पठेच्चण्डीस्तवं स्पष्टपदाक्षरम्।
समाप्तौ तु महालक्ष्मीं ध्यात्वा कृत्वा षडङ्गकम्।।१२२।।
जपेदष्टशतं मूलं देवतायै निवेदयेत्
एवं यः कुरुते स्तोत्रं नावसीदति जातुचित्।।१२३।
चण्डिकां प्रभजन्मर्त्यो धनैर्धान्यैर्यशश्चयैः।
पुत्रैः पौत्रैरुतारोग्यैर्युक्तो जीवेद् बहूः समाः।।१२४।।

शतचण्डीविधानं तु प्रवक्ष्ये प्रीतये नृणाम्।
नृपोपद्रव आपन्ने दुर्भिक्षे भूमिकम्पने।।१२५।।
अतिवृष्ट्यामनावृष्टौ परचक्रभये क्षये।
सर्वे विघ्ना विनश्यन्ति शतचण्डीविधौ कृते।।१२६।।
रोगाणां वैरिणां नाशो धनपुत्रसमृद्धयः।
शंकरस्य भवान्या वा प्रासादान्निकटे शुभम्।।१२७।।
मण्डपद्वारवेद्याद्यं कुर्यात् सध्वजतोरणम्।
तत्र कुण्डं प्रकुर्वीत प्रतीच्यां मध्यतोऽपि वा।।१२८।।
स्नात्वा नित्यकृतिं कृत्वा वृणुयाद्दशवाडवान्।
जितेन्द्रियान्सदाचारान्कुलीनान् सत्यवादिनः।।१२९।।
व्युत्पन्नांश्चण्डिकापाठरताँल्लज्जादयावतः।
मधुपर्कविधानेन वस्त्रस्वर्णादिदानतः।।१३०।।
जपार्थमासनं मालां दद्यात्तेभ्योऽपि भोजनम्।
ते हविष्यान्नमश्नन्तो मन्त्रार्थगतमानसाः।।१३१।।
भूमौ शयानाः प्रत्येकं तपेयुश्चण्डिकास्तवम्।
मार्कण्डेयपुराणोक्तं दशकृत्वः सुचेतसः।।१३२।।
नवार्णं चण्डिकामन्त्रं जपेयुश्चायुतं पृथक्।
यजमानः पूजयेच्च कन्यानां दशकं शुभम्।।१३३।।
द्विवर्षाद्या दशाब्दान्ताः कुमारीः परिपूजयेत्।
नाधिकाङ्गीं न हीनाङ्गीं कुष्ठिनी च व्रणाङ्किताम्।।१३४।।
अन्धां काणां केकरां च कुरूपां रोमयुक्तनुम्।
दासीजातां रोगयुक्तां दुष्टां कन्यां न पूजयेत्।।१३५।।
विप्रां सर्वेष्टसंसिद्धयै यशसे क्षत्रियोद्भवाम्।
वैश्यानां धनलाभाय पुत्राप्त्यै शूद्रजां यजेत्।।१३६।।
द्विवर्षा सा कुमार्युक्ता त्रिमूर्तिर्हायनत्रिका।
चतुरब्दा तु कल्याणी पञ्चवर्षा तु रोहिणी।।१३७।।
षडब्दा कालिका प्रोक्ता चण्डिका सप्तहायनी।
अष्टवर्षा शाम्भवी स्याद् दुर्गा च नवहायनी।।१३८।।
सुभद्रा दशवर्षोक्तास्तामन्त्रैः परिपूजयेत्।
एकाब्दायाः प्रीत्यभावो रुद्राब्दास्तु विवर्जिताः।।१३९।।
तासामावाहने मन्त्राः प्रोच्यन्ते शङ्करोदिताः।
मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मी मातृणां रूपधारिणीम्।।१४०।।

नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम्।
कुमारिकादिकन्यानां पूजामन्त्रान्ब्रुवेऽधुना।।१४१।।
जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वदेवस्वरूपिणी।
पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते।।१४२।।
त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्गज्ञानरूपिणीम्।
त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम्।।१४३।।
कलात्मिकां कलातीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्।
कल्याणजननीं देवीं कल्याणी पूजयाम्यहम्।।१४४।।
अणिमादि गुणाधारामकाराद्यरात्मिकाम्।
अनन्तशक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम्।।१४५।।
कामचारां शुभां कान्तां कालचक्रस्वरूपिणीम्।
कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम्।।१४६।।
चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्डप्रभञ्जनीम्।
पूजयामि महादेवीं चण्डिकां चण्डविक्रमाम्।।१४७।।
सदानन्दकरीं शान्तां सर्वदेव नमस्कृताम्।
सर्वभूतात्मिकां देवीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम्।।१४८।।
दुर्गमे दुस्तरे कार्य्ये भवार्णवविनाशिनि।
पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गार्तिनाशिनीम्।।१४९।।
सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम्।
सुभद्रजननी देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम्।।१५०।।
एतैर्मन्त्रं पुराणोक्तैः स्नातां कन्यां प्रपूजयेत्।
गन्धैः पुष्पैर्भक्ष्यभोज्यैर्वस्त्रैराभरणैरपि।।१५१।।
वेद्यां विरचिते रम्ये सर्वतोभद्रमण्डले।
घटं संस्थाप्य विधिवत्तत्रावाह्यार्च्चयेच्छिवाम्।।१५२।।
तदग्रे कन्यकाश्चापि पूजयेद् ब्राह्मणानपि!
उपचारैस्तु विविधैः पूर्वोक्तावरणान्यपि।।१५३।।
एवं चतुर्दिनं कृत्वा पञ्चमे होममाचेत्।
पायसान्नैस्त्रिमध्वक्तैर्द्राक्षारम्भाफलैरपि।।१५४।।
मातुलिङ्गैरिक्षुखण्डैर्नारिकेलैः पुरैस्तिलैः।
जातीफलैराम्रफलैरन्यैर्मधुरवस्तुभिः।।१५५।।
सप्तशत्या दशावृत्त्या प्रतिश्लोकं हुतं चरेत्।
अयुतं च नवार्णेन स्थापिताग्नौ विधानतः।।१५६।।

कृत्वावरण देवानां होमं तन्नाममन्त्रतः।
कृत्वा पूर्णाहुतिं सम्यग्देवमग्निं विसर्ज्य च।।१५७।।
अभिषिञ्चेच्च यष्टारं विप्रौघः कलशोदकैः।
निष्कं सुवर्णमथवा प्रत्येकं दक्षिणां दिशेत्।।१५८।।
भोजयेच्च शतं विप्रान् भक्ष्यभोज्यैः पृथक् विधैः।
तेभ्योऽपि दक्षिणां दत्त्वां गृह्णीयादाशिषस्ततः।।१५९।।
एवं कृते जगद्वश्यं सर्वे नश्यन्तुपद्रवाः।
राज्यं धनं यशः पुत्रानिष्टमन्यल्लभेत् सः।।१६०।।

अथ श्रीदेव्यथर्वशीर्षम्

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति।।१६१।।
साब्रवीत् अहं ब्रह्मस्वरूपिणी। मतः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत्। शून्यं चाशून्यं च।।१६२।।
अहमानन्दानान्दौ। अहं विज्ञानाविज्ञाने। अहं ब्रह्माब्रह्मणी वेदितव्ये।
अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि। अहमखिलं जगत्।।१६३।।
वेदोऽहमवेदोऽहम्। विद्याहमविद्याहम्। अजाहमनजाहम्। अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम्।।१६४।।

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि। अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः।
अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि। अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ।।१६५।।
अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि।
अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि।।१६६।।
अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते।
अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे।
य एवं वेद। स दैवीं सम्पदमाप्नोति।।१६७।।

ते देवा अब्रुवन-

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।१६८।।
तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्ये ते नमः।।१६९।।
देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु।।१७०।।
कालारात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम्।
सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम्।।१७१।।

महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्।।१७२।।
अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव।
तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः।।१७३।।
कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः।
पुनर्गुहा सकला मायया च पुरुच्यैषा विश्वमातादिविद्योम्।।१७४।।
एषाऽऽत्मशक्तिः। एषा विश्वमोहिनी। पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा।
एषा श्री महाविद्या। य एवं वेद स शोकं तरति।।१७५।।
नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः।।१७६।।

सैषाष्टौ वसवः। सैषैकादश रुद्राः। सैषा द्वादशादित्याः। सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च। सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिद्धाः। सैषा सत्त्वरजस्तमांसि। सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी। सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः। सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतीषि। कलाकाष्ठादिकालरूपिणी। तामहं प्रणौमि नित्यम्।।

पापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम्।
अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम्।।१७७।।
वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम्।
अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम्।।१७८।।
एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः।
ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः।।१७९।।
वाङ्माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम्।
सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्तष्टात्तृतीयकः।
नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः।
विच्चे नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः।।१८०।।
हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातः सूर्यसमप्रभाम्।
पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्।
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुधां भजे।।१८१।।
नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम्।
महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम्।।१८२।।

यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया। यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता। यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या। यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यते अजा एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका।

एकैव विश्वरूपिणीतस्मादुच्यते नैका। अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्याजैका नैकेति।।१८३।।

मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी।
ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी।
यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता।।१८४।।
तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम्।
नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम्।।१८५।।

इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति। इदमथर्वशीर्ष-मज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति-शतलक्षं प्रजप्त्वापि सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति। शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः।

दशवारं पठेद् यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते।
महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः।
सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नश्यति।
प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति।
सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति।
निशीथे तुरीयसंध्यायां जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति।
नूतनाया प्रतिमायां जप्त्वा देवतासान्निध्यं भवति।
प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति।
भौमाश्विन्यां महादेवीसन्निधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति।
स महामृत्यं तरति य एवं वेद।।१८६।।

।। इत्युपनिषत्।।

सप्तशतीविधानम्

मुक्तावल्याम्-

सप्तशत्या विधानं तु श्रृणु वक्ष्यामि यत्नतः।
यज्ज्ञात्वा साधकश्रेष्ठः सर्वसिद्धिमवाप्नुयात्।।१८७।।

मेरुतन्त्रे-

सप्तशत्यास्तु सकलं तत्त्वं वेद्म्यहमेव हि।
पादोनं श्रीहरिर्वेत्ति वेत्त्यर्धं तु प्रजापतिः।।१८८।।
व्यासस्तुर्यांशकं वेत्ति कोट्यंशमितरे जनाः।

वाराही तन्त्रे-

ऋषिच्छन्दादिकं न्यस्य पठेत् स्तोत्रं विचक्षणः।।१८९।।

ऋष्यादिन्यासं उक्तो मेरुतन्त्रे-

सप्तशत्याश्चरित्रे तु प्रथमे पद्मभूर्मुनिः।
छन्दो गायत्रमुदितं महाकाली तु देवता।।१९०।।
वाग्बीजं पावकस्तत्त्वं धर्मार्थे विनियोजनम्।
मध्यमस्य चरित्रस्य मुनिर्विष्णुरुदाहृतः।।१९१।।
उष्णिक् छन्दो महालक्ष्मीर्देवता बीजमद्रिजा।
वायुस्तत्त्वं धनप्राप्त्यै विनियोग उदाहृतः।।१९२।।
उत्तरस्य चरित्रस्य मुनिः शङ्कर उच्यते।
महासरस्वती देवी त्रिष्टुप् छन्द उदाहृतम्।।१९३।।
कामो बीजं रविस्तत्त्वं कामाप्त्यै विनियोजनम्।

तन्त्रान्तरे-

नवार्णमन्त्रवर्णैस्तु षडङ्गन्यासमाचरेत्।।१९४।।

ध्यानानि मेरुतन्त्रे (महाकाली ध्यानम्)-

ततो देवीत्रयं ध्यायेत् कालिकाध्यानमुच्यते।
दशास्यां दशपादां च दशहस्तां विधिस्तुताम्।।१९५।।
इन्द्रनीलद्युतिं खड्गं चक्रं शङ्खं शिरः शरान्।
दक्षहस्तेषु दधतीं गदां शूलं भुशुण्डिकाम्।।१९६।।
परिघं च धनुर्वामे दधतीं ब्रह्मसंस्तुताम्।
मधुकैटभनाशार्थं सालङ्कारां त्रिवीक्षणाम्।।१९७।।

तन्त्रान्तरेऽपि-

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकाम्।
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुकैटभम्।।१९८।।

अथ महालक्ष्मीध्यानम्-

ततो ध्यायेन्महालक्ष्मीं महिषासुरमर्दिनीम्।
समस्तदेवतातेजोजातां पद्मासनस्थिताम्।।१९९।।
अष्टादशभुजामक्षमालां पद्मं च शायकान्।
खड्गं वज्रं गदां चक्रं दक्षहस्ते कमण्डलुम्।।२००।।
शङ्खं च दधतीं वामे शक्तिं च परशुं धनुः।
चर्मदण्डौ सुरापात्रं घण्टां पाशं त्रिशूलकम्।।२०१।।

अन्यत्रापि-

अक्षस्रक्परशु गदेषुकुलिशान् पद्मं धनुः कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवालप्रभां
सेवे शैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।२०२।।

अथ महासरस्वती ध्यानम्-

सरस्वतीं ततो ध्यायेच्छरच्चन्द्रसमप्रभाम्।
शङ्खं च मुशलं चक्रं बाणान् दक्षेषु बिभ्रतीम्।।२०३।।
घण्टां शूलं हलं चापं वामहस्तेषु बिभ्रतीम्।
गौरीदेहसमुद्भूतां नृणामानन्ददायिनीम्।।२०४।।
आधारभूतां जगतः शुम्भादिकविमर्दिनीम्।
अधिष्ठात्रीं तृतीयस्य चरित्रस्य स्मरेत् सदा।।२०५।।

तन्त्रान्तरेऽपि-

घण्टाशूलहलानि शङ्खमुशले चक्रं धनुः शायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुशुक्लप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतमाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।२०६।।

अथ पाठक्रमो वाराहीतन्त्रे-

आधारे स्थापयित्वा तु पुस्तकं वाचयेत् ततः।
हस्तसंस्थापनाद्देवि! भवेदर्धफलं यतः।।२०७।।
यावन्न पूर्यतेऽध्यायस्तान्न विरमेत् पठन्।
यदि प्रमादादध्याये विरामो भवति प्रिये।।२०८।।
पुनरध्यायमारभ्य पठेत् सर्वं मुहुर्मुहुः।
अनुक्रमात् पठेद्देवि शिरः कम्पादिकं त्यजेत्।।२०९।।

महाकालसंहितायाम्-

ब्राह्मणान् वरयित्वैवं वस्त्रालङ्कारणासनैः।
विदध्यात् कामनोल्लेखं पूजां शक्त्या च पुस्तके।।२१०।।
शनैः पठेत् पाठकोऽपि वर्णोच्चारणपूर्वकम्।
सुव्यक्तं नापि विश्लिष्टं न शिरश्चारगीवत्।।२११।।
तनुमान्दोलयन्नापि न हसन्न रुदन् व्रजन्।
नाश्नन्नान्यैरालपँश्च न मध्ये छिन्नवत् तथा।।२१२।।
आचान्तः कृतशौचश्च पदोरुद्गमनीयवान्।
एतेन विधिनाऽधीते तुष्यते जगदम्बिका।।२१३।।

यथोक्तफलदात्री च भवति प्राणवल्लभे!।

वाराहीतन्त्रे-

प्रणवं चादितो दत्त्वा स्तोत्रं वा संहितां पठेत्।।२१४।।
अन्ते च प्रणवं दद्यादित्युवाचादिपूरुषः।

तथा-

स्वयं च लिखितं यच्च शूद्रेण लिखितं भवेत्।।२१५।।
अब्राह्मणेन लिखितं तच्चापि विफलं भवेत्।
स्तोत्रे न दृश्यते यत्र प्रणवं तत्र विन्यसेत्।।२१६।।
सर्वत्र पाठे विज्ञेयस्त्वन्यथा विफलं भवेत्।

देवीपुराणे-

वाचकं पूजयित्वा तु यथाविभवविस्तरैः।।२१७।।
वाचयीत ततो राजन् देवीमाहात्म्यमुत्तमम्।
तदन्ते शान्तिशब्दस्तु जनस्य सनृपस्य च।।२१८।।
अनेन विधिना राजन् यः पठेच्छृणुयादपि।
चिन्तयेद्वाचयेद्वाऽपि तस्य पुण्यफलं शृणु।।२१९।।
वाजपेयसहस्रस्य अश्वमेधशतस्य च।
यत् फलं लभते तात तत् फलं शतधा भवेत्।।२२०।। इत्यादि।

मरीचिकल्पे-

रात्रिसूक्तं जपेदादौ मध्ये सप्तशतीस्तवम्।
प्रान्ते तु जपनीयं वै देवीसूक्तमिति क्रमः।।२२१।।
एवं संपुटितं स्तोत्रं सर्वकामार्थ सिद्धये।।२२२।।

अथ रात्रिसूक्तं च-

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा-इत्यादि प्रथमचरित्रस्थ स्तुतिरूपं देवीसूक्तम्।

नमो देव्यै-इत्यादि तृतीय चरित्रस्थस्तुति रूपमिति नागोजिभट्टादयः। अन्ये तु सूक्तद्वयं वैदिकमेवेत्याहुः।

मेरुतन्त्रे-

मार्कण्डेय पुराणोक्तं नित्यं चण्डीस्तवं पठेत् ।
पुटितं मूलमन्त्रेण जपन्नाप्नोति वाञ्छितम्।।२२३।।

मूलमन्त्र—ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। इति-

अथ पुरश्चरणम्

मरीचिकल्पे-

कृष्णाष्टमीं समारभ्य यावत् कृष्णचतुर्दशीम्।
वृद्ध्यैकोत्तरया जाप्यं पूर्वसंपुटितं तु तत्।।२२४।।
एवं देवि! मया प्रोक्तः पौरश्चरणिकः क्रमः।
तदन्ते हवनं कुर्यात् प्रतिश्लोकेन पायसैः।।२२५।।
रात्रिसूक्तं प्रति ऋचं तथा देव्यास्तु सूक्तम्।।२२६।।

प्रतिश्लोकेनेति। तस्य कात्यायनीतन्त्रोक्तमन्त्रविभागेन। तदज्ञाने तु श्लोकेनैव होमः कार्य इति साम्प्रदायिकाः।

नवरात्रे प्रकारान्तरेण पुरश्चरमुक्तं तत्रैव-

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि नवरात्रविधानकम्।
जपेदेकोत्तरां वृद्धि दिनानि नवसंख्यया।।२२७।।
नवाक्षरीविधानेन सम्पूज्याथ विचक्षणः।
सहस्रं प्रजपेन्मन्त्रं प्रत्येकं च यथाविधि।
हुत्वा दशांशतो होमं तत्र सिद्धिमवाप्नुयात्।।२२८।।

इति परमहंस स्वामी श्री निखिलेश्वरानन्द शिष्य श्री मन्महेश्वरानन्द विरचिते श्रीदुर्गामन्त्रराज कल्पे प्रथमोऽध्यायः।।१।।



अथ द्वितीयोऽध्यायः

चण्डीविधिः

मेरुतन्त्रे-

शतचण्डीविधानं तु प्रवक्ष्ये प्रीतये नृणाम्।
नृपोपद्रवमापन्ने दुर्भिक्षे भूमिकम्पने।।१।।
अतिवृष्ट्यामनावृष्टौ परचक्रभये क्षये।
सर्वे विघ्ना विनश्यन्ति शतचण्डीविधौ कृते।।२।।
रोगाणां वैरिणां नाशो धनपुत्रसमृद्धयः।
शङ्करस्य भवान्या वा प्रसादनिकटे शुभम्।।३।।
मण्डपं द्वारवेद्याढ्यं कुर्यात् सध्वजतोरणम्।
तत्र कुण्डं प्रकुर्वीत प्रतीच्यां मध्यतोऽपि वा।।४।।
स्नात्वा नित्यकृतिं कृत्वां योजयेद्द्दशवाडवान्।
जितेन्द्रियान् सदाचारान् कुलीनान् सत्यवादिनः।।५।।
व्युत्पन्नाँश्चण्डिकापाठे रतान् लज्जादयावतः।
मधुपर्कविधानेन वस्त्रस्वर्णादिदानतः।।६।।
जपार्थमासनं मालां दद्यात् तेभ्योऽपि भोजनम्।
ते हविष्यान्नमश्नन्तो मन्त्रार्थगतमानसाः।।७।।
भूमौ शयानाः प्रत्येकं जपेयुश्चण्डिकास्तवम्।
मार्कण्डेयपुराणोक्तं दशकृत्वः सचेतसः।।८।।
नवार्णं चण्डिकामन्त्रं जपेयुश्चायुतं क्वचित्।

वाडवा विप्राः

अत्र च-

पञ्चभिः सप्तभिर्वाऽपि नवैकादशभिस्तथा।
अदीर्घदिवसे क्षिप्रं विदध्याच्चण्डिकामखम्।।९।।
अयुग्मब्राह्मणैः कार्यं शतावृत्तं सुसिद्धये।
त्रिपञ्चसप्तनवभिर्दिनैः पक्षेण वा पुनः।।१०।।
देवीमाहात्म्यपाठं तु युगैर्विप्रैः कृतं च यत्।
निष्फलं च भवेत् सर्वं भूतिनाशं च प्राप्नुयात्।।११।।

इति यद्वचनत्रयं क्रोडतन्त्रनाम्ना पठ्यते तत् तु निर्मूलम। तन्त्रानुपलम्भादनेकतन्त्रविरोधाच्च।

तथा-

यजमानः पूजयेच्च कन्यानां दशकं शुभम्।
द्विवर्षाद्या दशाब्दान्ताः कुमारीः परिपूजयेत्।।१२।।

तथा-

विप्रां सर्वेष्टसंसिद्ध्यैः यशसे क्षत्रियोद्भवाम्।
वैश्यजां धनलाभाय पुत्राप्त्यै शूद्रजां यजेत्।।१३।।

द्विवर्षादीनां प्रत्येकं नामानि-

द्विवर्षा सा कुमार्युक्ता त्रिमूर्त्तिर्हायनत्रिका।
चतुरब्दा तु कल्याणी पञ्चवर्षा तु रोहिणी।।१४।।
षडब्दा कालिका प्रोक्ता चण्डिका सप्तहायना।
अष्टवर्षा शाम्भवी स्याद्दुर्गा तु नवहायना।।१५।।
शुभदा दशवर्षोक्ता ता मन्त्रैः परिपूजयेत्।
एकाब्दायाः प्रीत्यभावो रुद्राब्दा तु विवर्जिता।।१६।।
मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृणां रूपधारिणीम्।
नवदुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यामावाहयाम्यहम्।।१७।।
कुमारिकादिकन्यानां पूजामन्त्रान् ब्रुवेऽधुना।
जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।।१८।।
पूजां गृहाण कौमारि जगन्मात्रे नमोऽस्तु ते।
त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्गज्ञानरूपिणीम्।।१९।।
त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम्।
कलात्मिकां कलातीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्।।२०।।
कल्याणजननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम्।
अणिमादिगुणाधारामकाराद्यक्षरात्मिकाम् ।।२१।।
अनन्तशक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम्।
कामचारीं शुभां कान्तां कालचक्रस्वरूपिणीम्।।२२।।
कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम्।
चण्डबीजां चण्डमयीं चण्डमुण्डप्रभञ्जनीम्।।२३।।
पूजयामि सदा देवीं चण्डिकां चण्डविक्रमाम्।
सदानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम्।।२४।।
सर्वभूतात्मिकां लक्ष्मीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम्।
दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःखविनाशिनीम्।।२५।।

पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गा दुर्गतिनाशिनीम्।
सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम्।।२६।।
सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम्।
एतैर्मन्त्रैर्लक्षणाढ्यां तां तां कन्यां समर्चयेत्।।२७।।
गन्धैः पुष्पैर्भक्ष्यभोज्यैर्वस्त्राभरणैरपि।
वेद्यां विरचिते रम्ये सर्वतोभद्रमण्डले।।२८।।
घटं संस्थाप्य विधिवत् तत्रावाह्यार्चयेच्छिवाम्।
तदग्रे कन्यकाश्चापि भोजयेद्कन्यकानापि।।२९।।
उपचारैश्च विविधैः पूर्वोक्तावरणान्यपि।
एवं चतुर्दिनं कृत्वां पञ्चहोमान् समाचरेत्।।३०।।

एतेन प्रथमेऽह्नि प्रत्येकमेकैकावृत्तिः। द्वितीये द्वे द्वे। तृतीयं तिस्त्रस्तिस्त्रः। चतुर्थे चतस्रश्चतस्र इत्युक्तं भवति।

तदुक्तं रुद्रयामले-

एकं द्वे त्रीणि चत्वारि जपेद्दिनचतुष्टये।
पञ्चमे दिवसे प्रातर्होमं कुर्याद्विधानतः।।३१।। इति।।

अथ ब्राह्मणहोमद्रव्याण्युक्तानि मेरुतन्त्रे-

पायसान्नैस्तु मध्वक्तैर्द्राक्षारम्भाफलैरपि।
मातुलुङ्गैरिक्षुखण्डैर्नारिकेलैः पुरैस्तिलैः।।३२।।
जातीफलैराम्रफलै रम्यैर्मधुरवस्तुभिः।
सप्तशत्या दशावृत्त्या प्रतिश्लोकं हुतं चरेत्।।३३।।
अयुतं च नवार्णेन स्थापितेऽग्नौ विधानतः।
होमविधौ यो विशेषः स चाग्रे वक्ष्यते मया।।३४।।
कृत्वाऽऽवरणदेवानां होमं तन्नाममन्त्रतः।
कृत्वा पूर्णाहुतिं सम्यग्देवमग्निं विसृज्य च।
अभिषिञ्चेच्च यष्टारं विप्रौघः कलशोदकैः।।३५।।

अभिषेकमन्त्रास्तु, -

विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीम्- इत्यादि।
देव्या यया ततमिदम्- इत्यादि।
नमो देव्यै महादेव्यै- इत्यादि।
देवि प्रपन्नार्त्तिहरे प्रसीद- इति चत्वारः श्लोकाः।
निष्कं सुवर्णामथ वा प्रत्येकं दक्षिणां दिशेत्।

मरीचिकल्पे तु—

पञ्चस्वर्णाः शतावृत्ते पक्षावृत्ते तु तत्त्रयम्।
पञ्चावृत्ते स्वर्णमेकं त्रिरावृत्ते तदर्धकम्।
एकावृत्ते पादमेकं दद्याद्वा शक्तितो बुधः।।३६।।

कात्यायनीतन्त्रे—

एकैकं दशविप्रेभ्यो दद्याद्गोमिथुनं समम्।
निष्कत्रयसमायुक्तं वस्त्रालङ्कारभूषितम्।।३७।।

मेरुतन्त्रे—

भोजयेच्च पृथग्विप्रान् भक्ष्यभोज्यैः पृथग्विधैः।
तेभ्योऽपि दक्षिणां दत्वां गृह्णयादाशिषस्तथा।।३८।।
एवं कृते जगद्वश्यं सर्वे नश्यन्त्युपद्रवाः।
राज्य धनं यशः पुत्रानिष्टमन्नं लभेत् च।।३९।।

कात्यायनी तन्त्रे—

यद्यत् कार्यं समुद्दिश्य क्रियते शतचण्डिका।
तत् तत् तस्य महालक्ष्मीः सत्यमाशु प्रयच्छति।।४०।।

सहस्त्रचण्डीविधानमुक्तं मेरुतन्त्रे—

एतद्दशगुणं कुर्याच्चण्डीसाहस्रजं विधिम्।
विद्यावतः सदाचारान् ब्राह्मणान् वृणुयाच्छताम्।।४१।।
प्रत्यहं चण्डिकापाठान् विदध्युस्ते दशामितान्।
अयुतं प्रजपेयुस्ते प्रत्येकं नववर्णकम्।।४२।।
पूर्वोक्ताः कन्यकाः पूज्याः पूर्वमन्त्रैः शतं शुभाः।
एवं दशाहं सम्पाद्य होमं कुर्युः प्रयत्नतः।।४३।।
सप्तशत्याः शतावृत्त्यां प्रतिश्लोकं विधानतः।
लक्षसंख्यं नवार्णं च पूर्वोक्तैर्द्रव्यसञ्चयैः।।४४।।
होतृभ्यो दक्षिणां दत्त्वा पूर्वोक्तान् भोजयेद्कन्यां।
सहस्रसंमितान् साधून् देव्याराधनतत्परान्।।४५।।
एवं सहस्रसंख्याते कृते चण्डीविधौ नृणाम्।
सिद्ध्यत्यभीप्सितं सर्वं दुःखौघश्च विनश्यति।
मारीदुर्भगरोगाद्या नश्यन्ति व्यसनोच्चयाः।।४६।।

रुद्रयामले—

राज्यभ्रंशे महोत्पाते जनमारे महाभये।
गजमारेऽश्वमारे च परचक्रभये तथा।।४७।।

इत्यादिविविधे दुःखे क्षयरोगादिजे भये।
सहस्रचण्डिकापाठं कुर्याद्वा कारयेत् तथा।।४८।।

मेरुतन्त्रे—

नेमं विधिं वदेद्दुष्टे खले चौरे गुरुद्रुहि।
साधौ जितेन्द्रिये दान्ते वदेद्विधिमिमं परम्।
एवं सा चण्डिका तुष्टा वक्तॄन् श्रोतॄन् प्ररक्षति।।४९।।

अथ होमविधिः—

चतुरस्रे समे कुण्डे ससन्ताद्धस्तमात्रके।
एकावरणसंयुक्ते योनिमण्डलमण्डिते।।५०।।
दशांशविधिना होममुक्तहव्येन साधयेत्।
नित्यचण्ड्यां नवचण्ड्यां कुण्डमेवं विधं स्मृतम्।।५१।।
एतद्द्विगुणितं कुण्डं शतचण्ड्या प्रकीर्तितम्।
संस्कारैरष्टभिः कुण्डं संस्कृत्याग्निं निधापयेत्।।५२।।
कुण्डमध्ये भुवं दर्भैः परिमार्ज्य प्रलेपयेत्।
प्रागग्राः स्रुवमूलेन रेखास्तिस्रः समुल्लिखेत्।५३।।
पांशुमुद्धृत्य रेखाणामभ्युक्षणमतः परम्।
कुण्डस्य पूजनं षष्ठः सप्तमः सप्तमुद्रया।।५४।।
अस्त्रावगुण्ठितं कुण्डे संस्कारश्चाष्टमः स्मृतः।
अष्टमङ्गलनामानं कुण्डेऽग्निं सन्निधापयेत्।।५५।।

अत्र सर्वत्र मायाबीजमन्त्रः-

चण्डिकापाठसंपूर्णे ब्रह्माणं दक्षिणे द्विजम्।
ततस्तदग्निमत् कुण्डं नववस्त्रेण भूषयेत्।।५६।।
कुण्डस्योत्तरतः स्थाप्या प्रणीता वारिपूरिता।
प्रणीतापात्रतः सर्वे स्थाप्याः पात्रगणाः क्रमात्।।५७।।
आज्यस्थाली चरुस्थाली गव्यक्षीरसमन्विता।
स्रुक्स्रुवौ च घृतं गव्यं तण्डुलाः कुशमूलकाः।।५८।।
पालाशः समिधस्तिस्रः पूर्णपात्रमतः परम्।
सप्तद्वीपेश्वरीं ध्यात्वा गृहीत्वा कुशमूलकम्।।५९।'
निःक्षिपेत् प्रोक्षणीपात्रे वारुणं बीजमुच्चरेत्।
तेन दर्भसमूहेन शतसंख्येन चेश्वरि!।।६०।।
क्रमात् पात्राणि संप्रोक्षन् प्रोक्षणीपात्रवारिणा।
आज्यपात्रे चरुस्थाल्यां निःक्षिपेद्घृततण्डुलम्।।६१।।

यथाक्रमेण कर्त्तव्यं ततोऽधिश्रयणं तयोः
आदौ वै पायसं कार्यं पर्याग्निकरणं तयोः।।६२।।
सव्यं पालाशकाष्ठेन त्रिभिर्दर्भैश्च सोज्ज्वलम्।
स्रुवयोः स्थापनं कृत्वा दक्षिणे स्थापनं कृतम्।।६३।।
उद्वास्य प्रथमं पूर्वादानीयाग्नेः प्रदक्षिणम्।
कुण्डाचार्यान्तरे स्थाप्यं स्वबीजजपगौरवात्।।६४।।

स्वबीजं त्वमृतबीजम्।

अभिधार्य स्वबीजेन वायव्ये स्थापयेच्चरून्।
तिष्ठन् पालाशसमिधौ मौनी वैश्वानरे क्षिपेत्।।६५।।
कुशमूलकयुक्ताभिः प्रोक्षिण्यद्भिः प्रदक्षिणम्।
पर्युक्ष्याग्निं प्रणीतायां निःक्षपेत् कुशमूलकम्।।६६।।
निधायं, दक्षिणं जानु भूमावग्निमुखं हुनेत्।
अन्वारब्धास्त्रुवेणाज्यं निर्धूमे हव्यवाहने।।६७।।
प्रजापतिं महाकालीं महालक्ष्मीं सरस्वतीम्।
एतदग्निमुखं प्रोक्तं मायाबीजपुरस्सरम्।।६८।।
संश्रवान् प्रोक्षणीपात्रे निःनिपेद्यज्ञसाधनान।
विदध्यात् कल्पितं होममुक्तेन हविषा शमी।।६९।।

कल्पितं सङ्कल्पितमित्यर्थः—

ततःस्विष्टकृतं दद्याद्धविषा स्वोज्ज्वलेऽनले।
मायाबीजं ब्रह्माणीमाहेश्वरीकौमारीवैष्णवीनारसिंहीऐन्द्रीचामुण्डायै विच्चे विष्टेते स्वाहा।

एष प्रोक्तो महादेवीमन्त्रः स्विष्टकृदाहुतौ।
आज्येन नवाहुतिकं मायाबीजादिनामभिः।।७०।।

नन्दारक्तदन्तिकाशाकम्भरीदुर्गाभीमाभ्रामरीकालीशिवदूतीचामुण्डायै प्रजापतिभ्यः।

गन्धपुष्पफलोपेतां कृत्वा यज्ञात्मिकां स्रुचम्।
ततः पूर्णाहुतिं दद्याद्घृतेनाच्छिन्नधारया।।७१।।
नवाक्षरेण मन्त्रेण महालक्ष्मीपरायणः।
ध्यात्वा यज्ञपुरोडाशममृतं देवदुर्लभम्।।७२।।
प्रोक्षणीपात्रमध्यस्थान्मन्त्रेणश्नाति संस्त्रवात्।
यस्मात् प्राशस्तं संस्रवपुरोडाशं प्राश्नामि सुखपुण्यदम्।।७३।। इति मन्त्रः।

सलिलेन प्रणीतायास्तीर्थध्यानपरायणः।
करोति मार्जनं दर्भैः शतेन श्लोकपाठतः।।७४।।
याः शिवाः शक्तयो याश्च ताभिश्च सवितासह।
याश्च याः सन्निधानस्थास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।।७५।। इति।।
संसृक्षोर्निखिलं विश्वं मुहुः शुक्रं प्रजापतेः।
मातरः सर्वभूतानामापो देव्यः पुनन्तु माम्।।७६।।
अलक्ष्मीं मलरूपां याः सर्वभूतेषु संस्थिताम्।
क्षालयन्ति जलस्पर्शादापो देव्यः पुनन्तु माम्।।७७।। इति मन्त्रः
अभिषिञ्चेदथात्मानं चतुर्भिश्चण्डिकास्तवैः।
शूलेन पाहि नो देवीत्यादिश्लोकचतुष्टयम्।।७८।।

ऋत्विककर्त्तृयजमानाभिषेके तु पूर्वोक्तश्लोकचतुष्टयमेव।

दानं दद्याद्विधानेन हेमधेन्वम्बरादिकम्।
सजपं होममावेद्य महालक्ष्मीं प्रणम्य च।।७९।।
शूलेन पाहि नो देवीत्येतैः श्लोकैः प्रदक्षिणम्।
विदध्यात् सुस्थिरो भूत्वा चाण्डिकाध्यानतत्परः।।८०।।

इत्येतैःशूलेन इत्यादिभिः तैरस्मात्रक्ष सर्वतः इत्यन्तैरित्यर्थः।

नमो देव्या इति श्लोकैः पञ्चभिर्ध्यानतत्परः।
कृत्वा पञ्चनमस्कारानुपविश्यासने शुभे।।८१।।
सर्वस्वरूपे इत्यादिषड्भिः श्लोकैः कृताञ्जलिः।
प्रार्थयेज्जगतां धात्रीं प्रणतः सन् हृदीप्सितम्।।८२।।
स्वशरीरे समारोप्य दद्यादस्यै विसर्जनम्। इति
अनेन विधिना यस्तु प्रकुर्याच्चण्डिकार्चनम्।
तस्य तुष्टा महालक्ष्मीः सर्वान् कामान् प्रयच्छति।।८३।।

।। इति होमविधिः ।।

प्रयोगसारे-

चण्डीपाठफलं राजन् श्रृणुष्व गदतो मभ।
एकावृत्त्यादिपाठानां प्रत्यहं पठतां नृणाम्।।८४।।
सङ्कल्पपूर्वं सम्पूज्य न्यस्याङ्गेषु मनून् सकृत्।
पश्चाद्बलिप्रदानेन फलमाप्नोति मानवः।।८५।।
उपसर्गोपशान्त्यर्थं त्रिरावृत्तं पठेन्नरः।
ग्रहदोषोपशान्त्यर्थं पञ्चावृत्तं वरानने!।।८६।।

महाभये समुत्पन्ने सप्तावृत्तमुदीरयेत्।
नवावृत्त्या भवेच्छान्तिर्मुच्येत् प्राणार्त्तिजाद्भयात् ॥८७॥
राजवश्याय भूत्यै च रुद्रावृत्तमुदीरयेत्।
अर्कावृत्त्या काम्यसिद्धिर्वैरिनाशश्च जायते ॥८८॥
मन्वावृत्त्या रिपुर्वश्यस्तथा स्त्रीवश्यतामियात्।
सौख्यं पञ्चदशावृत्त्या श्रियं प्राप्नोति मानवः ॥८९॥
कलावृत्त्या पुत्रपौत्रधनधान्यागमं विदुः।
राजभीतिविनाशाय वैरस्योच्चाटनाय च ॥९०॥
कुर्यात् सप्तदशावृत्तं तथाऽष्टादशकं प्रिये!।
महार्णवविमोक्षाय विंशावृत्तं पठेन्नरः ॥९१॥
पञ्चविंशावर्त्तनाच्च भवेद्बन्धविमोक्षणम्।
सङ्कटे समनुप्राप्ते दुश्चिकित्सामये तदा ॥९२॥
जातिध्वंसे कुलच्छेदे आयुषो नाश आगते।
वैरिवृद्धौ व्याधिवृद्धौ धननाशे तथा क्षये ॥९३॥
तथैव त्रिविधोत्पाते तथा चैवातिपातके।
कुर्याद्यत्नाच्छतावृत्तं ततः सम्पद्यते शुभम् ॥९४॥
विपदस्तस्य नश्यन्ति अन्ते याति परां गतिम्।
श्रियो वृद्धिः शतावृत्त्या राज्यवृद्धिस्तथा परा ॥९५॥
मनसा चिन्तितं देवि! सिद्ध्येदष्टोत्तराच्छतात्।
शताश्वमेधयज्ञानां फलं प्राप्नोति सुव्रते ॥९६॥
सहस्रावर्तनाल्लक्ष्मीरावृणोति स्वयं स्थिरा।
भुक्त्वा मनोगतान् कामान् नरो मोक्षमवाप्नुयात् ॥९७॥
यथाऽश्वमेधः क्रतुषु देवानां च यथा हरिः।
स्तवानामपि सर्वेषां तथा सप्तशतीस्तवः ॥९८॥
नातः परतरं स्तोत्रं किञ्चिदस्ति वरानने!।
भुक्तिमुक्तिप्रदं पुण्यं पावनानां च पावनम् ॥९९॥
अथ वा बहुनोक्तेन किमेतेन वरानने!।
चण्डिकायाः शतावृत्त्याः सर्वाः सिद्ध्यन्ति सिद्धयः ॥१००॥

अथ कात्यायनीतन्त्रोक्ताः कतिचित् प्रयोगा लिख्यन्ते। प्रतिमन्त्रमाद्यन्तयोः प्रणवं जपेन्मन्त्रसिद्धिः।

सप्रणवव्याहृतित्रयमादावन्ते तु विलोमं तदित्येव प्रतिश्लोकं कृत्वा शतावृत्तपाठेऽतिशीघ्रं सिद्धिः।

प्रतिश्लोकमादौ **जातवेदसे** इति ऋचं पठेत् सर्वकामसिद्धिः।
अपमृत्युवारणायादावन्ते च शतं **त्र्यम्बकं** जपेत्।
प्रतिश्लोकं **शरणागतदीनार्त्त** इति श्लोकं पठेत् सर्वकार्यसिद्धिः।
प्रतिश्लोकं **करोतु सा नः शुभ** इत्यर्धं पठेत् सर्वकामाप्तिः।
स्वाभीष्टवरप्राप्त्यै एवं **देव्या वरं लब्ध्वा** इति श्लोकं पठेत्।
सर्वापन्निवारणाय प्रतिश्लोकं **दुर्गे स्मृता** इति पठेत्
अस्य केवलस्यापि श्लोकस्यापि कामानुसारेण लक्षमयुतं सहस्रं शतं वा जपः।
सर्वाबाधा-इत्यस्य लक्षजपे श्लोकोक्तं फलम्।
इत्थं यदा यदा-इति श्लोकस्य लक्षजपे महामारीशान्तिः।
ततो वव्रे नृपो राज्य-इति मन्त्रस्य लक्षजपे पुनः स्वराज्यलाभः।
हिनस्ति दैत्यतेजांसि-इत्यनेन सदीपबलिदाने घण्टाबन्धने च बालग्रहशान्तिः।
आद्यावृत्तिमनुलोमेन पठित्वा ततो विपरीतक्रमेण पुनरनुलोमेन वामावृत्ति त्रय उक्तप्रकारेषु शीघ्रं सिद्धिर्भवति।
सर्वापन्निवारणाय **दुर्गे स्मृता** इत्यर्धम्।
ततो यदन्तिके यच्च दूरके इत्यृचं तदन्ते **दारिद्र्यदुःख** इत्यर्धमेव कार्यानुसारेण लक्षमयुतं सहस्त्रं शतं वा जपः।
मारणार्थम् **एवमुक्त्वा समुत्पन्ना** इति प्रतिश्लोकं पठेत्। मारणोक्तावृत्तिभिः फलंसिद्धिः।
ज्ञानिनामपि चेतांसि इति श्लोकत्रयमात्रेण सद्यो मोहनमित्यनुभवसिद्धम्।
प्रतिमन्त्रं तच्छ्लोकपाठे त्ववश्यम्।
रोगानशेषा इति श्लोकस्य प्रतिश्लोकपाठे सकलरोगनाशः तन्मात्रजपेऽपि समं फलम्।
इत्युक्त्वा सा तदा देवी गम्भीरा इति श्लोकस्य प्रतिश्लोक पाठे यथा जपे वा विद्याप्राप्तिः वाग्वैकृतेर्नाशश्च।
भगवत्या कृतं सर्वम्-इत्यादिद्वादशोत्तरशताक्षरो मन्त्रः सर्वकामदः सर्वापन्निवारणश्च।
देवी प्रपान्नर्त्तिहरे-इति श्लोकस्य यथाकार्यं लक्षायुतसहस्त्रशतान्यमे जपे प्रतिश्लोक पाठे वा सर्वापन्निवृत्तिः सर्वकामाप्तिश्च।
एषु प्रयोगेषु प्रतिश्लोकं दीपाग्रे केवलमेव वा नमस्कारकरणेऽतिशीघ्रं सिद्धिः अत्र सर्वत्र प्रयोगे त्रयोदशपात्रेषु एकस्मिन्नेव पात्रे वा त्रयोदशदीपाः प्रदेयाः।
प्रतिश्लोकं **कामबीजं** सम्पुटितस्यैकचत्वारिंशद्दिनं त्रिरावृत्तौ सर्वकामसिद्धिः एकविंशतिदिनपर्यन्तमुक्तरीत्या प्रत्यहं दशावृत्तौ वशीकरणम्।
मायाबीजं पुटितस्य **फट्पल्लव** सहितस्य सप्तदिनपर्यन्तं त्रयोदशावृत्तपठने उच्चाटनसिद्धिः।
तादृशस्यैव दिनचतुष्टयमेकादशवृत्तौ सर्वोपद्रवनाशः।
एकोनपञ्चाशद्दिनपर्यन्तं प्रतिश्लोक **श्रीबीजं** सम्पुटितस्य पञ्चदशावृत्तौ लक्ष्मी प्राप्तिः।

प्रतिश्लोकं वाग्भवबीजं सम्पुटितस्य शतावृत्त्या विद्याप्राप्तिः।

अथ परार्थे प्रयोगे-

ॐ पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्ववर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।

इति वैदिकमन्त्रं प्रत्यध्यायं प्रत्यावृत्ति वा पठेत्।

नवार्णमन्त्रपुटितप्रयोगस्तु कामनामात्रे कर्त्तव्यः।

तदुक्तं वाराहीतन्त्रादौ

शतमादौ शतं चान्ते जपेन्मन्त्रं नवाक्षरम्।
चण्डीसप्तशतीमध्ये सम्पुटोऽयमुदाहृतः।।१०१।।
सकामैः सम्पुटो जाप्यो निष्कामैः संपुटं विना।
सर्वकामप्रसिद्ध्यर्थं नवार्णपुटितं जपेत्।।१०२।। इति
ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै।। इति

अन्यस्तु वाराहीतन्त्रे—

वेदादिर्वाग्भवं चैव माया कामस्तथैव च।
पृथ्वी रेफो वामनेत्रं नादबिन्दुविभूषितम्।।१०३।।
माया कामो नमः पश्चान्मूलमन्त्र उदाहृतः।

अस्य पुरश्चरणमपि तत्रैवोक्तम्—

लक्षं जपेन्मूलमन्त्रं सर्वकामार्थसिद्धये।।१०४।। इति

कात्यायनीतन्त्रे-

स्थितिक्रमो भुक्तिकामे मुक्तिकामे च संहृतिः।
श्रीकामे पुष्टिकामे च सृष्टिक्रम उदाहृतः।।१०५।।

सृष्टिक्रमादयाश्च तत्रैवोक्ताः—

आदिमारभ्य प्रजपेत् सृष्टिक्रम इहोच्यते।
जपेच्छक्रादिमारभ्य शुम्भदैत्यबधावधि।।१०६।।
आद्याच्छक्रादिपर्यन्तं स्थितिक्रम उदाहृतः।
शेषमारभ्य आद्यन्तं संहारोऽयं क्रमो भवेत्।।१०७।।

मेरुतन्त्रे चरित्र त्रयप्रयोगसंख्यां यथाक्रममुक्त्वा—

एवं सप्तशतं चात्र प्रयोगाः परिकीर्तिताः।
तस्मात् सप्तशतीत्येतत् प्रोक्तं व्यासेन धीमता।।१०८।।

कात्यायनीतन्त्रे तु सप्तशतहोममन्त्रा एवास्य सप्तशतीत्वव्यवहारप्रयोजका इत्युक्तम्।

ते च मन्त्रास्तत्रैव—

मार्कण्डेयऋषिप्रोक्तप्रथमश्लोकतः प्रिये!।
व्योमादिवर्णसम्भूतो द्वितीयस्वरसंयुतः।।१०९।।

व्योम हकारस्तस्यादिः सकारः। द्वितीयस्वर आकारः। तेन सा इति।
तथा—

नृपान्तं प्रवदेन्मन्त्राः सर्वे चाष्टादश प्रिये!।
वैश्योवाच ततः श्लोका व्योमाद्याः पञ्च मन्त्रकाः।।११०।।

व्योमाद्य आद्यो येषामिति मृगनयनावत् समासः।

नृपस्योक्तिर्मान्तवर्णा द्वादशस्वरसंयुतः।

मान्तवर्णो यकारः। स च द्वादशस्वरेण ऐकारेण युक्तः

सकारो बिन्दुसंयुक्तश्चान्ते स मनुरीदृशः।
वैश्योवाच पुनर्देवि! स्वरैकादश आदितः।।१११।।

स्वरैकादश एकारः

वह्निबीजं बिन्दुयुक्तमन्ते स्यान्मनुपञ्चकम्।

वह्निबीजं रमिति।

मार्कण्डेय ऋषिप्रोक्तं मन्त्रत्रयमुदाहृतम्।
तादिवर्णं च भुवनस्वरयुग्वाहनं परम्।।११२।।

भुवनस्वर औः तद्युक्तं वाहनं वौ इति।

राजोवाचेति षण्मन्त्रा भादितान्ताः शुभानने!।
अथोवाच ऋषिर्ज्ञानमस्तीत्यादि सुरेश्वरि!।।११३।।
सर्वेश्वरेश्वरी चान्ते मन्त्रा वै द्वादश स्फुटाः।
राजोवाचेति भगवन्नादिरन्ते विदां वरम्।।११४।।
मन्त्रत्रयमिदं ख्यातं तत ऋषिरुवाच ह।
नित्यैव सा पदं चादौ प्रभुरन्तेऽष्टमन्त्रकाः।।११५।।
ब्रह्मोवाच ततश्च त्वं स्वाहादिश्च महासुरौ।
अन्ते पञ्चदशैते स्युर्मन्त्राः स्युः परमेश्वरि!।।११६।।
एवं स्तुतादि ऋष्युक्तिवान्तमन्त्राश्च सप्त वै।
ततो भगवदुक्तिश्च भवेतादिमनुद्वयम्।।११७।।
वञ्चितेति च ऋष्युक्तिर्मन्त्रौ द्वौ परमेश्वरि!।
ऋष्युक्तिश्च तथेत्यादि मन्त्रद्वयमुदाहृतम्।।११८।।
सर्वे श्लोकास्त्विहाध्याये अष्टयुक् सप्ततिः क्रमात्।
मध्ये चतुर्विंशतिका अर्धमन्त्राः प्रकीर्त्तिताः।।११९।।
सर्वाश्चाहुतयो ज्ञेयाश्चतुरुत्तरकं शतम्।
उवाचान्तास्तत्र बोध्याः मन्त्रा भुवनसंख्यकाः।।१२०।।

।। इति प्रथमचरित्रमन्त्रनिर्णयः ।।

ईश्वर उवाच

द्वितीये ऋषिरुवाचेति नवषष्ट्याहुतिः क्रमात्।
ततस्तृतीयेऽध्याये तु ऋषिरुवाचेति देशिकैः।।१२१।।
षट्त्रिंशच्च तथा मन्त्राः श्लोका ज्ञेया वरानने!।
देव्युवाचेति मन्त्रान्ते मन्त्रः श्लोको मतः प्रिये।।१२२।।
ऋषेरुक्तिः पुनः श्लोकाः पञ्चमन्त्राः सनातनाः।
एवमाहुतयस्तत्र चत्वारिंशच्चतुर्युतम्।।१२३।।
चतुर्थे क्रमतो देवि! ऋष्युक्तिः षट् च विंशतिः।
पुनस्तथैव ऋष्युक्तिः श्लोकौ द्वौ मन्त्ररूपिणौ।।१२४।।
एवं स्तुतेति मन्त्रोऽयमतिगुह्यः शुभानने!।
देव्युवाचेति व्रियतां मन्त्रोऽयं षोडक्षाक्षरः।।१२५।।
देवा ऊचुस्ततश्चोक्त्वा भगवत्या कृतं वदेत्।
मन्त्रोऽयं शतवर्णाढ्यो द्वादशोत्तरयुक् पुनः।।१२६।।
ततो ऋषिरुवाचेति इति प्रसादितेति च।
चतुः संख्यास्तु ते श्लोका मन्त्रास्तावन्त एव हि।।१२७।।
श्लोकाश्चतुर्थेऽध्याये तु षट्त्रिंशत् परमेश्वरि!।
अर्धमन्त्रद्वयेनैव चत्वारिंशद्द्वियुक् पुनः।।१२८।।
एवं मध्यचरित्रस्य पञ्चाशच्च शतोत्तरम्।
तथा पञ्चशतं मन्त्रा महालक्ष्म्या विभेदतः।।१२९।।

इति मध्यमचरित्रमन्त्रनिर्णयः।

ऋषिरुवाच त्रिपुरा विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः।
षण्मन्त्राः श्लोकरूपास्ते देवा ऊचुस्ततः परम्।।१३०।।
नमो देव्यादितः श्लोकास्त्रिंशद्विनम्नमूर्तिभिः।
विष्णुमायादितो भ्रान्तिरूपान्ते त्रीणि षष्टियुक्।।१३१।।
अवतारपृथङ्मन्त्रास्तेषां त्रिषष्टिराहुतीः।
चितिरुपेण मन्त्रेण आहुतित्रयमाचरेत्।।१३२।।
एवं मन्त्रा अशीतिस्ते ऋषिरुवाच इत्यथ।
एवं स्तवादियुक्तानां त्वया कस्मान्न गृह्यते।।१३३।।
मन्त्राः सप्तदशैते तु ऋष्युक्तिर्निशम्येति वै।
इत्यादि त्रि तयैर्मन्त्रैः शुद्धभेदाः प्रकीर्त्तिताः।।१३४।।
अथ दूत उवाचेति देवि! दैत्येश्वरः परम्।
इत्यादि नवमन्त्राश्च पुना ऋषिरुवाच ह।।१३५।।

इत्युक्तेत्यादिमन्त्रेण एकेन च सरस्वती।
देव्युवाचेति श्लोकास्तु चत्वारो मन्त्रभेदतः।।१३६।।
दूत उवाचेति पुनरवलिप्ताऽसि इत्यथ।
मन्त्राश्चत्वारो विज्ञेया देव्युवाच ततः परम्।।१३७।।
एवमेतद्बली शुम्भो स च युक्तं करोतु यत्।
इति मन्त्रद्वयं श्लोका अर्धमन्त्राश्च ते नव।१३८।।
एकोनत्रिंशच्च शतादधिका मन्त्ररूपकाः।

इति पञ्चमोऽध्यायः।

ऋषिरुवाचेत्याकर्णेति श्लोकाश्चत्वार ईरिताः।।१३९।।
पुनः ऋषिरुवाचेति तेनाज्ञसप्तस्ततः परम्।
मन्त्रत्रयमिदं प्रोक्तं देव्युवाचेति वै तथा।।१४०।।
दैत्येश्वरेण प्रहितो, एको मन्त्रः प्रकीर्त्तितः।
ततश्च ऋषिरुवाच इत्युक्तः सोऽभ्यधावत।।१४१।।
इत्यादिद्वादशश्लोकाः षष्ठेऽध्याये प्रकीर्त्तिताः।
चतुर्विंशतिभेदास्ता देवताहुतयः क्रमात्।।१४२।।

इति षष्ठोऽध्यायः ।

ऋष्युक्तिराज्ञ-इत्यादित्रयोविंशतिमातरः ।
ऋषिरुवाच तावानीतौ मातृभेदद्वयं क्रमात्।।१४३।।
सप्तविंशत्यत्र देवि! भवन्त्याहुतयः क्रमात्।
अत्राध्यायद्वये देवि! धूम्राक्षी तु प्रकीर्त्तिता।।१४४।।

इति सप्तमोऽध्यायः।

ऋषिश्चण्डे च निहते इत्याध्यायावसानकम्।
त्रिषष्ट्याहुतयः प्रोक्ता एकात्वर्धाहुतिर्मता।।१४५।।
रक्ताक्षी देवता अष्टौ महाशक्त्यः प्रकीर्त्तिताः।

इत्यष्टमोऽध्यायः।

राजा विचित्रमित्यादि श्लोकद्वयमुदाहृतम्।।१४६।।
ऋषिश्चकार कोपं हि इत्यादिश्लोकरूपतः।
एकचत्वारिंशदिह आहुतिर्नवमे शुभे!।।१४७।।
देवता भैरवी तावच्छृणु गोप्यं वरानने!।

इति नवमोऽध्यायः ।

ऋषिर्निशुम्भनिहतमित्यादिद्वयमन्त्रकम् ।।१४८।।
ततो देवीति मन्त्रौ द्वौ एकैवाहं मनूत्तमौ।
पुनर्देव्येकमन्त्रेण व्यक्तमन्त्रा उदीरिताः।।१४९।।

ऋषिस्ततः प्रववृत्ते सार्धद्वाविंशतिस्त्वयम्।
द्वात्रिंशन्मनवस्तत्र एको ह्यर्धमनुर्मतः।।१५०।।
प्रथमं सिंहमासीना शूलपाशविधारिणी।
मुख्या चतुर्भुजा बाणाचापहस्ता शुभेक्षणा।।१५१।।

इति दशमोऽध्यायः।

ऋषिः सुमेधा विख्यातः प्रोक्तो देव्या हते शुभे।
चतुस्त्रिंशत् तथा श्लोका मन्त्रास्तत्संख्यकाश्च ते।।१५२।।
ततो देव्येकमन्त्रेण वरदाऽहं सुरेश्वरि!।
देवा ऊचुस्तथा सर्वबाधाप्रशमनं तथा।।१५३।।
श्लोकेनैकेन देवेशि! देव्युवाच ततः परम्।
वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्तेत्यादिश्लोकाश्चतुर्दश।।१५४।।
सार्धसर्वाहुतिर्देवि पञ्चाशत् पञ्चसंयुताः।
वैष्णवी देवता ह्यत्र महागरुड़वाहिनी।।१५५।।

इत्येकादशोऽध्यायः।

देव्युवाचेति च तत एभिः स्तवैश्च मां सदा।
दूरेत्यर्धेन सहिता अष्टाविंशतिरूपकाः।।१५६।।
ततश्च ऋषिरुवाच इत्युक्त्वा श्लोकमादितः।
ऊर्ध्वयुग्दशभिः श्लोकैर्मन्त्रास्तत्संख्यका मताः।।१५७।।
एवं तु द्वादशाध्यायै एकचत्वारिंशदाहुतीः।

इति द्वादशोऽध्यायः।

ततस्त्रयोदशेऽध्याये ऋषिरुवाच इत्यथ।।१५८।।
एतत् ते कथितं भूपेत्यादिसार्धत्रयं मनुः।

मनुचतुष्टयमित्यर्थः

मार्कण्डेय उवाचेति ततो वव्रे मनुद्वयम्।।१५९।।
देव्युवाच पुनश्चैव स्वल्पश्लोकत्रयेण वै।
अर्धानामेव मन्त्रत्वाद्भवत्यत्र षडाहुतिः।।१६०।।

षट्संख्याहुतिरित्यर्थः

ततो मार्कण्डेय उवाचेति दत्त्वा तयोरिति।
द्वौ मन्त्रौ पुनरुच्चार्य सावर्णिर्भविता मनुः।।१६१।।
एकोनत्रिंशत्संख्याकाऽऽहुतिरत्र विधीयते।
एवं त्रयोदशाध्याये होमे तर्पणकर्मणि।।१६२।।

शतानि सप्तसंख्यानि तव प्रोक्तानि शैलजे।
सकारादिनकारान्तो मनुः परमदुर्लभः।।१६३।।
स संप्रदायविधिना ज्ञातव्यो मम वल्लभे!
अन्यथा विफलो मन्त्रः सत्यं सत्यं मयोदितः।।१६४।।

विधिनेति। अष्टम्यां वा चतुर्दश्यामिति कीलकेनेत्यर्थः। तत्र होमे स्वाहान्ता एते मन्त्राः पूजायां नमोऽन्ताः। तर्पणे तर्पयाम्यन्ताः।

केचित् तन्मन्त्रं पठित्वा **तत्तदध्यायदेवतायै स्वाहा** इत्येवम्।

तत्तदध्यायहोमे **तत्तदध्यायदेवतां तर्पयामि** इति तर्पणे।

तत्तदध्यायदेवतायै नमः इति पूजने इत्याहुः।

एवं होमाशक्तौ।

जयन्ती मन्त्रेण **नमो देव्या** इति मन्त्रेण **सर्वमङ्गल** इति मन्त्रेण वा होमपूजा तर्पणानि।

जुहुयात् स्तोत्रमन्त्रैर्वा चण्डिकायै शुभं हविः-इत्यपि (रहस्ये)-।

आदौ तु कवचं कृत्वा पश्चात् सप्तशतीं यजेत् इत्यादि वचनात्।

कवचपाठे क्रियमाणे तच्छ्लोकैराहुतयो न देयाः।

अन्धकश्च पुरा दैत्यो दुर्गाहोमपरायणः।
कवचाहुतिमन्त्रेण महेशेन निपातितः इति तन्त्रान्तरवचनात्।

कवचं चात्र शूलेन पाहि नो देवी इत्यादि श्लोकचतुष्टयरूपमिति केचित्।

तत्र कात्यायनीतन्त्र विरुद्धे कात्यायनीतन्त्रोक्तमन्त्रविभाग एवाभियुक्तैः स्पष्टीकृत्याभिदर्शितः।

तथा हि-

अष्टसप्त्युत्तरं तु श्लोकानां शतपञ्चकम्।
प्रोक्तं सप्तशतीस्तोत्रे तत्सप्तशतसंख्यया।।१६५।।
विभज्य जुहुयान्मन्त्रमिति कात्यायनीमतम्।
मार्कण्डेय उवाचैकः सावर्ण्याद्यास्ततः परम्।।१६६।।
श्लोकमन्त्रा सप्तदश अर्धश्लोकात्मकस्ततः।
एकोनविंशदेवं स्युर्वैश्योक्तिर्विंशतिस्तथा।।१६७।।
पुनरर्धं पुनः श्लोकं त्रयमर्धं पुनर्भवेत्।
पञ्चविंशतिसंख्या स्याद्राजा षड्विंशतिस्तथा।।१६८।।
अर्धश्लोकात्मकं मन्त्रद्वयमर्धं पुनर्भवेत्।
एकोनत्रिंशदेव तु मन्त्रसंख्याः प्रकीर्त्तिताः।।१६९।।
पुनरर्धं पुनः श्लोकत्रयमर्धं पुनर्भवेत्।
मार्कण्डेयः पुनश्चार्धश्लोकः श्लोकात्मकः पुनः।।१७०।।

अर्धश्लोकात्मको मन्त्रो राजार्धश्लोकमन्त्रकः।
मन्त्राश्चत्वारिंशदेव श्लोकमन्त्रचतुष्टयम्।।१७१।।
पुनरर्धमृषिश्चार्धश्लोकमन्त्राः पुनर्दश।
पुनरर्धं पुना राजा एकोना षष्टिरुच्यते।।१७२।।
पुनरर्धं पुनः श्लोकः पुनरर्धं पुना ऋषिः।
पुनरर्ध पुनः श्लोकाः षण्मन्त्राः पुनरर्धकाः।।१७३।।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः।
इत्येव पाठो मन्त्राणामेकसप्ततिरुच्यते।।१७४।।
ब्रह्मार्धश्लोकमन्त्रोऽथ श्लोकमन्त्रास्त्रयोदश।
अर्धश्लोकः पुनः श्लोक ऋषिः श्लोकमन्त्रास्तु पञ्च वै।।१७५।।
पुनरर्धं तु मन्त्राणां सपञ्चनवतिः स्मृताः।
भगवानर्धमन्त्रौ द्वौ ऋषिः श्लोकार्धकं पुनः।।१७६।।
श्लोकः पुना ऋषि श्लोकद्वयं मन्त्रद्वयं भवेत्।
श्लोकानामष्टसप्तत्या चतुर्भिरधिकं शतम्।।१७७।।
अध्यायादावेव ऋषिरुवाचेति सकृन्मनुः।
अष्टषष्टिमिताः श्लोकास्तावन्तो मनवो मताः।।१७८।।
एकोनसप्ततिः सर्वेऽध्याये मन्त्रा द्वितीयके।
आदावृषिरुवाचैकं पञ्चविंशत् ततः परम्।।१७९।।
निहन्यमानाद्याः श्लोका मुखरागाकुलाक्षराः।
इत्यन्ता देव्युवाचैको गर्ज गर्जेति चापरः।।१८०।।
श्लोको ऋषिरुवाचेति पुनश्च श्लोकपञ्चकम्।
चतुश्चत्वारिंशदैवं सर्वे मन्त्रास्तृतीयके।।१८१।।
आदावृषिरुवाचेति शक्राद्याः श्लोकमन्त्रकाः।
षड्विंशास्तु ऋषिः श्लोकद्वयं देवी ततः परम्।।१८२।।
व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम्।
इत्यर्धश्लोकमन्त्रोऽथ देवा ऊचुस्ततः परम्।।१८३।।
भगवत्या कृतं सर्वमित्यर्धश्लोकमन्त्रकः।
यदयं नियताद्यं च श्लोकमन्त्रत्रयं भवेत्।।१८४।।
ऋषिश्लोकास्तु चत्वारो मनवः परिकीर्त्तिताः।
षट्त्रिंशच्छ्लोककेऽध्याये चत्वारिंशद्द्वयाधिकम्।।१८५।।
षट्सप्ततिश्लोकयुक्तेऽध्याये मन्त्रास्तु पञ्चमे।
एकोनत्रिंशदधिकं शतं कात्यायनीमते।।१८६।।

आदौ ऋषिरुवाचेति पुरा शुम्भादयश्च फट्।
श्लोकमन्त्रास्ततो देवा ऊचुश्चैवाष्टमो मनुः।।१८७।।
नमो देव्यादिकाः श्लोका भ्रान्त्यन्तास्तेषु मन्त्रकाः।
प्रतिश्लोके त्रयोमन्त्रा ज्ञेयास्ते च त्रिषष्टिकाः।।१८८।।
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायोति शब्दिता।
नमस्तस्यै इति प्रोक्तो विंशत्यक्षरको मनुः।।१८९।।
नमस्तस्यै इति प्रोक्तो द्वितीयश्चतुरक्षरः।
अष्टाक्षरस्तृतीयोऽपि नमस्तस्यै नमो नमः।।१९०।।
एवं द्वाविंशतिश्लोके ज्ञेयं मन्त्रत्रयं बुधैः।
पुनः श्लोकात्मको मन्त्रस्त्रिमन्त्रः श्लोककः पुनः।।१९१।।
त्रयोविंशच्छ्लोककेषु मन्त्रा वै सप्तषष्टिकाः।
पूर्वैस्त्रयोदशैर्मन्त्रैः सहाशीतिरुदाहृता।।१९२।।
स्तुता सुरैरिति श्लोकद्वयं चैव पुना ऋषिः।
पुनः सप्तदशश्लोका ऋषिः श्लोकत्रयं ततः।।१९३।।
दूतश्चैव नव श्लोका ऋषिरेकोऽम्बिका ततः।

एक इत्यस्यैक श्लोक इत्यर्थः—

चतुः श्लोकी पुनर्दूतश्चतुःश्लोकी पुनः शिवा।।१९४।।
श्लोकद्वयं मिलित्वा तु चत्वारिंशन्नवाधिकम्।
अशीत्यापि च संयोग एकोनत्रिंशताऽधिकम्।
शतमेवं तु विज्ञेयमाहुतीनां च पञ्चमे।।१९५।।
विंशतिश्लोकसंयुते षष्ठेऽध्याये प्रकीर्त्तिता।
सर्वे श्लोका मन्त्ररूपा देव्ये काऽथ ऋषित्रयम्।।१९६।।
चतुर्विंशतिमन्त्राणामित्येवं परिकीर्त्तितम्।
पञ्चविंशच्छ्लोकयुक्तेऽध्याये मन्त्रास्तु सप्तमे।।१९७।।
सर्वे मन्त्राः श्लोकरूपा ऋष्युवाचद्वयं ततः।
सप्तविंशतिरेवं तु मन्त्रसंख्या प्रकीर्त्तिता।।१९८।।
सार्धैकषष्टिश्लोकाद्येऽष्टमेऽध्याये प्रकीर्त्तिताः।
एकषष्टिश्लोकमन्त्रा अन्तेऽर्धश्लोकमन्त्रकः।।१९९।।
आदावेक ऋषिश्चैव त्रिषष्टिर्मन्त्रसंततिः।
एकोनचत्वारिंशद्भिः श्लोकैर्युक्ते समीरिताः।।२००।।
अध्याये नवमे मन्त्रास्तावन्तोऽथ मनुद्वयम्।
राजा ऋषिश्चेति चैकचत्वारिंशन्मनुस्त्वयम्।।२०१।।

सार्धसप्तान्वितैर्विंशच्छ्लोकैस्तु दशमेऽन्विते।
सप्तविंशतिमन्त्रास्तु श्लोकरूपास्ततोऽन्तिमः।।२०२।।
अर्धश्लोकात्मको मन्त्र ऋष्युवाचद्वयं तथा।
देव्युवाचद्वयं चैव द्वात्रिंशन्मन्त्रसंग्रहः।।२०३।।
श्लोकानां सार्ध पञ्चाशज्ज्ञेयमेकादशे स्फुटम्।
पञ्चाच्छ्लोकमन्त्रास्तदन्तेऽर्धश्लोकमन्त्रकः ।।२०४।।
शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि।
एषोऽर्धमन्त्र इत्याहु केचिदत्र विचक्षणाः।।२०५।।
देवीद्वयमृषिश्चैको देवा एकमितीरितम्।
पञ्चाधिकं तु पञ्चाशन्मन्त्रा ज्ञेयाः परिस्फुटम्।।२०६।।
अष्टत्रिंशच्छ्लोकयुक्तेऽप्यध्याये द्वादशात्मके।
चत्वारिंशच्च एकश्च मन्त्रास्तत्राहुतिद्वयम्।।२०७।।
अर्धश्लोकात्मकं श्लोकाः सप्तत्रिंशन्मिता ऋषिः।
देव्युवाचेति चैवैकमेवं संख्यास्फुटोदिता।।२०८।।
त्रयोदशे सार्धसप्तदशश्लोकाः प्रकीर्तिताः।
ऋषिरुवाचेत्यारभ्य भोगस्वर्गापवर्गदाः।।२०९।।
इत्यन्ताः पञ्चमन्त्रास्ते मार्कण्डेयस्ततः परम्।
इति तस्य वचः श्रुत्वेत्यर्धमन्त्रः प्रकीर्तितः।।२१०।।
श्लोकमन्त्रास्ततो ज्ञेयाः पञ्चैवाथार्धमन्त्रकम्।
देव्युवाचेति मन्त्रोऽयं ततः श्लोकस्तु मन्त्रकः।।२११।।
मार्कण्डेयस्ततः मन्त्रः श्लोकौ मन्त्रद्वयं ततः
ततो देवीषडर्धानि सप्त मन्त्राः प्रकीर्त्तिताः।।२१२।।
मार्कण्डेयस्ततः पश्चाद्द्वयं मन्त्रद्वयं स्मृतम्।
आवृत्त्या त्वधिको मन्त्रः सावर्णिर्भविता मनुः।
एकोनत्रिंशत्संख्याका मन्त्रा अत्र स्मृता बुधैः । इति।।।२१३।।

अथ प्रसङ्गात् प्रश्नविधिरुच्यते तन्त्रविधान मुक्तावलीधृत वचनानि।

त्रयोदशदलं पद्मं लिखित्वा सुमनोहरम्।
एकाङ्कादिक्रमेणाङ्कैर्दलानि परिपूरयेत्।।२१४।।
प्रत्यध्याये श्लोकसंख्याः पृथग्लेख्याश्च पंक्तिशः।
पूजयेत् पुस्तके दुर्गां नवार्णेन विधानवित्।।२१५।।
देवि दुर्गे नमस्तुभ्यं सर्वज्ञे सर्वदर्शिनि।
सिद्धिकार्यस्य वा सिद्धिं सत्यं मन्त्र प्रदर्शय।।२१६।।

एवं संप्रार्थ्य पुष्पं वा फलं वाऽक्षतमेव वा।
कुमार्या वा शिशोर्हस्तादध्यायङ्केनिधापयेत्।।२१७।।
विदित्वा चैवमध्यायं तत्पद्याङ्के निधापयेत्।
श्लोकं ज्ञात्वा ततो मन्त्री वाचयीत स्फुटाक्षरम्।।२१८।।
श्लोकस्यार्थानुसारेण ज्ञेयं विज्ञैः शुभाशुभम्।
वरदानार्थकाः श्लोका देवीतुष्ट्यर्थकाश्च ये।।२१९।।
त्राणाभ्युपगमार्क्षाश्च भाविभव्यार्थकाश्च ये।
देवोत्सवाभिधेया ये श्लोकास्ते सिद्धिसूचकाः।।२२०।।
दैत्यानां संख्ययो यत्र देवीविक्रमवर्णनम्।
अमर्षवर्णनं देव्या असुरेषु रणाजिरे।।२२१।।
एवं विधाश्च ये श्लोकाः संग्रामविजयप्रदाः।
प्रार्थनार्थाश्च ये श्लोकाः स्तोत्ररूपास्तथैव च।।२२२।।
सूचयन्ति च ते सिद्धिं दीर्घकालविलम्बिनीम्।
यदि स्यादुत्तरश्लोको वरदानार्थकस्तथा।।२२३।।
सिद्धिमीदृगपि श्लोकस्तुर्णमेवाभिशंसति।
आपदो वर्णनं तस्या वेदनं च सुपर्वणाम्।।२२४।।
भूभृद्विशोश्च संवादो वर्णन विपदस्तयोः।
दूतवाक्यं च दैत्यानां विक्रमस्य च वर्णनम्।।२२५।।
प्रयाणवर्णनं तेषां कार्यनाशस्य सूचकम्।।२२६।।

आपद इति सुपर्वणामादौ वर्णनमित्यन्वयः। तस्य आपदो वेदनं ज्ञानं कथनमिति यावत्।

स्वर्णान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि।
विचरन्ति इत्यादिरूपमित्यर्थः।
केचिदिष्टमनिष्टं वा श्लोकानां वेदयन्ति च।
तादृशश्लोकलाभे तु पुनः प्रश्नं समाचरेत्।।२२७।।

।। इति श्रीमन्महेश्वरानन्द विरचिते
श्रीदुर्गामन्त्रराजकल्पतन्त्र द्वितीयोऽध्यायः।।२।।

●

अथ तृतीयोऽध्यायः

अथ जयदुर्गामन्त्रः

श्रीशिव उवाच

ध्यायेद्दुर्गां जयाख्यां गजमुखजननीं विश्वरूपां भवानीं
हेरम्बं पाययन्तीं स्तनमनवरतं रत्नसिंहासनस्थाम्।
ब्रह्माद्यैर्देववृन्दैर्युगकरकलितां सेवितां सिद्धसंघै
रत्नालङ्कारपूरां परमशिववधूमभ्रवर्णां त्रिनेत्राम्।।१।।
एवं ध्यात्वा महादेवीं मनुं तस्या जपेत् सुधीः।
अथातः संप्रवक्ष्यामि जयदुर्गामनुं प्रिये।।२।।
यस्याः प्रसादमात्रेण स्वयं सदाशिवो भवेत्।
दुर्गे दुर्गे पदं चोक्त्वा रक्षिणीति पदं ततः।।३।।
तारादिवह्निजायान्तो जयदुर्गामहामनुः।
पातिमध्यगतं कृत्वा न्यसेत् मन्त्रपदं बुधः।।४।।
रक्षाकरीयं कथिता जयदुर्गा वर्मसंयुता।
श्यामां त्रिलोचनां ध्यात्वा ह्यात्मनं च चतुर्भुजाम्।।५।।
शङ्खचक्रेषु शूलानि वहन्तीं रौद्ररूपिणीम्।
युद्धे च व्यवहारादौ जयादौ तज्जपेन्नरः।।६।।
ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षिणि स्वाहा हूँ हूँ हूँ।
जयां श्रीं पूजयेन्नित्यां खड्गं च छुरिकां तथा।
जयदुर्गामनुः प्रोक्तः कथ्यते चापरो मनुः।।७।।

श्रीशिव उवाच

आग्नेयमभिधास्यामि मन्त्रं सर्वार्थसाधकम्।
मारीचिः काश्यपः प्रोक्तो मनुरस्य महामनोः।।८।।
त्रिष्टुप्छन्दो देवताऽत्र जातवेदोऽग्निरीरितः।
नवभिः सप्तभिः षड्भिः सप्तभिः पुनरष्टभिः।
सप्तभिर्मूलमन्त्रार्णैः षडङ्गविधिरीरितः।।९।।

षडङ्गन्यासः—जातवेदसे हृदयाय नमः। सोममरातीयतो शिरसे स्वाहा। निदधाति वेदः शिखायै वषट्! स नः परिषदति कवचाय हुं। दुर्गाणि विश्वानावेव नेत्रत्रयाय वौषट्। सिन्धु दुरितात्यग्निः अस्त्राय फट्। इति षडङ्गानि।

अथ मन्त्रः-

जातवेदसे सुनवास सोममरातीयतो निदधाति वेदः।
स नः परिषदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।।१०।।

इति आग्नेय मन्त्र इति चतुश्चत्वारिंशदक्षरं ज्ञेयम् इति मूलेनैव षडङ्गानि।

अङ्गुष्ठगुल्फजङ्घासु जानुनोरुयुग्मके।
कट्यन्धुनाभिषु हृदि स्तनयोः पार्श्वयोर्द्वयोः।।११।।
पृष्ठे च स्कन्धयोर्मध्ये बाहुमूलेऽपि बाहुषु।
प्रकूर्परप्रकोष्ठेषु मणिबन्धतलेषु च।।१२।।
मुखनासाक्षिकर्णेषु गण्डमस्तिष्कमूर्द्धसु।
क्रमेण विन्यसेद् वर्णान् विद्वान् मन्त्रसमुद्भवान्।।१३।।
शिरोललाटनयनकर्णौष्ठरसनासु च।
सकण्ठबाहुहृत्कुक्षिकटिगुह्योरुजानुषु।
जङ्घयोः पादयोर्न्यसेत् पदान्यस्य मनोः सुधीः।।१४।।
अत्राक्षरविन्यासे द्वयोः स्थाने एकमक्षरम्। पदन्यासे
चोच्चरेदेकं बाह्वोरेकमुरुजानुजङ्घाचरणद्वयेषु चैकेकं न्यसेत्।।१५।।
विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां।
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्र गदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं।
विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां स्मरेत्।।१६।।
दक्षिणपार्श्वे चक्रखड्गशरमुसलवराणि वामपार्श्वे
शङ्खखेटकधनुरभयानि क्वापि।
मन्त्रवर्णसहस्राणि जपेन्मन्त्रं विशालधीः।
तदन्ते तिलसिद्धार्थचित्रमूलैः समिद्वरैः।।१७।।
क्षीरद्रुमाणामाज्येन हविषाक्तैर्घृतान्वितैः।
चतुश्चत्वारिंशदाढ्य चतुश्शतसमन्वितम्।।१८।।
चतुःसहस्त्रं जुहुयादर्चिते हव्यवाहने।
मण्डले सर्वतोभद्रे षट्कोणाङ्कितकर्णिके।
विधिना वक्ष्यमाणेन पीठं देव्याः प्रपूजयेत्।।१९।।
षड्गुणितं यन्त्रं कृत्वा कोणेषु दुर्गाबीजमालिख्यं।

बहिर्वीथ्यादिकं परिकल्प्य–

जयाख्यां विजयां भद्रां भद्रकालीमनन्तरम्।
सुमुखीं दुर्मुखीं संज्ञां पश्चाद् व्याघ्रमुखीं पुनः।।२०।।
अथ सिंहमुखीं दुर्गां नवशक्तीः प्रपूजयेत्।
आसनं सिंहमन्त्रेण दद्यादुक्तेन देशिकः।।२१।।
ॐ वज्रनखदंष्ट्रायसिंहाय नमः।
मूर्तिमूलेन सङ्कल्प्य तस्यामावाह्य पूजयेत्।
सर्वविद्यामयी ब्रह्मविद्यामन्नपूर्णान्तर्गतामुच्यते।।२२।।
षडङ्गानि यथापूर्वं केशरेष्वर्चयेत् सुधीः।
श्याादिपादाष्टकोत्पन्ना मूर्तयोऽर्च्या बहिः पुनः।।२३।।
जातवेदाः सप्तजिह्वो हव्यवाहनसंज्ञकः।
अश्वोदरजसंज्ञोऽन्यः पुनर्वैश्वानराह्वयः।।२४।।
कौमारतत्त्वतेजाः स्यात् विश्वमुखो देवमुखस्ततः।
ततो भूसलिलाग्निवाय्वथानन्तनमोऽन्वितान्।।२५।।
चतुर्दिक्षु समभ्यर्च्य कोणेष्वेतत् कलाः पुनः।
ततश्च पूर्वादिदिक्षु पृथिव्यादिचतुष्टयम्।।२६।।
निवृत्तिश्च प्रतिष्ठा च विद्या शान्तिरितीरिताः।
कलाचतुष्टयं कोणेषु संपूज्य यथाविधि।।२७।।
पूर्वादिदिक्षु संपूज्य जालाद्या वर्णशक्तयः।
जागता तपनी वेदगर्भा दहनरूपिणी।।२८।।
सेन्दुखण्डा शुम्भहन्त्री नभश्चारिण्यनन्तरम्।
वागीश्वरी मदवहा सोमरूपा मनोजवा।।२९।।
मरुद्वेगा रात्रिसंज्ञा तीव्रकोपा यशोवती।
तोयात्मिका पुनर्नित्या दयावत्यपहारिणी।।३०।।
तिरस्क्रिया वेदमाता तत्प्रिया मदनप्रिया।
समाराध्या नन्दनी च परा विश्वमर्दिनी।।३१।।
षष्ठी च दण्डिनी तिग्मा दुर्गा गायत्र्यनन्तरम्।
निरवद्या विशालाक्षी श्वासोद्वाहा च नादिनी।।३२।।
वेदना वह्निगर्भा च सिंहवाहाह्वया तथा।
धुर्या दुर्विषहा पश्चादद्रिजा तापहारिणी।।३३।।

त्यक्तदोषा निःसपत्ना चत्वारिंशच्चतुर्युताः।
लोकपालांस्तथाऽभ्यर्चेत् वज्राद्यायुधसंयुतान्।।३४।।
इत्थं पूजादिभिः सिद्धे मन्त्रेऽस्मिन् साधकोत्तमः।
आग्नेयास्त्राधिकारी स्यात् तद्विधानमुदीर्यते।।३५।।
आग्नेयास्त्रमिति प्रोक्तं विलोमपठितो मनुः।
पूर्वोक्ता एव ऋष्याद्या मन्त्रस्य परिकीर्तिताः।।३६।।
प्रतिलोमक्रमादस्य षडङ्गानि प्रकल्पयेत्।
मन्त्रन्यासपदन्यासौ विदध्यात् प्रतिलोमतः।।३७।।
ध्यानभेदान् विजानीयाद् गुर्वादेशान्न चान्यथा।
पूर्ववज्जपक्लृप्तिः स्याद् जुहुयात् पूर्वसंख्यया।।३८।।
पञ्चगव्यसुपक्वेन चरुणा तस्य सिद्धये।
अर्चनं पूर्ववत् कुर्यात् तत् शक्तीः प्रतिलोमतः।।३९।।
सर्वत्र देशिकः कुर्यात् गायत्र्या द्विगुणं जपम्।
क्रूरकर्माणि कुर्वीत प्रतिलोमविधानतः।।४०।।
शान्तिकं पौष्टिकं कर्म कर्तव्यमनुलोमतः।
प्रयोगकाले प्रजपेदष्टौ पादान् विलोमतः।।४१।।
शोधितो जायते पश्चाद् मन्त्रोऽयं विधिनाऽमुना।
श्यादिः पञ्चाक्षरः पादो ज्ञेयो ज्ञानेन्द्रियात्मकः।।४२।।
धूमाद्योऽन्यः पञ्चवर्णः स्मृतः कर्मेन्द्रियात्मकः।
चाद्यस्तृतीयः पञ्चार्णः पञ्चभूतमयः स्मृतः।।४३।।
त्याज्यः सप्ताक्षरः पादश्चतुर्थो धातुरूपकः।
दः पूर्वः पञ्चमः पाद ऊर्मिरूपः षडक्षरः।।४४।।
तोवर्णादिः षडर्णोऽन्यः षाट्कौशिकमयो मतः।
सो पूर्वः पञ्चवर्णोऽन्यः शब्दादिमय ईरितः।।४५।।
सेवर्णाद्यष्टमो ज्ञेयः पञ्चार्णो वचनादिकः।
एवं तत्त्वसमायोगात् वादक्लृप्तिरुदाहृता।।४६।।
तत्तत्पादाक्षरोत्पन्नास्ताराद्या वह्निदेवताः।
प्रधानमूर्तिप्रतिमाः स्वस्ववर्णोदितप्रभाः।।४७।।
प्रज्वलत्केशवदना भीमदंष्ट्रा भयानकाः।
देवता इन्द्रियोत्पन्ना ऊर्ध्वदृष्टय ईरिताः।।४८।।
देवता भूतपादोत्थास्तिर्यग्वक्त्राः प्रकीर्तिताः।
धातुरूपाक्षरोत्पन्ना उदयानलशोभिताः।।४९।।

ऊर्मिजा ऊर्ध्ववदनाः केशोत्थास्तिर्यगाननाः।
एताःसर्वाः स्मृताः क्लीबा इन्द्रियार्थोद्भवाः स्त्रियः।।५०।।
अथ तिर्य्यङ्मुखोपेता ईरितावर्णदेवताः।
स्वाभिमुख्यः स्मृताः सौम्ये पराङ्मुख्योऽन्यकर्मणि।।५१।।
आद्यसंख्याः समुत्पन्ना देवता ज्वलिताननाः।
याभिर्मन्त्री दहेत् शत्रोः राज्यं सगिरिकाननम्।।५२।।
अस्त्रं मनुष्यनक्षत्रैष्वारभेत विचक्षणः।
आसुरेषु प्रयुञ्जीत देवतासु च संहरेत्।।५३।।
पूर्वोत्तरत्रयं पश्चात् भरण्यार्द्रा च रोहिणी।
इमानि मानुषण्याहुर्नक्षत्राणि मनीषिणः।।५४।।
ज्येष्ठा शतभिषा मूला धनिष्ठाश्लेषकृत्तिका।
चित्रा मघा विशाखाः स्युस्तारा राक्षसदेवताः।।५५।।
अश्विनी रेवती पुष्या स्वाती हस्ता पुनर्वसुः।
अनुराधा मृगशिरः श्रवणं देवतारकाः।।५६।।
देवता इन्द्रियोत्पन्ना ऊर्ध्वदृष्टय ईरिताः।
उपक्रमेत् नन्दासु रिक्तास्वस्त्रं विसर्जयेत्।।५७।।
भद्रास्वारोहणं कुर्यात् जयास्वानन्त्यमुत्तमम्।
उपक्रमो भौमवारे शनिवारे विसर्जनम्।।५८।।
प्रतिसंहरणं वारे गुरोः शुक्रस्य वा भवेत्।
स्थिरेषु राशिष्वारम्भश्चरेषु च विसर्जनम्।।५९।।
अस्त्रसंहरणं कुर्यादुभयात्मसु देशिकः।
कृष्णपक्षेऽनलेनास्त्रं विसृजेच्छशिना पुनः।।६०।।
शुक्लपक्षे क्रमादस्त्रं पुनरात्मनि संहरेत्।
भानुना मोक्षसंहारौ कुर्यात् पक्षद्वये सुधीः।।६१।।
पश्चिमाभिमुखो भूत्वा कर्मसर्वत्र साधयेत्।
नक्षत्रवृक्षसकलान् साध्याख्यान् कर्मसंयुतान्।।६२।।
तत्तन्मन्त्राक्षरोपेतान् मन्त्री मन्त्रार्ण संख्यया।
जुहुयादेधिते वह्नौ मारयेद्रिपुमात्मनः।।६३।।
कृष्णाष्टमीं समारभ्य यावत् कृष्णा चतुर्दशी।
धुस्तूरविषवृक्षाख्यभूरुहोत्थान् समिद्वारान्।।६४।।
राजितैलेन संलिप्तान् पृथक् सप्तसहस्रकम्।
जुहुयात् संयतो भूत्वा रिपुर्यमपुरं व्रजेत्।।६५।।

सप्तरात्रं प्रजुहुयात् सिद्धार्थस्नेहलोलितैः।
आर्द्रवस्त्रो वृष्टिकाले मरिचैर्मधुनाऽमुना।।६६।।
निगृह्यते ज्वरेणारिः प्रलयाग्निसमेन सः।
तालपत्रे समालिख्य शत्रुनाम यथाविधिः।।६७।।
आग्नेयास्त्रेण संवेष्ट्य कुण्डमध्ये निखन्य तत्।
जुहुयान्मरिचैः क्रुद्धो ज्वराक्रान्तः स जायते।।६८।।
तदादाय क्षिपेत्तोये शीतले स वशो भवेत्।
पिष्ट्वाऽपामार्गबीजानि मरिचं मधुसंयुतम्।।६९।।
अत्युष्णलवणे तोये निःक्षित्य क्वथयेत्ततः।
ऋक्षवृक्षप्रतिकृतेर्हृदये वदने नसि।।७०।।
किञ्चित्किञ्चित् क्षिपेत्तोयं दर्व्या कारस्करोत्थया।
आग्नेयमुच्चरेद् मन्त्रं सोऽचिरात् ज्वरितो भवेत्।।७१।।
क्वाथितेऽम्भसि तां क्षिप्त्वा हन्यात् शत्रुमयत्नतः।
तीक्ष्णस्नेहेन संल्लिप्तां शत्रोः प्रतिकृतिं निशि।।७२।।
तापयेदेधिते वह्नौ प्रतिलोमं मनु जपन्।
ज्वरेण बाध्यते सद्यो होमादस्य मृतिर्भवेद्।।७३।।
सामुद्रे लवणे हिङ्गुविषजीरकलोडिते।
क्वाथिते पुत्तलीं साध्य नक्षत्रतरुनिर्मिताम्।।७४।।
अधोवक्त्रां विनिक्षिप्य यष्ट्या विषतरूत्थया।
तच्छिरस्ताडनं कुर्याद् जपेदस्त्रं विलोमतः।।७५।।
सप्ताहान्मरणं याति शत्रुर्ज्वरविमोहितः।
आदित्यरथनागेन्द्रग्रस्तीकृयविषाहृतम् ।।७६।।
नग्नं तैलेन लिप्ताङ्गं दग्धं भानुमरीचिभिः।
अधोमुखं निजरिपुं ध्यात्वा क्वाथितवारिणा।।७७।।
तर्पयेद् भानुमालोक्य शत्रुर्मृत्युप्रियो भवेत्।
बिभ्रन्तीं मुसलं शूलं ध्यायेत् कालघनप्रभाम्।।७८।।
कार्पासबीजैर्निम्बस्य पत्रैर्मेषीघृतप्लुतैः।
हुत्वा विद्वेषयेत् शत्रून् मन्त्रेणानेन देशिकः।।७९।।
बिभ्राणां तर्जनीं शूलं ध्यात्वा देवी भयङ्करीम्।
मंहिषीघृतसंयुक्तैः पल्लवैर्विषवृक्षजैः।।८०।।
हुत्वा रिपोः क्षणात् सेनामुच्चाटयति मन्त्रवित्।
ध्यात्वा देवीं पुराप्रोक्तां चतुर्भिर्मरिचादिभिः।।८१।।

अजा रुधिरसंसिक्तैः जुहुयाद् दिवसत्रयम्।
रिपोरुच्चाटनं कुर्यात् सेनाया नात्र संशयः।।८२।।
अग्निशूलधरां दुर्गां ज्वलन्तीं प्रलयाग्निवत्।
ध्यात्वा सर्षपतैलाक्तैर्बीजैर्धुस्तूरसम्भवैः।।८३।।
हुत्वा विमोहयेत् शत्रून् मरिचैश्च ससर्षपैः।
कालाञ्जननिभां दुर्गां शूलखड्गधरां स्मरेत्।।८४।।
नक्षत्रवृक्षसंभूतैर्व्रणकृत्स्नेहसंप्लुतैः।
समिद्वरैः प्रजुहुयात् हन्यान्मासेन वैरिणम्।।८५।।
सिंहाधिरूढ़ा धावन्तीं धावमानं रिपुं प्रति।
शरान् कार्मुकनिर्मुक्तान् वह्निज्वालामुखाकुलान्।।८६।।
मुञ्चतीं संस्मरन् दुर्गां तर्पयेदुष्णवारिणा।
भानुबिम्बं समालोक्य रिपोरुच्चाटनं भवेत्।।८७।।
स्पृशेच्च हृदयं मन्त्रीं तथा रक्षार्थमात्मनः।
अतिदुर्गामयोमुष्टिं गदाहस्तां विचिन्तयेत्।।८८।।
विद्युद्दामसमानाभां महिषीघृतसंप्लुतैः।
पुलाकैर्जुहुयाद् निम्बबिभीतकसमिद्वरैः।।८९।।
कोद्रवैरथवा शत्रोः सेनायाः स्तम्भनं स्मरेत्।
लोणैः समधुरैः साध्यवृक्षकाष्ठैर्धिते ऽनले।।९०।।
जुहुयात् निशि सप्ताहान्मन्त्रविद् वशयेन्नृपान्।
पाशाङ्कुशधरां रक्तां विश्वदुर्गां विचिन्तयेत्।।९१।।
कलिनीकुसुमैः फुल्लैश्चन्द्रनाम्भः संमुक्षितैः।
जुहुयान्निशि यो मन्त्री तस्य विश्वं वशं भवेत्।।९२।।
शरच्चन्द्रनिभां देवीं परमानन्दकारिणीम्।
पाशाङ्कुशधरां ध्यात्वा सिन्धुदुर्गां समिद्वरैः।।९३।।
वैतसैर्मधुना सिक्तैर्जुहुयाद् दृष्टिसिद्धये।
कपालं त्रिशिखं पाशमङ्कुशं विभ्रतीं करैः।।९४।।
जवाकुसुमसंकाशामग्निदुर्गां विचिन्तयेत्।
हुत्वा लवणपुत्तल्या मधुरत्रययुक्तया।।९५।।
एवं ध्यायेद् वाञ्छितार्थान्मन्त्रविन्नात्र संशयः।
अति दुर्गाणि इत्याद्या यदर्णास्त्रिधुरीरिताः।।९६।।
दुर्गार्णान्ताथ गाल्याद्या गालिदुर्गा समीरिता।
विन्द्वाद्यान्यक्षरान्ता सा विश्वदुर्गा प्रकीर्तिता।।९७।।

सिन्ध्वाद्या सा वकारान्ता सिन्धुदुर्गा निगद्यते।
तां तामग्न्यादिकामेनामग्निदुर्गां विदुर्बुधाः।।९८।।
अङ्गणे स्थण्डिलं कृत्वा सुगन्धिकुसुमादिभिः।
देवीमभ्यर्चयेन्नित्यं प्रागुक्तेनैव वर्त्मना।।९९।।
आहरेद् रात्रिषु बलिं चरुणा सर्वसिद्धये।
कृत्यारोगभयद्रोहभूतारीन् नाशयेदयम्।।१००।।
यथावदग्निमाराध्य शस्तैः पुष्पैर्मनोरमैः।
स्थित्वा तस्याग्रतो मन्त्री जपेन्मन्त्रमनन्यधीः।।१०१।।
जपोऽयं सर्वसिद्ध्यै स्यान्नात्र कार्य विचारणा।
लवणैर्मधुना सिक्तैर्जुहुयात् पश्चिमामुखः।।१०२।।
मन्त्रार्णसंख्यया मन्त्री रिपुमेव वशं नयेत्।
शालीन् प्रक्षाल्य संशोध्य शुद्धान् कुर्वीत तण्डुलान्।।१०३।।
जपित्वा पञ्चगव्येन संस्कृते हव्यावाहने।
चरुं पचेत् जपेद् मन्त्रमवतार्य पुनः सुधीः।।१०४।।
अर्चयित्वा विषहरीं देवीमग्नौ यथा पुरा।
जुहुयात् चरुणानेन साज्येनाष्टसहस्रकम्।।१०५।।
पात्रे संपातनं कुर्वन् साध्यं तत् प्राशयेत् पुनः।
शिष्टं तन्निखनेद् द्वारिं संपातं प्राङ्गणान्तरे।।१०६।।
कृत्यारोगा विनश्यन्ति सह भूतग्रहामयैः।
परैरुत्पादिता कृत्या पुनस्तानेव भक्षयेत्।।१०७।।
ब्रीहिभिर्हविषा क्षीरैः पयोवृक्षसमिद्वरैः।
आज्यैर्मधुत्रयोपेतैरेतैर्दशशतं पृथक्।।१०८।।
जुहुयात् सम्पदां भूमिः साधको भवति ध्रुवम्।
भास्करे मेषराशिस्थे मन्त्रज्ञोऽनुगुणे दिने।।१०९।।
नद्यां सागरगामिन्यां सततं पुष्कलाम्भसि।
उद्धृत्यादाय सिकताः संशोध्य परिशोधयेत्।।११०।।
न्यस्य ताः पञ्चगव्येषु संस्कृते हव्यवाहने।
भर्जयेन्मनुना सिद्ध्यै दर्व्या ब्रह्मतरूत्थया।।१११।।
सिंहमीनधनुःस्थेऽर्के कृष्णपक्षेऽष्टमीतिथौ।
विशाखाकृत्तिकामूलाहस्तोत्तरमघासु च।।११२।।
रौहिण्यां श्रवणे वारौ मन्दवाक्पतिर्दैवतौ।
विहायाऽन्येषु कुर्वीत सिकतास्थापनं सुधीः।।११३।।

गृहग्रामादिराष्ट्राणां रक्षार्थं कथिताः शुभाः।
प्रस्थाढकघटोन्मानान्मध्यादिष्ववटेष्वथ ।।११४।।
नवसु प्रक्षिपेज्जप्त्वा तेषु संपूजयेत् क्रमात्।
मध्यादिदेवीमन्त्राणि कपालान्तानि देशिकः।।११५।।
चक्रं शङ्खमसिं खेटं बाणं चापं त्रिशूलकम्।
कपालं स्वस्वमन्त्रेण संपूज्यान्ते बलिं हरेत्।।११६।।
नक्षत्रग्रहराशीनां लोकेशानां बलिं हरेत्।
विहिता यत्र रक्षेयं वर्द्धन्ते तत्र संपदः।।११७।।
क्षुद्रग्रहमहारोगाश्चौरभूतसरीसृपाः ।
अमुना विलयं यान्ति विधिना नात्र संशयः।।११८।।
सिकतानां विशुद्धानां विकारकुडवं सुधीः।
पञ्चगव्ययुतं पात्रे ब्रह्मवृक्षविनिर्मिते।।११९।।
निक्षिप्य विधिना यत्र स्थापयेत्तत्र सम्पदः ।
दिने दिने प्रवर्द्धन्ते कालवृष्ट्यादिभिः सह ।।१२०।।
महोत्पाता विनश्यन्ति कृत्याद्रोहमहाग्रहाः।
पञ्चगव्याशनं कुर्यात् स्थापनं विधिनाऽमुना।।१२१।।
गोमूत्रं प्रस्थमानं स्याद् गोमयं च तदर्धकम्।
आज्यात् सप्तगुणं क्षीरं गोमूत्रात् त्रिगुणं दधि।।१२२।।
गोमूत्रेण समं सर्पिः सर्वं वा सममुच्यते।
गावः स्युः कपिलश्वेतहिमधूमारुणप्रभाः।।१२३।।
अभावे गदिताः सर्वाः समं वा कपिलोद्भवम्।
एकोनपञ्चाशत् कोष्ठे फलके ब्रह्मशाखिनः।।१२४।।
विहाय कोणकोष्ठानि शक्त्याद्यं जातवेदसम्।
लिखित्वा मध्यकोष्ठेषु पूजयेत् तत्र देवताः।।१२५।।
कृत्वा होमं समं पातं निखनेत्तु यथा पुरा।
दद्याद्बलिं यथापूर्वं अस्य पूर्वोदितं फलम्।।१२६।।
मध्ये मायाष्टकोष्ठेषु पादानष्टौ कृत्वा मातृकार्णैः परीतम्।
भूबिम्बस्थं सर्वभूतामयघ्नं रक्षायुः श्रीकीर्तिदं यन्त्रमेतत्।।१२७।।
आग्नेयास्त्रस्य जानाति विसर्गादानकर्मणी।
यः पुमान् गुरुणा शिष्टस्तस्याधीनं जगत्त्रयम्।।१२८।।
जातप्रज्ञोऽथवा राजा द्रविणोऽराति वा तथा।
एवं शब्दस्य शक्तिःस्यात् जातवेदास्तथा स्मृतः।।१२९।।

यजामहे स्वयं देवं सोमेन भुवनेश्वरम्।
वह्निरूपेण तिष्ठन्तं परमात्मानमव्ययम्।।१३०।।
अराते द्रविणं चापि विद्यां चापि हरप्रिये।
पुत्रादक्षादिकान् सर्वान् सम्यग्ज्ञानं तथैव च।।१३१।।
दत्त्वा चतुर्हरिर्देवः सर्वलोकपितामहः।
यः सम्यक् सर्वलोकानां शत्रुत्वं सम्यगाचरेत्।।१३२।।
चित्रभानुर्महादेवः क्षुत्पिपासादिकं मम।
व्यपोहतु महादेवः पुरुषार्थविबोधनः।।१३३।।
नौर्यथा दुस्तरं सिन्धुं तरत्येव न संशयः।
पुरस्क्रियायुतं चास्य दशाशं घृतहोमतः।।१३४।।
अश्वत्थवृक्षं संस्पृश्य शनैश्चरदिने जपेत्।
इष्टसिद्धिमवाप्नोति भयं चाशु विनश्यति।।१३५।।
यः सहस्रं जपेन्नित्यं ब्रह्माप्नोति न संशयः।
सर्वदुर्गेषु यो नित्यं स्मरेन्मन्त्रमतन्द्रितः।।१३६।।
दुर्गाणि निस्तरेत् सद्यो नात्र कार्या विचारणा।
धन्यं यशस्यमायुष्यमारोग्यं पुष्टिवर्द्धनम्।।१३७।।
किमत्र बहुनोक्तेन पुरुषार्थचतुष्टयम्।
दुर्गागारं समाश्रित्य साधयन्ति मनीषिणः।।१३८।।
सावित्री सहिता दुर्गा महासिद्धिकरी स्मृता।
पूजिता विधिना सा च सर्वमिष्टं प्रयच्छति।।१३९।।
अपूजिता वै सर्वेषामनिष्टमपि दास्यति।
अपामार्गशतं हुत्वा गोष्ठे शान्तिकरी भवेत्।।१४०।।
सर्वानभिमुखी कर्तुमधुना लवणेन च।
दुर्गमार्गे भये द्यूते व्यवहारे जले रणे।।१४१।।
बन्धने व्यसने राज्ञो मन्त्रं तु मनसा जपेत्।
जपमात्रेण विप्राणां सर्वं संसाधयेद् यथा।।१४२।।
राजन्यवैश्ययोर्नित्यं जपहोमाभिषेचनैः।
यमुद्दिश्य जपेद्विप्रस्तत्तदाप्नोत्यसंशयम्।।१४३।।
आदित्यमण्डलं पश्यन् जानुदघ्ने जले स्थितः।
यावदस्तमनं विप्रः सर्वान् कामानवाप्नुयात्।।१४४।।
आपदं निस्तरेद्विप्र आत्मनो वा परस्य वा।
आदित्यमण्डलासीनां दुर्गां दुर्गहरां शिवाम्।।१४५।।

शङ्खचक्रधरां सौम्यां वरदाभयधारिणीम्।
चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च रक्ताभां जातवेदसीम्।।१४६।।
चिन्तयित्वा जगद्धात्रीं पश्यन्नादित्यमण्डलम्।
आस्यदध्ने जले स्थित्वा जपेत्तद्गतमानसः।।१४७।।
अष्टोत्तरसहस्रं तु सर्वान् कामानवाप्नुयात्।
महद्भिः पातकैः सर्वैः पातकैरुपपातकै।।१४८।।
पापैश्च मुच्यते घोरैस्तथा रोगभयादिभिः।
जलस्य मण्डले मन्त्री जुहुयादनया जलम्।।१४९।।
सूर्यवारं समारभ्य शतमष्टोत्तरं बुधः।
सुवर्णं लभते मन्त्री सद्यो रत्नान् स्वरूपतः।।१५०।।
नाभिदध्ने जले स्थित्वा मण्डलाभिमुखः स्वयम्।
देव्याऽभिषिच्यमानोऽहं यत्नैरपि विचिन्तयेत्।।१५१।।
अभिषिञ्चेत् स्वकं देहं जलैर्मन्त्राभिर्मन्त्रितैः।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं शत्रुनाशं जलं च यम्।।१५२।।
सौभाग्यमचलां लक्ष्मीं लभते नात्र संशयः।
प्रभूतैरिन्धनैरग्निं स्थाप्य प्रज्वाल्य वाग्यतः।।१५३।।
अष्टदिक्षु च मध्ये च गन्धपुष्पादिभिर्यजेत्।
प्राच्यामग्निमहादुर्गं मन्त्राणामधिदेवताम्।।१५४।।
अभ्यर्च्य गन्धपुष्पाद्यैर्मनसा वाऽथ वै शिवाम्।
शङ्खं चक्रं धनुष्चापं दधतीं मृत्युर्तर्जनीम्।।१५५।।
वामे चक्रमसिं चेषुं सन्नद्धां विविधायुधैः।
पवित्रां सिंहाधिरुढां गायत्रीं कुमारीं जपेत्।।१५६।।
ध्यायेदीप्सितसिद्धिदां त्रिनयनां सिंहाधिरूढ़ां शिवाम्
ध्यायन् जपेदष्टोत्तरशतं मन्त्रदेशिकोत्तमः।
प्रक्षिपेत् काष्ठशलाकां ज्वलितेऽग्नौ मुहुर्मुहुः
सिद्ध्यन्ति सर्वकार्याणि विनश्यन्ति भयानि च।।१५७।।
किमत्र बहुनोक्तेन राज्यं शत्रुहतं लभेत्।
आयुरारोग्यकामस्तु समाधाय हुताशनम्।।१५८।।
प्राच्यामग्नेरधिष्ठात्रीं दुर्गां गन्धादिनाऽर्चयेत्।
हुनेद् दुर्गां पार्षदाय तथैकैकाहुतिं क्रमात्।।१५९।।
पार्श्वयोश्च तथा दुर्गां पार्षदेभ्यस्ततः क्रमात्।
तिलेन जुहुयादाज्यं व्याहृतिभिस्ततः परम्।।१६०।।

क्रूरग्रहविनाशय गोमूत्राक्तैः सकण्टकैः।
तदग्ने जुहुयान्मन्त्री सर्वग्रहं विनश्यति।।१६१।।
अश्वत्थः प्रथमो ज्ञेया द्वितीयो वट उच्यते।
उदुम्बरस्तथा प्लक्षो वृक्षाणां क्रम ईरितः।।१६२।।
चतुर्णां क्षीरवृक्षाणां सन्निधौ जुहुयात् क्रमात्।
मध्वक्तैस्तु तथा सर्वैर्वश्याः स्युर्मरणान्तिकम्।।१६३।।
पुरञ्जनपदं राष्ट्रं तद्वदेव वशं नयेत्।
तथा वर्णाश्च चत्वारो वश्याः स्युश्च यथाक्रमम्।।१६४।।
पलाशवृक्षं संस्पृश्य यन्त्रसारैस्तु पञ्चभिः।
छित्वा परशुना भित्त्वा पञ्चधा तं क्रमेण तु।।१६५।।
प्राच्यां प्राग्दक्षिणांशश्च प्रतीच्यंशस्तथैव च।
उदीच्यंशश्च सन्ध्यादौ मासपक्षदिनं ततः।।१६६।।
शङ्खं चक्रं च जलजं ताञ्च कौमोदकीं तथा।
पञ्चगव्येन संगृह्य स्वैस्वैर्मन्त्रैर्विधानतः।।१६७।।
तत्रावाह्य विशोध्य त्वां समाराध्य यथाक्रमम्।
एवमेव क्रमेणैव मन्त्रयेच्च शतं शतम्।।१६८।।
समापयेच्चतुःशङ्खं शङ्खदिषु यथाक्रमम्।
अभ्यर्च्य देवदेवेशीं मनुनानेन भक्तितः।।१६९।।
स्मृतं नैव जपेन्मन्त्रमभिमन्त्र्य च भक्तितः।
अग्रहारपुरक्षेत्रगृहवप्रादिषु क्रमात्।।१७०।।
चतुर्दिक्षु च मध्ये च खनित्वा हस्तमात्रकम्।
पञ्चगव्यं विनिःक्षिप्य तथा शङ्खादि विन्यसेत्।।१७१।।
स्वे स्वे स्थाने समभ्यर्च्य पूजयित्वा दलान्यपि।
ध्यायेत् समन्ततो दुर्गां सिंहारूढ़ां यथाविधि।।१७२।।
यस्यैवं कुरुते राज्ये स देशो निरुपद्रवः।
धनधान्यसमृद्धश्च सदा निष्कण्टको भवेत्।।१७३।।
पञ्चवक्त्रमयं नास्ति न कथञ्चन सम्भवेत्।
पञ्चशुक्लोत्पलान्यानि गृहीत्वा पूर्ववत् क्रमात्।।१७४।।
एवमाराध्यतां मन्त्री निखनेत् सर्वशान्तये।
अथवा पूर्ववन्मन्त्री पञ्चगव्येन मन्त्रितम्।।१७५।।
महादिदिक्षु मध्ये च निखनेत् सर्वशान्तये।
एवं च पञ्चदुर्गाया विनियोग उदीरितः।।१७६।।

शतपत्रसहस्रं तु हुत्वाऽऽज्याक्तं बलिं हरेत्।
सुवर्णं लभते तद्वदुत्पलैः पुष्टिमाप्नुयात्।।१७७।।
वासांसि चाप्नुयान्मन्त्री पुष्पर्णानुरूपतः।
मध्यवाज्याक्तैः सितैः पुष्पैः सर्वान् कामानवाप्नुयात्।।१७८।।
प्रणम्य पुनराज्याक्तमुपतिष्ठेद् दिवाकरम्।
जप्त्वाऽयुतं सहस्रं वा मोक्षं गच्छेन्न संशयः।।१७९।।
ब्रह्मवर्चसकामस्तु पलाशसमिधो हुनेत्।
न्यग्रोधसमिधो हुत्वा धनधान्यमवाप्नुयात्।।१८०।।
उदुम्बरसमिद्धोमाद्धनवानन्नवान् भवेत्।
अश्वत्थसमिधो हुत्वा कार्यमाशु च साधयेत्।।१८१।।
संमोहोच्चाटनं कुर्वन् रात्रौ नग्नस्तु वाग्यतः।
दुर्गास्थानेषु नवसु दुर्गाबीजेन शर्करान्।।१८२।।
यावदेवं रिपुं कृत्वा रिपुमध्ये विनिःक्षिपेत्।
ततो यास्यन्ति सहसा भीताः सद्यः परस्परम्।।१८३।।
सावित्र्या संपुटीकृत्य दुर्गाबीजं समं न्यसेत्।
इष्टसिद्धिर्भवत्याशु नात्र कार्या विचारणा।।१८४।।
आत्मनो वा परस्यापि रोगादिपरिपीडितः।
समारभ्य जपेन्मन्त्री सद्यः सद्यो विमुच्यते।।१८५।।
धान्यहोमाद् भवेद्धान्यं पयसा पशुमान् भवेत्।
विल्वैर्लक्ष्मीमवाप्नोति श्रीपुष्पैश्च तथैव च।।१८६।।
मधूकाक्तैश्च तत्पत्रैर्विश्वमात्मवशं नयेत्।
आदित्यमण्डलादग्रे यः कृत्वा भुवि वैरिणः।।१८७।।
ज्वालानिर्दग्धमानस्तु अधोवदनमारुतम्।
जानुदध्ने जले तिष्ठन् ध्यायन् वह्निमयं जलम्।।१८८।।
अतिदुर्गेति मन्त्रेण गृहीत्वाऽञ्जलिना जलम्।
रिपुदेहे विनिःक्षिप्य सहस्रं क्रोधसंयुतम्।।१८९।।
प्रज्वाल्य हस्तैर्हृदयं शतपर्ण्यादिभिः स्पृशेत्।
प्रोक्षणेन जलस्यैव वैरिणः कारयेद् वधम्।।१९०।।
आदित्यमण्डलाधस्तादग्निनापो विदर्भितम्
तयोर्मध्यगतः शत्रुर्ज्वालामालाकुलावृतः।
ध्यायतः शत्रुर्विनश्येत् नात्र कार्या विचारणा।।१९१।।

अथो दिनास्त्रं कृत्यास्त्रं वक्ष्ये शत्रुविमर्दनम्।
अतिदुर्गामनुं प्राहुर्दिनास्त्रं मन्त्रवित्तमाः।।१९२।।
प्रतिलोममिमं मन्त्रं कृत्यास्त्रं परिचक्षते।
दिनास्त्रस्य षडङ्गानि प्रतिलोमादितान् विदुः।।१९३।।
भानुबिम्बगतं शत्रुमधोवक्त्रं विषाहतम्।
मूलादुत्थितया ग्रस्तं कुण्डल्या भावयन् सुधीः।।१९४।।
मूलाधारे क्षिपेत् सद्यः प्रस्फुरत्कालपावके।
दिनत्रयाज्ज्वराक्रान्तो रिपुः प्राणान् विमुञ्चति।।१९५।।
दिनास्त्रेण प्रविद्धाङ्ग स्वाधिष्ठानगतं रिपुम्।
पञ्चवायुसमिद्धेन वह्निना दग्धविग्रहम्।।१९६।।
ध्यायन् मनुं जपेत् सद्यः स भवेद् यमवल्लभः।
मणिपूरगतं शत्रुमग्निना दग्धविग्रहम् ।।१९७।।
ध्यायन् दिनास्त्र प्रजपेत् स मृत्युवशतां व्रजेत्।
अनाहताहितः शत्रुर्निर्दग्धो मन्त्रवह्निना।।१९८।।
पाशेन बद्ध्वा शीघ्रेण नीयते यमकिङ्करैः।
विशुद्धस्थानगो वैरी दिनबाणेन पीडितः।।१९९।।
अधोमुखः स्मृतस्तूर्णं परायुः स्याद् दिनत्रयात्।
आज्ञायां निहतं शत्रुं दहेज्ज्वालाग्निना धिया।।२००।।
पुत्रमित्रकलत्रादीन् हित्वा मृत्युमुपाश्रयेत्।
नाभिमात्रोदके स्थित्वा ध्यायन् बित्बं दिनेशितुः।।२०१।।
वैरिणं दग्धसर्वाङ्गं मन्त्रमष्टोत्तरं शतम्।
जपेत् सप्तदिनादर्वाक् यमलोकं स गच्छति।।२०२।।
रविवारं समारभ्य सप्ताहं प्रजपेन्मनुम्।
सूर्योदयं समारभ्य यावदस्तमयो भवेत्।।२०३।।
सन्निपातज्वराविष्टो यमग्रस्तो भवेदरिः।
स्थित्वा दुर्गालये मन्त्री त्रिरात्रं वर्जिताशनः।।२०४।।
दिनबाणेन विद्धाङ्गं वैरिणं परिचिन्तयन्।
जपेन्मनुमिमं शत्रुर्ज्वरितो मरणं व्रजेत्।।२०५।।
स्पृष्ट्वा दुर्गां जपेन्मन्त्रं मनसा त्रिदिनं स्मरन्।
शूलप्रोतं निजरिपुं दिनास्त्रेण प्रपीडितम्।।२०६।।
ज्वरेण महताविष्टो जायतेऽसौ यमातिथिः।
रविमण्डलगं शत्रुं दष्टं तद्रश्मिपन्नगैः।।२०७।।

विषाग्निदग्धसर्वाङ्गं ध्यायन्नुष्णेन वारिणा
तर्पयेद् दिनबाणेन स्यादसौ यमवल्लभः ।।२०८।।
रविबिम्बादागतया ज्वालया ग्रस्तविग्रहम्।
रिपुं ध्यात्वां जपेन्मन्त्रं स क्रीडति यमान्तिके।।२०९।।
ग्रहयुक्तार्कविम्बस्थं विद्धं मन्त्रमयैः शरैः।
प्रतिपद्य निजं शत्रुं प्रजपेन्मन्त्रवित्तमः।।२१०।।
रिपुं नयति शीघ्रेण यमदूतो यमालयम्।
प्रलयानलसंकाशां कालरात्रिमिवापराम्।।२११।।
शूलपाशधरां घोरां सिंहस्कन्धनिषेदुषीम्।
सवितुर्मण्डलान्तःस्थां रक्तनेत्रत्रयोद्गतैः।।२१२।।
विस्फुलिङ्गैर्निदहन्तीं रिपुमाकुलविग्रहम्।
स्पष्टदंष्ट्राधरां नृत्यद्भृकुटीकुटिलाननाम्।।२१३।।
तर्जयन्तीं निजं शत्रुं तर्जन्या भीमरूपया।
दंष्ट्रामयूखज्वालेन द्योतयन्तीं दिगन्तरम्।।२१४।।
शूलेन वैरिणो वक्षो दारयन्ती भयङ्करीम्।
जपेद् दिनत्रयं मन्त्री मारयेद् रिपुमात्मनः।।२१५।।
अस्त्रमन्त्रकृतन्यासः प्रलयाग्निसमप्रभाम्।
रक्तवस्त्रधरां क्रूरां रक्तनेत्रत्रयान्विताम्।।२१६।।
सिंहारूढ़ां धावमानां धावमानं रिपुं प्रति।
खड्गेन तच्छिरश्छित्वा क्षणाद् व्योमतलं गताम्।।२१७।।
ध्यात्वा दुर्गां जपेन्मन्त्री त्रिदिनं वर्जितासनः।
अनेनैव विधानेन रिपुर्मृत्युप्रियो भवेत्।।२१८।।
कर्म्माण्येतानि कुर्वीत दिवसे न तु रात्रिषु।
पश्चिमामुखलिङ्गस्य सजीव महिषं पुरः।।२१९।।
निधाय तस्य शिरसि कुण्डं कृत्वा त्रिकोणकम्।
तस्मिन् समेधिते वह्नौ यथावद् देशिकोत्तमः।।२२०।।
सत्रिकोणान् समन्त्रार्णान् साध्यनामसमन्वितान्।
अजारक्तेन संसिक्तान् कारस्करसमिद्वरान्।।२२१।।
सहस्रं जुहुयाद् देवीं ध्यात्वा सवितृमण्डले ।
प्रलयाग्निसमां घोरां द्वात्रिंशद्भुजशोभिताम्।।२२२।।
उद्यदायुधसंदीप्तां नृत्यन्तीं सिंहमस्तके।
महादंष्ट्रां महाभीमां ज्वलत्केशीं नदन्मुखीम्।।२२३।।

रक्तार्द्रमांसवदनां घूर्णितोग्रत्रिलोचनाम्।
अनेन विधिना शत्रुर्महाज्वरप्रपीडितः।।२२४।।
विमुञ्चति निजं देहं पुत्रमित्रादिभिः सह।
ऊर्ध्वमुष्णाम्भसा मन्त्री लम्बयित्वा भुजङ्गमम्।।२२५।।
भानुबिम्बगतां दुर्गां सहस्त्रादित्यसन्निभाम्।
सहस्रपाणिचरणां सहस्राक्षिशिरोमुखीम्।।२२६।।
सहस्रनागबद्धाङ्गी त्रासयन्तीं जगत्त्रयम्।
ध्यायेन्मूलेन सर्पास्ये तर्पयेदुष्णवारिणा।।२२७।।
संयुतः कालपाशेन वैरी मुञ्चेत् सुजीवितम्।
मध्यह्नार्कायुतप्रख्यां नदन्तीं नरसिंहवत्।।२२८।।
घोरसिंहसमासीनां महाभीषणदर्शनाम्।
शूलप्रोताहितां ध्यायन् जपेन्मन्त्रमनन्यधीः।।२२९।।
तर्पयेदुष्णतोयेन सर्पवक्त्रे दिनत्रयम्।
यमस्य भवनं गच्छेदरातिर्नात्र संशयः।।२३०।।
ऋक्षवृक्षप्रतिकृतिं प्रतिष्ठितसमीरणाम्।
उष्णोदके विनिःक्षिप्य विषाढ्यो विधिना ततः।।२३१।।
अर्केन्द्वनलसङ्काशां खड्गखेटकधारिणीम्।
नयनत्रय निर्गच्छद्विस्फुलिङ्गशतर्गलाम्।।२३२।।
सिंहस्थां सर्पभूषाढ्यां त्रैलोक्यभयदायिनीम्।
खड्गकृत्याहितां ध्यायन् प्रजपेदयुतं मनुम्।।२३३।।
विधानेनामुना शत्रुर्ग्रस्तो भवति मृत्युना।
प्रकल्प्य दुर्गायतने त्रिकोणं कुण्डमुत्तमम्।।२३४।।
तत्र संज्वालिते वह्नौ महीषीशकृताकृताम्।
पुत्तलीमजरक्ताक्तां प्रतिष्ठितसमीरणाम्।।२३५।।
छित्वा छित्वा च जुहुयादजरक्तान्वितां निशि।
ध्यात्वा दुर्गां प्रनृत्यन्तीं महिषोरःस्थलान्तरे।।२३६।।
शूलेन महिषस्याङ्गं भिन्दन्तीं घोरदर्शनाम्।
अट्टहासैरजस्रोत्थैर्भीषितासुरसैनिकाम् ।।२३७।।
प्रलयानलसङ्काशां ज्वलन्नेत्रत्रयान्विताम्।
संदष्ट्राधरसंभिन्नां दंष्ट्राभीममुखाम्बुजाम्।।२३८।।
खड्गखेटकयुक्ताभिः कन्याभिश्च समन्विताम्।
अनेन विधिना शत्रुः प्रयाति यमसन्निधिम्।।२३९।।

दिनास्त्रमेतत् कथितं शत्रुनिग्रहकारकम्।
सर्वान् कृत्योदितान् कुर्यात् प्रयोगान्मन्त्रवित्तमः।।२४०।।
आधारादुत्थितां देवीं कुण्डलीं सर्परूपिणीम्।
सुषुम्नारन्ध्रमार्गेण यातां व्योमस्थलं ततः।।२४१।।
मुखेन शत्रुमादाय निवृत्ता स्वगृहं प्रति।
ज्वलत्कालानलैर्दीप्तां विचिन्त्य प्रजपेन्मनुम्।।२४२।।
सप्तभिर्वासरैः शत्रुर्मृत्युमाप्नोति मोहितः।
अङ्गारवारे चिताग्नौ सर्षपस्नेहलोडितम्।।२४३।।
सिद्धार्थगुडसंयुक्तं जुहुयात् पक्षमादृतम्।
कृत्यास्रज्वलया दग्धो रिपुर्यमपुरं व्रजेत्।।२४४।।
चतुर्दश्यामर्धरात्रे चितास्थिन्यथ साधकः।
व्रणतैलविलिप्तानि चिताग्नौ जुहुयात्ततः।।२४५।।
अनेन विधिना शत्रुर्मृत्युमेष्यति कातरः।
तुषास्थिनिर्मितां शत्रोर्व्रणतैलपरिप्लुताम्।।२४६।।
प्रतिमां स्थापितप्राणां जुहुयान्निशि साधकः।
छित्वा छित्वाऽजरक्तेन सप्ताहान्म्रियते रिपुः।।२४७।।
श्मशानबालुकां स्पृष्ट्वा साक्षतां नियुतं जपेत्।
विकिरेत्तांस्तडागादौ कृत्यास्त्रक्वाथितं जलम्।।२४८।।
तदीयपीतमरिचं निहन्ति सकलान् जनान्।
कृष्णाङ्गारचतुर्दश्यां प्रजप्तैः प्रेतभस्मभिः।।२४९।।
महिषाज्येन लुलितास्तन्मन्त्राक्षरसंख्यया।
निर्माय गुटिका एताः सम्यग्जप्तसमीरणाः।।२५०।।
चितिकाष्ठेऽधिते वह्नौ जुहुयाद् दृढमानसः।
चतुर्दशीत्रयादर्वाक् शत्रुर्मृत्युवशो भवेत्।।२५१।।
श्मशानभस्म सिद्धार्थं पञ्चगव्ये विनिःक्षिपेत्।
माहिषे संस्मरेद् देवीं कालाग्निसदृशप्रभाम्।।२५२।।
भर्जयेत् प्रजपेन्मन्त्रं ग्रहकाष्ठैश्चितानले।
दुर्गागारे प्रजुहुयादनेनायुतमन्त्रवित्।।२५३।।
पुनरादाय तद्भस्म सेनायां वैरिणः क्षिपेत्।
सा सेना बहुधा भिन्ना ज्वररोगविमोहिता।।२५४।।
आयुधानि परित्यज्य युद्धकाले पलायते।
गेहग्रामादिषु क्षिप्तं कुर्यादुच्चाटनं क्षणात्।।२५५।।

सप्तवारेषु कुलिके दुर्गाविश्मसु शर्कराः।
सप्तमाहेन्द्रदिग्वज्रं गृहीत्वा प्रजपेन्मनुम ।२५६ ।।
महिषीपञ्चगव्येषु भर्जयेत्तां यथाविधि।
भूयो जपित्वा विकिरेद् गेहग्रामपुरेष्विमाः ।।२५७।।
स देशो नश्यति क्षिप्रं दग्धमन्त्रभवाग्निना।
ब्रह्मदण्डी मर्कटिकां करक्रोशनिकात्रयम्।।२५८।।
भौमवारेषु कुलिके गृहीत्वा प्रजपेन्मनुम्।
चतुर्दश्यां रिपोर्गेहे मुसलं प्रक्षिपेन्मनुम्।।२५९।।
सार्द्धं पुत्रकलत्राद्यैरुत्सादो जायते रिपुः।
एकैकं वा खनेन्मन्त्रीमण्डलात्तत्फलं लभेत्।।२६०।।
षड्बिन्दुषट्कं पुत्तल्यां निखनेदर्कदलान्वितम्।
स्पृष्ट्वा तां प्रजपेन्मन्त्रं कृष्णाष्टम्यां निशार्द्धतः।।२६१।।
शत्रोर्नामसमायुक्तां श्मशाने निखनेदिमाम्।
प्राणांश्च स रिपुः शीघ्रं विमुञ्चति सबान्धवः।
कपालफलकान्मन्त्री कृत्यास्त्राक्षरसंख्यकान्।।२६२।।
संस्पृश्य प्रजपेदस्त्रं प्राणस्थापनपूर्वकम्।
कृष्णाङ्गारचतुर्दश्यां श्मशाने विषवृक्षके।।२६३।।
जुहुयादजरक्ताक्तान् कृत्यास्त्रज्ज्वालया हतः।
रिपुर्यमपुरं गच्छेन्महाज्वरविमोहितः।।२६४।।
अजरक्तेन सम्पूर्णे कलशे निक्षिपेदमुम्।
कपालेन पिधायैनं छादयेद् रक्तवाससा।।२६५।।
पूजयेद् रक्तपुष्पाद्यैः स्पृष्ट्वा तमयुतं जपेत्।
भौमवारे निशामध्ये कारस्करसमेधिते।।२६६।।
श्मशानवह्नौ जुहुयाद् गच्छेद् यमपुरं रिपुः।
साध्यनक्षत्रवृक्षेण कृत्वा कुम्भं प्रपूरयेत्।।२६७।।
माहिषैः पञ्चगव्यैस्तं विराजं तत्र निक्षिपेत्।
जपपूजादिकं सर्वं यथापूर्वकमाचरेत्।।२६८।।
कारस्करभवे वह्नौ कृत्यास्त्रेण समेधिते।
अयुतं व्रणतैलेन हुत्वान्ते तं घटं पुनः।।२६९।।
आमस्तकं समुद्धृत्य जपेन्मन्त्रमनन्यधीः।
जुहुयाद् विधिनानेन त्रिदिनान्म्रियते रिपुः।।२७०।।

सुन्दरं महिषीपुत्रमेकरात्रमुपोषितम्।
पाययेन्महिषीसर्पिः प्रस्थं मन्त्रेण मन्त्रितम्।।२७१।।
कृशैशरावृद्धसर्वाङ्गं स्थापितः प्राणमञ्जसा।
कारस्करैधिते वह्नौ व्रणतैलेन मन्त्रवित्।।२७२।।
होमं कृत्वायुतं मन्त्रीं जुहुयाद् यतमानसः।
एकेन दिवसें नारिर्गच्छेद् यमपुरं ततः।।२७३।।
त्रिकोणकुण्डनिहिते वह्नौ मन्त्रेण दीपिते।
अर्चिते गन्धपुष्पाद्यैरयुतं जुहुयात् क्रमात्।।२७४।।
राजीभल्लातकतिलतैलैः सप्तदिनं ततः।
प्रसूतिसमयप्राप्तां महिषीं स्थापितानिलाम्।।२७५।।
पूजितां गन्धपुष्पाद्यैः स्पृशन् कूर्चेन तं जपेत्।
मस्तकाद् योनिपर्यन्तं धिया वत्समनुस्मरन्।।२७६।।
आकृष्य हस्ते पतितं जुहुयादेधितेऽनले।
एवं कृते समुत्पन्ना कृत्या दीप्ता हुताशनात्।।२७७।।
भक्षयेदचिराच्छत्रुमीश्वरेणापि रक्षितम्।
पुनरग्नौ विशत्येषा कर्तारमपि रक्षिणी।।२७८।।
एवंविधानि कार्याणि यः कुर्यान्मन्त्रवित्तमः।
स जपेदात्मरक्षार्थं मन्त्रान् मृत्युञ्जयादिकान्।।२७९।।

श्री प्रपञ्चसारतन्त्रे चतुर्दश पटले-

अथ वक्ष्यामि दुर्गाया मन्त्रान् साङ्गान् सदैवतान्।
सजपार्चाहुतविधीन् प्रीत्यर्थं मन्त्रजापिनाम्।।२८०।।
तारो मायाऽमरेशोऽद्रिपीठो बिन्दुसमन्वितः।
स एव च विसर्गान्तो गायै नत्यन्तिको मनुः।।२८१।।
दुर्गाऽस्य देवता छन्दो गायत्रं नारदो मुनिः।
तारो माया च दुर्गाद्यै ह्रामाद्यन्ताङ्गकल्पना।।२८२।।
शङ्खारिचापशरभिन्नकरां त्रिनेत्रा
तिग्मेतरांशुकलया विलसत्किरीटाम्।
सिंहस्थितां सकलसिद्धनुताञ्च दुर्गां
दूर्वानिभां दुरितवर्गहरां नमामि।।२८३।।
कृताभिषेकदीक्षस्तु वसुलक्षं जपेन्मनुम्।
तदन्ते जुहुयात् सर्पिः संयुतेन पयोऽन्धसा।।२८४।।

अष्टसाहस्रसंख्येन तिलैर्वा मधुराप्लुतैः।
पीठार्चाया प्रयष्टव्याः क्रमात्तच्छक्तयो नव।।२८५।।
प्रभा माया जया सूक्ष्मा विशुद्धा नन्दिनी तथा।
सुप्रभा विजया सर्वसिद्धिदा नवमी तथा ।।२८६।।
अर्च्या ह्रस्वत्रयक्लीबरहितैश्च स्वरैरिमाः।
तारान्ते वज्रमाभाष्य नखदंष्ट्रायुधाय च।।२८७।।
महासिंहाय चेत्युक्त्वा वर्मास्त्रनतयः क्रमात्।
सिंहमन्त्रोऽयमित्येवं संप्रोक्ता पीठकल्पना।।२८८।।
अङ्गैः स्यादावृत्तिः पूर्वा द्वितीया शक्तिभिः स्मृता।
अष्टायुधैस्तृतीया स्याल्लोकपालैश्चतुर्थ्यपि।।२८९।।
तदायुधैः पञ्चमी च दुर्गायजनमीदृशम्।
जया च विजया कीर्तिः प्रीतिश्चाथ प्रभाह्वया।।२९०।।
श्रद्धा मेधा श्रुतिरपि शक्तयः स्वाक्षरादिकाः।
चक्रशङ्खगदाखड्गपाशाङ्कुशशरा धनुः।।२९१।।
क्रमादष्टयुधाः प्रोक्ता दौर्गा दुर्गतिहारिणः।
इत्थं दुर्गामनौ जापहुतार्चाभिः प्रसाधिते।।२९२।।
मन्त्रीन्दिरावान् भवति दीर्घायुर्दुरितान् जयेत्।
यान यानिच्छति कामान् स तांस्तानाप्नोत्ययत्नतः।।२९३।।
विधाय विधिना तेन कलशं त्वभिषेचयेत्।
यमसौ भूतवेतालपिशाचाद्यैर्विमुच्यते।
राजाऽभिषिक्तो विधिना सपत्नानमुना जयेत्।।२९४।।
अमुना विधिना कृताभिषेका ललना पुत्रमवाप्नुयाद्विनीतम्।
हवनात्तिलसर्षपैः सहस्रद्वितयैराशु भवेच्च गर्भरक्षा।।२९५।।
अनयैव जपाभिषेक होमक्रियया स्यादनुरञ्जनं जनानाम्।
भजतां सकलार्थसाधनार्थं मुनिवर्यैः परिकल्पितोऽयमादौ।।२९६।।
उत्तिष्ठपदं प्रथमं पुरुषि ततः किं पदं स्वपिषियुतम्।
भयमपि मेऽन्ते समुपस्थितमित्युच्चार्य यदि पदं प्रवदेत्।।२९७।।
शक्यमशक्यं वोक्त्वा तन्मे भगवति निगद्य शमयपदम्।
प्रोक्त्वा ठद्वितययुतं सप्तत्रिंशाक्षरो मनुः प्रोक्तः।।२९८।।
आरण्यकोऽत्यनुष्टुब्रूवनदुर्गाख्याः क्रमेण भगवत्याः।
ऋष्यादिकाः स्वमनुना विहितान्यङ्गानि वाक्यभिन्नेन।।२९९।।

षड्भिश्चतुर्भिरष्टभिरष्टार्णैः षड्भिरपि च पञ्चार्णः।
जातियुतैश्च विदध्यादङ्गान्यपि षट् क्रमेण विशदमतिः॥३००॥
पद्द्वयसन्धिगुदान्ध्वाधारोदरपार्श्वहृत्स्तनेषु गले।
दोःसन्धिवदननासाकपोलदृक्कर्णयुग्भ्रुके न्यस्येत्॥३०१॥
हेमप्रख्यामिन्दुखण्डात्तमौलिं शङ्खारीष्टाभीतिहस्तां त्रिनेत्राम्।
हेमाब्जस्थां पीतवस्त्रां प्रसन्ना देवीं दुर्गां दिव्यरूपां नमामि॥३०२॥
अरिशङ्खकृपाणखेटबाणान् सधनुःशूलक तर्जनीर्दधाना।
भवतां महिषोत्तमाङ्गसंस्था नवदूर्वासदृशी श्रियेऽस्तु दुर्गा॥३०३॥
चक्रदरखड्गखेटकशरकार्मुकशूलसंज्ञककपालैः।
ऋष्टिमुसलकुन्तनन्दकवलयगदाभिन्दिपाल शक्त्याख्यैः॥३०४॥
उद्यद्विकृतिभुजाढ्या माहिषके सजलजलदसङ्काशा।
सिंहस्था वाऽग्निनिभा पद्मस्था वाथ मरकतश्यामा॥३०५॥
व्याघ्रत्वक्परिधाना सर्वाभरणान्विता त्रिनेत्रा च।
अहिकलितनीलकुञ्चितकुन्तलविलसत्किरीटशशिशकला॥३०६॥
सर्पमयवलयनूपुरकाञ्चीकेयूरहारसम्भिन्ना।
सुरदितिजाभयभयदा ध्येया कात्यायनी प्रयोगविधौ॥३०७॥
संयतचित्तो लक्षचतुष्कं जप्त्वा हुनेद्दशांशेन।
व्रीहितिलाज्यहविर्भिः सम्यक् संचिन्त्य भगवतीमनले॥३०८॥
पीठे पूर्वप्रोक्ते पूज्याऽङ्गैः शक्तिभिस्तथाऽष्टाभिः।
अष्टायुधैश्च मातृभिराशेशैः क्रमश एव दुर्गेयम्॥३०९॥
आर्या दुर्गा भद्रा सभद्रकाली तथाऽम्बिकाख्या च।
क्षेमा सवेदगर्भा क्षेमङ्करी चेति शक्तयः प्रोक्ताः॥३१०॥
अरिदरकृपाणखेटकबाणधनुः शूलपाण्डरकपालाः।
अष्टायुधाः क्रमेणोक्ताः पूर्वविधानवदथोदितं शेषम्॥३११॥
इत्थं जपार्चनाहुतसिद्धमनोर्मन्त्रिणः प्रयोगविधिः।
विहितो जपः प्रतिदिनं निजरक्षायै शतं सहस्रं वा॥३१२॥
उद्दिश्य यद्यदेनं मनुं जपेदथ सहस्रमयुतं वा।
तत्तन्मन्त्री लभ्येदचिरात्तदनुग्रहादसाध्यमपि॥३१३॥
स्नात्वार्काभिमुखः सन्नाभिसमकेऽम्भसि स्थितो मन्त्री।
अष्टोर्ध्वशतं प्रजपेन्निजवाञ्छितसिद्धये च लक्ष्म्यै च॥३१४॥
ध्यात्वा त्रिशूलहस्तां ज्वरसर्पग्रहविपत्सु जन्तुनाम्।
संस्पृश्य शिरसि जाप्यात्तज्जन्योपद्रवं द्रुत शमयेत्॥३१५॥

अयुतं तिलैर्वनोत्थै राजीभिर्वा हुनेत् समिद्भिर्वा।
मायूरकीभिरचिरात्सापस्मारादिकांश्च नाशयति।।३१६।।
जुहुयाद्रोहिणसमिधायुतं मन्त्री पुनः सशुङ्गानाम्।
सर्वापदां विमुक्त्यै सर्वसमृद्ध्यै ग्रहादिशान्त्यै च।।३१७।।
आर्कैः समित्सहस्त्रैः प्रतिजुहुयादर्कवारमारभ्य।
दशदिनतोऽर्वाग्वाञ्छितसिद्धिर्देव्या प्रसादतो भवति।।३१८।।
शुद्धैः सारैरिध्मैस्त्रिदिनं वा सप्तरात्रकं वापि।
प्रतिशकलं प्रतिजुहुयान्मनुना निजवाञ्छिताप्तये मन्त्री।।३१९।।
विशिखानां त्रिंशत्कं पुरो निधायाऽथ तीक्ष्णतैलेन।
जुहुयात् सहस्त्रकं वाऽयुतमपि संख्यासु पूरितासु पुनः।।३२०।।
सम्पातिततैलेन च शरान् समभ्युक्ष्य पूर्ववज्जुहुयात्।
तानथ शूरो धन्वी शुद्धाचारः प्रवेश (ध) येद् बाणान्।।३२१।।
प्रतिसेनाया मध्ये सा धावति सद्य एवं सम्भ्रान्ता।
भूयो गुरुं धनैरपि धान्यैः परिपूजयेच्च कारयिता।।३२२।।
अष्टोत्तरशतजप्तं यच्छिरसि प्रक्षिपेच्चिताभस्म।
स तु विद्विष्टो लोकैर्देशाद्देशान्तरं परिभ्रमति।।३२३।।
कारस्करस्य पत्रैरष्टसहस्त्रैर्निपातितैर्मरुता।
जुहुयात् सपादपांशुभिरुच्चाटकरं भवेद्रिपोः सद्यः।।३२४।।
सेनां संस्तम्भयितु विषतरुसुमनःसहस्त्रकं जुहुयात्।
तावद्भिस्तत्पत्रैर्मंत्री च तां निवर्त्तयति।।३२५।।
विषतरुमयीञ्च शत्रोः प्रतिकृतिमसकृत्प्रतिष्ठितप्राणाम्।
छित्त्वा छित्त्वा काकोलूकवसाक्तैः सहस्त्रमष्टो च।।३२६।।
असितचतुर्दश्यां तद्गात्रैर्जुहुयादरण्यकेऽर्द्धनिशि।
त्रिचतुर्दशीप्रयोगादर्वाङ्म्रियते रिपुर्न सन्देहः।।३२७।।
स्ववसारक्तोपेतैर्जुहुयात्पक्षैरुलूकवायसयोः।
म्रियतेऽरातिर्मतः स्यादुन्मत्तसमित्सहस्त्रहोमेन्।।३२८।।
संस्थापितानिलां तां प्रतिकृतिमुष्णोदके विनिःक्षिप्य।
प्रजपेदुन्मादः स्याच्छत्रोर्दुग्धाभिषेकतः शान्तिः।।३२९।।
रविबिम्बगतामरुणां करयुगपरिक्लृप्तशूलतर्जनिकाम्।
ध्यात्वाऽयुतं प्रजप्यान्मारयितुं सद्य एव रिपुनिवहम्।।३३०।।
असिखेटकराऽर्कस्था क्रुद्धा मारयति सैव जपविधिना।
सिंहस्था बाणधनुः करा समुच्चाटयेदरीनचिरात्।।३३१।।

विषतरुसमिदयुतहुतादथ करिणो रोगिणो भवन्त्यचिरात्।
तत्पर्णैश्च विनाशस्तेषामुच्चाटनञ्च तत्पुष्पैः ॥३३२॥
आनित्यकसमिद्धोमाद्रोगा नश्यन्ति दन्तिनामचिरात्।
तत्पुष्पैर्मधुराक्तैर्होमाच्च वशीभवन्ति मातङ्गा ॥३३३॥
त्रिमधुरयुतैरानित्यकपत्रैर्मता भवन्ति ते सद्यः।
रक्षाकरस्तु करिणां तज्जापितपञ्चगव्यलेपः स्यात् ॥३३४॥
आज्यतिलराज्यानित्यकदुग्धौदनपञ्चगव्यतण्डुलकैः।
सघृतैश्च प्रत्येकं सहस्रहवनं गजाश्ववर्धनकृत् ॥३३५॥
द्विजभूरुहं महान्तं छित्त्वा निर्भिद्य पञ्चधा भूयः।
आशाक्रमेण पञ्चायुधा विधेयाश्च साधु शिल्पविदा ॥३३६॥
शङ्ख सनन्दकोऽरिः शार्ङ्गः कौमोदकी दिशां क्रमशः।
पञ्चेति पञ्चगव्ये निधाय जप्याञ्च पञ्चसाहस्रकम् ॥३३७॥
तावद्घृतेन जुहुयात्तेष्वथ सम्पात्य साधु सम्पातम्।
पुनरपि तावज्जप्त्वा मध्याद्यवटेषु पञ्चगव्ययुतम् ॥३३८॥
संस्थाप्य समीकृत्य च बलिं हरेत्तत्र तत्र तन्मन्त्रैः।
पुरराष्ट्रग्रामाणां कार्या रक्षैवमेव मन्त्रविदा ॥३३९॥
यस्मिन् देशे विहिता रक्षेयं तत्र वर्धते लक्ष्मीः।
धनधान्यसमृद्धिः स्याद्रिपुचोराद्यश्च नैव बाधन्ते ॥३४०॥
पद्मोत्पलकुमुदहुतैर्नृपपत्नीर्ब्राह्मणान् वशीकुरुते।
कह्लारलवणहोमैर्विट्शूद्रौ जातिभिस्तथा ग्रामम् ॥३४१॥
अथ वारिदरगदाम्बुजकरं मुकुन्दं विचिन्त्य रविबिम्बे।
व्यत्यस्तपुरुषभगवत्पदं मनुं भजतु सर्वसिद्धिकरम् ॥३४२॥
साध्याख्याक्षरदर्भितं मनुमिमं पत्रे लिखित्वा च तच्चक्री-
हस्तमृदा कृतप्रतिकृतेर्विन्यस्य मन्त्री हृदि।
सप्ताहं त्वथं पुत्तलीमभिसुखे संस्थाप्य सन्ध्यात्रये
जप्यादष्टशतं चिराय वशतां गच्छत्यसौ निश्चयः ॥३४३॥
व्रीहीणां जुहुयान्नरोऽष्टशतकं सम्वत्सराद् व्रीहिमान्।
गोदुग्धैः पशुमान् घृतैः कनकवान् दध्ना च सर्वर्द्धिमान्।
अन्नैरन्नसमृद्धिमांश्च मधुभिः स्याद्रत्नवान् दूर्वयाऽप्या-
युष्मान् प्रतिपङ्कजेन महतीं सद्यः श्रियं प्राप्नुयात् ॥३४४॥
छान्तं मरुत्तुरियवर्णयुतं सवाद्यं संवीप्सा शूलिनिपदञ्च सदुष्टशब्दम्।
पञ्चान्तकं सदहनं परिभाष्य हान्तं हूं फट् द्विठान्तमिति शूलिनिमन्त्रमेव ॥३४५॥

ऋषिर्दीर्घतपाश्छन्दः ककुब्दुर्गा च देवता।
दुर्गा हृद्वरदा शीर्षं शिखा स्याद्विन्ध्यवासिनी।।३४६।।
वर्माऽसुरमर्दिनि च युद्धपूर्वप्रिये तथा।
त्रासयद्वितयञ्चाऽस्त्रं देवसिद्धसुपूजिते।।३४७।।
नन्दिन्यन्ते रक्षयुगं महायोगेश्वरीति च।
शूलिन्याद्यन्तु पञ्चाङ्गं हुं फड्न्तमितीरितम्।
अङ्गकर्मेव रक्षाकृत् प्रोक्तं ग्रहनिवारणम्।।३४८।।
बिभ्राणा शूल बाणास्यरि सदर गदा चाप पाशान् कराब्जै-
र्मेघश्यामाकिरिटोल्लसितशशिकला भीषणा भूषणाढ्या।
सिंहस्कन्धाधिरूढ़ा चतसृभिरसिखेटान्विताभिः परीता
कन्याभिर्भिन्नदैत्या भवतु भवभयध्वंसिनी शूलिनी वः।।३४९।।
एवं विचिन्त्य पुनरक्षरलक्षमेनं मन्त्री जपेत् प्रजुहुयाच्च दशांशतोऽन्ते।
प्राज्येन साज्यहविषा प्रजपेच्च देवीमङ्गाष्टशक्तिनिजहेतिदिशाधिनाथैः।।३५०।
दुर्गा च वरदा विन्ध्यवासिन्यसुरमर्दिनी।
युद्धप्रिया देवसिद्धपूजिता नन्दिनी तथा।
महायोगेश्वरी चाष्ट शक्तयः समुदीरिताः।।३५१।।
रथाङ्गशङ्खासिगदावाणकार्मुकसंज्ञकाः।
सशूलपाशा यष्टव्या दिक्क्रमादष्ट हेतयः।।३५२।।
दीक्षाजपहुतार्चाभिः सिद्धः कर्म समाचरेत्।
आमयोन्मादभूतापस्मारक्ष्वेलशमादिकम् ।।३५३।।
उद्गूणैः प्रहरणकैरुदीर्णवेगैः शूलाद्यैर्निजमथ ·लिनीं विचिन्त्य।
आविश्य क्षणमिव जप्यमानमन्त्रस्यावृत्त्या द्रुतमपयान्ति भूतसङ्घा।।३५४।।
अन्तराऽथ पुनरात्मरोगिणोरम्बिकामपि निजायुधकुलाम्।
संविचिन्त्य जपतोऽरिमुद्रया विद्रवन्त्यवशविग्रहा ग्रहाः।।३५५।।
अहिमूषिकवृश्चिकादिजं वा बहुपात्कुक्कुरलूतिकोद्भवं वा।
विषमाशु विनाशयेन्नराणां प्रतिपत्त्यैव च विन्ध्यवासिनी सा।।३५६।।
आधाय बाणे निशिते च देवी क्षेमङ्करीमन्त्रमिमं जपित्वा।
तद्वेधनादेव विपक्षसेना दिशो दिशो धावति नष्टसंज्ञा।।३५७।।
आत्मानमार्यां प्रतिपद्य शूलपाशान्वितां वैरिबलं प्रविश्य।
मन्त्रं जपन्नाशु परायुधानि गृह्णति मुष्णाति च बोधमेषाम्।।३५८।।
तिलसिद्धार्थैर्जुहुयाल्लक्षं मन्त्री सपत्ननामयुतम्।
स तु रोगाभिहतात्मा मृतिमेति न तत्र सन्देहः।।३५९।।

त्रिमधुरसिक्तैश्च तिलैरष्टसहस्त्रं जुहोति योऽनुदिनम्।
अप्रतिहताऽस्य शक्तिर्भूयात् प्रागेव वत्सरतः।।३६०।।
सर्पिषाऽष्टशतहोमतोऽमुना वाञ्छितं सकृलमब्दतो भवेत्।
दूर्वया त्रिकयुजेप्सितं लभेत् सम्यगष्टशतसंख्या हुतात्।।३६१।।
छुरिकाकृपाणनखरा मन्त्रेणाऽनेन साधु संजप्ताः।
सम्पाताज्यसुसिक्ता अप्रतिहतशक्तयो भवन्ति युधि।।३६२।।
गोमयविहितां गुलिकां जुहुयाच्छतमष्टपूर्वकं मन्त्री।
दिवसैः सप्तभिरिष्टौ द्विष्टौ मिथो वियोगिनौ भवतः।।३६३।।
अस्पृष्टकुं गोमयमन्तरिक्षे संगृह्य जप्त्वा त्रिसहस्रमानम्।
यियासतां वै निखनेन्नराणां संस्तम्भनं द्वारि चमूमुखे च।।३६४।।
पानीयान्धःपाणिमार्यां प्रसन्नां ध्यात्वा ग्रामं वा पुरं वापि गच्छन्।
जप्त्वा मन्त्रं तर्पयित्वा प्रविष्टो मृष्टं भोज्यं प्राप्नुयाद्भृत्यवर्गैः।।३६५।।
आर्कैर्मन्त्री त्रिमधुरयुतैरर्कसाहस्रमिध्मै-
राश्वत्थैर्वा त्वतिविशदचेतास्तिलैर्वा जुहोति।
यानुद्दिश्य त्ववहितमास्तन्मये सम्यगग्नौ
ते वश्याः स्युर्विधुरितधियो नात्र कार्यो विचारः।।३६६।।
कुर्यात् प्रयोगानपि दावदुर्गाकल्पोदितान् वै मनुनाऽमुना च।
मन्त्री जपार्चाहुततर्पणान्तान्नाल्पो हि मन्वोरनयोर्विशेषः।।३६७।।

।। इति श्रीमन्महेश्वरानन्द विरचिते श्रीदुर्गामन्त्रराजकल्पतन्त्रे तृतीयोऽध्यायः।।

●

अथ चतुर्थोऽध्यायः

सार संग्रहे-

अथोच्यन्ते महामन्त्रा दुर्गायाः वाञ्छितार्थदाः।
त्रिवर्गफलमोक्षाप्तिदायका विजयप्रदाः।।१।।
सद्यः सदण्डी हृल्लेखा सधृतिह्लादिनीन्दुयुक्।
अत्रीन्धिके विसर्गः स्मृतिप्रतिष्ठे श्रिया सह।।२।।
धूम्रार्चिः स्यात् टपंक्त्यर्णस्तन्द्रानन्तेऽष्टवर्णकः।
दुर्गामनुः समाख्यातो भजतां सर्वकामदः।।३।।

सद्य ओ, दण्डी अनुस्वारस्तद्युक्तस्तेन प्रणवः, हृल्लेखा भुवनेश्वरीबीजं, धृतिरुकारो, ह्लादिनी दकाराः इन्दुः अनुस्वारस्तेन दुं, अत्रिर्दकारः इन्धिका उकारः विसर्ग युक्तस्तेन दुः स्मृतिर्गकाराः प्रतिष्ठा आ तेन गा, श्रीः ऐकारः धूम्रार्चिर्यकारः तेन यै, टपंक्त्यर्णो नकारः, तन्द्रा म, अनन्तो विसर्गः तस्यात्र ''ससजुषो रु'' रिति रेफः, तेन दुर्गा इत्यस्य सन्धिस्तेन दुर्गायै इति मन्त्रे बोद्धव्यम्।।

मुनिः प्रोक्तो नारदाख्यो गायत्रं छन्द ईरितम्।
दुर्गा च देवता प्रोक्ता दृष्टादृष्टफलप्रदा।।४।।
षड्दीर्घयुक्तैराद्यन्तैर्मनुपूर्वषडर्णकैः।
जातियुक्तैः षडङ्गानि मनोरस्य प्रकल्पयेत्।।५।।

तेन ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै ह्रां हृदयाय नमः इत्यादिषडङ्गमन्त्रा उन्नेयाः। तदुक्तमाचार्यचरणैः ''तारो माया च दुर्गायै ह्रामाद्यन्ताङ्गकल्पना'' इति। चकारा दुं समुचितोतीति पद्मपादाचार्यः।।

ध्यानम्-

सिंहासनां मरकतद्युतिमिन्दुचूडां शङ्ख ह्यरिं करतलैर्दधतीं शरासम्।
बाणं त्रिनेत्रलसितां भवदुःखहन्त्रीं दुर्गां नमामि मणिभूषणभूषिताङ्गीम्।।६।।

वामाद्यूर्ध्वयोराद्ये तदाद्यधःस्थयोरन्ये इत्यायुधध्यानम्। तथा-

अष्टपत्राम्बुजद्वन्द्वं चतुरस्त्रत्रायावृतम्।
चतुर्द्वारसमायुक्तं कुंकुमादिभिरुद्धरेत्।।७।।
कुर्याच्च पीठपूजायां नवशक्तिसमर्चनम्।
ताश्च प्रभा समाया सजया सूक्ष्मा विशुद्धा स्यात्।।८।।
नन्दिन्या सुप्रभया विजया सर्वादिसिद्धिर्नवमी।
एकवह्निशरक्लीवहीनैरज्भिः प्रपूजयेत्।।९।।

एकेति अइउऋलृलॄ इति सप्तस्वररहितैरञ्भिः आईऊएएओऔअंऐअः इति नवभिः स्वरैः सहिता नवशक्तयः पूजा इत्यर्थः।

तारो वज्रनखदंष्ट्रायुधाय च महापदम्।
सिंहाय वर्मास्त्रनतिप्रान्तः सिंहाणुरीरितः।।१०।।
आसनं मनुनानेन दद्यान्मूलेन कल्पयेत्।
वर्म हुं अस्त्रं फट् नतिर्नमः।।
मूर्तिमावाह्य तस्यां तां पूजयेच्चन्दनादिभिः।
प्रथमावृत्तिरंगैः स्याज्जयादिभिः परा परा।।११।।
शङ्खादिकैरायुधैः स्याच्चतुर्थीन्द्रादिभिः परा।
तदायुधैश्च दुर्गायाः पूजनं समुदीरितम्।।१२।।
सजया विजया कीर्तिः प्रीतिः प्रभा समीरिता श्रद्धा।
मेधा श्रुति स्वनामाद्याक्षरपूर्वाः समभ्यर्च्याः।।१३।।
अरिदरगदासिपाशांकुशशरधनुष्यायुधानि गदिताति।
इत्थं दुर्गामन्त्रं यो भजते स नर इन्दिरां लभते।।१४।।

अथ प्रयोगः-तत्र प्रातरुत्थाय योगपीठन्यासान्ते मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा शिरसि ॐ नारदाय ऋषये नमः मुखे, गायत्री छन्दसे नमः हृदये, श्रीदुर्गायै देवतायै नमः इति विन्यस्य कृताञ्जलिर्मम सर्वाभीष्टसिद्धये विनियोगः इत्युक्त्वा ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै ह्रीं हृदयाय नमः ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै शिरसे नमः इत्यादिषडङ्गमन्त्रानंगुष्ठादितलान्तं हृदयादिषडंगेष्वपि विन्यस्य ध्यानादिमानसपूजान्ते स्वर्णादिपट्टे चन्दनादिभिरन्तर्बहिर्विभागेनाष्टदलकमलं कृत्वा तद्बहिश्चतुर्द्वारयुक्तचतुरस्रत्रयं कुर्यादिति पूजाचक्रं निर्माय, प्राग्वत् स्वपुरतः संस्थाप्यार्घ्यस्थापनादिपरतत्त्वार्चान्तं विधाय, अष्टदलकेसरेषु स्वग्रादिप्रादक्षिण्येन आं प्रभाये नमः, ईं मायायै नमः, ॐ जयायै नमः, एं सूक्ष्मायै नमः, ऐं विशुद्धायै नमः, ॐ नन्दिन्यै नमः, ॐ सुप्रभायै नमः, अं विजयायै नमः मध्ये अः सर्वसिद्धयै नमः" इति सम्पूज्य। "ॐ वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहाय हुं फट् नमः" इति पीठस्य मध्ये समभ्यर्च्यावाहनादिपुष्पोपचारान्ते प्राग्वदङ्गानि सम्पूज्यान्तरष्टदलेषु स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन ॐ जयायै नमः, ॐ विं विजयायै नमः, ॐ किं कीर्त्यै नमः ॐ प्रिं प्रीत्यै नमः, ॐ प्रं प्रभायै नमः, ॐ श्रं श्रद्धायै नमः, ॐ में मेधायै नमः, ॐ श्रुं श्रुत्यै नमः इति सम्पूज्य बाह्याष्टदलेषु ॐ शङ्खाय नमः, ॐ चक्राय नमः, ॐ गदायै नमः, ॐ खड्गाय नमः ॐ पाशाय नमः, ॐ अंकुशाय नमः, ॐ शरेभ्यः नमः, ॐ धनुषे नमः इति प्रादक्षिण्येन सम्पूज्य प्राग्वद् वीथीद्वये लोकपालतदस्त्रार्चादि सर्वं समापयेत् ।।

तथा-

जितेन्द्रियो हविष्याशी वसुलक्षं जपेन्मनुम्।
तत्सहस्रं तिलैः स्वादुलोलितैर्वा पयोन्धसा।।१५।।
जुहुयादेधिते वह्नौ तर्पणादि ततश्चरेत्।
वसुलक्षमष्टलक्षं स्वादु त्रिमधु।
एवं सिद्धमनुर्मन्त्री प्रयोगानाचरेत् सुधीः।।१६।।
यथोक्तेन विधानेन नवकुम्भान् मनोरमान्।
पञ्चरत्नसमायुक्तान् नवस्थानेषु विन्यसेत्।।१७।।
मन्त्री दुर्गां यजेन्मध्ये त्वन्यत्र च जयादिकाः।
चन्दनाद्यैः समभ्यर्च्य धूपदीपैश्च मन्त्रवित्।।१८।।
अभिषिञ्चेत् प्रियं साध्यं राजानं वा शिशु बुधः।
विजयश्रीसमायुक्तो राजा भवति नान्यथा।।१९।।
भूतापस्मारवेतालपिशाचाद्यैर्वियुज्यते।
वन्ध्या च ललना पुत्रं विनींत प्राप्नुयाच्छुभम्।।२०।।
आमयान्मुच्यते मर्त्यो दीर्घायुश्च न संशयः।
अनेनैव विधानेन जनानामनुरञ्जनम्।।२१।।
एवं दुर्गामनुं मर्त्यो यो भजेद्विधिनामुना।
स दीर्घायुश्च दुरितं जयेत्सुविजितामयः।।२२।।
पद्मे तारगतां शक्तिं ससाध्यां तद्दलेष्वथ।
मन्त्रवर्णांल्लिखेदष्टौ त्रिष्टुब्मन्त्रेण वेष्टयेत्।।२३।।
मातृकार्णैर्बहिर्वीतं चतुरस्रेण वेष्टयेत।
दौर्गं यन्त्रमिदं प्रोक्तं सर्वसिद्धिकरं परम्।।२४।।
अपस्मारमहाभूतक्षुद्रज्वरनिवारणम्।
नृणां विजयदं स्त्रीणां पुत्रदं नात्र संशयः।।२५।।

इति अस्यार्थः- अष्टदलपद्मं कृत्वा तन्मध्ये तारं तस्योदरे शक्तिबीजं तदुदरे साध्यनाम च विलिख्य तद्दलेषु मन्त्रवर्णानेकैकशो विलिख्य, बहिर्वृत्तत्रयं कृत्वाऽन्तर्वीथ्यां "जातवेदसे सुनवामे" ति त्रिष्टुब्मन्त्रेण सम्वेष्ट्य तद्बहिश्चतुरस्रं कुर्यात्। एतद्यन्त्रमुक्तफलदं भवति। नारायणीये-

विषं हि मज्जा कालोऽग्निरत्रिनिष्ठो निठद्वयम्।
मन्त्रो महिषमर्दन्याः प्रोक्तो वस्वक्षरात्मकः।।२६।।

विषं म, हि स्वरूपं, मज्जा ष, कालो म, अग्निः र अत्रिनिष्ठो दकारस्थस्तेन र्द नि स्वरूपं, ठद्वयं स्वाहा।

मार्कण्डेयो मुनिश्छन्दो गायत्रं देवता मनोः।
सुरासुरनता देवी प्रोक्ता महिषमर्दिनी।।२७।।

शारदातिलके-

महिषमर्दिनि हुंफट् हृदयं परिकीर्तितम्।
महिषशत्रूत्सादि हुंफट् शिरोऽङ्गं समुदीरितम्।।२८।।
महिषं भीषयद्वन्द्वं हुं फडन्तः शिखामनुः।
महिषं हनयुग्मान्ते देवि हुंफट् तनुच्छदम्।।२९।।
महिषान्ते सूदनि हुंफडन्तं चास्त्रमीरितम्।
मन्त्रैरेतैर्जातियुक्तैः पञ्चाङ्गानि प्रकल्पयेत्।।३०।।
गारुडोपलसन्निभां मणिमौलिकुण्डलमण्डिताम्।
नौमि भालविलोचनां महिषोत्तमाङ्गनिषेदुषीम्।।३१।।
शङ्खचक्रकृपाणखेटकबाणकार्मुकशूलकान् ।
तर्जनीमपि विभ्रतीं निजबाहुभिः शशिशेखराम्।।३२।।

दक्षाद्यूर्ध्वयोराद्ये तदाद्यधःस्थयोरन्ये, इत्यायुधध्यानम्।। ईशानशिवे तु-

ध्यायेत् श्यामां महादुर्गां सर्वाभरणभूषिताम्।
जटामुकुटशोभाढ्यां स्फुरच्चन्द्रकलान्विताम्।।३३।।
पीताम्बरधरां देवीं पीनोन्नतकुचद्वयम्।
शङ्खचक्रलसद्धस्तां तदधः खड्गखेटकौ।।३४।।
बाणचापौ च तदधः सशूलां तर्जनीमधः।

तर्जनीति तर्जनीमुद्रा। तल्लक्षणं यथा-

तर्जन्यैकाकिनी ऊर्ध्वं शेषाः संनमितानस्त्वधः।
मुद्रेयं तर्जनीं प्रोक्ता वक्तृश्रोत्रोस्तु भीतिदा।। इति सारसंग्रहोक्ता।

ततः पूर्वोदिते पीठे यजेन्महिषमर्दिनीम्।।३५।।
प्रथमावृतिरंगैः स्याद् दुर्गाद्याभिः परा परा।
ध्यानोक्तैरायुधैर्याद्यैर्लोकपालैः परीरिता।।३६।।
तदायुधैः पञ्चमी स्यादेवं पूजा समीरिता।
दुर्गाद्या वरवर्णिन्या ह्यार्या च कनकप्रभा।।३७।।
कृत्तिकाह्यभयाद्या च प्रदा कन्या स्वरूपिका।
दीर्घ स्वराद्याः क्रमतः पूजयेन्मन्त्रवित्तमः।।३८।।

इति। दीर्घाद्या, क्लीवान्त्यपरहितदीर्घस्वराद्याः। नारायणीये पूर्वे पटलेऽनन्तत्रयब्धि-योन्यादीत्युक्त्वोत्तरपटले आद्यैः स्वरैः क्रमादित्युक्तम्। आद्यैः- आ ई ऊ ए ऐ ओ औ अं इति परस्परैरिति टीका। याद्यैर्यादिभिर्हान्तैरिति।।

अथ प्रयोगः-

तत्र प्राग्वद्योगपीठन्यासान्ते मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा, शिरसि मार्कण्डेयाय ऋषये नमः मुखे गायत्री छन्दसे नमः हृदये श्रीमहिषमर्दिन्यै देवतायै नमः इति विन्यस्य विनियोगमुत्कीर्य, महिषमर्दिनी हुं फट् हृदयाय नमः। महिषशत्रूत्सादि हुंफट् शिरसे स्वाहा। महिषं हेषय हेषय हूं फट् शिखायै वषट्। महिषं हनहन देवि हुं फट् कवचाय हुं। महिषसूदनि हुं फट् अस्त्राय फट्।

इति पञ्चाङ्गमन्त्रान् मूलमन्त्राभिमृष्टयोः पाण्योरंगुष्ठादिकनिष्ठिकान्ता- स्वंगुलिषु विन्यस्य, नेत्ररहितेषु हृदयादिपञ्चाङ्गेषु विन्यस्य ध्यानमानसपूजान्ते पूर्वमन्त्रोक्तं पूजाचक्रं निर्मायार्घ्यस्थापनाद्यङ्गपूजान्ते तदष्टदलेषु स्वाग्रादिपादक्षिण्येन

आं दुर्गायै नमः, ईं वरवर्णिन्यै नमः, ऊँ आर्यायै नमः, एं कनक प्रभायै नमः, ऐं कृत्तिकायै नमः, ओं अभयप्रदायै नमः, औं कन्यायै नमः, अं स्वरूपाये नमः इति सम्पूज्य द्वितीयेऽष्टदले स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन यं शङ्खाय नमः, रं चक्राय नमः, लं खड्गाय नमः, वं खेटकाय नमःए शं बाणाय नमः, षं बाणासनाय नमः, सं शूलाय नमः, हं तर्जन्यै नमः इति सम्पूज्य दिगीशार्चादि शेषं प्राग्वत् समापयेदिति।। तथा-

प्रजपेद्वसुलक्षं च तत्सहस्रं तिलैर्हुनेत्।
एवं सिद्धमनुर्मन्त्री प्रयोगानाचरेत् ततः।।३९।।
तिलहोमाद्वशीकारो नृणां स्त्रीणां भवेद् ध्रुवम्।
आमयान्मुच्यते मर्त्यः सद्यः सर्षपहोमतः।।४०।।
पद्‌महोमात्तथा राज्ञः संग्रामे विजयो भवेत्।
दूर्वाहोमेन मर्त्यानां रोगशान्तिर्भवेद् ध्रुवम्।।४१।।
ब्रह्मवृक्षोत्थकुसुमैर्लभते पुष्टिमुत्तमाम्।
धान्यहोमेन धान्याप्तिः काकपक्षहुतेन च।।४२।।
विद्वेषो जायते लोके ह्यत्यन्तं सुहृदोरपि।
शत्रुर्गच्छति पञ्चत्वं सत्यं मरिचहोमतः।।४३।।
एवं यो भजते देवीं दुर्गां महिषमर्दिनीम्।
स नाशयेत्क्षुद्रभूतचौरादीन् दर्शनादपि।।४४।।

इति। सारसंग्रहे—

वेदादिर्दुर्गासम्बुद्धिद्वितयं वह्निरन्त्यगः।
टपञ्चमः सनयनः कृशानुगृहिणी ततः।।४५।।
पंक्त्यक्षरो मनुः प्रोक्तो भजतां सर्वसिद्धिदः।।४६।।

वेदादिः प्रणवः। दुर्गासम्बुद्धिद्वितयं दुर्गे दुर्गे इति। वह्नि रेफः। अन्त्यगः क्षकारः टपञ्चमो णकारः सनयन इकारसहितस्तेन णि। कृशानुगृहिणी स्वाहा।। **शारदा-तिलके**-"तारो दुर्गेयुगं रक्तमन्त्यं ढान्तं सलोचनम्" इत्युद्धृतं, तत्र सलोचनमिति पदमन्त्यस्य ढान्तस्य च विशेषणमिति द्वयोरपीकारयोग उक्त-स्तट्टीकाकृता अपेक्षितार्थद्योतनिकाकारेण। तेन क्षिणि इति केचिद्वदन्ति तन्न रम्यम्। "तारो दुर्गेद्वयं वह्निरन्त्यं ढान्तं सदृक् शिरः" इति नारायणीयवचनात्।

वह्निभार्या स्वरः षष्ठो ढान्तः प्रान्त्योऽग्निरेव च।
दुर्गे द्विरिति सोंकारो दुर्गामन्त्रः स्मृतौ बुधैः।।४७।।

इति कालिका पुराणाच्च। अत्र षष्ठः स्वरः इकारः सप्तस्वराङ्गीकारात्। ह्रस्वदीर्घयोरेकत्वात् व्युत्क्रमेण इकारस्य षष्ठत्वात् सन्निधिस्थेन ढान्तेनैव अस्यान्वये जाते केवलवान्तप्रतीतेरुक्त**शारदातिलक**स्यापि लाघवादेकस्येव सलोचनमिति पदं विशेषणमित्यर्थः। अत्र व्युत्क्रमेण मन्त्रोद्धारो बोद्धव्यः।। तथा नारायणीये-

नारदो मुनिराख्याते विराट्छन्द उदाहृतम्।
जयदुर्गा देवता स्याद्भुक्तिमुक्तिफलप्रदा।।४८।।
ताराद्यैः पञ्चभिर्मन्त्रपदैः सर्वेण सम्मता। जातियुक्तैरङ्गक्लृप्तिः।

इति। **शारदातिलके**-

दुर्गे च हृदयं प्रोक्तं दुर्ग शिर इतीरितम्।
दुर्गायै स्याच्छिखा वर्मभूतरक्षणि कीर्तितम्।
तारादि दुर्गे द्वितयं रक्षण्यस्त्रं प्रकीर्तितम्।।४९।।

इति षडङ्गमन्त्रा उक्ताः। अत्र केचित तारादीति वर्मान्तमन्त्रमस्त्रान्तर्वदन्ति। वस्तुवस्तु तयोरुक्तमध्ये तदन्तर्भावं इति तत्त्वम्। ध्यानम्-

जलद्युतिमिन्दुकिरीटां चक्रदरासिरुजः करपद्मैः।
दधतीं नयनत्रययुक्तां सिंहगतां प्रणयेज्जयदुर्गाम्।।५०।।

रुक् त्रिशूलम्। वामोर्ध्वादिवामाधः करान्तमायुधध्यानम्। दक्षोर्ध्वादितदधोऽन्तं वा। तथा-

दौर्गे पीठे यजेद्देवीमुक्तमार्गेण मन्त्रवित्।
प्रजपेत्पञ्चलक्षं च तद्दशांशं हुनेद् घृतैः।।५१।।

उक्तमार्गेण प्रथमाष्टाक्षरोक्तमार्गेण।

तर्पणादि ततः कुर्यात्ततः सिद्धो भवेन्मनुः।
ततः सिद्धमनुर्मन्त्री प्रयोगानाचरेत्सुधीः।।५२।।
इमं मन्त्रं जपन् भूयः प्रविशेच्छत्रुसङ्गरम्।
अशेषेण रिपुं हन्यान्नात्र कार्या विचारणा।।५३।।

विवादे व्यवहारादौ जप्तो विजयदो भवेत्।
अनयास्त्राणि विद्वान् शस्त्राणि सुबहून्यपि।।५४।।
सुजप्तानि च संग्रामे सम्यग्विजयदानि च।।५५।।

इति। सारसंग्रहे-

तारो हृन्मन्त्रो दुर्गेद्वयं रक्षणि च द्विठः।
द्वादशार्णो मनुः प्रोक्तो मुन्याद्यं पूर्ववच्चरेत्।।५६।।
व्यस्तेन च समस्तेन मन्त्रेणाङ्गानि षट् क्रमात्।
ध्यानपूजादिकं सर्वमस्य पूर्ववदाचरेत्।।५७।।

द्विठः स्वाहाकारः। पूर्ववद् दुर्गाष्टक्षरवत्। तथा-

प्रणवो हृद्भगवती ज्वालामालिनि गृधगः।
णलोहितो रिवृते च द्विठान्तः परिकीर्तितः।।५८।।
द्वाविंशत्यर्णको मन्त्रः सर्वकामफलप्रदः।

हृन्नमः। लोहितः प। द्विठः स्वाहा। अन्यानि पदानि स्वरूपाणि।।

त्रिचतुष्पञ्चवस्वर्णैर्मिश्रैर्मन्त्रार्णकैः क्रमात्।।५९।।
पञ्चाङ्गानि मनोरस्य जातियुक्तानि कल्पयेत्।
अन्यच्छूलिनिदुर्गावत् सर्वमस्य प्रकल्पयेत्।।६०।।इति।।

अथ शूलिनिदुर्गायाविधिर्लिख्यते। सारसंग्रहे-

अथ शूलिनिदुर्गाया मनुं वक्ष्ये यथाविधि।
चतृतीयं सुधायुक्तं धरा ह्येतद्द्वयं ततः।।६१।।
मरुत्पञ्चम च वामश्रुतीनां भूमिरक्षियुक्।
दीर्घा तृतीय स्वरयुक् ततृतीयाश्च कर्णयुक्।।६२।।
ष्टग्रव्योम च वर्मास्त्रवह्नियोषावसानकः।
अयं शूलिनि दुर्गायास्तिथिवर्णो मनुर्मतः।।६३।।

चतृतीयं ज, सुधा व, तद्युक्तं तेन ज्व, धरां ल, एतद्द्वयं ज्वल-ज्वल इति। मरुत्पञ्चम श, वामश्रुति ऊ तेन शू। भूमिर्ल, अक्षि इ तेन लि। दीर्घा न, तृतीयस्वर इ तेन नि। ततृतीयो द, कर्ण उ तेन दु। ष्टग्र स्वरूपं, व्योम ह, वर्म हुं अस्त्रं फट्, वह्नियोषा स्वाहा।।

मुनिदीर्घतमाच्छन्दः ककुबुक्तं च देवता।
शूलिन्याह्वा महादुर्गा क्षुद्रदुष्टविनाशिनी।।६४।।
दुर्गे स्याद् हृदयं शीर्षं वरदे विन्ध्यवासिनी।
शिखा वर्मासुरान्ते च मर्दयन्ते ततो वदेत्।।६५।।

युद्धप्रिये पदं पश्चात् त्रासयद्वयमीरितम्।
पञ्चाङ्गमन्त्रा उद्दिष्टा एवं न्यसतस्य मन्त्रिणः।।६६।।
रक्षाकृद्ग्रहदोषघ्नमङ्गमकर्म भवेद् ध्रुवम्।
एवं न्यस्तशरीरोऽसौ ध्यायेद् दुर्गां सुरैर्नुताम्।।६७।।

पञ्चाङ्गमन्त्रानाह-'दुर्गे स्याद्धृदय' मित्यादि। तेन शूलिनि इत्यादावन्ते देवसिद्धेत्यादि। तदुक्तं नारायणीये-

एवमादौ शूलिनीति पदं तारादिकं वदेत्।
अवसाने तु सर्वेषां देवसिद्धसुपूजिते।।६८।।
नन्दिनीरक्षयुग्मं च महायगेश्वरीमपि।
वर्मास्त्रबीजे चामूनि ग्रहरक्षाकराणि हि।।६९।।
पञ्चाशदावृतिन्यासाज्ज्वरस्तीव्रोऽपि नश्यति।

तारादित्वं च ज्वरप्रयोगे। तथा-

नीलाम्भोधरकान्तिमिन्दुमुकुटां सिंहाधिरूढ़ां करैः
शूलं बाणमसिं ह्यरिं दरगदाचापान् सपाशाङ्शुभैः।
बिभ्राणामसिखेटयुक्चतसृभिः कन्याभिराराद्वृतां
नानाभूषणभूषितां त्रिनयनां दुर्गां भजे शूलिनीम्।

दक्षिणाधः करमारभ्य कमाधः करपर्यन्तमायुधध्यानम्।

दुर्गापीठे पुरा प्रोक्ते ध्यात्वा देवीं प्रपूजयेत्।।७०।।
वक्ष्यमाणेन विधिना पुराङ्गानि प्रपूजयेत्।
दुर्गादिभिर्द्वितीया स्यादायुधैश्चापरा स्मृता।।७१।।
दिशाधिनाथैर्वज्राद्यैरेवमर्चा समीरिता।
दुर्गा च वरदा विन्ध्यवासिन्यसुरमर्दिनी।।७२।।
प्रोक्ता युद्धप्रिया देवसिद्धसुपूजितापि च।
नन्दिन्या समहायोगेश्वरीति गदिताश्च ताः।।७३।।

आयुधानि तु-''चक्रदरासिगदाशरासनत्रिशिखपाशकानि विदुः।।

अथ प्रयोगः- तत्र प्राग्वद्योगपीहन्यासन्ते मूलमन्त्रेण प्राणायामत्रयं कृत्वा शिरसि दीर्घतमसे ऋषये नमः। मुखे ककुप्छन्दसे नमः। हृदि शूलिनीदुर्गायै देवतायै नमः। इति विन्यस्य विनियोगमुक्त्वा, शूलिनि दुर्गे देवसिद्ध सुपूजिते, हृदयाय नमः। शूलिनि वरदे देवसिद्धिसुपूजिते, शिरसे स्वाहा। शूलिनि विन्ध्यवासिनि देवसिद्धसपूजिते शिखायै वषट् । शूलिन्यसुरमर्दिनी देवसिद्धसुपूजिते कवचाय हुं। शूलिनि युद्धप्रिये त्रासय त्रासय देवसिद्धसुपूजिते अस्त्राय फट्।। इति पञ्चाङ्गमन्त्रान मूलमन्त्राभिभृष्टयोः पाण्योरंगुष्ठादिकनिष्ठास्वंगुलीषु विन्यस्य

हृदयादि नेत्ररहितेषु पञ्चाङ्गेषु च विन्यस्य ध्यानादिपञ्चाङ्गपूजान्तेऽष्टदलेषु स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन ॐ दुं दुर्गायै नमः एवं वरदायै नमः विन्ध्यवासिन्यै नमः असुरमर्दिन्यै नमः युद्धप्रियायै नमः देवसिद्धसुपूजितायै नमः नन्दिन्यै नमः महायोगेश्वर्यै नमः इति सम्पूज्य द्वितीयाष्टदले स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन ॐ चक्राय नमः, शङ्खाय नमः, खड्गाय नमः, गदायै नमः, बाणाय नमः चापाय नमः, शूलाय नमः, पाशाय नमः, इति सम्पूज्य दिगीशार्चादि शेषं प्राग्वत् समापयेत्।।
तथा-

वर्णलक्षं जपेन्मन्त्रं जुहुयात्तद्दशांशतः।
आज्येन प्राज्यहविषा तर्पणादि ततश्चरेत्।।७४।।
आराध्य विप्रान् विधिवद्भक्त्याभ्यर्च्य गुरुं ततः।
एवं सिद्धमनुर्मन्त्री प्रयोगान् मनसीप्सितान्।।७५।।
विदधीत विधानेन गुरोराज्ञापुरःसरम्।
शूलाद्यायुधसंयुक्तामुग्रां स्वं शूलिनीं तथा।।७६।।
विचिन्त्य प्रजपेन्मन्त्रं ग्रस्तं स्पृष्टा विधानतः।
तमाविश्य क्षणं सर्वं वदेत्पश्चाद्विनश्यति।।७७।।
मन्त्रावृत्त्या तदानीं च भूतसङ्घः पलायते।
स्मृत्वात्मरोगिणोर्मध्ये शूलिनीमायुधैर्वृताम्।।७८।।
जपतो विद्रवन्त्याशु ग्रहा अवशविग्रहाः।
दुःसर्पवृश्चिकाद्युत्थं बहुपात्कुक्कुरोद्भवम्।।७९।।
लूतिकादिककीटोत्थं विषं नाशयति क्षणात्।
निशिते सायके देवीमाधायैव च शूलिनीम्।।८०।।
क्षेमङ्करी पूजयित्वा मनुमेनं जपेत्सुधीः।
परायुधानि गृह्णाति सेना निश्चेष्टका भवेत्।।८१।।
तिलयुक्तैः सर्षपैश्च वैरिणो नामसंयुतैः।
लक्षं प्रजुहुयाच्छत्रुरामयाविष्टविग्रहः।।८२।।
यमातिथित्वमायाति नात्र कार्या विचारणा।
त्रिस्वाद्वक्तैस्तिलैरष्टसहस्त्रं प्रत्यहं हुनेत्।।८३।।

अष्टसहस्त्रमष्टोत्तरसहस्त्रमित्यर्थः।

शक्तिरस्याप्रतिहता वत्सरात् प्राग्भवेदलम्।
घृतेनाष्टशतं मन्त्री जुहुयाद्वाञ्छितं लभेत्।।८४।।
वत्सरात् प्राग् दूर्वया च मधुरत्रययुक्तया।
सम्यगष्टोत्तरशतं जुहुयादीप्सितं लभेत्।।८५।।

छुरिकाखड्गनाराचाः सञ्जप्ता मनुनामुना।
सम्पातघृतसिक्ताश्च संग्रामेऽहतशक्तयः।।८६।।
अष्टोत्तरशत मन्त्रीं गुलिका गोमयस्य च।
जुहुयात् सप्तदिवसैरिष्टो द्विष्टौ स्त आदरात्।।८७।।
अस्पृष्टभूम्यन्तरिक्षे गृहीत्वा गोमयं शुभम्।
त्रिसहस्रमितं जप्त्वा ययासोर्द्धारि संखनेत्।।८८।।
तस्य संस्तम्भनं मङ्क्षु भवेन्नैवात्र संशयः।
सेनामुखे निखातं च सेनास्तम्भ करोत्यलम्।।८६।।
ग्रामं वा 'नगरं गच्छन् संस्मरेदम्बिकां सुधीः।
पानीयान्नकरीं चैव प्रसन्नां प्रजपेन्मनुम्।।६०।।
तर्पयित्वा प्रविष्टस्तं प्राप्नुयादिष्टभोजनम्।
सह च भृत्यवर्गेण साधको नात्र संशयः।।६१।।
अर्कवृक्षसमिद्भिश्च त्रिमध्वक्ताभिरुक्तवत्।
जुहुयाद्रविसाहस्रं यानुद्दिश्य तु साधकः।।६२।।
भवन्त्येव हि ते वश्यास्तथाश्वत्थसमिद्वरैः।
प्रसन्नचेताश्च तिलैः पूर्वकर्मणि वा हुनेत्।
दुर्गाकल्पोदितान् सर्वान् प्रयोगान् साधयेत्सुधीः।।६३।।

यन्त्रव्यतिरिक्तानिति।।

तथा सार संग्रहे-

अथातो वनदुर्गायाः प्रोच्यते मन्त्र उत्तमः।
धृतिश्च कामिका द्वन्द्वं तुष्टियुग् वृषठान्तकः।।६४।।
रमेषुस्वरयुश्चा च परा विष्णुयुताक्षियुक्।
प्रज्ञा जया तुष्टि बिन्दुयुक्तां हंसश्च बालयुक् ।।६५।।
लोहितो नेत्रसहितो मन्त्रषष्ठाक्षरं वदेत्।
क्लिन्ना सदण्डी वसुधा विषं पंक्तिस्वरार्णयुक्।।६६।।
प्रभा महाकाश्रोत्रशूरः स्थ्यर्धेन्दुयुग्धरिः।
मरुन्मुक्त्यक्षिणी सन्ध्या क्यम सन्ध्यावय बिन्दुमत्।।६७।।
सूक्ष्मा कान्तियुता शुद्धदीर्घकाले स्वरान्विता।
विश्वमूर्तिः प्रभा बालः कामिकेयुग् वृषघ्नकः।।६८।।
वैकुण्ठो वसुधा चाग्निकान्ता मनुरयं मतः।
प्रवरो वनदुर्गायाः सप्तत्रिंशदर्णकः।।६६।।

धृतिरुकारः। कामिकाद्वन्द्वं त्त। तुष्टियुग् इकारयुक्तं तेन त्ति। वृषः ष स एव ठान्तस्तेन ष्ठ। रमा प इषुस्वर उ तद्युक्तस्तेन पु। परा रेफः विष्णुयुत उकारयुतस्तेन रुः। अक्षियुक् प्रज्ञा षि। जया क तुष्टिरिकारः बिन्दुरनुस्वारस्तेन किं हंसः स बालयुग् वकारयुक्तस्तेन स्व। लोहितः प नेत्रसहित इकारयुक्तस्तेन पि। मन्त्रषष्ठाक्षरं षि। क्लिन्ना भ। सदण्डीवसुधा यं। विषं म पंक्तिस्वरार्णयुक् तेन मे। प्रभा स। महाकालो म श्रोत्र उ तेन मु। शूरः प। स्थि स्वरूपं। अर्धेन्दुयुग्धरिः तं। मरुत् य। मुक्त्यक्षिणी दि। सन्ध्या श। क्यम स्वरूपां सन्ध्या श। क्य बिन्दुमत् क्यं। सूक्ष्मा व कान्तियुतस्तेन वा। शुद्धिः त। दीर्घकालेस्वरान्विता मकारएकारयुक्तो नकारस्तेन न्मे। विश्वमूर्तिः भ। प्रभा ग। बालो व। कामिकेयुक् तकार-इकारयुक् तेन ति। वृषघ्नः श। वैकण्ठो म। वसुधा य। अग्निकान्ता स्वाहा।। अत्र वा तन्मे इत्यक्षराणि कीलकानि।। **ईशान संहितायाम्**-"गुणबीजं समुद्धृत्य उक्तिष्ठेति पदं ततः "इत्यादि।।" एवमेषा महाविद्या निष्कीला सर्वसिद्धिदा। गुणान्ते भुवनेशानी दुर्गाबीजं नियोजयेत् । मनोरन्ते त्रयं बीजं मुक्त्वा चान्ते विलोमतः। पूर्वोक्तबीजत्रितयं योजयेत् क्रौंश्चदारण।।" बीजत्रयं प्रणवमायादुर्गाबीजानि विलोमतः दुर्गामायाप्रणवक्रमेण। एतावता आदौ बीजपञ्चकमनन्तरं मन्त्रस्तदनु विलोमेन त्रिबीजमिति मन्त्रः सिद्धः।। तथा-

आरण्यको मुनिः प्रोक्तोऽत्यनुष्टुप्छन्द ईरितम्।
वनदुर्गा देवतास्य सर्वशत्रुविघातिनी।।९९।।
ऋत्वब्ध्यष्टाष्टर्तु-बाणमितैर्मन्त्रार्णकैः क्रमात्।
जातियुक्तैः षडङ्गानि मनोरस्य प्रकल्पयेत्।।१००।।
पादाष्टसन्धिके गुदे लिङ्गाधारोदरेषु च।
पार्श्वयुग्मे हृदि कुचद्वन्द्वे कण्ठेऽष्टसन्धिषु।।१०१।।
करयोर्वदने नासागण्डदृक्कर्णयुग्मके।
भ्रूमध्ये मूर्धनि मनोर्वर्णान् न्यसेद्यथाविधि।।१०२।।

ध्यानम्—

विद्युदामप्रभाभां कनकसरसिजे संस्थिता सत्त्रिनेत्रां
हस्ताम्भोजैर्वहन्तीमरिदरवरदाभीतिसंज्ञाः क्रमेण।
स्वर्णोद्यत्कान्तिवस्त्रां शशिकलितलसद्रत्नचूडां प्रसन्नां
पार्श्वोद्यत्सन्मृगेन्द्रां हृदि वनवसति दावदुर्गां स्मरेऽहम्।।१०३।।

दक्षाद्युर्ध्वयोराद्यै इत्यायुधध्यानम्।

इति ध्यात्वा महादेवीं पूजयेद्भक्तितत्परः।
पूर्वोदिते शुभे दौर्ग पीठे दुर्गां प्रपूजयेत्।।१०४।।

पूर्वमङ्गानि पूज्यानि तत्र आर्यादिकान् यजेत्।
चक्राद्यस्त्राणि मातृश्च लोकेशानायुधानि च।।१०५।।
आर्या दुर्गा भद्रा सभद्रकाल्यम्बिका क्षेम्या।
वेदाद्या गर्भाख्या क्षेमङ्कर्यष्टमो प्रोक्ता।।१०६।।
चक्रशखड्गासिखेटेषुनुरुजनृकरोटिकाः ।
तदायुधानीरितानि दुर्गापूजनमीरितम्।।१०७।।

रुक् त्रिशूलम्। नृकरोटिर्नृकपालम्।।

अथ प्रयोगः- तत्र प्राग्वद्योगपीठ न्यासान्ते मूलमन्त्रेण प्राणायामत्रयं कृत्वा, शिरसि आरण्यकाय ऋषये नमः। मुखे अत्यनुष्टुप्छन्दसे नमः। हृदि श्रीवनदुर्गादेवतायै नमः। इति विन्यस्य प्राग्वद्विनियोगमुत्कीर्य उत्तिष्ठपुरुषि हृदयाय नमः। किं स्वपिषि शिरसे स्वाहा। अयं मे समुपस्थितं शिखायै वषट्। यदि शक्यमशक्यं वा कवचाय हुं। तन्मे भगवति नेत्रत्रयाय वौषट्। शमय स्वाहा अस्त्राय फट्, इति षडङ्गमंत्रानंगुष्ठादि तलान्तं करयोर्हृदयादिषडङ्गेषु च विन्यस्य, दक्षपादांगुलीमूले उं नमः। गुल्फे त्तिं नमः। जानुनि ष्ठं नमः। ऊरुमूले पुं नमः। वामपादांगुलीमूले रुं नमः। गुल्फे षिं नमः। जानुनि किं नमः। उरुमूले स्वं नमः। गुदे पिं नमः। लिंगे षिं नमः। मूलाधारे भं नमः। उदरे यं नमः। दक्षपार्श्वे में नमः:। वामपार्श्वे सं नमः। हृदि मुं नमः। दक्षस्तने पं नमः। वामस्तने स्थिं नमः । कण्ठे तं नमः। दक्षकरांगुलिमूले यं नमः। दक्षमणिबन्धे दि नमः। कूर्परे शं नमः। बाहुमूले क्यं नमः। वामकरांगुलिमूले मं नमः। मणिबन्धे शं नमः। कूर्परे क्यं नमः। बाहुमूले वां नमः। मुखे तं नमः। दक्षनासापुटे न्में नमः। वामे भं नमः। दक्षगण्डे गं नमः। वामे वं नमः। दक्षनेत्रे तिं नमः। वामे शं नमः। दक्षकर्णे मं नमः। वामे यं नमः। भ्रूमध्ये स्वां नमः। शिरसि हां नमः। इति विन्यस्य प्राग्वद् ध्यानमानसपूजान्तेऽष्टदलकमलत्रयात्मकं प्राग्वत् पूजाचक्रं निर्मायार्घ्यस्थापनाद्यङ्गपूजान्ते प्रथमेऽष्टदले-आर्यायै नमः। दुर्गायै नमः। भद्रायै नमः। भद्रकाल्यै नमः। अम्बिकायै नमः। क्षेम्यायै नमः। वेदगर्भायै नमः। क्षेमङ्कर्यै नमः। द्वितीयेऽष्टदले-चक्राय नमः। शङ्खाय नमः। खड्गाय नमः। खेटकाय नमः। बाणाय नमः। चापाय नमः। शूलाय नमः। कपालाय नमः। तृतीयेऽष्टदलेप्राग्वद् ब्राह्म्यद्याः सम्पूज्य दिगीशार्चादि सर्वं पूर्ववत्समापयेत्। इति। नारायणीये—

वेदलक्षं जपेन्मन्त्रं तद्दशांश हुनेत् तिलैः।
ब्राह्मयाद्यास्तिलदुग्धान्नैर्दुर्गां संचिन्त्य चानले।।१०८।।

तर्पणं मार्जनं कृत्वा ब्राह्मणाराधनं त्वथा।
जनधान्यादिभिः सम्यक् तोषयित्वा निजं गुरुम्।।१०९।।
एवं सिद्धमनुर्मन्त्री वाञ्छितार्थान् प्रसाधयेत्।
दुर्गाप्रयोगभेदेन चिन्तयेद्वनवासिनीम्।।११०।।
श्रिये च दुर्गां महिषोत्तमाङ्गस्थितां च दूर्वादलरुग्(भां) वहन्तीम्।
सचक्रशंखासिसखेटबाणचापान् भुजैस्तर्जनिकां वहन्तीम् (त्रिशूलम्)।१११।।
शङ्खचक्रकृपाणखेटकबाणधनूंषि शूलवत्।
पुंस्कपालसत्रृष्टिकाम् मुसलकुन्तनन्दकान्।।११२।।
सत्करैर्वलयसद्गदाभिण्दिपालकशक्तिकान् ।
विभ्रतीं जलदद्युति महिषोत्तमाङ्गनिषेदुषीम्।।११३।।
पावकोल्लसितद्युति हृदि भीमसिंह समागताम्।
श्यामलां कमलस्थितां नयनत्रयोल्लसितां शुभाम्।।११४।।
व्याघ्रचर्मसदंशुकामहिषबद्धकुन्तलशोभिताम् ।
चन्द्रशोभितशेखरां सुरदानवाभयभीतिदाम।।११५।
प्रजपेत् प्रत्यहं मन्त्री स्वरक्षायै शतं ह्यथ।
सहस्रं वा तदन्ते च प्रयोगान् कर्तुमर्हति।।११६।।
यद्यदुद्दिश्यं च मनु सहस्रं वाऽयुतं जपेत्।
अचिराल्लभते तत्तदसाध्यमपि साधकः।।११७।।
प्रातः स्नायी न्यासपूर्वं स्मरन् देवीमनन्यधीः।
नित्यं सहस्रं प्रजपेन्मन्त्रं साधकसत्तमः।।११८।।
ज्वरसर्पग्रहोत्थांश्च दोषान् प्रशमयेत्सुधीः।
हुनेदारण्यकतिलै राजिकाभिश्च वा हुनेत्।।११९।।
अपामार्गसमिद्भिश्च नाशयेत् सकलामयान्।
अपस्मारादिकान् मन्त्री नात्र कार्या विचारणा।।१२०।।
न्यग्रोधोत्थसमिद्भिर्वा सशुङ्गाभिर्हुनेत्सुधीः।
अयुतं सर्वसम्पत्यै सर्वापन्मुक्तयेऽपि च।।१२१।।
ग्रहादिशान्त्यै च तथा ह्यभिचारादिशान्तये।
अर्कवृक्षसमुद्भूतैर्जुहुयाच्च समिद्वरैः।।१२२।।
आरभ्य रविवारं च तद्द्वयं प्रत्यहं सुधीः।
दशाहतो वाञ्छितार्थसिद्धिर्भवति नान्यथा।।१२३।।

त्र्यहं वा सप्तरात्रं वा चेध्मैः सारसमुद्भवैः।
एकैकं शकलं मन्त्री हुनेद्वाञ्छितसिद्धये ।।१२४।।
त्रिंशच्छरान् शिताग्रांश्च निधाय जुहुयाद्बुधः।
कटुतैलैः सहस्रं वा ह्ययुतं तदनन्तरम्।।१२५।।
सम्पाततैलेन शरान् समभ्युक्ष्य यथाविधि।
पूर्ववत् प्रजपेन्मन्त्रं ताञ्शरान् अथ भूषितः।।१२६।।
शुद्धाचारश्च धीरश्च धन्वी संयतमानसः।
गृहीत्वा परसेनाया मध्ये गच्छेदभीः क्षिपेत्।।१२७।।
सा धावति दिशः सर्वाः सम्भ्रान्ता विह्वला तदा।
स आगत्य पुनर्भूयो गुरुं धान्यैर्धनैरपि।।१२८।।
वस्त्रालङ्करणैश्चैव तोषयज्जयदायिनीम्।
अष्टाधिकशतेनाथ सञ्जप्तं शवभस्म च।।१२९।।
निक्षिपेद्यस्य शिरसि स विद्विष्टो भवेज्जनैः।
देशाद् देशान्तरं चैवं काकवद् भ्रमते सदा।।१३०।।
कारस्करद्रुमोत्थैश्च पत्रैर्वायुनिपातितैः।
सहस्रं जुहुयात् पादरजोभिः सह वैरिणः।।१३१।।
उच्चाटोऽस्य भवेत् सद्यो विषवृक्षसमुद्भवैः।
पुष्पैर्हुनन सहस्रं च सेना संस्तम्भयेत्बुधः।।१३२।।
तावद्भिस्तस्य पत्रैश्च मन्त्री सेनां निवर्तयेत्।
विषवृक्षसमुद्भूतां शत्रोः प्रतिकृतिं शुभाम्।।१३३।।
कृत्वा प्रतिष्ठितप्राणां खण्डं खण्डं कृतैर्निशि।
कृष्णपक्षचतुर्दश्यां काकोलूकवसाप्लुतैः।।१३४।।
तद्गात्रैर्विपिने होमः कर्तव्योऽष्टसहस्रकम्।
चतुर्दशीत्रयादेवं नाशयेति रिपुर्ध्रुवम्।।१३५।।
उलूकवायसपक्षैः सवसारक्तसंयुक्तैः।
होमाद्रिपुर्नाशमेति ह्युन्मत्तसमिधं तथा।।१३६।।
होमान्मत्तौ रिपुर्नूनं भवत्येव सहस्रतः।
वैरिणः प्रतिमां कृत्वा सम्यक् संस्थापितानिलाम्।।१३७।।
विषत्रिकटुकालिप्तां सम्यगुष्णे जले क्षिपेत्।
प्रजपेच्च मनुं सद्यो ज्वराक्रान्तो भवेद्रिपुः।।१३८।।
दुग्धाभिषेकतः शान्तिर्भवत्यस्य न संशयः।
प्रतिमां विषवृक्षोत्थां निःक्षिपेदुष्णवारिणि।।१३९।।

उन्मादश्च रिपोः सद्यः पूर्ववच्छान्तिरीरिता।
सूर्यबिम्बेऽन्तरारक्तां शूलतर्जनिकाकराम्।।१४०।।
ध्यात्वायुतं प्रजप्याथ मारयेद्रिपुसञ्चयम्।
असिखेटकरार्कस्था क्रुद्धा सा वनवासिनी।।१४१।।
संस्मृता मन्त्रजापे तु शमयेच्छत्रुसञ्चयम्।
शरधनुष्करां सिंहस्थितां पावकसन्निभाम्।।१४२।।
संस्मृत्य मन्त्रं प्रजपन् क्षिप्रमुच्चाटयेदरीन्
कारस्करद्रुमसमिधामयुतं जुहुयात्सुधीः।।१४३।।
रोगिणः करिणः सर्वे जायन्ते ह्यचिरात्सदा।
विषवृक्षोत्थितैः पत्रैरमी नाशं प्रयान्ति च।।१४४।।
तद्वृक्षसुमनोभिः स्यादुच्चाटः करिणां ध्रुवम्।
राजवृक्षसमिद्धिर्वा रोगा नश्यन्ति दन्तिनाम्।।१४५।।
विषवृक्षप्रसूनैश्च त्रिमध्वक्तैस्तु मानवः(वारणः)।
वशीभवेत्तथा शीघ्रं पत्रैरानित्यशोभितैः (कोद्भवैः)।।१४६।।
त्रिस्वाधुयुक्तैः करिणो ह्यतिमत्ता भवन्ति च।
अभ्यङ्गः पञ्चगव्येन लोके रक्षाकरः परः।।१४७।।
करिणां मनुजप्तोऽयं प्रोक्तो मन्त्रविदुत्तमैः।
सर्पिस्तिलानित्यकैस्तु राजिकापञ्चगव्यकैः।।१४८।।
दुग्धतण्डुलकैश्चैव प्रत्येकं च सहस्रतः।
जुहुयादिभसङ्घानां वृद्धिर्भवति नान्यथा।।१४९।।
महान्तं विष (द्विज) वृक्षं च छित्वा निर्भिद्यपञ्चधा।
दिक्क्रमेणैव पञ्चैवमायुधानि प्रकल्पयेत्।।१५०।।
सम्यक् शिल्पविदा शङ्खो नन्दकश्चक्रशार्ङ्गकौ।
कौमोदकीति क्रमेण प्रोक्तमायुधपञ्चकम्।।१५१।।
निक्षिप्य पञ्चगव्ये तु जपेन्मन्त्रसहस्रकम्।
तावच्चाज्येन जुहुयात् सम्पातं तत्र पातयेत्।।१५२।।
भूयश्च पूर्वसंख्याकं जपं कुर्याद्विचक्षणः।
विदध्यादायुधान् पञ्च पञ्चगव्यप्रपूरितान् ।।१५३।।
मध्यायुधे स्वा (मध्यावटेष्वा) युधानि निक्षिपेत् तत्र तत्र च।
बलिं हरेत्समीकृत्य तन्मंत्रैर्मन्त्रिणा तथा।।१५४।।
कार्या रक्षा राष्ट्रपुरग्रामाणामेवमेव च।
यत्रेयं विहिता रक्षा लक्ष्मीः तत्र च वर्धते।।१५५।।

धनधान्यसमृद्धिः स्याद्रिपुचौरभयं न च।
पद्मैर्नृपं वशीकुर्यात् तत्पत्नीरुत्पलैरपि।।१५६।।
ब्राह्मणान् कुमुदैर्हुत्वा कल्हारैर्विश एवं च।
शूद्रांल्लवणहोमेन ग्रामं जातिप्रसूनकैः।।१५७।।
चक्रशङ्खगदाम्भोजहस्तं सञ्चिन्तयेच्छुभम्।
रविबिम्बे मुकुन्दं च मनुं व्यत्यस्तलिङ्गकम्।।१५८।।
प्रजपेच्चाथ पुरुषभगवत्पदयोरथ।
सर्वसिद्धिकरः प्रोक्तः प्रकारोऽयं सुमन्त्रिभिः।।१५९।।
साध्यनामक्षरैः सम्यग्विदर्भितमनुं लिखेत्।
यन्त्रे (पत्रे) ततः कुलालस्य करलग्नं प्रगृह्य मृत।।१६०।।
तया कृता या प्रतिमा तस्याश्च हृदि संन्यसेत्।
संस्थाप्य स्वाभिमुख्ये तां सप्ताहं प्रजपेन्मनुम्।।१६१।।
सन्ध्यात्रये शतं चाष्टाधिकं वश्यो भवेत्तु सः।
वीहीन् हुनेदष्टशतं प्रत्यहं वत्सराद्भवेत्।।१६२।।
ब्रीहिमान् गोपयोभिश्च पशुमान् भवति ध्रुवम्।
घृतहोमान्मन्त्रिणः स्यात् काञ्चनाप्तिर्महीयसी।।१६३।।
दध्ना सर्वसमृद्धिः स्यादन्नैरन्नसमृद्धियुक्।
मधुहोमेन रत्नानां निधिर्भवति नान्यथा।।१६४।।
दूर्वाहोमेन दीर्घायुर्मन्त्री भवति निश्चितम्।
श्वेतगुञ्जाः समानीय कुडवप्रमिताः शुभाः।।१६५।।
एतन्मन्त्रसुजप्ताश्च विकिरेच्छत्रुसैन्यके।
स्वयं मन्त्री सुगुप्तः सन् तेनासौ वैरिणश्चमू।।१६६।।
ज्वरादिकैर्महारोगैः पीड़िता स्यान्मृताचिरात्।
सेनाधिपतिमुख्यानां परस्परविरोधतः।
एतदुपद्रवैर्नानाविधनाशं प्रयाति च।।१६७।।
तारे शक्ति ससाध्यां लिखतु रविदले मध्यतः पत्रमूले
मर्दिन्या वर्णयुग्मं दलमनु विलिखेद्वह्निशो मूलवर्णान्।।१६८।।
अन्त्ये प्र (चा) न्त्येकबीजं बहिरथ लिपिभिर्भूपुरद्वन्द्वसंस्थ
दुर्गाया यन्त्रमेतद्युवतितनयदं सर्वरक्षाकरं स्यात्।।१६९।।
सर्वसंपत्करं नृणां सर्वसौभाग्यपुष्टिदम्।
राज्यलक्ष्मीविहीनानां भूपतीनां च राज्यदम्।
आमयग्रस्तनृणां च रोगशान्तिकरं परम्।।१७०।।
जपहोमाज्यसम्पातसाधितं मन्त्रमुत्तमम्।
प्रोक्तं च वनदुर्गायाः सर्वदं नात्र संशयः।।१७१।।

इति। अस्यार्थः-द्वादशदलपद्मं विरच्य तन्मध्ये तारं तस्योदरे शक्तिं तदन्तः साध्यनाम च विलिख्य तत्केसरेषु महिषमर्दिन्यष्टाक्षरमन्त्रस्य त्रिरावृत्य प्रतिकेसरं वर्णद्वयं वर्णद्वयमालिख्य, मूलमन्त्रस्य वर्णान् प्रतिदलं त्रिश अलिख्यान्तिमाक्षर-मन्तिमदले विलिख्य पद्मादबहिर्वृत्तद्वयं विरच्य तयोरन्तरालवीथ्यां प्रत्यक्षरं सबिन्दुकां मातृकां विलिख्य तद्बहिश्चतुरस्रद्वयसम्पुटरूपेणाष्टकोणेन वेष्टयेत्, एतद्यन्त्रमुक्त-फलदं भवेत्।। **नारायणीये**-अत्रिरत्र समाख्यातस्तब्दीजं शिवसर्गवान,। अत्रिः दकारः शिव उ सर्गो विसर्गः तेन दुः। तद्बीजं तस्या दुर्गाया बीजम्। (अस्य) कश्यप ऋषिः गायत्री छन्दः श्रीदुर्गा देवता, षड् दीर्घयुक्त बीजेन षडङ्गानि बीजेन सविसर्गेण। सर्वत्र अष्टकमलदले दूर्वाश्यामां त्रिनेत्रां शूलबाणचक्र-शङ्खखड्गखेटधनुः कपालानि दक्षिणाधःकरक्रमेण धारयन्तीं ध्यायेत्। लक्षजपे दशांशहोमः पूजादिकं वनदुर्गावज्ज्ञेयम् अयं लक्षजपः कृतयुगपरः।।

अथ स्तोत्रम्

यत्कर्मधर्मनिलयं प्रवदन्ति तज्ज्ञाः जज्ञादिपुण्यमखिलं सकलं त्वयैव।
त्वं चेतना यत इति प्रविचार्य चित्ते नित्यं त्वदीयचरणौ शरणं प्रपद्ये।।१७२।।
पाथोऽधिनाथतनयापतिरेष शेषपर्यङ्कलालितवपुः पुरुषः पुराणः।
त्वन्मोहपाशविवशो जगदम्ब सोऽपि व्याघूर्णमाननयनः शयनं चकार।।१७३।।
तत्कौतुकं जननि यस्य जनार्दनस्य कर्णप्रसूतमलजौ मधुकैटभाख्यौ।
तस्यापि यौ न भवतः सुलभौ निहन्तुं त्वन्मायया कवलितौ विलयं गतौ तौ।।१७४।।
यन्माहिषं वपुरपूर्वबलोपपन्नं यन्नाकनायकपराक्रमजित्वरं च।
यल्लोकशोकजननव्रतबद्धहार्दं तल्लीलयैव दलितं गिरिजे भवत्या।।१७५।।
यो धूम्रलोचन इति प्रथितः पृथिव्यां भस्मीबभूव स रणे तव हुंकृतेन।
सर्वासुरक्षयकरे गिरिराजकन्ये मन्ये स्वमन्युदहने कृत एष होमः।।१७६।।
केषामपि त्रिदशनायकपूर्वकाणां हन्तुं न जातु सुलभाविति चण्डमुण्डौ।
तौ दुर्मदौ सपदि चाम्बरतुल्यमूर्तेर्मातस्तवासि कुलिशात् पतितौ विशीर्णौ।।१७७।।
दौत्येन ते शिव इति प्रथितप्रभावो देवोऽपि दानवपतेः सदनं जगाम्।
भूयोऽपि तस्य चरितं प्रथयांचकार सा त्वं प्रसीद शिवदूति विजृम्भितेन।।१७८।।
चित्रं तदेतदरैरपि ये न जेयाः शस्त्राभिघातपतितास्रुधिरादपर्णे।
भूमौ बभूवुरमिताः प्रतिरक्तबीजास्तेऽपि त्वयैव गगने गिलिताः समस्ताः।।१७९।।
आश्चर्यमेतदतुलं यद्भूत सुरारी त्रैलोक्यवैभवविलुण्ठनहृष्टपाणी।
शस्त्रैर्निहत्य भुवि शुम्भनिशुम्भसंज्ञौ नीतौ त्वया जननि तावपि नाकलोकम्।।१८०।।
त्वत्तेजसि प्रलयकालहुताशनेऽस्मिंस्तस्मिन् प्रयान्ति विलयं भुवनानि सद्यः।
तस्मिन्निपत्य शलभा इव दानवेन्द्रा भस्मीभवन्ति हि भवानि किमत्र चित्रम्।। १८१।।

तत्किं गृणामि भवतीं भवतीव्रतापनिर्वापणप्रणयिनीं प्रणमज्जनेषु।
तत्किं गृणामि भवतीं भवतीव्रतापसम्वर्द्धनप्रणयिनीं विपदि स्थितेषु।।१८२।।
वामे करे तदितरे च तथोपरिष्टात् पात्रं सुधारसयुतं वरमातुलुङ्गम्।
खेटं गदां च दधतीं भवतीं भवानि ध्यायन्ति येऽरुणनिभां कृतिनस्त एव।।१८३।।
यद्वारुणात् परमिदं यदि मानवस्ते बीजं स्मरेदनुदिनं दहनाधिरूढम्।
मायाङ्कितं तिलकितं तरुणेन्दुबिन्दुनादैरमन्दमिह राज्यमसौ भुनक्ति।।१८४।।
आवाहनं यजनवर्णनमग्निहोत्रं कर्मार्पण तव विसर्जनमत्र देवि।
मोहान्मया कृतमिदं सकलापराध मातः क्षमस्व वरदे बहिरन्तरस्थे।।१८५।।
अन्तः स्थिताप्यखिलजन्तुषु जन्तुरूपा विद्योतसे बहिरिवाखिलविश्वरूपा।
का भूरिशब्दरचना वचनाधिका सा दीनं जनं जननि मामव निष्प्रपञ्चम्।।१८६।।
एतत् पठेदनुदिनं दनुजान्तकारि चण्डीचरित्रमतुलं भुवि यस्त्रिकालम्।
श्रीमान् सुखी स विजयी सुभगः कृती स्यात् त्यागी चिरन्तनवपुः कविचक्रवर्ती।।१८७।।
श्रीसिद्धनाथपरनामधेयः श्रीशम्भुनाथो भुवनैकनाथः।
तस्य प्रसादात् सकलागमश्री पृथ्वीधरस्तोत्रमिदं चकार।।१८८।।

अथ नवार्णविधानोक्तमहालक्ष्मीपूजा लिख्यते। तत्र प्रातः कृत्यादिमातृकान्यासान्तं विधाय मूलमन्त्रेण प्राणायामत्रयं कृत्वा, शिरसि ब्रह्मविष्णुरुद्रेभ्यो नमः। मुखे गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः। हृदिश्रीमहालक्ष्मीमहाकालीमहासस्वतीदेवताभ्यो नमः। गुह्ये परमशिवलिङ्गाय बीजाय नमः। पादयोः कालीशिवदूतीप्रजापतिभ्यः शक्तिभ्यो नमः। नाभौ ह्रीं कीलकाय नमः। इति विन्यस्य मम सर्वाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः। इति कृताञ्जलिरुक्त्वा ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हृदयाय नमः एवं षड्ङ्गन्यासं विदध्यात्। अत्रैकादशन्यासेषु मातृकान्यासः प्रथम। षडङ्गन्यासो द्वितीयः।

ततः ॐ ह्रीं ब्रह्माणी में पूर्वे पातु। महालक्ष्मीर्मे ईशान्ये पातु। व्योमेश्वरी मे ऊर्ध्वं पातु। सप्तद्वीपेश्वरी मे मध्यं पातु । नागेश्वरी मेऽधः पातु । इति तृतीयो न्यासः। ततः ॐ ह्रीं मम पूर्वाङ्गे नन्दजा पातु नमः। एवं दक्षिणाङ्गं रक्तदन्तिकापातु नमः। पश्चिमाङ्ग शाकम्भरी पातु नमः, वामाङ्गदुर्गापातु नमः। मूर्धादिपादान्तं भीमा पातु नमः, पादादिमूर्धान्तं भ्रामरी पातु नमः। इर्ति चतुर्थो न्यासः। पादादिनाभिपर्यन्तं ब्रह्मा पातु नमः। नाभे कण्ठपर्यन्तं विष्णुः पातु नमः। कण्ठाद्ब्रह्मारन्ध्रान्तं रुद्रः पातु नमः। पादद्वये हंसः पातु नमः। नेत्रयोः वृषभःपातु नमः। सर्वाङ्गेगजाननः पातु नमः। ब्रह्मरन्ध्रे हरिः पातु नमः। मध्यदेहे महालक्ष्म्यै नमः। मस्तके सरस्वत्यै नमः। पादयोः महालक्ष्म्यै नमः। करयोः सिंहाय नमः। नेत्रयोः परमहंसाय नमः। पादयोः महिषसहितप्रेताय नमः। सर्वाङ्गे महेशाय नमः। पुनः सर्वाङ्गे चण्डिकायै नमः। इति षष्ठो न्यासः। ततो ब्रह्मरन्धे ॐ ऐं नमः। दक्षिणकर्णे

ॐ ह्रीं नमः। वामकर्णे ॐ क्लीं नमः। दक्षिणनेत्रे ॐ चां नमः। वामनेत्रे ॐ मुं नमः। दक्षनासायां ॐ ण्डां नमः। वामनासायां ॐ यैं नमः। मुखे ॐ विं नमः। लिङ्गे ॐ च्चें नमः। इति सप्तमो न्यासः। ततो गुदे ॐ ऐं नमः। लिङ्गे ॐ ह्रीं नमः। मुखे ॐ क्लीं नमः। वामनासायां ॐ चां नमः। दक्षनासायां ॐ मुं नमः। वामनेत्रे ॐ ण्डां नमः। दक्षनेत्रे ॐ यैं नमः। वामकर्णे ॐ विं नमः। दक्षकर्णे ॐ च्चें नमः। इत्यष्टमोन्यासः। स्वपूर्वाङ्गे मूर्धादिपादान्तं मूलमन्त्रमुच्चार्य नमः। एवं दक्षिणपार्श्वे, पृष्ठभागे, वामभागे, पुनर्वामे, पृष्ठे, दक्षभागे, पूर्वाङ्गे व्यापकत्वेन न्यसेत्, इति नवमो न्यासः। ततो मूलमन्त्रमुच्चार्य हृदयाय नमः इत्येवं षडङ्गन्यासं कुर्यात्। इति दशमो न्यासः।। **खड्गिनी शूलिनी घोरा** इत्येकं श्लोकं कृष्णवर्णं ध्यात्वा सर्वाङ्गे व्यापकम्। **शूलेन पाहि नो देवि** इत्यादि **रक्ष सर्वतः** इत्यन्तं श्लोकचतुष्टयं बालार्कवर्णं ध्यायन व्यापकम्। **सर्वस्वरूपे सर्वेशि** इत्यादि **चण्डिके त्वां नता वयम्** इत्यन्तं श्लोकपञ्चकम् शुद्धस्फटिकसङ्काश ध्यायन् सर्वाङ्गे व्यापकंन्यसेत्। इति एकादशो न्यासः।। अथ स्वहृदये वक्ष्यमाणं पूजापीठं विभाव्य तन्मध्ये मूलमन्त्रस्य बीजत्रयं ध्यात्वा मध्यबीजे श्रीमहालक्ष्मीं सर्वदेवशरीरतेजसोद्भूतां ध्यायेत्-

सर्वदेवशरीरेभ्यो याविर्भूतामितप्रभा।
विचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा।।१८९।।
चित्रानुलेपना कान्तिरूपसौभाग्यशालिनी।
अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती।।१९०।।
आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधः करक्रमात्।
अक्षमाला च कमलं वाणासी मुसलं गदा।।१९१।।
चक्रं त्रिशूलं परशुः शङ्खो घण्टा च पाशकः।
शक्तिर्दण्डश्चर्म चापः पानपात्र कमण्डलुः।।१९२।।
अलंकृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम्।
सर्वदेवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप।
पूजयन् सर्वदेवानां लोकानां च प्रभुर्भवेत्।।१९३।।

इति महालक्ष्मीं ध्यात्वां प्रथमबीजे महाकालीं ध्यायेत्।।

दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभां।
विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया।।१९४।।
स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीमरूपा त्वभून्नृप।
रूपसौभाग्यकान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियाम्।।१९५।।
खड्गबाणगदाशूलचक्रपाशभुशुण्डिभृत ।
परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्च्योतद्रुधिरं दधौ।।१९६।।

एषा सा वैष्णवी माया कालरात्रिर्दुरत्यया।
आराधिता वशीकुर्यात् पूजाकर्तुश्चराचरम्।।१६७।।

इति महाकालीं ध्यात्वा महालक्ष्म्या वामभागे सरस्वतीं तृतीयबीजे ध्यायेत्-

गौरीदेहात् समुद्भूता या सत्त्वैकगुणान्विता।
साक्षात् सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिवर्हिणी।।१६८।।
दधानाष्टभुजा बाणान् मुसलं चक्रशूलभृत्।
शङ्खं च लाङ्गलं घण्टां कार्मुकं वसुधाधिप।
एषा सम्पूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति।।१६६।।

इति महासरस्वतीं च ध्यात्वा वक्ष्यमाणपीठपूजापुरःसरं महालक्ष्मीं साङ्गां सावरणां मानसोपचारैः स्वमूलाधारे आत्मादिचतुष्टयरूपं चतुरस्रं कुण्डल्याग्निसमुज्ज्वलं ध्यात्वा, मूलमन्त्रमुच्चार्य **अहन्तां जुहोमि स्वाहा** पुनर्मूलमुच्चार्य **असत्यं जुहोमि स्वाहा** इत्येवं अहन्तापैशून्यकामक्रोधलोभमोहमदमात्सर्याणि सुषुम्णा-स्रक्युक्तमनःस्रुवेण पृथक् पृथक् हुत्वा निर्दग्धनिखिलवैरिगणः स्थिरचित्तो मूलमन्त्रं यथाशक्ति जपित्वा जपं समर्प्य बाह्यपूजां समारभेत्। तत्र स्वर्णादिपीठे कुंकुमादिना षट्कोणं तद्बहिर्वृत्तं तल्लग्न सकेसरमष्टदलं तद्बहिर्वृत्तं तद्बहिश्चतुर्द्वारियुतं चतुरस्रयं रचयेत् इति पूजाचक्रं निर्माय षट्कोणमध्ये वाग्भवमायाकामराजबीजत्रयं पंक्त्याकारेण विलिख्य स्वाग्रादिषट्कोणेषु प्रादक्षिण्येन च आकारादिबीजषटकं विलिखेत्। ततोऽर्घ्यापात्राण्यासाद्य पूजोपकरणानि सम्प्रोक्ष्य **ॐ ह्रीं हंसः सोहं स्वाहा** इति मन्त्रेण स्वशरीरं गन्धादिभिरलंकृत्यं, स्वात्माने देवीरूपं विभाव्य प्राग्वत् मूलाधारे चतुरस्रं कुण्डलिरूपमग्निं सञ्चिन्त्य मूलं०

धर्माधर्महविर्दीप्त आत्माग्नो मनसा स्रुचा।
सुषुम्णावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तीजुहोम्यहं स्वाहा।।२००।।

एवं पापं जुहोमि स्वाहा, इत्थं पुण्यपापकृत्याकृत्यसङ्कल्पविकल्पधर्मान् हुत्वा पुनर्मूलं०

प्रकाशामर्शहस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनीस्रुचम् ।
धर्माधर्मकलास्नेहपूर्णा वह्नौ जुहोम्यहम्।।२०१।।

अधर्मं जुहोमि स्वाहा इति पूर्णाहुतिं हुत्वा देवीरूपमात्मानं ध्यात्वा मूलमन्त्रं यशाशक्ति जपित्वा जपं समर्प्य पूजापीठमध्योर्दकेनाभ्युक्ष्य षट्कोणे ॐकारपीठाय नमः। अष्ट दले ॐ पूर्णागिरिपीठाय नमः। चतुरस्रे-ॐ कामपीठाय नमः। इति सम्पूज्य पीठद्बहिश्चतुर्दिक्ष ॐ गं गणेशाय नमः, ॐ क्षं क्षेत्रफलाय नमः ॐ दुं दुर्गायै नमः ॐ वं वटुकाय नमः इति सम्पूज्याग्नेयादिकोणेषु ॐ जं जयाय नमः, ॐ विं विजयायै नमः। ॐ जं जयन्त्यै नमः। ॐ अं अपराजितायै नमः। पद्मनालमूले आं आधारशक्त्ये नमः, कुं कूर्माय नमः, शें शेषाय नमः, पृं पृथिव्यै नमः, ॐ नां नालाय नमः, ॐ पं पद्माय नमः, इति

इति सम्पूज्याष्टदलकर्णिकायां षट्कोणाद्वहिः ॐ विं विष्णुमायायै नमः एवं चें चेतानायै नमः बुं बुद्ध्यै नमः, ॐ निं निद्रायै नमः, ॐ क्षुं क्षुधायै नमः इति पञ्चशक्तीः सम्पूज्य दक्षिणदिशि ॐ छां छायायै नमः, शं शक्त्यै नमः, तृं तृष्णायै नमः, क्षां क्षान्त्यै नमः, जां जात्यै नमः, लं लज्जायै नमः इति शक्तिषटकं सम्पूज्य पश्चिमदिशि ॐ शां शान्त्यै नमः, श्रं श्रद्धायै नमः, कां कान्त्यै नमः, लं लक्ष्म्यै नमः, धृं धृत्यैनमः वृं वृत्यै नमः, इति शक्तिषट्कं सम्पूज्य उत्तरदिशि ॐ स्मृं स्मृत्यै नमः, दं दयायै नमः, तुं तुष्ट्यै नमः, पुं पुष्ट्यै नमः। मां मात्रे नमः भ्रां भ्रान्त्यै नमः इति शक्तिषटकं सम्पूजयेदिति प्रादक्षिण्येन त्रयोविंशतिदेवताः संपूज्य, मध्यबीजे मूलं ''श्रीमहालक्ष्म्या मूर्तये नमः'' इति मूर्तिं सम्पूज्य कराभ्यां पुष्पाञ्जलिमादाय हृदयकमले यथोक्तरूपां सांगां सावरणां महालक्ष्मीं ध्यात्वा तत्तेजोरूपतामादाय सुषुम्णावर्त्मना ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वा प्रवहन्नासारन्ध्रेण पुष्पाञ्जलौ संयोज्य मूलेन तत्तेजः समानीय—

ध्यायामि मनसा दुर्गां नाभिमध्ये व्यवस्थिताम्।
आवाहयेत्ततो दुर्गा संसारभयतारिणीम्।।२०२।।
कल्याणजननीं सत्यां कामदां करुणाकराम्।
अनन्तशक्तिसम्पन्नां दुर्गामावाहयाम्यहम्।।२०३।।
महापद्मवनान्तःस्थे कारणानन्दविग्रहे।
सर्वभूतहिते मातरेह्येहि परमेश्वरि।।२०४।।

इति पुष्पाञ्जलिप्रक्षेपेणावाह्य आवाहनादिनवमुद्राः प्रदर्श्य

देवेशि! भक्तिसुलभे! सर्वावरणसंयुते।
यावत् त्वां पूजयिष्यामि तावत् त्वं सुस्थिरा भव।।२०५।।

इति प्रार्थ्य-

ॐ दुर्गे ! देवि! सुरेशानि! ज्ञानमार्गप्रदे! शिवे!।
आसनं मम भूत्यर्थं गृहाण त्वं सुरेश्वरि! ।।२०६।।

इत्यासनम्-

ॐ स्वागतं कुशलं पृच्छे महादेवि! महेश्वरि!।
सुस्वागतं त्वया भद्रे कृपया भक्तवत्सले।।२०७।।

इति स्वागतम्

जगत्पूज्ये! त्रिलोकेशि! दैत्यदानवभञ्जनि!।
अष्टाङ्गार्घ्यं गृहाण त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।।२०८।।

इत्यर्घ्यम्

कात्यायनि! महादुर्गे! चामुण्डे! शङ्करप्रियेः।
पाद्यं गृहाण देवेशि भद्रकालि! नमोऽस्तुते।।२०९।।

इति पाद्यम्

सर्वलोकस्य या माता या माता लोकपावनी।
ददाम्याचमनं तस्यै महालक्ष्म्यै प्रयत्नतः।।२१०।।

इत्याचमनीयम्

कपिलादधि कुन्देन्दुधवलं मधुसंयुतम्।
स्वर्णपात्रस्थितं देवि! मधुपर्कं गृहाण मे।।२११।।

इति मधुपर्कम्

कर्पूरवासितं वारि निर्मलं शुद्धिहेतुकम्।
गृहाण परमेशानि! पुनराचमनीयम्।।२१२।।

इति पुनराचमनीयम्

ज्ञानमूर्ते भद्रकालि! दिव्यमूर्ते सुरेश्वरि!।
स्नानं गृहाण देविशि! तीर्थोदकविभूषितम्।।२१३।।

इति स्नानं

वस्त्रं स्वच्छं महार्हं वै पट्टसूत्रविनिर्मितम्।
गृहाण सुभगे देवि! मे दुकूलं सुरार्चिते।।२१४।।

इति वस्त्रम्

सुरासुरशिरोरत्ननिर्घृष्टचरणाम्बुजे।
अलङ्कारान् गृहाण त्वं नानारत्नविभूषितान्।।२१५।।

इति अलङ्कारः

श्रीखण्डागुरुकर्पूररोचनानाभिसंयुतम्।
गृहाण गन्धं में देवि सर्वकामफलप्रदे।।२१६।।

इति चन्दनम्।

नानापुष्पविचित्राढ्यां पुष्पमालां सुशोभिताम्।
प्रयच्छामि महादेवि! गृहाण त्वं सुरेश्वरि।।२१७।।

इति पुष्पाणि। इति पुष्पान्तानुपचारानुपचर्य श्री भगवति परिवारपूजार्थमनुज्ञां देहि इति प्रार्थ्य मध्ये प्रथमबीजे ॐ महासरस्वत्यै नमः। तृतीयबीजे ॐ महाकाल्यै नमः। महालक्ष्म्याः पृष्ठे ब्रह्मसरस्वतीभ्यां नमः। महासरस्वतीपृष्ठे रुद्रगौरीभ्यां नमः। महाकाल्याः पृष्ठे हृषीकेशलक्ष्मीभ्यां नमः। महालक्ष्म्यां वामाग्रे मं महिषासुराय नमः। दक्षाग्रे सिं सिंहाय नमः इति सम्पूज्य षट्कोणेषु पूर्वादि ॐ नन्दजायै नमः ॐ रक्तदन्तिकायै नमः, ॐ शाकम्भर्यै नमः, ॐ दुर्गायै नमः, ॐ भीमायै नमः, ॐ भ्रामर्य्यै नमः इति सम्पूज्य षट्कोणाद्बहिः कर्णिकायामेवं षडङ्गानि सम्पूज्य अष्टदलेषु, ब्रह्मयाद्यष्टमातृकाः सम्पूज्य चतुरस्रे

प्रथमवीथ्यामिन्द्रादीन् द्वितीयवीथ्यां वज्रादीन् सम्पूज्य मूलं साङ्गायै सपरिवारायै श्रीमहालक्ष्म्यै नमः इति पुष्पाञ्जलीन् दद्यात्।

गुग्गुलं घृतसंयुक्तमगुर्वादिसमाहितम्।
दशाङ्गं गृहाण धूपं भद्रकालि नमोऽस्तु ते।।२१८।।

इति धूपम्

रक्तसूत्रलसद्वर्ति गोघृतेन च पूरितम्।
दीपं गृहाण देवेशि! नमस्त्रैलोक्यसुन्दरिः।।२१९।।

इति दीपम्।

दिव्यान्नं रससंपुष्टं नानाभक्ष्यैस्तु संस्कृतम्।
चोष्यपेयसमायुक्तमन्त्रं देवि! गृहाण मे।।२२०।।

इति नैवेद्यं।

इति नैवेद्यं समर्प्य देवीं भुञ्जानां भावयन् मूलं दशवारं जपित्वा शुद्धोदकं देव्यै निवेद्य स्मार्ताग्नौ मूलेन पञ्चविशत्याहुतीर्हुत्वा षडङ्गमन्त्रैः षडाहुतीः आवरणदेवतानामेकैकामाहुतिं हुत्वा पूजास्थानमागत्य स्ववामाग्रे त्रिकोणमण्डलेऽन्नव्यञ्जनयुतं साधारबलिपात्रं निधाय **ॐ ह्रीं सर्वविध्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हुं फट् सर्वभूतेभ्य एष बलिर्नमः** इति मन्त्रेण बलिमृत्सृज्य देव्ये उत्तरापोशानादिकं दत्त्वाः ततः

गृहाण देवि ताम्बूलं कर्पूरेण सुवासितम्।
पूगीफलसमायुक्तं सचूर्णं मुखमण्डनम्।।२२१।।

इति ताम्बूलं

मङ्गले कालिके दुर्गे महिषासुरसूदनि।
नीराजनं मया दत्तं गृहाण सुरसुन्दरि।।२२२।।

इति नीराजनम्।

दुर्गे देवि नमस्तुभ्यं सकलासुरनाशिनि।
पुष्पाञ्जलिं गृहाण त्वं मया दत्तं सुरार्चिते।।२२३।।

इति पुष्पाञ्जलिः

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके दुर्गे कात्यायनि नमोऽस्तु ते।।२२४।।

इति नमस्कारः

मया जन्मसहस्त्रेषु अर्जितं पापसञ्चयम्।
तत्सर्वं नाशय क्षिप्रं प्रदक्षिणपदे पदे।।२२५।।

इति प्रदक्षिणम्

पूजायाः सद्गुणार्थं तु दक्षिणा दीयते मया।
तां गृहाण महेशानि! पूजां मे सकलां कुरु।।२२६।।

इति हिरण्यम्।

महिषघ्नि महामाये चामुण्डे पापहारिणि।
यशो देहि धनं देहि तव भक्तिं च देहि मे।।२२७।।

इति प्रार्थना।

ततो मूलमन्त्रं यथाशक्ति जपित्वा जपं समर्प्य सप्तशतीपाठं कुर्यात् ।। तत्र अद्येत्यादिसङ्कल्पं कृत्वा प्रथम चरित्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः महाकाली देवता रक्तदन्तिका बीजं नन्दा शक्तिः अग्निस्तत्त्वं प्रथमचरित्रजपे विनियोगः।

मध्यमचरित्रस्य विष्णुर्ऋषि, पंक्तिश्छन्दः, महालक्ष्मीर्देवता, दुर्गा बीजं शाकम्भरी शक्तिः वायुस्तत्त्वं मध्यमचरित्रजपे विनियोगः।

उत्तम चरित्रस्य रुद्र ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,महासरस्वती देवता, भ्रामरी बीजं भीमा शक्तिः सूर्यस्तत्त्वं उत्तमचरित्रजपे विनियोगः इति विन्यस्य पठेत्।

पूजायन्त्रस्य चतुरस्राद्बहिः प्राच्यां उड्याणपीठाय नमः मुण्डेश्वरनाथाय नमः, मुण्डाम्बापादुकां पूजयामि नमः। एवं आग्नेये मातृकापीठाय नमः मातृकाचक्रेश्वरनाथाय नमः मातृकाम्बापादुकां पूजयामि नमः। दक्षिणे जालन्धरपी- ठाय नमः जालमुखनाथाय नमः, जलाम्बा पादुकां पूजयामि नमः नैर्ऋत्ये कोलापुरेश्वरनाथाय नमः कोलाम्बापादुकां पूजयामि नमः। पश्चिमे पूर्णगिरि पीठाय नमः पूर्णेश्वरनाथाय नमः पूर्णाम्बा पादुकां पूजयामि नमः। वायव्ये चौहारपीठाय नमः चौहारनाथाय नमः, चौहाराम्बापादुकां पूजायामि नमः। उत्तरे कोलगिरिपीठाय नमः कोलनाथाय नमः कोलाम्बापादुकां पूजयामि नमः। ऐशान्यां कामरूपपीठाय नमः, कामरूपनाथाय नमः, कामाम्बा पादुकां पूजयामि नमः, मध्ये योगिनीपीठाय नमः। तत आग्नेयादिकोणेषु वेतालान् पूजयेत् अग्निमुखाय नमः प्रेतवाहनाय नमः। ज्वालामुखाय नमः धूम्राक्षाय नमः। ततो मध्ये षट्कोणेषु गुरुभ्यो नमः परमगुरुभ्यो नमः परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः। गणेशाय नमः। हरये नमः। हराय नमः। ततो मध्ये देवीपृष्ठभागे महा- लक्ष्मीहृषिकेशाभ्यां नमः सरस्वतीविरिञ्चिभ्यां नमः उमामहेश्वराभ्यां नमः दक्षिणे कालाय नमः। रुद्राय नमः। महासिंहाय नमः। वामे मृत्यवे नमः, मध्ये विजयाय नमः, गणपाय नमः, महिषाय नमः, चण्डिकायै नमः, उत्तरे कालाय नमः दक्षिणे यमाय नमः। इति सम्पूज्य योनिमुद्रां प्रदर्शयेत्।

अथ जातवेदसादिमन्त्राः-ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय पूर्वोक्तवद्गुरुध्या-

नाजपास्नानसन्ध्याभूतशुद्ध्यादिमातृकान्यासान्तं विधाय मूलमन्त्रेण प्राणायामत्रयं कृत्वा मन्त्रन्यासान् कुर्यात्।।

अस्य श्रीजातवेदसे महामन्त्रस्य मरीचिकश्यप ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः जातवेदसेऽग्निस्वरूपिणी दुर्गा देवता ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे विनियोगः।। मरीचिकश्यप ऋषये नमः शिरसि, त्रिष्टुछन्दसे नमो मुखे जातवेदसेऽग्निदुर्गा देवतायै नमो हृदि ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु जातवेदसे हृदयाय नमः सुनवाम सोममरातीयतो शिरसे स्वाहा निदहाति वेदः शिखायै वषट् स नः पर्षदति कवचाय हुं, दुर्गाणि विश्वा नावेव नेत्रत्रयाय वौषट् सिन्धुं दुरितात्याग्नि, अस्त्राय फट्। एवमंगुलीन्यासः।।

ॐ जां नमो दक्षापदाङ्गुष्ठे। ॐ तं नमो वामे। ॐ वें नमः दक्षगुल्फे। ॐ दं नमो वामे। ॐ सें नमो दक्षजघङ्यां। ॐ सु नमो वामायां। ॐ नं नमो दक्षजानुनि। ॐ वां नमो वामे। ॐ मं नमो दक्षोरो। ॐ सों नमो वामे। ॐ मं नमो दक्षकट्यां। ॐ अरां नमो वामायां। ॐ तीं नमों अन्धुनि। ॐ यं नमो नाभौ। ॐ तों नमो हृदि। ॐ निं नमो दक्षस्तने। ॐ दं नमो वामस्तने। ॐ हां नमो दक्षपार्श्वे। ॐ तिं नमो वामपार्श्वे। ॐ वें नमो पृष्ठे। ॐ दं, नमो दक्षस्कन्धे। ॐ सं नमो वामे। ॐ नः नमो मध्ये। ॐ पं दक्षबाहुमूले। ॐ रं नमो वामे। ॐ षं नमो दक्षोपबाहौ। ॐ दं नमो वामे। ॐ तिं नमो दक्ष कूर्परे। ॐ दुं नमो वामे। ॐ गां नमो दक्षप्रकोष्ठे। ॐ णिं नमो वामे। ॐ विं नमो दक्षमणिबन्धादितलान्ते । ॐ श्वां नमो वामे। ॐ नां नमो मुखे, ॐ वें नमो दक्षनासिकायां। ॐ वं नमो वामायां। ॐ सिं नमो दक्षनेत्रे। ॐ न्धुं नमो वामे। ॐ दुं नमो दक्षकर्णे। ॐ रिं नमो वामे। ॐ तां नमो ललाटे। ॐ त्यं नमो मस्तिष्के। ॐ ग्निः नमो मूर्ध्नि। इत्यक्षरन्यासः।।

जात शिखायां। वेदसे ललाटे। सुनवाम कर्णयोः। सोमं नासिकायां अराती चक्षुषोः। यत ओष्ठयोः। नि दन्तेषु। दहाति तालुनि। वेदः जिह्वायां। स ग्रीवायां। नः बाह्वोः। पर्षत् स्तनयोः। अति हृदये। दुः कुक्षौ। गाणि नाभौ। विश्वा पृष्ठे। नावा पायौ। इव वृषणयोः। सिन्धुं शिश्ने। दुः कट्योः। इता ऊर्वोः। अति जङ्घयोः। अग्निः पादयोः। अग्नि रक्षतु। इति पदन्यासे सृष्टिः।। ततः समग्रमन्त्रेण व्यापकं विन्यस्य।

जातवेदसे पादयोः। सुनवाम अंगुलीषु। सोमं जानुनोः। अरातीयतो ऊर्वोः नि गुह्ये। दहाति कट्योः। वेदः नाभौ। स हृदये। नः पृष्ठे। पर्षत् बाह्वोः। अतिकण्ठे। दुर्गाणि वक्त्रे। विश्वा चक्षुषोः। नावेव नासिकयोः। सिन्धु

कर्णयोः। दुरिता ललाटे। अति मुकुटे। अग्निः मूर्ध्नि।।

पादयोः विष्णवे नमः। हृदि ब्रह्मणे नमः। मूर्ध्नि परमात्मने नमः। शिखायां सप्तऋषिभ्यो नमः। नासिकायां सप्तवायुभ्यो नमः। चक्षुषो शशिभास्कराभ्यां नमः। श्रोत्रयोः अश्विनीयदेवाभ्यां नमः। जिह्वायां सरस्वत्यै नमः। वाचि अग्नये नमः। दन्तेषु मरुद्भ्यो नमः। कण्ठे देवेभ्यो नमः। हृदि वरुणाय नमः। उदरे हव्यवाहनाय नमः। कुक्षौ पृथिव्यै नमः। कट्यां नवग्रहेभ्यो नमः। नाभौ मेरवे नमः। अस्त्रे जातवेदसे नमः। शिखायां आज्यस्थाल्यै नमः। शिरसि आज्याय नमः। नेत्रयो ज्योतिषे नमः। कवचे बर्हिषे नमः। उद्यन्त शक्तिः ज्वलन्तः प्रहरणं बद्धगोधांगुलित्राणं,

यस्याः सिंहो रथे युक्तो व्याघ्रा यस्यानुगामिनः।
तामिमां रुद्रसंयुक्तां दुर्गामावाहयाम्यहम्।।२२८।।

आयातु दुर्गा दुर्गरूपा अभयं मे ददातु तां दुर्गां कुमारीमृषिभिश्च पूजितां शरणमहं प्रपद्ये। ॐ दुर्गायै नमः, ॐ याम्यै नमः, ॐ रौद्रयै नमः, ॐ आदित्यायै नमः, ॐ कात्यायन्यै नमः, ॐ गौर्य्यै नमः ॐ धात्र्यै नमः ॐ शक्त्यै नमः ॐ चामुण्डायै नमः ॐ सरस्वत्यै नमः इति नवशक्तियुक्तां

शङ्खं खेटं तथा बाणान् वामे चाभयदायिनीम्।
धनुश्चक्रं तथा पात्रं दक्षिणे सुवरप्रदम्।।२२९।।
चक्रखड्गशरञ्छूलं लोहमुष्टिं च तोमरम्।
वलयं भिण्दिपालं च दधानां चोत्तरे भुजे।।२३०।।
परिघं चाङ्कुशं चैव धारयन्तीं त्रिलोचनाम्।
सिध्यन्ति सर्वकार्याणि निश्चितं हि द्विजोत्तम।।२३१।।
ऋग्वेदसंस्तुता देवी कश्यपेन प्रकीर्तिता।
जातवेदःप्रभां देवीं भुक्तिमुक्तिविधायिनीम्।।२३२।।

मेरुपर्वतकुभां व्याघ्रानुसारिणीं सिंहचतुर्मुखवाहिनीमष्टादशभुजां शुक्लवस्त्रां शुक्तवासिनीं सर्वाभरणभूषितां जातवेदसेदेवीं ध्यात्वा मानसैरुपचारैः सम्पूज्य तदेव देवीस्वरूपंस्वात्मानमित्यभेदभावनां कृत्वा रक्षाषडगं कुर्यात्।

ॐ हरहरिणि मालिनि शूलिनि दुष्टग्रहनिवारिणिभ्यां स्वाहा हृदयाय नमः। अग्नितेजोज्वालामालिनि शिरसे स्वाहा। चन्द्रतेजोज्वालामालिनि शिखायै वषट्। ब्रह्मतेजोज्वालामालिनि कवचाय हुं। आदित्यतेजोज्वालामालिनि नेत्रत्रयाय वौषट्।

विष्णुतेजोज्वालामालिनि सर्वतेजोज्वालामालिनि ज्वलज्वालामालिनि शूलिनि दुष्टग्रहनिवारिणि देवि दह जातवेदससम्भूते स्वाहा अस्त्रायफट्। इति षडङ्गकृत्वा

"ॐ जातवेदसे सुनवाम सोम सुरासुरैरर्द्विजगणैः पिशाचोरगराक्षसैःरात्रौ भये समुत्पन्ने अरातीयतो निदहाति वेदः राजद्वारे भये भोरे संग्रामे शत्रुसंङ्कटे सर्वं रक्षति दुरितं सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा महद्भये समुत्पन्ने स्मरन्ति च पठन्ति सर्वं तरति दुर्गा नावेव सिन्धु दुरितात्यग्निः,

इति पठन् स्वात्मानं स्वप्रकाशचिदानन्दमग्नं देवतामयं ध्यात्वा मूलषडंगं कुर्यात्।

ॐ जातवेदसे सुनवाम हलाहलिनि ज्वलज्वालामालिनी बद्धगोधांगुलित्राणिनि हृदयाय नमः। सोममरातीयतो हलाहलिनि ज्वलज्वालामालिनि बद्धगोधांगुलित्राणिनि शिरसे स्वाहा। निदहाति वेदः हलाहलिनि ज्वलज्वालामालिनि बद्धगोधांगुलित्राणिनि शिखायै वषट्। स नः पर्षदति हलाहलिनि ज्वलज्वालामालिनि बद्धगोधांगुलित्राणिनि कवचाय हुं। दुर्गाणि विश्वा नावेव हलाहलिनि ज्वलज्वालामालिनि वद्धगोधांगुलित्राणिनि नेत्रत्रयाय वौषट्। सिन्धुं दुरितात्यग्निः हलाहलिनि ज्वलज्वालामालिनि बद्धगोधांगुलित्राणिनि अस्त्राय:फट्, इति षडङ्गं कृत्वा मन्त्रेण सर्वाङ्गं व्याप्य स्ववामभागे कलशस्थापनं कृत्वा स्वदक्षिणभागे शङ्ख संस्थाप्य मध्येऽर्घ्यादिपञ्चपात्राणि संस्थाप्प देवीसूक्तेन देवीमभिषिच्य पीठपूजां कुर्यात्। ॐ कालाग्निरुद्राय नमः, मण्डूकाय, नमः, आधारशक्त्यै नमः, कूर्माय नमः, अनन्ताय नमः वराहाय नमः, पृथिव्यै नमः। एवमुपर्युपरि सम्पूज्य क्षीरसमुद्राय नमः, श्वेतद्वीपाय नमः कलपवृक्षाय नमः रत्नवेदिकायै नमः, रत्नसिंहसनाय नमः, आग्नेयादि धर्माय नमः, ज्ञानाय नमः, वैराग्याय नमः, ऐश्वर्याय नमः, एते पादरूपिणः।। अधर्माय नमः, अज्ञानाय नमः, अवैराग्याय नमः, अनैश्वर्याय नमः एते सिंहासनगात्ररूपिणः इति सम्पूज्य तदुपरि ह्रीं मायायै नमः ह्रीं चिच्छक्त्यै नमः। तदुपरि आनन्दकन्दाय नमः, संविन्नालाय नमः, प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः विकारमयकेसरभ्यो नमः, पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्यसर्वतत्त्ववरूपायै कर्णिकायै नमः। तदधः अं अर्कमण्डलाय नमः। सं सोममण्डलाय नमः। रं वह्निमण्डलाय नमः, सं सत्त्वाय नमः, रं रजसे नमः, तं तमसे नमः, अं अन्तरात्मने नमः, आं आत्मने नमः, पं परमात्माने नमः, ह्रीं ज्ञानात्मने नमः, आत्मतत्त्वाय नमः, मायातत्त्वाय नमः, विद्यातत्त्वाय नमः, कलातत्त्वाय नमः, मध्ये परमतत्त्वाय नमः इति सम्पूज्य केसरेषु पूर्वाद्यष्टदिक्षु मध्ये च पीठशक्तीः प्रपूजयेत्। ह्रीं जं जयायै नमः, ह्रीं विं विजयायै नमः, ह्रीं गं भद्रायै नमः, ह्रीं भं भद्रकाल्यै नामः,

ह्रीं सुं सुमुख्यै नमः, ह्रीं दुं दुर्मुख्यै नमः ह्रीं व्या व्याधमुख्यै नमः, ह्रीं सिं सिंहमुख्यै नमः, मध्ये-ह्रीं दुं दुर्गायै नमः इति सम्पूज्य "ॐ वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहाय हुं फट् नमः इति पीठं सम्पूज्य तदुपरि मूलमन्त्रनुच्चरन् देवीयन्त्र संस्थाप्यावाहनं कुर्यात्।

यस्याः सिंहो रथे युक्तो व्याघ्रा यस्यानुगामिनः।
तामिमां रुद्रसंयुक्तां दुर्गामावाहयाम्यहम्।।२३३।।

इत्यावाह्य आवाहिता भव आस्थापिता भव सन्निरोधिता भव, सम्मुखी कृता भव, अवगुण्ठिता भव, सकलीकृता भव, परमीकृता भव, अमृतीकृता भव इत्युच्चरन् तत्तन्मुद्राः प्रदर्शयेत्।। ध्यानम्-

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखं चापं गुणं तर्जनीं।
विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां स्मरेत्।।२३४।।

इति ध्यात्वा मूलमन्त्रेणार्घ्यपाद्याचमनीयमधुपर्कादिषोडशोपचारपूजां कृत्वा आवरणपूजामरभेत्। यथा आग्नेयकोणे जातवेदसे सुनवाम् हृदयाय नमः। ईशानकोणे सोममरातीयतः शिरसे स्वाहा। नैर्ऋत्ये निदहाति वेदः शिखायै वषट्। वायव्ये स नः पर्षदति कवचाय हुं। मध्ये दुर्गाणि विश्वानावेव नेत्रत्रयाय वौषट्। पूर्वादिचतुर्दिक्षु सिन्धु दुरितात्यग्निः अस्त्राय फट्। इति षडङ्गपूजाप्रथमावरणम्।।

ततोऽष्टदलेषु पूर्वादिप्रादक्षिण्येन जातवेदसे नमः, सप्तजिह्वाय नमः, हव्यवाहनाय नमः, अश्वोदरजाय नमः, वैश्वानराय नमः, कौमारतेजसे नमः, विश्वमुखाय नमः, देवमुखाय नमः। इति द्वितीयावरणम्।।

ततः पत्रागेषु पूर्वादिचतुर्दिक्षु ॐ पृथिव्यात्मने नमः, सलिलात्मने नमः, आग्न्यात्मने नमः, वायव्यात्मने नमः। आग्नेयादिकोणेषु निवृत्त्यै नमः, प्रतिष्ठायै नमः, विद्यायै नमः, शान्त्यै नमः। इति तृतीयावरणम्।।

ततः पूर्वादिकोणेषु (दिग्विदिक्षु) प्रादक्षिण्येन वचनार्त्मिकाभिमुखीभ्योऽधो- मुखीभ्यः स्त्रीदेवताभ्यो नमः, ॐ जां जागरायै नमः, ॐ तं तपनायै नमः, ॐ वें वेदगर्भायै नमः, ॐ दं दहनरूपिण्यै नमः, ॐ सें सेन्दुखण्डायै नमः। शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मिका-भिमुखीभ्यस्तिर्यङ्कृखीभ्यः स्त्रीदेवताभ्यो नमः, ॐ शुं शुम्भहन्त्र्यै नमः ॐ नं नभश्चारिण्यै नमः, ॐ वां वागीश्वर्यै नमः, ॐ मं मन्दवाहायै नमः, ॐ सों सोमरूपायै नमः। षाट्कोशिकमयात्मिकाभिमुखीभ्यस्तिर्यङ्मुखीभ्यः क्लीवदेवताभ्यो नमः। ॐ मं मनोजवायै

नमः। ॐ मं मरुद्वेगायै नमः ॐ रां रात्र्यै नमः, ॐ तीं तीव्रकोपायै नमः, ॐ यं यशोवत्यै नमः, ॐ तों तोयात्मिकायै नमः। षड्र्म्यात्मिकाभिमुखीभ्यः ऊर्ध्वमुखीभ्यः क्लीवदेवताभ्यो नमः। ॐ निं नित्यायै नमः, ॐ दं दयावत्यै नमः, ॐ हां हारिण्यै नमः, ॐ तिं तिरस्क्रियायै नमः, ॐ वें वेदमात्रे नमः, दमनप्रियायै नमः सप्त-धात्वात्मिकाभिमुखीभ्य उभयमुखीभ्यः क्लीवदेताभ्यो नमः। ॐ सं समाराध्यायै नमः, ॐ नं नन्दिन्यै नमः, ॐ पं पराक्यै नमः, ॐ रं रिपुमर्दिन्यै नमः, ऊँ षं षष्ठयै नमः, ॐ दं दण्डिन्यै नमः, ॐ तिं तिग्मायै नमः। पञ्चभूतात्मिकाभिमुखोभ्यस्तिर्यङ्मुखीभ्यः क्लीदेवताभ्यो नमः, ॐ दुं दुर्गायै नमः, ॐ गां गायत्रयैनमः ॐ णिं निरवद्यायै नमः, ॐ विं विशालाक्ष्यै नमः, ॐ श्वां श्वासोद्वाहायै नमः, कर्मेन्द्रियात्मिकाभिमुखीभ्यः ऊर्ध्वमुखीभ्यः स्त्रीदेवताभ्यो नमः। ॐ नां नान्दिन्यै नमः, ॐ वें वेदनायै नमः, ॐ वं वह्निगर्भायै नमः, ऊँ सिं सिहंवाहाह्ययै नमः, ॐ धुं धुर्यायै नमः। ज्ञानेन्द्रियात्मिकाभिमुखीभ्यह्वि ऊर्ध्वमुखीभ्यः, स्त्रीदेवताभ्यो नमः। ॐ दुं दुर्विषायै नमः। ॐ रिं रिरंसायै नमः, ॐ तां तापहारिण्यै नमः, ॐ त्यं त्यक्त दोषायै नमः। ॐ ग्निः निःसपत्नायै नमः, एताः प्रज्वलत्केशवदनाः भीमदंष्ट्रा भयापहा ध्येयाः। इति चतुर्थावरणम्।।

ततस्तद्वहिः पूर्वादिदले लं इन्द्राय नमः, रं अग्नये नमः, मं (टं) यमाय नमः, क्षं निर्ऋतये नमः, वं वरूणाय नमः, यं वायवे नमः, सं कुवेराय नमः हौं ईशानाय नमः। इति पञ्चमावरणम्।।

ततस्तद्वहिः वं वज्रायुधाय नमः, शं शक्त्यायुधाय नमः, दं दण्डायुधाय नमः, खं खड्गायुधाय नमः, पां पाशायुधाय नमः, क्रों अंकुशायुधाय नमः, गं गदायुधाय नमः शूं शूलायुधाय नमः। इति षष्ठावरणम्।।

एवं सम्पूज्य नैवेद्यादिकं निवेद्य आरात्रिकापुष्पाञ्जल्यन्तं समर्प्य मूलमन्त्रेण प्राणायामत्रयं कृत्वा यथा शक्ति जपित्वा "गुह्याति" इति मन्त्रेण जपफलं समर्प्य पूर्वोक्तमन्त्रैर्दिक्पालेभ्यो बलिं हरेत्। एवं गायत्रीजपद्विगुणसहितचतुश्चत्वारिशंत्सहस्त्राणि जपित्वा तिलसर्षपचित्रमूलसमिद्भिरुडम्बरप्लक्षाश्वत्थसमिद्भिराज्याक्तहविष्यान्नेन दशांशतो होमे शारदायाम् कृतपुरश्चरणो भवति। तत आग्नेयास्त्राधिकारी भवति।। तदुक्तं

आग्नेयमभिधास्यामि मन्त्रं सर्वार्थसाधनम्।
मारीचः कश्यपः प्रोक्तो मुनिरस्य महामनोः।।२३५।।
त्रिष्टुप्छन्दो देवतात्र जातवेदोऽग्निरीरितः।
नवभिः सप्तभिः षड्भिः सप्तभिः पुनरष्टभिः।।२३६।।
सप्तभिः मूलमन्त्रार्णैः षड्ङ्ग विधिरीरितः।
अंगुष्ठगुल्फजङ्घासु जानुनोरूरुयुग्मके।।२३७।।

कट्यन्धुनाभिषु हृदि स्तनयोः पार्श्वयोः द्वयो।
पृष्ठतः स्कन्धयोर्मध्ये बाहुमूलोपबाहुषु॥२३८॥
प्रकूर्परप्रकोष्ठेषु मणिबन्धतलेष्वपि।
मुखनासाक्षिकर्णेषु मस्तमस्तिष्कमूर्धसु॥२३९॥
क्रमेण विन्यसेद्वर्णान् मन्त्री मन्त्रसमुद्भवान्।
शिखाललाटनयनकर्णौष्ठरसनास्वथ ॥२४०॥
सकण्ठबाहुहृत्कुक्षिकटिगुह्योरूजानुषु।
जङ्घयोः पादयोर्न्यसेत् पदान्यस्य मनोः सुधीः॥२४१॥
विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धंस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्॥२४२॥
हस्तैश्चक्रदरासिखेटविशिखं चापं गुणं तर्जनीं
विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां स्मरेत्॥२४३॥

अन्यत्र-

हेमाचलतटे रम्ये कल्पवृक्षोपशोभिते।
दिव्योद्यानं चिन्तयेच्च विशालं हेमभूतलम्॥
कृशानुरूपवप्रेण करालेन समावृतम्।
तन्मध्ये चिन्तयेद् दिव्यं विचित्रमणिमण्डपम्॥
तस्मिन् सिंहासनेऽम्भोजकर्णिकायां विचिन्तयेत्।
दंष्ट्राकरालाट्टहासं कृष्णवर्णं भयानकम्॥
अतितीव्रमुखं सिंहं वमदग्निशिखोज्ज्वलम्।
तस्योपरिष्ठात्तां देवीं चिन्तयेज्जातरूपिणीम्॥
तडित्कोटिनिभां देवीं कोटिबालार्कसन्निभाम्।
चक्रासिबाणशूलाख्यान् दधतीं दक्षिणैर्भुजैः॥
शङ्खं चक्रधनुर्बाणतजनीर्वामबाहुभिः।
चन्द्रखण्डसमायुक्तामतिभीमत्रिलोचनाम्॥
ऊर्ध्वोज्वलत्केशपाशामशेषाहरणोन्मुखीम्।
अङ्गाद्यावृतिसंयुक्तामस्त्रशस्त्रपरीवृत्ताम्।
इन्द्रादिलोकपालैश्च सेवितां विन्ध्यवासिनीम्॥ इति॥
मन्त्रवर्णसहस्त्राणि जपेन्मन्त्रं विशालधीः।
तदन्ते तिलसिद्धार्थचित्रमूलैः समिद्वरैः॥२४४॥

क्षीरद्रुमाणामाज्येन हविष्यान्नैर्घृतप्लुतैः ।
चतुश्चत्वारिंशदाढ्यं चतुःशतसमन्वितम् ।।२४५।।
चतुःसहस्त्रं जुहुयादर्चिते हव्यवाहने ।
मण्डले सर्वतोभद्रे षट्कोणाङ्कितकर्णिके ।।२४६।।
विधिना वक्ष्यमाणेन पीठं देव्याः प्रपूजयेत् ।
जयाख्यां विजयां भद्रां भद्रकालीमनन्तरम् ।।२४७।।
सुमुखी दुर्मुखीसंज्ञा पश्चाद् व्याघ्रमुखीं पुनः ।
अथ सिंहमुखीं दुर्गां नवशक्तीः प्रपूजयेत् ।।२४८।।
आसनं सिंहमन्त्रेण दद्यादुक्तेन देशिकः ।
प्रणवानन्तरं वज्रनखदंष्ट्रायुधाय च ।।२४९।।
महासिंहाय वर्मास्त्रनतिः सिंहमनुः स्मृतः
मूर्तिं सङ्कल्प्य मूलेन तस्यामावाह्य पूजयेत् ।।२५०।।
षड्ङ्गानि यथापूर्वं केसरेष्वर्चयेत्सुधीः ।
ग्न्यादिपादाष्टकोत्पन्ना मूर्तयोऽर्च्चा बहिः पुनः ।।२५१।।
जातवेदाः सप्तजिह्वे हव्यवाहनसंज्ञकः ।
अधोदरजसंज्ञोऽन्यः पुनर्वैश्वानराह्वयः ।।२५२।।
कौमारतेजाः स्याद्विश्वमुखो देवमुखस्ततः ।
ततो भूसलिलाग्नीरानात्मनेऽन्तान् नमोऽन्वितान् ।।२५३।।
चतुर्दिक्षु समभ्यर्चेत् कोणेषु तत्कलाः पुनः ।
पूर्वादिदिक्षु सम्पूज्या जार्णाद्याः सार्णशक्तयः ।।२५४।।
जागरा तपना वेदगर्भा दहनरूपिणी ।
सेन्दुखण्डा शुम्भहन्त्रीं नभश्चारिण्यनन्तरम् ।।२५५।।
वागीश्वरी मन्दवाहा सोमरूपा मनोजवा ।
मरुद्वेगा रात्रिसंज्ञा तीव्रकोपा यशोवती ।।२५६।।
तोयात्मिका पुनर्नित्या दयावत्यपि हारिणि ।
तिरस्क्रिया वेदमाता तत्परा दमनप्रिया ।।२५७।।
समाराध्या नन्दिनी च पराकी रिपुमर्दिनी ।
षष्ठीं च दण्डिनी तिग्मा दुर्गा गायत्र्यनन्तरम् ।।२५८।।
निरवद्या विशालाक्षी श्वासोद्वाहा च नादिनी ।
वेदना वह्निगर्भाख्या सिंहवाहाह्वया तथा ।।२५९।।

धुर्या दुर्विषया पश्चात् रिरंसा तापहारिणी।
त्यक्तदोषा निःसपत्ना चत्वारिंशच्चतुर्युताः।।२६०।।
लोकपालांस्ततोऽभ्यर्चेद्वज्राद्यायुधसंयुतान् ।
इत्थं जपादिभिः सिद्धे मन्त्रेऽस्मिन् साधकोत्तमः।।२६१।।
आग्नेयास्त्राधिकारी स्यात् तद्विधानमिहोच्यते।

अस्य श्री आग्नेयास्त्रमन्त्रस्य मरीचिपुत्रकश्यप ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः उग्रकृत्या देवता शत्रुक्षयार्थे जपे विनियोगः।

प्रतिलोममन्त्रेण करशुद्धिं कृत्वा "ग्निस्पतारिदु घुंषि" अस्त्राय फट्। ववेना श्वाविणि र्गादु" नेत्रत्रयाय वौषट्। तिदषरप नः स कवचाय हुं। दः वे तिहादनि शिखायै वषट्। तोयतीराममसो शिरसे स्वाहा। मवानसु सेदवेतजा हृदयाय नमः। इति षडङ्गं कृत्वा अक्षरन्यासपदन्यासान् प्रतिलोमेन कृत्वा गुरूपदिष्टमार्गेण ध्यात्वा ब्रह्मास्त्रादिगुणजपसहितं प्रतिलोममन्त्रं चतुश्चत्वारिंशत्सहस्रसंख्याकं जप्त्वा पञ्चगव्येन पक्त्वा चरूणा दशांशेन होमः कार्यः। अस्त्रसिद्धिर्भवति।। तथा-

आग्नेयास्त्रमिति प्रोक्तं विलोमोच्चरितो मनुः।।२६२।।
पूर्वोक्ता एवं मुन्याद्या मन्त्रस्यास्य प्रकीर्तिताः।
प्रतिलोमक्रमादस्य षडङ्गानि प्रकल्पयेत्।।२६३।।
वर्णन्यासपदन्यासान् विदध्यात् प्रतिलोमतः।
ध्यानभेदान् विजानीयात् गुर्वदेशान्नचान्यथा।।२६४।।
पूर्वज्जपक्लृप्तिः स्याज्जुहुयात् पूर्वसंख्या।
पञ्चगव्यसुपक्वेन चरुणा तस्य सिद्धये।।२६५।।
अर्चनं पूर्ववत् कुर्याच्छक्तेस्तु प्रतिलोमतः।
सर्वत्र देशिकः कुर्यात् गायत्र्या द्विगुणं जपम्।।२६६।।
क्रूरकर्माणि कुर्वीत प्रतिलोमविधानतः।
शान्तिकं पौष्टिकं कर्म कर्तव्यमनुलोमतः।।२६७।।
प्रयोगकाले प्रजपेदष्ट पादान् विलोमतः।
साधितो जायते पश्चान्मन्त्रोऽयं विधिनाऽमुना।।२६८।।
ग्न्यादिपञ्चाक्षरः पादौ ज्ञेयो ज्ञानेन्द्रियात्मकः।
धुमाद्योऽन्यः पञ्चवर्णः स्मृतः कर्मेन्द्रियात्मकः।।२६९।।
श्वाद्यस्तृतीयः पञ्चार्णः पञ्चभूतमयः स्मृतः।
त्याद्यः सप्ताक्षरः पादश्चतुर्थो धातुरूपकः।।२७०।।

दः पूर्वः पञ्चमः पाद ऊर्मिरूप षडक्षरः।
तोवर्णादिः षडर्णोऽन्यः षाट्कोशिकमयो मतः।।२७१।।
सोपूर्वः पञ्चवर्णोऽन्यः शब्दादिमय ईरितः।
सेवर्णाद्यष्टमो ज्ञेयः पञ्चार्णो वचनादिकः।।२७२।।
एवं तत्त्वसमायोगात् पादक्लृप्तिरुदीरिता।
तत्तत्पादाक्षरोत्पन्नास्तावत्यो वर्णदेवताः।।२७३।।
प्रधानमूर्तिप्रतिमाः स्वस्ववर्णोदितप्रभाः।
प्रज्वलत्केशवदना भीमदंष्ट्रा भयापहाः।।२७४।।
देवता इन्द्रियोत्पन्ना ऊर्ध्वदृष्टय ईरिताः।
देवता भूतपादोत्थास्तिर्यग्वक्त्राः प्रकीर्तिताः।।२७५।।
धातुरूपाक्षरोद्भूता उभयाननशोभिता।
ऊर्मिजा ऊर्ध्ववदना कोशोत्थास्तिर्यगाननाः।।२७६।।
एताः सर्वाः स्मृताः क्लीवा इन्द्रियार्थोद्भवाः स्त्रियः।
अधस्तिर्यङ्मुखोपेता ईरिता वर्णदेवताः।।२७७।।
अभिमुख्यः स्मृताः सौम्ये पराङ्मुख्योऽन्यकर्मणि।
आभ्योऽसंख्याः समुत्पन्ना देवता ज्वलिताननाः।।२७८।।
याभिर्मन्त्री दहेच्छत्रो राज्यं सगिरिकाननम्।
अस्त्रं मनुष्यनक्षत्रेष्वारभेत विचक्षणः।।२७९।।
आसुरीषु प्रयुञ्जीत देवतारासु संहरेत।
पूर्वोत्तरत्रयं पश्चाद्भरण्यार्द्राऽथ रोहिणी।।२८०।।
इमानि मानुष्याण्याहुर्नक्षत्राणि मनीषिणः।
ज्येष्ठा शतभिषा मूलधनिष्ठाश्लेषकृत्तिकाः।।२८१।।
चित्रामघाविशाखाः स्युस्तारा राक्षसदेवताः।
अश्विनी रेवती पुष्यस्वाती हस्तः पुनर्वसुः।।२८२।।
अनुराधा मृगशिरः श्रवणं देवतारकाः।
उपक्रमेतु नन्दासु रिक्तावस्त्रं विसर्जयेत्।।२८३।।
भद्रास्वाहरणं कुर्याज्जयास्वत्यन्तमुत्तमम्।
उपक्रमो भौमवारे शनिवारे विसर्जनम्।।२८४।।
प्रतिसंहरणं वारे गुरोः शुक्रस्य वा भवेत्।
भानुना मोक्षसंहारो कुर्यात् पदद्वये सुधीः।।२८५।।

स्थिरेषु राशिष्वारम्भश्चरेषु स्याद्विसर्जनम्।
अस्त्रसंहरणं कुर्यादुभयेषु विचक्षणः।।२८६।।
कृष्णपक्षेऽनलेनास्त्रं विसृजेच्छशिना पुनः।
शुक्लपक्षे क्रमादस्त्रं पुनरात्मनि संहरेत्।।२८७।।
पश्चिमाभिमुखो भूत्वा कर्म सर्वत्र कारयेत्।
नक्षत्रवृक्षशकलान् साध्याख्याकर्मसंयुतान्।।२८८।।
तत्तन्मन्त्राक्षरोपेतान् मन्त्री मन्त्रार्णसंख्यया।
जुहुयादेधिते वह्नौ मारयेद्रिपुमात्मनः।।२८९।।
कृष्णाष्टमीं समारभ्य यावत्कृष्णचतुर्दशीम्।
धत्तूरविषवृक्षाक्षभूरुहोत्थान् समिद्वरान्।।२९०।।
राजीतैलेन संयुक्तान पृथक्सप्तसहस्रकम्।
जुहुयात्संयतो भूत्वा रिपुर्यमपुरं व्रजेत्।।२९१।।
सप्तरात्रं प्रजुहुयात् सिद्धार्थस्नेहलोलितैः।
आर्द्रवस्त्रो विष्टिकाले मरिचैर्मनुनाऽमुना।।२९२।।
निगृह्यते ज्वरेणारिः प्रलयाग्निसमेन सः।
तालपत्रे समालिख्य शत्रुनाम यथाविधि।।२९३।।
आग्नेयास्त्रेण संवेष्ट्य कुण्डमध्ये निखातयेत्।
जुहुयान्मरिचैः क्रुद्धो ज्वराक्रान्तः स जायते।।२९४।।
तदादाय क्षिपेत् तोये शीतले स वशो भवेत्।
पिष्ट्वापामार्गबीजानि मरीचमधुसंयुतम्।।२९५।।
तदादाय क्षिपेत् तोय शीतले स वशो भवेत्।
पिष्ट्वापामार्गबीजानि मरीचमधुसंयतम्।।२९६।।
अत्युष्णे लवणे तोये निःक्षिप्य क्वाथयेत्ततः।
ऋक्षवृक्षप्रतिकृतेर्हृदये वदने नसि।।२९७।।
किञ्चितकिञ्चित्क्षिपेत् तोयं दर्व्या कारस्करोत्थया।
आग्नेयमुच्चरन् मन्त्री सोऽचिराज्ज्वरितो भवेत्।।२९८।।
क्वथितेऽम्भसि तां क्षिप्त्वा हन्याच्छत्रुमयत्नतः।
तीक्ष्णस्नेहेन संलिप्तां शत्रोः प्रतिकृतिं निशि।।२९९।।
तापयेदेधिते वह्नौ प्रतिलोममनुं जपन्।
ज्वरेण बाध्यते सद्यो होमादस्य मूर्तिर्भवेत्।।३००।।

सामुद्रे सलिले हिंगुविषजीरकलोलिते।
क्वथिते पुत्तलीं साध्यनक्षत्रतरुनिर्मिताम्।।३०१।।
अधोवक्त्रां विनिक्षिप्य यष्ट्या विषतरूत्थया।
तच्छिरस्ताडनं कुर्वञ्जपेदस्त्रं विलोमतः।।३०२।।
सप्ताहान्मरणं याति शत्रुर्ज्वरविमोहितः।
आदित्यरथनागेन्द्रग्रस्ताघ्रिं तद्विषाहतम्।।३०३।।
नग्नं तैलेन लिप्ताङ्गं दग्धं भानुमरीचिभिः।
अधोमुखं निजरिपुं ध्यात्वा क्वथितवारिणा।।३०४।।
तापयेद्भानुमालोक्य शत्रुर्मृत्युप्रियो भवेत्।
बिभ्रतीं मुसलं शूलं ध्यायन् कालघनप्रभाम्।।३०५।।
कार्पासबीजैर्निम्बस्य पत्रैमषीघृतप्लुतैः।
हुत्वा विद्वेषयेच्छत्रूनस्त्रेणानेन देशिकः।।३०६।।
बिभ्राणां तर्जनीं शूलं ध्यात्वा दुर्गा भयङ्करीम्।
महिषीघृतसंप्लुतैर्पल्लवैर्विषवृक्षजैः।।३०७।।
हुत्वा रिपोः क्षणात्सेनामुच्चाटयति मन्त्रवित्।
ध्यात्वा देवीं पुरा प्रोक्तां चतुर्भिर्मरिचान्वितैः।।३०८।।
अजारुधिरसंयुक्तैर्जुहुयाद्दिवसत्रयम्।
रिपोरुच्चाटनं कुर्यात्सेनाया नात्र संशयः।।३०९।।
असिशूलकरां दुर्गां ज्वलन्तीं प्रलयाग्निवत्।
ध्यात्वा सर्षपतैलोक्तैर्बीजैर्धत्तुरसम्भवैः।।३१०।।
हुत्वा विमोहयेच्छत्रून् मरिचैर्वा ससर्षपैः।
कालाञ्जननिभां दुर्गां शूलखड्गधरां स्मरेत्।।३११।।
नक्षत्रवृक्षसम्भूतैर्व्रणकृत्स्नेहलोलितैः।
समिद्वरैः प्रजुहुयाद्धन्यान्मासेन वैरिणम्।।३१२।।
सिंहारूढां प्रधावन्तीं धावमानं रिपुं प्रति।
शरान् कार्मुकनिर्मुक्तान् वह्निज्वालासमाकुलान्।।३१३।।
मुञ्चन्तीं संस्मरन् दुर्गां तर्पयेदुष्णवारिणा।
भानुबिम्बं समालोक्य रिपोरुच्चाटनं भवेत्।।३१४।।
अतिदुर्गामयोयष्टिगदाहस्तां विचिन्तयेत्।
विद्युद्दामसमानाभां महिषीघृतसम्प्लुतैः।।३१५।।

पुलाकैर्जुहुयान्निम्बवैभीतिकसमिद्वरैः ।
कोद्रवैरथवा शत्रोः सेनाया स्तम्भनं भवेत् ।।३१६।।
अत्तपाशांकुशां रक्तां गाणिदुर्गामनुं स्मरेत् ।
लोणैः समधुरैः साध्यवृक्षकाष्ठैधिते ऽनले ।।३१७।।
जुहुयान्निशि सप्ताहान्मन्त्रविद्वशयेन्नृपान् ।
पाशांकुशधरा रक्तां विश्वदुर्गां विचिन्तयेत् ।।३१८।।
फलिनीकुसुमैः फुल्लैश्चन्दनाम्भःसमुक्षितैः ।
जुहुयान्निशि यो मन्त्री तस्य विश्वं वशं भवेत् ।।३१९।।
शरच्चन्द्रनिभां देवीं विगलत्परमामृताम् ।
पाशांकुशधरां ध्यात्वा सिन्धुदुर्गां समिद्वरैः ।।३२०।।
वैतसैर्मधुरासिक्तैर्जुहुयाद् वृष्टिसिद्धये ।
कपालं त्रिशिखं पाशमंकुशं बिभ्रतीं करैः ।।३२१।।
जपाकुसुमसङ्काशामग्निदुर्गां विचिन्तयेत् ।
हुत्वा लवणपुत्तल्या मधुरत्रययुक्तया ।।३२२।।
आकर्षद्वाञ्छितान् साध्यान् मन्त्रविन्नात्र संशयः ।
अतिदुर्गेयमित्याद्या फडन्ताः त्रिष्टुवीरिता ।।३२३।।
दुर्वर्णान्ता च गाण्याद्या गाणिदुर्गा समीरिता ।
विश्वाद्या ण्यक्षरान्ता सा विश्वदुर्गा समीरिता ।।३२४।।
सिन्ध्वाद्या सा वकारान्ता सिन्धुदुर्गा निगद्यते ।
त्यन्तामग्यादिकामेनामग्निदुर्गां विदुर्बुधाः ।।३२५।।
अङ्गणे स्थण्डिलं कृत्वा सुगन्धिकुसुमादिभिः ।
देवीमभ्यर्चयेन्नित्यं प्रागुक्तेनैव वर्त्मना ।।३२६।।
आहरेद्रात्रिषु बलि चरुणा तस्य सिद्धये ।
कृत्यारोगग्रहद्रोहभूतादीन् नाशयेदयम् ।।३२७।।
यथावदग्निमाराध्य गन्धपुष्पैर्मनोहरैः ।
स्थित्वा तस्याग्रतो मन्त्री जपेन्मन्त्रमनन्यधीः ।।३२८।।
जपोऽयं सर्वसिद्धयै स्यान्नात्र कार्या विचारणा ।
लवणैर्मधुरासिक्तैः जुहुयात्पश्चिमामुखः ।।३२९।।
मन्त्रार्णसंख्यया मन्त्री रिपुमात्मवशं नयेत् ।
शालीन् प्रक्षाल्य संशोध्य शुद्धान् कुर्वीत् तण्डुलान् ।।३३०।।

पाचित्वा पञ्चगव्येषु संस्कृते हव्यवाहने।
चरुं पचेज्जपन् मन्त्रमवतार्य पुनः सुधी।।३३१।।
अर्चयित्वा विशदधीर्देवीमग्नौ यथा पुरा।
जुहुयाच्चरणा तेन साज्येनाष्टसहस्रकम्।।३३२।।
पात्रे सम्पातनं कुर्यात् साध्यं तत्प्राशयेत्पुनः।
शिष्टं तं निखनेद द्वारि सम्पातं प्राङ्गणान्तरे।।३३३।।
कृत्यारोगा विनश्यन्ति सहभूतग्रहामयैः।
परैरुत्पादिता कृत्या पुनस्तानेव भक्षयेत्।।३३४।।
ब्रीहिभिर्हविषा क्षीरैः पयोवृक्षसमिद्वरैः।
आज्यैर्मधुत्रयोपेतैरेतैर्दशशतं पृथक्।।३३५।।
जुहुयात्सम्पदां भूमिः साधको भवति ध्रुवम्।
भास्करे मेषराशिस्थे मन्त्रज्ञोऽनुगुणे दिने।।३३६।।
नद्यां समुद्रगामिन्यां स्नात्वा मन्त्री यथाविधि।
उद्धृत्यादाय सिकताः संशोध्य परिशोधयेत्।।३३७।।
न्यस्य ताः पञ्चगव्येषु संस्कृते हव्यवाहने।
भर्जयेन्मनुना सिद्ध्यै दर्व्या ब्रह्मतरूत्थया।।३३८।।
सिंहमेषधनुःस्थेऽर्के कृष्णपक्षेऽष्टमीतिथौ।
विशाखाकृत्तिकामूलीहस्तोत्तरमघास्वथ ।।३३६।।
रोहिण्यां श्रवणे वारौ मन्दवाक्पतिदेवतौ।
विहायान्मेषु कुर्वीत सिकतास्थापन सुधीः।।३४०।।
गृहग्रामादिराष्ट्राणां रक्षार्णं सिकताः शुभाः।
प्रस्थाढकघटोन्माना मध्यादिष्ववटेष्विमाः।।३४१।।
नवसु प्रक्षिपेज्जप्तास्तेषु सम्पूजयेत्क्रमात्।
मध्यादिदेवीमस्त्राणि कपालान्तानि देशिकः।।३४२।।
चक्रं शङ्खमसिं खेटं बाणं चापं त्रिशूलकम्।
कपालं स्वस्वमन्त्रेण सम्पूज्यान्ते बलिं हरेत्।।३४३।।
नक्षत्रग्रहराशीनां लोकेशानां बलिं हरेत्।
विहिता यत्र रक्षेयं वर्धन्ते तत्र सम्पदः।।३४४।।
क्षुद्रग्रहमहारोगचोरभूतसरीसृपा ।
अमुना विलयं यान्ति विधिना नात्र संशयः।।३४५।।

सिकतानां विशुद्धानां विकारकुडवं सुधीः।
पञ्चगव्ययुतं पात्रे ब्रह्मवृक्षेण निर्मिते।।३४६।।
निक्षिप्य विधिना यत्र स्थापयेत्तत्र सम्पदः।
दिने दिने प्रवर्धन्ते कालविष्ठ्यादिभिः सह।।३४७।।
महोत्पाता विनश्यन्ति कृत्याद्रोहमहाग्रहाः।
चरुं गव्यात्मना कुर्यात् स्थापनं विधिनामुना।।३४८।।
गोमूत्रं प्रस्थमानं स्याद्गोमयाम्भस्तदर्धकम्।
आज्यात्सप्तगुणं क्षीरं गोमूत्रात्त्रिगुणं दधि।।३४९।।
गोमूत्रेण समं सर्पिः सर्वं वा सममुच्यते।
गावः स्युः कपिलाः श्वेतश्यामधूम्रारुणप्रभाः।।३५०।।
अभावे गदिताः सर्वाः सर्वं वा कपिलोद्भवम्।
एकोनपञ्चाशत्कोष्ठे फलके ब्रह्मशाखिनः।।३५१।।
विहाय कोणकोष्ठानि शक्त्याद्यं जातवेदसम्।
लिखित्वा मध्यकोष्ठादि पूजयेत्तत्र देवताम्।।३५२।।
कृत्वा होमं ससम्पातं निखनेत् तद्यथा पुरा।
दद्याद्बलिं यथापूर्वमस्य पूर्वोदितं फलम्।।३५३।।
मध्ये मायामष्टकोष्ठेषु पादानष्टौ कृत्वा मातृकार्णैः प्रवीतम्।
भूबिम्बस्थं सर्वभूतामयघ्नं रक्षायुः श्रीकीर्तिदं यन्त्रमेतम्।।३५४।।
आग्नेयास्त्रस्य जानाति विसर्गादानकर्मणी।
यः पुमान् गुरुणा शिष्टस्तस्याधीनं जगत्त्रयम्।।३५५।।

अथ उग्रदुर्गामन्त्रः

तन्त्रचूडामणौ-

देवि चिन्तापरेणस्य विस्मृतं परमं कुलम्।
सबीजं दोषरहितं कथयस्व ममाग्रतः।।३५६।।
वेदविद्ये दुं दुरन्ते सानन्तो गणनायकः।
रेफस्य पूर्वं च सऋक् नमोऽन्ते बीजपूर्वकः।।३५७।।
वाग्बीजं सृष्टिबीजं वा कामबीजं महेश्वर।
योजनीयं न सा देवी योजनीया तु भोगदा।।३५८।।

वेदविद्ये तारद्वयम्। अनन्त आकारः। गणनायको गकारः। रेफपूर्वो यकारः। ऋक् ऐकारः। एवं ॐ ॐ दुं दुर्गायै नमः इति मन्त्रः।

यद्वा दुमिति बीजस्थाने वाग्बीजाद्यन्यतमं योजनीयमित्यर्थ। सृष्टिबीजं भुवनेशीबीजत्रयं समुदितं देयं तेन पक्षे दशाक्षरत्वमपीति कश्चित्।

तथा–

या सा भोगप्रदा विद्या मातर्मे दीयतां कुलम्।
स्थनभावसमायुक्ता वह्निशक्त्यन्तरस्थिता।।३५९।।
नारदोऽस्य मुनिः प्रोक्तो गायत्री छन्द ईरितम्।
उग्रदुर्गेति विख्याता विद्या महिषमर्दिनी।।३६०।।
घोरां दूर्वादलश्यामां महाभीमां चतुर्भुजाम्।
शङ्खचक्रधनुर्बाणान् धारयन्तीं महोन्मुखीम्।
सिंहासनगतां देवीं वित्तैश्वर्यप्रदायिनीम्।।३६१।।
एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षं तद्दशाशं हुनेत्ततः।
यन्त्रे वसुदलेऽनुष्टुत्वीते मातृकयान्विते।
अष्टार्णदलसंयुक्ते मध्ये बीजं समालिखेत्।।३६२।।
मध्ये गर्भं तारमध्ये पूजयेत्परमेश्वरीम्।
अनुष्टुप् जातवेदोमन्त्रः। ।३६३।।
क्रमोक्तैः मूलमन्त्रेण षडङ्गानि प्रविन्यसेत्।
नमस्कारं नियुक्तेन पत्रेषु पूजयेत्ततः।।३६४।।
प्रभा माया जया सूक्ष्मा विशुद्धा नलिनी पुनः।
सुप्रभा विजया सर्वसिद्धिदानवशक्तयः।।३६५।।
स्वरैर्लघुक्लीवहीनैर्बीजैः सिंहासनं ततः।
संपूज्य देवीमावाह्य तत्र पूजां समाचरेत्।।३६६।।
प्रथमावृत्तिवर्गाद्यैर्द्वितीया शक्तिभिः पुनः।
अस्त्रावृत्तिस्तृतीया स्याल्लोकपालैश्चतुर्थिका।
परावृत्तिस्तदस्त्राणि संपूर्णः कथितस्तव।।३६७।।
जया च विजया कीर्तिः प्रीतिः पश्चात् प्रभा पुनः।
श्रद्धा मेधा धृतिः प्रोक्ताः स्वानामाद्यक्षरान्विताः।।३६८।।
शङ्खचक्र गदाखड्गपाशाङ्कुशवरान् पुनः।
इन्द्राद्या लोकपाला वै वज्राद्यायुधदेवतम्।।३६९।।
सर्वं रहस्यं कथितं तव स्नेहान्महेश्वर।
न देया परमा विद्या सर्वत्रविजयप्रदा।।३७०।।

सिकतानां विशुद्धानां विकारकुडवं सुधीः।
पञ्चगव्ययुतं पात्रे ब्रह्मवृक्षेण निर्मिते।।३४६।।
निक्षिप्य विधिना यत्र स्थापयेत्तत्र सम्पदः।
दिने दिने प्रवर्धन्ते कालविष्ठ्यादिभिः सह।।३४७।।
महोत्पाता विनश्यन्ति कृत्याद्रोहमहाग्रहाः।
चरुं गव्यात्मना कुर्यात् स्थापनं विधिनामुना।।३४८।।
गोमूत्रं प्रस्थमानं स्याद्गोमयाम्भस्तदर्धकम्।
आज्यात्सप्तगुणं क्षीरं गोमूत्रात्त्रिगुणं दधि।।३४९।।
गोमूत्रेण समं सर्पिः सर्वं वा सममुच्यते।
गावः स्युः कपिलाः श्वेतश्यामधूम्रारुणप्रभाः।।३५०।।
अभावे गदिताः सर्वाः सर्वं वा कपिलोद्भवम्।
एकोनपञ्चाशत्कोष्ठे फलके ब्रह्मशाखिनः।।३५१।।
विहाय कोणकोष्ठानि शक्त्याद्यं जातवेदसम्।
लिखित्वा मध्यकोष्ठादि पूजयेत्तत्र देवताम्।।३५२।।
कृत्वा होमं ससम्पातं निखनेत् तद्यथा पुरा।
दद्याद्बलिं यथापूर्वमस्य पूर्वोदितं फलम्।।३५३।।
मध्ये मायामष्टकोष्ठेषु पादानष्टौ कृत्वा मातृकार्णैः प्रवीतम्।
भूबिम्बस्थं सर्वभूतामयघ्नं रक्षायुः श्रीकीर्तिदं यन्त्रमेतम्।।३५४।।
आग्नेयास्त्रस्य जानाति विसर्गादानकर्मणी।
यः पुमान् गुरुणा शिष्टस्तस्याधीनं जगत्त्रयम्।।३५५।।

अथ उग्रदुर्गामन्त्रः

तन्त्रचूडामणौ-

देवि चिन्तापरेणस्य विस्मृतं परमं कुलम्।
सबीजं दोषरहितं कथयस्व ममाग्रतः।।३५६।।
वेदविद्ये दुं दुरन्ते सानन्तो गणनायकः।
रेफस्य पूर्वं च सऋक् नमोऽन्ते बीजपूर्वकः।।३५७।।
वाग्बीजं सृष्टिबीजं वा कामबीजं महेश्वर।
योजनीयं न सा देवी योजनीया तु भोगदा।।३५८।।

वेदविद्ये तारद्वयम्। अनन्त आकारः। गणनायको गकारः। रेफपूर्वो यकारः। ऋक् ऐकारः। एवं ॐ ॐ दुं दुर्गायै नमः इति मन्त्रः।

यद्वा दुमिति बीजस्थाने वाग्बीजाद्यन्यतमं योजनीयमित्यर्थ। सृष्टिबीजं भुवनेशीबीजत्रयं समुदितं देयं तेन पक्षे दशाक्षरत्वमपीति कश्चित्।

तथा-

या सा भोगप्रदा विद्या मातर्मे दीयतां कुलम्।
स्थनभावसमायुक्ता वह्निशक्त्यन्तरस्थिता।।३५९।।
नारदोऽस्य मुनिः प्रोक्तो गायत्री छन्द ईरितम्।
उग्रदुर्गेति विख्याता विद्या महिषमर्दिनी।।३६०।।
घोरां दूर्वादलश्यामां महाभीमां चतुर्भुजाम्।
शङ्खचक्रधनुर्बाणान् धारयन्तीं महोन्मुखीम्।
सिंहासनगतां देवीं वित्तैश्वर्यप्रदायिनीम्।।३६१।।
एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षं तद्दशाशं हुनेत्ततः।
यन्त्रे वसुदलेऽनुष्टुत्वीते मातृकयान्विते।
अष्टार्णदलसंयुक्ते मध्ये बीजं समालिखेत्।।३६२।।
मध्ये गर्भं तारमध्ये पूजयेत्परमेश्वरीम्।
अनुष्टुप् जातवेदोमन्त्रः। ।३६३।।
क्रमोक्तैः मूलमन्त्रेण षडङ्गानि प्रविन्यसेत्।
नमस्कारं नियुक्तेन पत्रेषु पूजयेत्ततः।।३६४।।
प्रभा माया जया सूक्ष्मा विशुद्धा नलिनी पुनः।
सुप्रभा विजया सर्वसिद्धिदानवशक्तयः।।३६५।।
स्वरैर्लघुक्लीवहीनैर्बीजैः सिंहासनं ततः।
संपूज्य देवीमावाह्य तत्र पूजां समाचरेत्।।३६६।।
प्रथमावृत्तिवर्गाद्यैर्द्वितीया शक्तिभिः पुनः।
अस्त्रावृत्तिस्तृतीया स्याल्लोकपालेश्चतुर्थिका।
परावृत्तिस्तदस्त्राणि संपूर्णः कथितस्तव।।३६७।।
जया च विजया कीर्तिः प्रीतिः पश्चात् प्रभा पुनः।
श्रद्धा मेधा धृतिः प्रोक्ताः स्वानामाद्यक्षरान्विताः।।३६८।।
शङ्खचक्र गदाखड्गपाशाङ्कुशवरान् पुनः।
इन्द्राद्या लोकपाला वै वज्राद्यायुधदैवतम्।।३६९।।
सर्वं रहस्यं कथितं तव स्नेहान्महेश्वर ।
न देया परमा विद्या सर्वत्रविजयप्रदा ।।३७०।।

वागीशत्वप्रदा देवी महामोक्षप्रदायिनी।
अष्टसिद्धिप्रदारुद्रयामलोक्त पञ्चाम् देवी किमन्यद् बहुजल्पितैः।।३७१।।

रुद्रयामलोक्त पञ्चाङ्गम्

श्रीरुद्रयामले श्रीदेवीरहस्ये-

श्री देव्युवाच

भगवन् सर्वतत्त्वज्ञ! साधकानां जयावह।
यत् पुरा सूचितं देव दुर्गापञ्चाङ्गमुत्तमम् ।।३७२।।
सर्वस्वं सर्वदेवानां रहस्यं सर्वमन्त्रिणाम्।
तदद्य कृपया ब्रूहि यद्यस्ति मयि ते दया।।३७३।।

श्रीभैरव उवाच

एतद् गुह्यतमं देवि! पञ्चाङ्गं तत्त्वलक्षणम्।।३७४।।
दुर्गायाः सारसर्वस्वं न कस्य कथितं मया।
तव स्नेहात् प्रवक्ष्यामि दुर्गापञ्चाङ्गमीश्वरि।।३७५।।
गुह्यं गोप्यतमं दिव्यं न देयं ब्रह्मवादिभिः।
या देवी दैत्यदमनी दुर्गेत्यष्टाक्षरा शिवा।।३७६।।
देवैराराधिता पूर्वं ब्रह्माच्युतपुरःसरैः।
पुरन्दरहितार्थाय वधार्थाय सुरद्विषाम्।।३७७।।
सैवं सृजति भूतानि राजसी परमेश्वरी।
सात्त्विकी रक्षति प्रान्ते संहरिष्यति तामसी।
इत्थं गुणत्रयीरूपा सृष्टिस्थितिलयात्मिका।।३७८।।
अष्टाक्षरी महाविद्या संख्यातीता परात्मिका।
तस्याः पञ्चाङ्गमधुना रहस्यं त्रिदिवौकसाम्।।३७९।।
वक्ष्यामि परमप्रीत्या न चाख्येयं दुरात्मने।
पटलं तव वक्ष्यामि दुर्गायास्तत्त्वमुत्तमम्।।३८०।।
येन श्रवणमात्रेण कोटिपूजाफलं लभेत्।
दुर्गाया देवि वक्ष्यामि मन्त्रोद्धारं पराश्रयम्।
सर्वतन्त्रेष्वविख्यातं सर्वकामफलप्रदम्।।३८१।।
तारं माया चाक्रिकं चक्रिदूर्वा वायव्यार्ण विश्वमन्ते भवानि।
दुर्गायास्ते वर्णितो मूलविद्यामन्त्रोद्धारो गोपितोऽष्टाक्षरोऽयम्।।३८२।।

प्रकाशम्-ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः।

नास्यान्तरायबाहुल्यं नाप्यमित्रादिदूषणम्।
नो वा प्रयाससंयोगो नाचारयुगविप्लवः।।३८३।।

साक्षात् सिद्धिप्रदो मन्त्रो दुर्गायाः कलिनाशनः।
अष्टाक्षरोऽष्टसिद्धिशो गोपनीयो दिगम्बरैः।।३८४।।
महाचीनक्रमस्थानां साधकानां जयावहः।
मन्त्रराजो महादेवि! सद्यो भोगापवर्गदः।।३८५।।
वर्णलक्षं पुरश्चर्या तदर्धं वा महेश्वरि!।
एकलक्षावधिं कुर्यान्नातो न्यूनं कदाचन।।३८६।।
मूलोत्कीलनसिद्धं तु सञ्जीवनसुसंस्कृतम्।
पुरश्चर्यां चरेत् पश्चात् संपुटाढ्यं चरेन्मनुम्।।३८७।।
ततो मन्त्रं जपेन्नित्यं दुर्गायास्त्वष्टसिद्धिदम्।
यं जप्त्वा साधको भूमो विचरेद्भैरवो यथा।।३८८।।
ऋषिरस्य स्मृतो देवि! मन्त्रस्याद्यो महेश्वर!।
छन्दोऽनुष्टुब् देवता च श्रीदुर्गाष्टाक्षरा स्मृता।।३८९।।
चाक्रिकं बीजमीशानि माया शक्तिरिति स्मृता।
तारं कीलकमीशानां विश्वं बन्धनमीश्वरि।।३९०।।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः।
तारमायाक्षरैर्देवि न्यासं षड्दीर्घभागिभिः।।३९१।।
निहत्य षड्रिपून् देवि! ध्यायेद् दुर्गां कुलेश्वरि!।
दूर्वानिभां त्रिनयनां विलसत्किरीटा
शङ्खाब्जखड्गशरखेटक शूलचापान्।
संतर्जनीं च दधतीं महिषासनस्थां दुर्गां
नवारकुलपीठगतां भजेऽहम्।।३९२।।
यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि दुर्गायाः कुलमन्दिरम्।
सर्वसिद्धिप्रदं चक्रं सर्वाशापरिपूरकम्।।३९३।।
बिन्दुत्रिकोणं रसकोणबिम्बं वृत्ताष्टपत्राग्वितवह्निवृतम्।
धरागृहोद्भासितमिन्दुचूडे दुर्गाश्रयं यन्त्रमिदं प्रदिष्टम्।।३९४।।
लयाङ्गमस्य यन्त्रस्य सर्वतन्त्रेषु गोपितम्।
येनोच्चारणमात्रेण कोटियज्ञफलंलभेत्।।३९५।।
गणेशं च कुमारं च पुष्पदन्तं विकर्त्तनम्।
चतुर्द्वारेषु देवेशि! पूजयेत् साधकेश्वरः।।३९६।।
ब्राह्मी नारायणी देवि! चामुण्डाप्यपराजिता।
माहेश्वरी च कौमारी वाराही नारसिंहिका।।३९७।।
पूज्या वसुदले देवि भैरवांश्चाष्ट पार्वति!
असिताङ्गो रुरुश्चण्डः क्रोधोन्मत्तकपालिकाः।।३९८।।

भीषणैश्च संहारो वामावर्तेन साधकैः।
पूज्याः पृथक् पृथग् देवी गन्धपुष्पाक्षतैः शिवे।।३९९।।
दत्त्वा पुष्पाञ्जलिं चक्रे मूलमुच्चार्य साधकः।
पूजयेत् पद्मकिञ्जल्कैः षडस्रे षट् कुलाम्बिकाः।।४००।।
शैलपुत्रीं स्ववामाग्रात् पूजयेद् ब्रह्मचारिणीम्।
चण्डघण्टां च कूष्माण्डां स्कन्दमातरमीश्वरि।।४०१।।
कात्यायनीं च सम्पूज्य दूर्वागन्धाक्षतैः परम्।
पुनः पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा श्रीचक्रे परमार्थदे।।४०२।।
पूजयेद् देवतास्तिस्रः कुलस्थास्त्रिपुराम्बिकाः।
कालरात्री महागौरी देवदूतीति पार्वति!।।४०३।।
त्रिकोणाग्राच्छिवे पूज्याः सिन्दूराक्षतपुष्पकैः।
दूर्वादलाञ्जलिं दत्त्वा यन्त्रराजेऽष्टसिद्धिदे।।४०४।।
पूजयेदम्बिकां दुर्गामष्टाक्षरविभूषणाम्।
विन्दौ देवीमष्टभुजां विद्यामष्टाक्षरीं शिवे।।४०५।।
नीलकण्ठं शिवं विन्दौ पूजयेज्जगदम्विकाम्।
तत्रायुधानि देवेशि! पूजयेदष्ट साधकः।।४०६।।
शङ्खं पद्ममसिं बाणान् धनुः खेटकमीश्वरि।
शूलं संतर्जनी दिव्यां नानापुष्पैः समर्चयेत्।।४०७।।
देवदेव्यौ बिन्दुपीठे पूजयेत् सर्वसिद्धये।
अथ वक्ष्ये महादेवि! प्रयोगानष्ट सिद्धये।।४०८।।
यान् विधाय कलौ मन्त्री भवेत् कल्पद्रुमोपमः।
स्तम्भनं मोहनं चैव मारणाकर्षणे ततः।।४०९।।
वशीकारं तथोच्चाटं शान्तिकं पौष्टिकं तथा।
एषां साधनमाचक्षे प्रयोगाणां महेश्वरि!।।४१०।।
महाचीनक्रमस्थानां साधकानां हिताय च।
(१) अयुतं प्रजपेन्मूलं श्मशाने निशि साधकः।।४११।।
हुनेद् दशांशतः सर्पिर्यवान्मासासृगच्युतान्।
स्तम्भनं जायते क्षिप्रं वादिकामिजनाम्भसाम्।।४१२।।
(२) अयुतं प्रजपेद् देवि वटे रुद्राक्षमालया।
होमो दशांशतः कार्यो घृतपद्माक्षपङ्कजैः।।४१३।।
आरग्वधैः सुधामूलैर्मोहनं जायते क्षणात्।
देवानां दानवानां च का कथाल्पधियां नृणाम्।।४१४।।

(३) अयुतं प्रजपेन्मूलं वने साधकसत्तमः।
वेतसीमूलगो वापि हुनेत् तत्र दशांशतः।।४१५।।
घृतपायसशम्बूकान रिपुर्मृत्युमुखं व्रजेत्।
(४) अयुतं प्रजपेद्रात्रौ शून्यगारे कुलेश्वरि।।४१६।।
होमो दशांशतः कार्यो घृतव्योषशटीशरैः।
कपिबीजैरपि प्रातर्भवेदाकर्षणं स्त्रियाम्।।४१७।।
(५) अयुतं प्रजपेन्मूलं चत्वरे त्वरितं हुनेत्।
आज्याब्जक्षुरपाषाण्डरक्तपुष्पाणि पार्वति!।।४१८।।
शक्रोऽपि वशतामेति किं पुनः क्षुद्रभूमिपः।
(६) अयुतं प्रजपेन्मूलं साधकोऽश्वत्थमूलगः।।४१९।।
हुनेदाज्यं दशांशेन केशं स्त्रीणां त्वर्चं कणाः।
रिपुमुच्चाटयेत् शीघ्रं यदि शक्रसमो भवेत्।।४२०।।
(७) अयुतं प्रजपेन्मूलं सुरद्रुमतले हुनेत्।
घृताक्त कुक्कुटाङ्गानि नानापुष्पाणि साधकैः।।४२१।।
रोगोपद्रवकालस्य सद्यः शान्तिर्भविष्यति।
(८) अयुतं प्रजपेन्मूलं लीलोपवनमण्डले।।४२२।।
होमो दशांशतः कार्यो घृतमीनाजमस्तकैः।
पादैरष्टभिरीशानि सद्यः पुष्टिः प्रजायते।।४२३।।
इत्येष पटलो दिव्यो मन्त्रर्स्वस्वरूपवान्।
दुर्गारहस्यभूतोऽपि गोपनीयो मुमुक्षुभिः।।४२४।।
अथ पद्धतिः। तत्रैव-

श्री भैरव उवाच

शृणु पार्वति! वक्ष्यामि पद्धतिं गद्यरूपिणीम्।
यस्याः श्रवणमात्रेण कोटियज्ञफलं लभेत्।।४२५।।

ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय बद्धपद्मासनः स्वशिरःस्थसहस्राराधोमुखकमलकर्णिकान्तर्ग निजगुरुं श्वेतवर्णं श्वेतालङ्कारा लङ्कृतं द्विभुजं स्वशक्त्या श्वेताम्बरभूषितया वामाङ्गेसहितं ध्यात्वा मानसैरुपचारैः संपूज्य दण्डवत् प्रणमेत्।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।४२६।।
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।४२७।।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुः साक्षान्महेश्वरः।
गुरुरेव जगत् सर्वं तस्मै श्रीगुरवे नमः।।४२८।।

इति नत्वा तदाज्ञां गृहीत्वा बहिरागत्य मलमूत्रादि संत्यज्य वर्णोक्तं शौचं विधाय नद्यादौ गत्वा सुकूर्चं द्वादशाङ्गुलं दन्तधावनं कुर्यात्। ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः'' इति दन्तान् विशोध्य चाक्रिकबीजेन गण्डूषषटकं विधाय, प्रणवेन मुखं त्रिः प्रोक्ष्य'' ॐ ह्मं मणिधरि वज्रिणि शिखापरिसरे रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा'' इति शिखां बद्ध्वा तत्त्वत्रयेणाचम्य मूलेन प्राणायामं विधाय, मलापकर्षण स्नानं कृत्वा मन्त्रस्नानं चरेत्। ततो मूलेन मृदमानीय जलं प्रोक्षयेत्। मन्त्रमृदा सूर्यमण्डलं विचिन्त्य,''गंगे च यमुने चेति'' तीर्थान्यावाह्य जले यन्त्रं विभाव्य सनीलकण्ठां दुर्गामावाहयेत्। तत्र षडङ्गंविधाय देवीं सशिवां ध्यात्वा मूलं यथाशक्त्या जप्त्वा त्रिर्निमज्ज्योन्मज्जेत्। तत्र कुम्भमुद्रां बद्ध्वा स्वमूर्ध्नि देवदेव्यौ जलेन स्नपयित्वा'' ॐ ह्मं ह्रीं सः मार्तण्डभैरवाय प्रकाशाशक्तिसहिताय एष तेऽर्घ्यो नमः। इति सूर्यायार्घ्यत्रयं दत्त्वा वासोऽन्यत् परिधाप्य तत्त्वत्रयेणाचम्य त्रिः प्राणायामं विधाय पूर्वसंध्यां कृत्वा षडङ्गं कृत्वा, चुलकेन जलमादाय तत्त्वमुद्रयाच्छाद्य यंरंलंवंहं इति त्रिरभिमन्त्र्य मूलमुच्चरंस्तद्गलितोदकबिन्दुभिः सप्तधा स्वशिरस्पभ्युक्ष्य सव्यहस्ते शेषमुदकं धृत्वा इडयान्तर्नीत्वा देहान्तः पापं प्रक्षल्य पिङ्गलया विरेच्य पुरः कल्पितवज्रशिलायां वामतः फडिति निक्षिपेत्। इत्यघमर्षणं विधाय पूर्ववदाचम्य जले यन्त्रे ध्यात्वा मूलं यथाशक्त्या जप्त्वा मूलविद्यान्ते साङ्गे सवाहने सायुधे सपरिच्छदे श्रीनीलकण्ठसहिते मातुर्दुर्गे तृप्यतामित्यष्टवारं संतर्प्य नीलकण्ठं त्रिः संतर्प्य एकैकाञ्जलिना परिवारदेवताः संतर्प्य, देवदेव्यौ हृदि ध्यात्वा जले चतुरस्रं विलिख्य तत्रेशानादिक्रमेण गुरुपंक्ति संतर्प्य देवीं गायत्रीं जपेत्। ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै विद्महे अष्टाक्षरायै धीमहि तन्नः चण्डी प्रचोदयात्। इति, यथाशक्त्या प्रजप्य गायत्र्यानया देवदेवयोरर्घ्यत्रयं दत्त्वा जपं समर्प्य यागमण्डपमागच्छेदिति संध्याविधिः।।

ततो गृहमागत्य पादौ प्रक्षाल्य द्वारदेवताः पूजयेत्। ॐ गां गूं गणेशाय नमः पूर्वे। ॐ क्षां ह्रीं बटुकाय नमो दक्षिणे। ॐ क्षां क्षें क्षेत्रपालाय नमः पश्चिमे। ॐ यां यूं योगिनीभ्यो नमः उत्तरे। गं गङ्गायै नमो देहल्यां। यां यमुनायै नमः अधः। सौः सरस्वत्यै नमो मध्ये। इति संपूज्य, गृहान्तः प्रविश्य यथार्हमासनं शोधयेत्। आं आसनशोधन मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलंछन्दः कूर्मो देवता, आसनमन्त्रेण विनियोगः। ॐ प्रीं पृथिव्यै नमः।

''महि त्वया धृता लोका देवि! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्।।
(ॐ ध्रुवा द्यौर्भुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे।
ध्रुवं विश्वमिदं जगत् ध्रुवो राजा विश्वामसि।।)

ॐ आँ आधारशक्तये नमः। मं मूलप्रकृत्यै नमः। अं अनन्ताय नमः। पं पद्माय नमः। प्रीं पद्मानालाय नमः। तत्रोपविश्य तालत्रयं कुर्यात्।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

इति तालत्रयं दत्त्वा वामपार्ष्णिघातत्रयेण विघ्नानुत्सार्य नाराचमुद्रां प्रदर्श्य गुरुं प्रणमेत्। गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुरिति, अज्ञानतिभिरान्धस्येति, अखण्डमण्डलाकारमिति च पठित्वा श्री गुरवे नमः स्ववामे। गुं गुरुभ्यो नमः। परमगुरुभ्यो नमः। परापर गुरुभ्यो नमः। परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः। इति गन्धाक्षतैरभ्यर्च्य न्यासपूर्वं संकल्पं कुर्यात्।

अस्य श्री दुर्गादेवी (योगपीठपूजा) मन्त्रस्य महेश्वर ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीदुर्गा देवता, दुं बीजं, ह्रीं शक्तिः ओं कीलकं, नमः इति दिग्बन्धः धर्मार्थकाममोक्षार्थे दुर्गापूजायां विनियोगः।

अथ न्यासः। महेश्वरऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे। श्री दुर्गा देवतायै नमो हृदि। दुं बीजाय नमो नाभौ। ह्रीं शक्तये नमो गुह्ये। ॐ कीलकाय नमः पादयोः। नमोः दिग्बन्धः इति सर्वाङ्गेषु। ॐ ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतलपृष्टाभ्यां नमः इति करन्यासः। एवं हृदयादि षडङ्गन्यासः।

अथमूलन्यासः। ॐ नमः शिरसि। ह्रीं मुखे। दुं वक्षसि। दुं भुजयोः। गाँ नाभौ। यैं पृष्ठे। नं जान्वोः। मः पादयोः। इति त्रिर्व्यापयेत्। ॐ आत्मतत्त्वाय नमः शिरसि। ह्रीं विद्यातत्त्वाय नमो मुखे। दुं शिवतत्त्वाय नमो हृदये। ॐ गुरुतत्त्वाय नमः नाभौ। ॐ ह्रीं शक्तितत्त्वाय नमो जङ्घयोः। ॐ दुं शिवशक्तितत्त्वाय नमः पादयोः। ॐ अं आं कंखंगंघंङं इंई हृदयाय नमः। ह्रीं उंऊंचंछंजंझंञंऋंॠ शिरसे स्वाहा। दुं लृंटंठंडंढंणंलॄं शिखायै वषट्। ॐ एंतंथंदंधंनंऐं कवचाय हुं। ह्रीं ओं पंफंबंभंमं औं नेत्रेभ्यो वौषट्। दुं अंयरंलंवंशंषंसंहंळंक्षः अः अस्त्राय फट् इति हृदयादिन्यासः। एवं करन्यासः। इति शुद्धमातृकान्यासः।।

अथ मूलमातृकान्यासः अं नमः शिरसि। आं नमो मुखवृत्ते। इं दक्षनेत्रे। ईं वामनेत्रे। उं दक्षकर्णे। ऊँ वामकर्णे। ऋं दक्षगण्डे। ॠं वामगण्डे। लृं दक्षनासापुटे। लॄं वामनासापुटे। एं ऊर्ध्वोष्ठे। ऐं अधरोष्ठे। ओं ऊर्ध्व दन्तपंक्तौ। औं अधौदन्तपंक्तौ। अं ललाटे। अः जिह्वायाम्। कं नमो दक्षबाहुमूले। खं कूर्परे। गं मणिबन्धे। घं अङ्गुलिमूले। ङं अङ्गुल्यग्रे। चं वामबाहुमूले। छं कूर्पर। जं मणिबन्धे। झं अङ्गुलिमूले । ञं अङ्गुल्यग्रे। टं नमो दक्षापादमूले। ठं जानुनि। डं गुल्फे। ढं अङ्गुलिमूले। णं अङ्गुल्यग्रे।

तं वामपादमूले। थं जानुनि। दं गुल्फे। धं अङ्गुलिमूले। नं अङ्गुल्यग्रे।

पं दक्षपार्श्वे। फं वामपार्श्वे। बं पृष्ठे। भं नाभौ। मं जठरे। यं हृदि। रं दक्षांसे। लं ककुदि। वं वामांसे। शं हृदादिदक्षहस्ताग्रान्तं। षं हृदादिवामहस्ताग्रान्तं। सं हृदादिदक्षपादाग्रान्तं। हं हृदादिवामपादाग्रान्तं। ळं पादादिशिरः पर्यन्तम्। क्षः नमः शिरसः पादपर्यन्तमिति त्रिर्व्यापयेत्। एवं न्यासं विधाय पूर्ववत् षडङ्ग कृत्वा प्रणवेन प्राणायामत्रयं विधाय, (पूरकं १२ कुम्भकं १६ रेचकं ३२) ॐ ह्रीं आत्मतत्त्वं शोध यामि स्वाहा। ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा, ॐ ह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, इति त्रिराचम्य, प्राणायामयोगेन भूतशुद्धिं कुर्यात्।

ॐ हूं आकुञ्चेन सुषुम्नावर्त्मना प्रदीपकलिकाकारं तेजो ब्रह्मपथान्तर्नीत्वा परमशिवे समानीय तत्र सुधावृष्ट्र्यां कुलगुरुन् ध्यात्वा तयैव संतर्प्य पुनस्तेनैव मार्गेण षट्चक्रकुलं भित्त्वा तत्तेजः स्वस्थानमानीय यमिति वायुबीजेन षोडशधा जप्तेन वामकुक्षिगतं पापपुरुषं कृष्णवर्णं रक्तश्मश्रुलमङ्गुष्ठमात्राकारं ध्यात्वा शोषयेत्। रमिति वह्निबीजेन षोडशधा जप्तेन तं दाहयेत्। वमित्यमृतबीजेन षोडशध्धा जप्तेन गलच्चन्द्रामृतवृष्ट्यालावयेत लमितीन्द्रबीजेन षोडशवारजप्तेन (पिण्डीभूतं स्वात्मकं ध्यात्वा हमित्याकाशबीजेन सकृज्जप्तेन) स्वात्मानं दिव्यदेहं विभावयेदिति भूतशुद्धिं कृत्वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्। ॐ ह्रीं दुं आं क्रों सोहं हंसः मम प्राणा इह प्राणाः एवं ॐ ह्रीं दुं आं क्रो सोहं हंसः मम जीव इह स्थितः ॐ ह्रीं दुं आं क्रों सोहं हंसः मम सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि, ॐ ह्रीं दुं आं क्रों सोहं हंसः मम वाङ्मन-श्चक्षुस्त्वक्श्रोत्रजिह्वघ्राणप्राणा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा इति प्राणप्रतिष्ठाक्रमः। एवं प्राणान् संस्थाप्य पूर्ववत् षडङ्गं विधायाचम्य मूलदेवीं ध्यायेत्।

भूगेहनागदलवृत्तरसाररारबिन्दुस्थसन्महिषपीठगतां भवानीम्। दूर्वादला-ग्रसदृशच्छविमष्टबाहुं दुर्गां भजे त्रिनयनां विलसत्त्रिबीजाम्।।

इति ध्यात्वा मूलाङ्गन्यासौ विधाय, श्रीचक्रं चतुर्द्वारं त्रिवृत्तं साष्टदलं वृत्तं षडस्त्रं त्रिकोणबिन्दुं विचिन्त्य वा अष्टगन्धेन विलिख्य वा विभाव्य पीठपूजां कुर्यात्। ॐ ह्रीं मण्डूकाय नमः। ॐ ह्रीं कालाग्निरुद्राय नमः। ॐ ह्रीं मूलप्रकृत्यै नमः। ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं कूर्माय नमः। ॐ ह्रीं अनन्ताय नम। ॐ ह्रीं वराहाय नमः। ॐ ह्रीं पृथिव्यै नमः। इत्युपर्युपरि संपूज्य ॐ ह्रीं सुधार्णवाय नमः मध्ये। ॐ ह्रीं नवरत्नविराजितनवखण्डमयद्वीपाय नमः। ॐ ह्रीं पद्मरागखण्डाय नमः। ॐ ह्रीं स्वर्णगिरये नमः। ॐ ह्रीं नन्दनोद्यानाय नमः। ॐ ह्रीं कल्पवनाय नमः। ॐ ह्रीं पद्मवनाय नमः। ॐ ह्रीं विचित्ररत्नखचितभूमिकायै नमः। ॐ ह्रीं चिन्तामणिमण्डपाय

नमः। ॐ ह्रीं नवरत्नखचितरत्नमयवेदिकायै नमः। ॐ ह्रीं रत्नसिंहासनाय नमः।

तन्मध्ये ॐ ह्रीं सहस्रारपद्माय नमः। ॐ ह्रीं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं विकृतिमयकेसरेभ्यो नमः। तन्मध्ये ॐ ह्रीं अष्टबीजविभूषितकर्णिकायै नमः। तत्पार्श्वे ॐ ह्रीं धर्माय नमः। ॐ ह्रीं ज्ञानाय नमः। ॐ ह्रीं वैराग्याय नमः। ॐ ह्रीं ऐश्वर्याय नमः। वामतः ॐ ह्रीं अधर्माय नमः। ॐ ह्रीं अज्ञानाय नमः। ॐ ह्रीं अवैराग्याय नमः। ॐ ह्रीं अनैश्वर्याय नमः। मध्ये ॐ ह्रीं सं सत्त्वाय नमः। ॐ ह्रीं रं रजसे नमः। ॐ ह्रीं तं तमसे नमः। मूलविद्यामुच्चार्य महिषासनाय नमः। मूलमुच्चार्य मातृकाः प्रोच्चार्य श्रीयोगपीठाय नमः इत्यभ्यर्च्य पात्रार्चनं कुर्यात्।

ततः स्वदेह गन्धादिना संपूज्य तत्र स्ववामे वृत्तत्रिकोणचतुरस्रमण्डलं विधाय मूलेनाभ्यर्च्य मूलं दुर्गासामान्यार्घ्याय नमः। रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः इत्याधारे, तन्मण्डलं षडङ्गेनाभ्यर्च्य, तत्रास्त्रक्षालितं शङ्खं संस्थाप्य, शङ्खे अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः इत्यभ्यर्च्य मूलाष्टाभिमन्त्रितं कृत्वा "गङ्गे च यमुने चैव" इत्यादिना तीर्थमावाह्य, शुद्धं भावयेदिति सामान्यार्घ्यविधिः।।

सामान्यार्घ्यस्य वामे त्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुरस्रं मण्डलं विधाय तन्मण्डलं षडङ्गेनाभ्यर्च्य मूलमुच्चार्य श्रीदुर्गाकलशमण्डलाय नमः। ततः पूर्ववत् मूलेनाभ्यर्च्य तत्रास्त्रक्षालितां त्रिपादिकां संस्थाप्य, रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः इत्यभ्यर्च्य तत्रास्त्रक्षालितं कलशं संस्थाप्य अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः इत्यक्षतपुष्पैरभ्यर्च्य तत्रानामिकाङ्गुष्ठाभ्याममृतधारापातेन कलशमापूर्य, सौः सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः इत्यर्भ्यर्च्य ॐ ह्रीं दां दीं दूं दैं दौं दः दुं अं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय शुक्रशापं मोचय मोचय ॐ ह्रीं दुं सुरादेव्यै वौषट् इति सप्तधाभिमन्त्रय दुं ह्रीं ॐ हसक्षमलवरय ॐ आनन्द भैरवाय वौषट् इति सप्तधाभिमन्त्रय ॐ ह्रीं दुं आनन्दभैरव- सुरादेवीपादुकाभ्यो नमः इति संपूज्य धेनुयोनिमुद्रे प्रदर्श्य ॐ सूर्यमण्डलसंभूते वरुणालयसंभवे। अमाबीजमये. देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम्। एकमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम्। कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम्।। पवमानः परानन्दः पवमानः परो रसः। पवमानं परं ज्ञानं तेन त्वां पावयाम्यहम्।। वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि। तेन सत्येन ते देवि ब्रह्महत्या व्यपोहतु।। कृष्णशापविनिर्मुक्ता त्वं मुक्तां ब्रह्मशापतः। विमुक्ता मुनिशापेन पवित्रा भव सर्वदा।। इति कलशं संपूज्य धेनुयोनिमत्स्यमुद्राः प्रदर्श्य गरुडमुद्रायाच्छादयेदिति द्रव्यशुद्धिः।। ॐ ह्रीं दुं कृतावतारो हरिणा कलिना पीडितं जगत्। बलिना निगृहीतं तु कौलिकानां हिताय च।।

श्री दुर्गापरितोषार्थ स्वयं मीनोऽभवत् प्रभुः इति मुद्रात्रयं प्रदर्श्य शुद्धिं शोधयेत्।

ॐ ह्रीं दुं छागलादिगवान्तादिकृतरूपाय वै नमः। बल्यर्थे देवदेव्योश्च पवित्रीभव साम्प्रतम्।। मूलं त्रिधा जप्त्वा मुद्रात्रयं दर्शयेदिति। ॐ ह्रीं दुं श्रीदुर्गार्चनकाले तु यानि यानीह साम्प्रतम्। वस्तूनि सौरभेयानि पवित्राणीह सिद्धये।। इति मूलं त्रिधा जपन् मुद्रात्रयं सर्वस्योपरि दर्शयेदिति कलशादिविधिः।।

ततो मूलेनानन्दभैरवाङ्कोपविष्टां नीलकण्ठेशीं श्रीदेवीं ध्यात्वा मूलेनावाह्य श्रीचक्रमर्चयेत्। तत्र मूलेन पाद्यार्घ्याचमनीयादि परिकल्पयेत्।

मूलेन देवदेव्योर्मधुपर्काचमनीयादि निवेदयेत्। मूलेन नैवेद्यं निवेद्य आचमनीयं नमः इति निवेद्य, गण्डूषत्रयं निवेद्य, मूलेन ताम्बूलादि समर्पयेत्। ततो मूलषडङ्गं विधाय चतुरस्रं पूजयेत्। ॐ ह्रीं दुं सर्वसिद्धिप्रदाय चक्राय नमः।

इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा ॐ ह्रीं दुं गं गणेशाय नमः पूर्वे। ॐ ह्रीं दुं हौं कुमाराय नमः दक्षिणे। ॐ ह्रीं दुं प्रीं पुष्पदन्ताय नमः पश्चिमे। ॐ ह्रीं दुं वैं विकर्तनाय नमः उत्तरे। इति गन्धाक्षतपुष्पैरभ्यर्च्य प्रथमावरणम्। ॐ ह्रीं दुं असिताङ्ग भैरवयुतब्राह्मीश्रीपादुकापूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं रुरुभैरवयुत-नारायणीश्रीपादुकापूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं चण्डभैरवयुतचामुण्डा- श्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं क्रोधेशभैरवयुतापराजिताश्रीपादुका- पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ह्रीं दुं उन्मत्तभैरवयुतमाहेश्वरी श्रीपादुकापूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं कपालिभैरवयुत कौमारी श्रीपादुकापूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं भी-षणभैरवयुतवाराहीश्रीपादुकापूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं संहारभैरवयुत-नारसिंहीश्रीपादुकापूजयामि तर्पयामि नमः। इति वामा वर्तेन गन्धाक्षतपुष्पैरभ्यर्च्ययेत्। इति द्वितीयावरणम्। ॐ ह्रीं दुं सर्वाशापूरक चक्रायनमः इति पुष्पाञ्जलि दत्त्वा षट्कोणं पूजयेत् । ॐ ह्रीं दुं शैलपुत्रीश्रीपादुकापूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं ब्रह्मचारिणीश्रीपादुकापूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं चण्डघण्टाश्रीपादुकापूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं कूष्माण्डा श्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं स्कन्दमातृश्रीपादुकापूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं कात्यायनीश्रीपादुकापूजयामि तर्पयामि नमः। इति वातावर्तेन संपूजयेत् । इति तृतीयावरणाम् । ॐ ह्रीं दुं सौभाग्यप्रदाय चक्राय नमः इति पुष्पाञ्जलि दत्वा त्रिकोणं पूजयेत् । ॐ ह्रीं दुं कालरात्री- श्रीपादुकापूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं महागौरी श्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं देवदूतीश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः। इति अग्रेशानाग्नेयतोऽभ्यर्चयेत् । इति चतुर्थावरणम् । ॐ ह्रीं दुं अष्टसिद्धिप्रदाय चक्राय नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा मूलमुच्चार्य श्रीनीलकण्ठीश्रीदुर्गाश्रीपादुकापूजयामि तर्पयामि इति। सप्तवारं बिन्दौ अभ्यर्चयेत् । इति पञ्चमावरणम्। बिन्दूपरि मूलं अम्बिका

श्रीपादुकापूजयामि तपर्यामि नमः। ॐ ह्रीं दुं अष्टाक्षराश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं अष्टभुजाश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं नीलकण्ठश्रीपादुकापूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं जगदम्बिका श्रीपादुकापूजयामि तर्पयामि नमः इत्यभ्यर्चयेत्। इति षष्ठावरणम्। बिन्दूपरि मूलेन शंखाय नमः। पद्माय नमः। खड्गाय नमः। बाणेभ्यो नमः। धनुषे नमः। खेटकाय नमः। शूलाय नमः। तर्जन्यै नमः। मूल विद्यां त्रिरुच्चार्य श्रीनीलकण्ठ श्रीदुर्गाश्रीपादुकांपूजामि तर्पयामि इति मूलेन गन्धाक्षतपुष्पधूतदीपनैनेद्याचमनीयताम्बूलच्छत्रचारमरारात्रिकादीन् समर्पयेदिति सप्तमावरणम्। तत्र मूलेन बलिं निवेद्य सौः सर्वविघ्नकृद्भ्यो भूतेभ्यो नमः स्वाहा। यां यी यूं योगिनीगणेभ्यो नमः स्वाहा। वां वीं देवीपुत्रवटुकनाथ कपिलजटाभारभास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख एह्येहि इमं बलिं यथोपचितं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। क्षा क्षीं क्षेत्रपालाय नमः। इति बलिं दत्त्वा, सङ्कल्पपूर्व न्यासादि विधाय देव्यग्रे मालामादाय यथाशक्ति मूलविद्यां जप्त्वा 'गुह्यातीति जपं समर्प्य देव्यग्रे कवचसहस्त्रनामस्तवपाठं विधाय तदपि देवदेव्योः समर्प्य, "प्रातः प्रभृति सायान्तं सायादि प्रातरन्ततः। यत्करोमि जगन्मातस्तदस्तु तव पूजनम्।" इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा योनिमुद्रया प्रणम्य संहारमुद्रया देवदैव्यै हृदि विसृज्य स्वयमपि सदाशिवो भूत्वा स्वशक्त्या सह पात्रार्पणं विधाय सुखं विहरेदिति।।

इति श्री नित्यपूजायाः पद्धतिं गुह्यगोपिताम्।
श्रीदुर्गासारसंभूतां गोपयेत् साधकेश्वरि।।४२९।।

श्री भैरव उवाच

अधुना देवि वक्ष्यामि कवचं मन्त्रगर्भकम्।
दुर्गायाः सारसर्वस्वं कवचेश्वरसंज्ञकम्।।४३०।।
परमार्थप्रदं दिव्यं महापातकनाशनम्।
योगिप्रियं योगगम्यं देवानामपि दुर्लभम्।।४३१।।
विनानेन न मन्त्रस्य सिद्धिर्देवि! कलौ भवेत्।
धारणादस्य देवेशि! शिवस्त्रैलोक्यनायकः।।४३२।।
भैरवो भैरवेशानो विष्णुर्नारायणो बली।
ब्रह्मा पार्वति लोकेशो विघ्नध्वंसी गजाननः।।४३३।।
सेनानीश्च महासेनो जिष्णुर्लोकर्षभः प्रिये!।
सूर्यस्तमोपहश्चैव चन्द्रोऽमृतनिधिस्तथा।।४३४।।
बहुनोक्तेन किं देवि दुर्गाकवचधारणात्।
मर्त्योऽप्यमरतां याति साधको मन्त्रसाधकः।।४३५।।

कवचास्यास्य देवेशि! ऋषिः प्रोक्तो महेश्वरः।
छन्दोऽनुष्टुप् प्रिये! दुर्गा देवताष्टाक्षरा स्मृता।।४३६।।
चक्रिबीजं च बीजं स्यान्माया शक्तिरितीरिता।
तारं कीलकमीशानि दिग्बन्धो वर्णितोऽश्मरी।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोग इति स्मृतः।

अस्य श्रीदुर्गाकवचस्य महेश्वर ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीदुर्गा देवता दुं बीजं ह्रीं शक्तिः ॐ कीलकं चतुर्वर्गसिद्धये पाठे विनियोगः। नम इति दिग्बन्धः।

ध्यानम्-

दूर्वानिभां त्रिनयनां विलसत्किरीटां
शङ्खाब्जखड्गशरखेटकशूलचापान् ।
संतर्जनीं च दधतीं महिषासनस्थां
दुर्गां नवारकुलपीठगतां भजेऽहम्।।४३७।।

ॐ मे पातु शिरो दुर्गा ह्रीं मे पातु ललाटकम्।
दुं नेत्रेऽष्टाक्षरा पातु चक्री पातु श्रुती मम।।४३८।।
मठं गण्डौ च मे पातु देवेशी रक्तकुण्डला।
वायुर्नासां सदा पातु रक्तबीजनिसूदिनी।।४३९।।
लवणं पातु मे चोष्ठौ चामुण्डा चण्डघातिनी।
भेकीबीजं सदा पातु दन्तान् मे रक्तदन्तिका।।४४०।।
ॐ ह्रीं श्रीं पातु मे कण्ठ नीलकण्ठाङ्कवासिनी
ॐ ऐं क्लीं पातु स्कन्धौ स्कन्धमाता महेश्वरी।।४४१।।
ॐ सौः क्लीं मे पातु बाहू देवेशी बगलामुखी।
ऐं श्रीं ह्रीं पातु में हस्तौ शिवाशतनिनादिनी।।४४२।।
सौः ऐं ह्रीं पातु मे वक्षो देवता विन्ध्यवासिनी।
ॐ ह्रीं श्री क्लीं पातु कुक्षिं मम मातङ्गिनी परा।।४४३।।
श्रीं हीं ऐं पातु में पार्श्वौ हिमाचलनिवासिनी।
ॐ स्त्रीं हूं ऐं पातु पृष्ठं मम दुर्गतिहारिणी।।४४४।।
ॐ क्रीं हूं पातु मे नाभिं देवी नारायणी सदा।
ॐ ऐं क्लीं सौः सदा पातु कटिं कात्यायनी मम।।४४५।।
ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं पातु शिश्नं देवी श्रीभगमालिनी।
ऐं सौः क्लीं सौः पातु गुह्यं गुह्यकेश्वरपूजिता।।४४६।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः पायादूरू मम मनोन्मना।
ॐ जुं सः सौः पातु जानू जगदीश्वरपूजिता।।४४७।।

ॐ ऐं क्लीं मे पातु जङ्घे मेरुपर्वतवासिनी।
ॐ ह्रीं श्रीं गीं सदा पातु गुल्फौ मम गणेश्वरी।।४४८।।
ॐ ह्रीं दुं पातु मे पादौ पार्वती षोडशाक्षरी।
पूर्वे मां पातु ब्रह्माणी वह्नौ मां वैष्णवी तथा।।४४९।।
दक्षिणे चण्डिका पातु नैर्ऋत्ये नारसिंहिका।
पश्चिमे पातु वाराही वायव्ये माऽपराजिता।।४५०।।
उत्तरे पाते कौमारी चैशान्यां शाम्भवी तथा।
ऊर्ध्वं दुर्गा सदा पातु पात्वधस्ताच्छिवा सदा।।४५१।।
प्रभाते त्रिपुरा पातु मध्याह्ने मां महेश्वरी।
सायं सरस्वती पातु निशीथे छिन्नमस्तका।।४५२।।
निशान्ते भैरवी पातु सर्वदा भद्रकालिका।
अग्नेरम्बा च मां पातु जलान्मां जगदम्बिका।।४५३।।
वायोर्मां पातु वाग्देवी वनाद् वनजलोचना।
सिंहात् सिंहासना पातु सर्पात् सर्पान्तकासना।।४५४।।
रोगान्मां राजमातङ्गी भूताद् भूतेशवल्लभा।
यक्षेभ्यो यक्षिणी पातु रक्षोभ्यो राक्षसान्तका।।४५५।।
भूतप्रेतपिशाचेभ्यः सुमुखी पातु मां सदा।
सर्वत्र सर्वदा पातु ॐ ह्रीं दुर्गा नवाक्षरा।।४५६।।
इतीदं कवचं गुह्यं दुर्गासर्वस्वमुत्तमम्।
मन्त्रगर्भं महेशानि! कवचेश्वरसंज्ञकम्।।४५७।।
वित्तदं पुण्यदं पुण्यं वर्म सिद्धिप्रदं कलौ।
अष्टसिद्धिप्रदं गोप्यं परापररहस्यकम्।।४५८।।
श्रेयस्करं मनुमयं रोगनाशकरं परम्।
महापातककोटिघ्नं मानदं च यशस्करम्।।४५९।।
अश्वमेधसहस्रस्य फलदं परमार्थदम्।
अत्यन्तगोप्यं देवेशि! कवचं मन्त्रसिद्धिदम्।।४६०।।
पठनात् सिद्धिदं लोके धारणान्मुक्तिदं शिवे!।
रवौ भूर्जे लिखेद् धीमान् कृत्वा कर्माह्निकं प्रिये!।।४६१।।
श्रीचक्राग्रेऽष्टगन्धेन साधको मन्त्रसिद्धये।
लिखित्वा धारयेद् बाहौ गुटिकां पुण्यवर्धिनीम्।।४६२।।
किं किं न साधयेल्लोके गुटिका वर्मणोऽचिरात्।
गुटिकां धारयेन्मूर्ध्नि राजानं वशमानयेत्।।४६३।।

धनार्थी धारयेत् कण्ठे पुत्रार्थी कुक्षिमण्डले।
तामेवं धारयेद् देवि लिखित्वा भूर्जपत्रके।।४६४।।
श्वेतसूत्रेण संवेष्ट्य लाक्षया परिवेष्टयेत्।
सुवर्णेनाथ संवेष्ट्य धारयेद् रक्तरज्जुना।।४६५।।
गुटिका कामदा देवि देवानामपि दुर्लभा।
कवचस्यास्य गुटिका धृता मुक्तिप्रदायिनी।।४६६।।
कवचस्यास्य देवेशि! वर्णितुं नैव शक्यते।
महिमा च महादेवि जिह्वाकोटिशतैरपि।।४६७।।
अदातव्यमिदं वर्म मन्त्रगर्भं रहस्यकम्।
अवक्तव्यं महापुण्यं सर्वसारस्वतप्रदम्।।४६८।।
अदीक्षिताय नो दद्यात् कुचैलाय दुरात्मने।
अन्यशिष्याय दुष्टाय निन्दकाय कुलार्थिनाम्।।४६९।।
दीक्षिताय कुलीनाय गुरुभक्तिरताय च।
शान्ताय कुलसक्ताय शाक्ताय कुलकामिने!।।४७०।।
इदं वर्म शिवे दत्त्वा कुलभागी भवेन्नरः।।४७१।।
इदं रहस्यं परमं दुर्गाकवचमुत्तमम्।
गुह्यं गोप्यतमं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत्।।४७२।।

श्री दुर्गामन्त्रसहस्रकं

श्रीभैरव उवाच

अधुना श्रृणु वक्ष्यामि दुर्गासर्वस्वमीश्वरि।
रहस्यं मम देवानां दुर्लभं जन्मिनामपि।।४७३।।
श्रीदुर्गातत्त्वमुद्दिष्टसारं त्रैलोक्यकारणम्।
मन्त्रनामसहस्रं च दुर्गायाः पुण्यदं परम्।।४७४।।
यं पठित्वा शिवे! धृत्वा देवीनामसहस्रकम्।
इह भोगी परत्रापि जीवन्मुक्तो भवेन्नरः।।४७५।।
इदं नामसहस्रं ते मन्त्रगर्भं रहस्यकम्।
अश्वमेधायुतात् पुण्यं लोके सौभाग्यवर्धनम्।।४७६।।
श्रेयस्करं विश्ववन्द्यं सर्वदेवनमस्कृतम्।
गुह्यं गोप्यतमं देवि पठनात् सिद्धिदायकम्।।४७७।।

अस्य श्री दुर्गानामसहस्रपाठस्य श्रीमहेश्वर ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीदुर्गा देवता, दुं बीजं ह्रीं शक्तिः ॐ कीलकं धर्मार्थकाममोक्षार्थे सहस्रनामपाठे विनियोगः।

ध्यानम्–

दूर्वानिभां त्रिनयनां विलसत्किरीटां
शङ्खाब्जखड्गशरखेटकशूलचापान् ।
संतर्जनीं च दधतीं महिषासनस्थां ।
दुर्गां नवारकुलपीठगतां भजेऽहम् ।।४७८।।

ॐ ह्रीं दुं जगदम्बा भा भद्रिका भद्रकालिका ।
प्रचण्डा चण्डिका चण्डी चण्डमुण्डनिसूदिनी ।।४७९।।
अनसूया तुटिस्तारा कृत्तिका कुब्जिका लया ।
प्रलया स्थितिः संभूतिर्विभूतिर्भयनाशिनी ।।४८०।।
महामाया महाविद्या मूलविद्या चिदीश्वरी ।
मदालसा मदोत्तुङ्गा मदिरा मदनप्रिया ।।४८१।।
आलिर्व्यालप्रसूः पुण्या पवित्रा परमेश्वरी ।
आदिदेवी कला कान्ता त्रिपुरा जगदीश्वरी ।।४८२।।
मनोन्मना महालक्ष्मीः सिद्धलक्ष्मीः सरस्वती ।
सरित्कादम्बरी गोधा गुह्यकाली गणेश्वरी ।।४८३।।
गणाम्बिका जया तापी तपना तापहारिणी ।
तपोमयी दुरालम्बा दुष्टग्रहनिवारिणी ।।४८४।।
दुःखदा सुखदा साध्वी परमामृतसूः सुरा ।
सुधा सुधांशुनिलया प्रलयानलसंनिभा ।।४८५।।
समस्ता संपदम्भोजनिलया कर्णिकालया ।
विद्येश्वरी विश्वमयी विराट् छन्दो गतिर्मतिः ।।४८६।।
धृतिदा दाम्भिका दोला लोपामुद्रा पटीयसी ।
गरिष्ठारिष्टहाऽदुष्टा कृषा काशी कुलाकुला ।।४८७।।
अकुलस्था पदन्यासा न्यासरूपा विरूपिणी ।
विरूपाक्षी कोटराक्षी कुलकान्तापराजिता ।।४८८।।
अजिता कुलिका लम्पा लम्पटा त्रिपुरेश्वरी ।
त्रितयी वेदविन्यासा संन्यासा सुमतिर्भया ।।४८९।।
अभया स्वर्मुखा देवी महौषधिरलम्बुसा ।
चपला चन्द्रिका चण्डा चण्डमुण्डनिसूदिनी ।।४९०।।
चपलाक्षी मदाविष्टा मदिरारुणलोचना ।
पुरी त्रिपुरसू रास्ना रसा रामा मनोहरा ।।४९१।।

संध्या संध्याभ्रशीला च शाला श्यामपयोधरा।
शशाङ्कमुकुटा श्यामा सुरा सुन्दरलोचना।।४९२।।
विषमाक्षी विशालाक्षी वशा वागीश्वरी शिला।
मनःशिला च माध्वी मानदा मत्तभाषिणी।।४९३।।
मृगारिवाहना माध्वी मानदा मत्तभाषिणी।
नारसिंही वामदेवी वामा वामश्रुतिप्रिया।।४९४।।
पुण्या पुण्यगतिः पुण्या पुत्री पुण्यजनप्रिया।
चामुण्डा चोग्रचण्डा च महाचण्डाऽतमाऽतमाः।।४९५।।
तमस्विनी प्रभा ज्योत्स्ना महज्ज्योतिः स्वरूपिणी।
सुरूपा सद्गतिः साध्वी सदसद्रूपराजिता।।४९६।।
सृष्टिः स्थितिः क्षेमकरी क्षमा क्षामोन्नतस्तनी।
क्षोणी क्षयकरी क्षीणा सर्वस्था शिववल्लभा।।४९७।।
दन्तुरा दाड़िमप्रीतिर्दया दाम्भिकसूदिनी।
राक्षसी डाकिनी योग्या योगिनी योगवल्लभा।।४९८।।
कबन्धा कन्धरा कृष्णा कृत्तिका कण्ठकान्तका।
कलङ्करहिता काली कम्पा काश्मीरवल्लभा।।४९९।।
काशी कीर्तिप्रदा काञ्ची काश्मीरी कोकिलस्वना।
प्रभावती महारौद्री रुद्रपत्नी रुजापहा।।५००।।
रतिः स्तुतिस्तरीस्तुर्या तोतुलाऽतलवासिनी।
तपःप्रिया शरच्छ्रेष्ठा पङ्कपुत्री यमस्वसा।।५०१।।
यामी यमान्तका याम्या यमुना स्वर्नदी तडित्।
नारायणी विश्वमाता भवानी पापनाशिनी।।५०२।।
विगता विगतप्रश्ना कृष्णा कृष्टासिधारिणी।
वारी वारा वरधरा वरदा वीरसूदिनी।।५०३।।
वीरसूर्वामनाकारा दीर्घसूत्रा दयावती।
दरी धनप्रदा धात्री धात्रीवल्ली महोदरी।।५०४।।
गणेश्वरी गया काञ्ची काञ्चीकिङ्किणिघण्टिका।
माया मायावती मत्ता प्रमत्ता प्रवरेश्वरी।।५०५।।
पौरन्दरी शची शीता शीतातपस्वभावजा।
स्वाभाविकगुणा गण्या गाम्भीर्यगुणभूषणा।।५०६।।
सूतिः सूर्यकला सुप्ता सप्तसप्तिस्वरूपिणी।
तेजस्विनी सदानन्दा सभासन्तोषवर्धिनी।।५०७।।

तर्पणा कर्षणा होता सङ्कल्पा शुभमन्त्रिका।
दर्भा द्रोणिकला श्रान्ता समिद्धा सुरवेदिका।।५०८।।
धूम्राहुतिश्चरमतिश्चामीकररुचिश्चिता।
चिन्तानलेश्वरी नेलाकरा नीलसरस्वती।।५०९।।
अपर्णा सुफला यज्ञा सभया निर्भयाभया।
भीमस्वना भर्गशिखा भास्वती भास्करा विभा।।५१०।।
विभावरी नदी नन्द्या नन्द्यावर्तप्रवर्तिनी।
पृथ्वीधरा विश्वधरा विश्वगर्भा प्रवर्तिका।।५११।।
विश्वमाया विश्वभाला विश्वम्भरविलासिनी।
उरगेशा पद्मनागा पद्मनाभप्रसूःप्रजा।।५१२।।
तोरणा तुलसी दीक्षा दक्षा दाक्षायणी द्युतिः।
संपुटा शयना शय्या शासना शमनान्तका।।५१३।।
श्यामाकवर्णा शार्दूली शम्पा शीलांशुवल्लभा।
स्तुत्या प्रणीता नियतिः कम्पना कम्पहारिणी।।५१४।।
चम्पकाभा चरा चीनादीना दीनजनप्रिया।
वसुन्धरा वासवेशी वसुनाथा वटेश्वरी।।५१५।।
समुद्रा सङ्गमा पूर्णाऽन्तराला तरुवासिनी।
पार्वती पामरी मान्या माननीया मधुप्रिया।।५१६।।
माधवी मधुपानस्था मन्दिरा मन्दुरा मृगी।
मोमुषा रूरुषा रेवा रेवती रमणी रमा।।५१७।।
ऋद्धिहस्ता सिद्धिहस्ता अन्नपूर्णा महेश्वरी।
अन्नरूपा जगज्ज्योतिः समस्तासुरघातिनी।।५१८।।
गारुडी गगनालम्बा लम्बामानकचप्रिया।
पीताम्बरा पीतपुष्पा पूतना गीतवल्लभा।।५१९।।
बलाका जगदन्ता च जरा जयवरप्रदा।
प्रीतिः कठोरवदना करालरदना रसा।।५२०।।
जिह्वाहस्ता च बगला प्रणया विनयप्रदा।
किरी करालवपुषी शेमुषी मक्षिका मषी।।५२१।।
उत्तीर्णा तर्णिका तीक्ष्णा श्लक्ष्णा कामेश्वरी शिवा।
शिवपत्नी सरोजाक्षी पद्महस्ता सरस्वती।।५२२।।
कमलाक्षी कमलजा करवालविहारिणी।
कविपूज्या कविगतिः कविरूपा कविप्रिया।।५२३।।

कदली कदलीरूपा कदलीवनवासिनी।
कलप्रीता कलहदा कलहा कलहातुरा।।५२४।।
कस्तूरीमृगसंस्था च कस्तूरीमृगरूपिणी।
कठोरा करमाला च कठोरकुचधारिणी।।५२५।।
यज्ञमाता यज्ञभोक्ती यज्ञेशी यज्ञसंभवा।
यज्ञसिद्धि क्रियासिद्धिर्यज्ञाङ्गी यज्ञरक्षिका।।५२६।।
वैष्णवी विष्णुरूपा च विष्णुमातृस्वरूपिणी।
विष्णुमाया विशालाक्षी विशालनयनोज्ज्वला।।५२७।।
शिवमाता शिवाख्या च शिवदा शिवरूपिणी।
गायत्री चैव सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मरूपिणी।।५२८।।
दुर्गस्था दुर्गरूपा च दुर्गा दुर्गतिनाशिनी।
माहेश्वरी च सर्वाद्या शर्वाणी सर्वमङ्गला।।५२९।।
सूर्यकोटिसहस्राभा चन्द्रकोटिनिभानना।
समुद्रकोटिगम्भीरा वायुकोटिमहाबला।।५३०।।
सोमसूर्याग्निमध्यस्था मणिमण्डलवासिनी।
द्वादशारसरोजस्था सूर्यमण्डलवासिनी।।५३१।।
अकलङ्कशशाङ्काभा षोडशारनिवासिनी।
हृत्पद्मनिलयाऽभीमा महाभैरवनादिनी।।५३२।।
वर्णाढ्या वर्णरहिता पञ्चाशद्वर्णभेदिनी।
भवानी भूतिदा भूतिर्भूतिदात्री च भैरवी।।५३३।।
भैरवाचारनिरता भूतभैरवसेविता।
कामेश्वरी कामरूपा कामतापविमोचिनी।।५३४।।
गणेशजननी देवी गणेश्वरदायिनी।
गतिदा गतिहा गीता गौतमी गुरुसेविता।।५३५।।
दीनदुःखहरा दीनतापनिर्मूलकारिणी।
दयाशीला दयासारा दयासागरसंस्थिता।।५३६।।
नृत्यप्रिया नृत्यरता नर्तकी नर्तकप्रिया।
नारायणी नरेन्द्रस्था नरमुण्डास्थिमालिनी।।५३७।।
भैरवी भैरवाराध्या भीमा भीमवरप्रदा।
भुवना भुवनाराध्या भवानी भूतिवर्धिनी।।५३८।।
महिषासुरहन्त्री च रक्तबीजविनाशिनी।
धनुर्बाणधरा नित्या धूम्रलोचननाशिनी।।५३९।।

कुलीना कुलमार्गस्था कुलमार्गप्रकाशिनी।
पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्या पञ्चाशन्मुण्डमालिका।।५४०।।
षडङ्गयुवतीपूज्या षडङ्गरूपवर्जिता।
कालमाता कालरात्रिः काली कमलवासिनी।।५४१।।
कमला कान्तिरूपा च कामराजेश्वरी क्रिया।
माया मतिर्महामाया भयदा भयहारिका।।५४२।।
नारी नारायणी गण्या नारायणगृहप्रिया।
मदिरापानसन्तुष्टा मदिरामोदधारिणी।।५४३।।
तथ्या पथ्या कृती रथ्या रथस्था विततस्वरा।
महती रागिणी भार्गी शुचिहासा हरीश्वरी।।५४४।।
हरिद्रत्नांशुलसिता लक्ष्मीनायकसुन्दरी।
अम्बालिकाम्बा देवेशी अनघाग्निशिखा श्रुतिः।।५४५।।
अलसाल्पगतिश्चान्त्यानन्तानन्तगुणाश्रया।
आद्या चादित्यसङ्काशा आदित्यकुलसुन्दरी।।५४६।।
आत्मरूपाधिशमनी आदिमायादिदेवता।
इन्द्रप्रसूरिनद्योतिरिनाग्निशशिलोचना।।५४७।।
इन्द्रावरजसंस्तुत्या इला चेक्षुरसप्रिया।
ईश्वरी ईशवनिता ईशा केशववल्लभा।।५४८।।
उमा उर्वी उरुभुजा उत्तुङ्गा चोक्षवाहना।
उत्तङ्का चोत्तमा ध्येया उल्लासा चोरुगर्विणी।।५४९।।
ऊष्मा ऊणा व गुर्वङ्गी ऊर्ध्वाक्षी ऊर्ध्वमस्तका।
ऋद्धिर्ऋचा ऋवर्णेशी ऋणहर्त्री ऋवान्तकी।।५५०।।
ऋढिजां चारुवस्त्रा च ऋणिवासा महालया।
लृकारा लृक्कुरा लीना लृकारा वरधारिणी।।५५१।।
एणाङ्कमुकुटा चेहा चारुचन्द्रकला कला।
ऐकारगतिरैश्वर्यदायिनी चैश्वरी गतिः।।५५२।।
ओंकारा बीजरूपा च औत्रिकी वेत्रधारिणी।
अम्बिका लम्पिका पम्पा अःस्वरोद्गाररूपिणी।।५५३।।
काली च भद्रकाली च कालिका कालवल्लभा।
कदम्बनिलया कन्था काञ्चीमण्डनमण्डिता।।५५४।।
कलङ्करहिता कूर्मा काञ्चनाभा करीरगा।
कनकाचलवासा च कारुण्याकुलमानसा।।५५५।।

कुलस्था कौलिनी कुल्या कुरुकुल्ला कपालिनी।
कपालकुलनिर्विणा क्लींकारा कञ्जलोचना।।५५६।।
खञ्जनाक्षी खड्गधरा खेटकायुधभूषणा।
खर्पराढ्या च खलहा खेटिनी खेचरी खगा।।५५७।।
खगायुधा खगगतिः खकाराक्षरभूषणा।
गणाध्यक्षा गजगतिर्गणेशजननी गदा।।५५८।।
गोधा गदाधरा प्राज्या गगनेशी मही मला।
घुर्घुरा घटभूर्घूका घुसृणाभा गणेश्वरी।।५५९।।
घनसारप्रिया साम्या घवर्णकृतभूषणा।
ङान्ता ङवर्णमुकुटा कवर्गकृतभूषणा।।५६०।।
चान्द्री चान्द्रिस्तुता चार्वी चन्द्रिका चण्डनिःस्वना।
चञ्चरीकस्वना देवी चञ्चच्चामीकराङ्गदा।।५६१।।
छत्रिका छुरिका छञ्छा छत्रचामरभूषणा।
ज्रंकारी जलजिह्वा च जृम्भिका जलयोगिनी।।५६२।।
जटाजूटधरा जातिर्जातीपुष्पसमानना।
जलेश्वरी जगद्ध्येया जानकी जननी जटा।।५६३।।
झञ्झा झरी झरत्कारी झरत्काञ्चीरकिङ्किणी।
झिण्ठिका झम्पकृद् झम्पा झम्पत्रासनिवारिणी।।५६४।।
ञाणुरूपा ञङ्कहस्ता ञवर्णाक्षरसंमता।
टङ्कायुधा महातथ्या टङ्कारकरुणा टसी।।५६५।।
ठकुरा ठत्करा ठानी डिण्डीरवसना ढला।
ढण्ढानिलमयी ढण्डा ढणत्कारका ढसा।।५६६।।
णान्ता णीलायुधा नम्रा णवर्णाक्षरभूषणा।
तरुणी तुन्दिला तोन्दा तामसी तामसप्रिया।।५६७।।
ताम्रानना ताम्रकरा ताम्राम्बरधरा तुला।
तापत्रयहरा तापी तैलासक्ता तिलोत्तमा।।५६८।।
स्थाणुपत्नी स्थली स्थूला स्थितिः स्थैर्यधरा स्थुला
दन्तिनी दन्तुरा दार्वी देवकी देवनायिका।।५६९।।
दमिनी शमिनी दण्ड्या दण्डहस्ता दुरानतिः।
दुर्वारा दुर्गातिर्द्राक्षी द्राक्षा द्राविडवासिनी।।५७०।।
दूरस्था दुन्दुभिध्वना दरदा दरनाशिनी।
दुःखघ्नी द्रुतगाऽदुष्टा दया दाम्भिक्यनाशिनी।।५७१।।

धर्म्या धर्मप्रसूर्धन्या धनदा धातृवल्लभा।
धनुर्धरा धनुर्वल्ली धानुष्कवरदायिनी।।५७२।।
धूमाली धूम्रवदना धूमश्रीर्धूम्रलोचना।
नलिनी नर्तकी नान्ता नङ्गा नलिनलोचना।।५७३।।
निर्मला निगमाचारा निम्नगा नगजा निमिः।
नीलग्रीवा निरीहा च नीपोपवनवासिनी।।५७४।।
निरञ्जना जनी जन्या निद्रालुर्नीरवासिनी।
नटिनी नाटयनिरता नवनीतप्रियाऽनिला।।५७५।।
नारायणी निराकारा निर्लेपा नित्यवल्लभा।
पद्मावती पद्मकरा पुत्रदा पुत्रवत्सला।।५७६।।
परोत्तरा पुरी पाठा पीनश्रोत्रा पुलोमजा।
पुष्पिणी पुस्तककरा पटुः पाठीनवाहना।।५७७।।
पापघ्नी शंपिनी पाली पल्ली परमसुन्दरी।
पिशाची च पिशाचघ्नी पानपात्रधरा पुटा।।५७८।।
पूर्णिमा पञ्चमी पौत्री पुरुरववरप्रदा।
पञ्चयज्ञा पञ्चशरी पञ्चाशतिमनुप्रिया।।५७९।।
पाञ्चाली पञ्चमुद्रा च पूजा पूर्णमनोरथा।
फलिनी फलदात्री च फल्गुहस्ता फणिप्रिया।।५८०।।
फिरङ्गहा स्फीतमतिः स्फीतिः स्फीतिमती स्फुरा।
बलमाया बलस्तुल्या बिल्वसेना बलाबला।।५८१।।
बगलेश्वरपूज्या च बलिनी बलवर्धिनी।
बुद्धमाता बौद्धमतिर्बद्धा बन्धनमोचिनी।।५८२।।
भगिनी भगमाला च भगलिङ्गामृतद्रवा।
भीमेश्वरी च भेरुण्डा भगेशी भगसर्पिणी।।५८३।।
भगलिङ्गस्थिता भग्या भाग्यदा भगमालिनी।
मत्ता मनोहरा मीना मैनाकजननी मुरी।।५८४।।
मुरली मानवी होत्री महस्विजनमोदिता।
मत्तमातङ्गगा माद्री मरालगतिरञ्चला।।५८५।।
यक्षेश्वरेश्वरी यज्ञा यजुर्वेदप्रियाश्रिता।
यशोवती यतिस्था च यतात्मा यतिवल्लभा।।५८६।।
यवनी यौवनस्था च यवा यक्षजनाश्रया।
यज्ञसूत्रप्रदा ज्येष्ठा यज्ञभूर्यूपमूलिनी।।५८७।।

रञ्जिता राजपत्नी च राजसूयफलप्रदा।
रजोवती रजश्चित्रा राज्यदा राज्यवर्धिनी।।५८८।।
राज्ञी रात्रिञ्चरेशानी रोगघ्नी त्रिपुरेश्वरी।
लुलिता लतिका लाप्या लोपा ललनलालसा।।५८९।।
लाटीरद्रुमवासा च पाटीरद्रुमवर्तिनी।
लङ्का ललञ्जटाजूटा लङ्घिता लोकसुन्दरी।।५९०।।
लोकेशवरदा लेया लयकर्त्री महालया।
वेदिर्विलग्ना वाणी च वीणा वेणुर्वनेश्वरी।।५९१।।
वन्दमाना ववर्णाढ्या वाराही वीरमातृका।
शङ्खिनी शङ्खवलया शङ्खायुधधरा शमा।।५९२।।
शशिमण्डलमध्यस्था शीतलाम्बुनिवासिनी।
श्मशानस्था महाघोरा श्मशाननिलनेश्वरी।।५९३।।
सिन्धुः सूत्रधरा सत्रा समस्तकुलचारिणी।
सप्तमी सात्त्विकी सत्त्वा सत्रस्थाऽसुरसूदिनी।।५९४।।
सुरेश्वरी सम्पदाद्या समस्ताचलचारिणी।
समदा संमितिः संमा सवना सवनेश्वरी।।५९५।।
हंसी हरप्रिया हास्या हरिनेत्रा हराम्बिका।
हेषा हटेश्वरी हेरा हलिनी हलदायिनी।।५९६।।
हेहा हाहारवा हाला हालाहलहताशया।
क्षमा क्षेमप्रदा क्षामा क्षौमाम्बरधरा क्षया।।५९७।।
क्षितिः क्षीरप्रिया लक्ष्मीः क्षितिभृत्तनया क्षुधा।
क्षत्रियी ब्राह्मणी क्षेत्रा क्षपा क्षःबीजमण्डिता।।५९८।।
ळंक्षःबीजस्वरूपा च क्षकाराक्षरमातृका।
दुर्गन्धनाशिनी दूर्वा दुर्गमा दुर्गवासिनी।।५९९।।
दुर्गा दुर्गार्तिशमनी ॐह्रींदुंबीजमण्डिता।
इति नामसहस्रं तु मन्त्रगर्भं महाफलम्।।६००।।
दुर्गाया दुर्गतिहरं सर्वदेवनमस्कृतम्।
सर्वमन्त्रमयं दिव्यं देवदानवपूजितम्।।६०१।।
श्रेयस्करं महापुण्यं महापातकनाशनम्।
यः पठेत् पाठयेद्वापि शृणोति श्रावयेदपि।।६०२।।
स महापातकैर्मुक्तो देवदानवसेवितः।
इह लोके श्रियं भुक्त्वा परत्र त्रिदिवं व्रजेत्।।६०३।।

दुर्गानामसहस्त्रं तु मूलमन्त्रैकसाधनम्।
अर्धरात्रे पठद्वीरो मधुरस्मयसेवितः।।६०४।।
त्रिवारं वर्मपूर्वं तु भवेद्वागीशसंनिभः।
यः पठेद् देवि मध्याह्ने स्त्रीयुतो मुक्तकुन्तलः।।६०५।।
तस्य वैरिकुलं त्रस्येद् दर्शनाद् दैत्यसूदिनि।
दहनादिव देवेशि! पतङ्गकुलमद्रिजे।।६०६।।
यः पठेद्वेतसीमूले सायं पूजितभैरवः।
तस्यास्यकुहराद् वाणी निःसरेद्गद्यपद्यभाक्।।६०७।।
यः पठेत् सततं देवि शयने स्त्रीरताकुलः।
स भवेद्वैरिविद्वंसी धनेन धनदोपमः।।६०८।।
वाग्भिर्वागीशसदृशः कवित्वेन सितोपमः।
तेजसा सूर्यसङ्काशो यशसा शशिसन्निभः।।६०९।।
बलेन वायुतुल्योऽपि लक्ष्म्या गीर्वाणनायकः।
देवि! किं बहुनोक्तेन स भवेद्भैरवोपमः।।६१०।।
स्तम्भनाकर्षणोच्चाटवशीकरणकक्षमः।
रवौ भूर्जे लिखेद् देवि! निशीथे वाष्टगन्धकैः।।६११।।
सस्तन्यरेतोराजस्कैः साधको मन्त्रसाधकः।
लिखित्वा वेष्टयेन्नामसहस्रमणिमीश्वरि।।६१२।।
श्वेतसूत्रेण संवेष्ट्य लाक्षया परिवेष्टयेत्।
सुवर्णरजताद्यैश्च वेष्टयेत् पीतसूत्रकैः।।६१३।।
संपूज्य गुटिकां देवि! शुभेऽह्नि साधकोत्तमः।
धारयेन्मूर्ध्नि वा बाहौ गुटिकां कामदायिनीम्।।६१४।।
रणे रिपून विजित्याशु कल्याणी गृहमाविशेत्।
वन्ध्या वामभुजे धृत्वा कृत्वा साधकपूजनम्।।६१५।।
पुत्रान् लभेन्महादेवि साक्षाद्वैश्रवणोपमान्।
गुटिकैषा महादिव्या गोप्या कामफलप्रदा।।६१६।।
साधकैः सततं पूज्या साक्षाद् दुर्गास्वरूपिणी।
योऽर्चयेत् साधको दुर्गां गुटिकां धारयेत् प्रिये!।।६१७।।
पठेद्वर्म शिवे! मन्त्रनामसाहस्रिकीं पराम्।
अङ्गस्तोत्रं फलं तस्य देवि! वक्ष्येऽधुना शृणु।।६१८।।
वने राजकुले वापि दुर्भिक्षे शत्रुसङ्कटे।
अरण्ये प्रान्तरे दुर्गे श्मशाने सिन्धुसङ्कटे।।६१९।।

वात्ये यक्षपिशाचादिभूतप्रेतभये तथा।
वीरो विगतभीर्देवि! सर्वत्र विजयी भवेत्।।६२०।।
स्तम्भयेद्वातसूर्याम्बुचन्द्रादीन् साधकोत्तमः।
मोहयेत् त्रिजगत् सद्यः कान्तांश्चाकर्षयेद् ध्रुवम्।।६२१।।
मारयेदखिलाञ्छत्रूनुच्चाटयति वैरिणः।
वशयेद् देवताः सद्यः किं पुनमर्नार्वांश्छिवे।।६२२।।
शमयेद्खिलान् रोगान् महोत्पातानुपद्रवान्।
किं किं न लभते वीरो दुर्गापञ्चाङ्गपूजनात्।।६२३।।
इदं रहस्यं दुर्गाया अष्टाक्षर्या महेश्वरि!।
सर्वस्वं सारतत्त्वं च मूलविद्यामयं परम्।।६२४।।
महाचीनक्रमस्थानां साधकानां यशस्करम्।
पठेत् संपूजयेद् देव्या मन्त्रनामसहस्रकम्।।६२५।।
इदं सारं हि तन्त्राणां तत्त्वानां तत्त्वमुत्तमम्।
दुर्गानामसहस्रं तु तव भक्त्या प्रकाशितम्।।६२६।।
अभक्ताय न दातव्यं गोप्तव्यं पशुसङ्कटे।
अभक्तेभ्योऽपि पुत्रेभ्यो दत्त्वा नरकमाप्नुयात्।।६२७।।
दीक्षिताय कुलीनाय गुरूभक्तिरताय च।
शान्ताय भक्तियुक्ताय देयं नामसहस्रकम्।।६२८।।
विना दानं न गृह्णीयान्न दद्याद् दक्षिणां विना।
दत्त्वा गृहीत्वाप्युभयोः सिद्धिहानिर्भवेद् ध्रुवम्।।६२९।।
इदं नामसहस्रं ते गुप्तं गोप्यतमं शिवे।
तत्त्वं भक्त्या मयाख्यातं गोपनीयं स्वयोनिवत्।।६३०।।

श्रीदुर्गास्तोत्रम्

भैरव उवाच

अधुना देवि! वक्ष्यामि दुर्गास्तोत्रं मनोहरम्।
मूलमन्त्रमयं दिव्यं सर्वसारस्वतप्रदम्।।६३१।।
दुःखार्तिशमनं पुण्यं साधकानां जयप्रदम्।
दुर्गाया अङ्गभूतं तु स्तोत्रराजं परात्परम्।।६३२।।
श्रीदुर्गास्तोत्रराजस्य ऋषिर्देवो महेश्वरः।
छन्दोनुष्टुब् देवता च श्रीदुर्गाष्टाक्षरा शिवे।।६३३।।
दुं बीजं च परा शक्तिर्विश्वं कीलकमद्रिजे।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः।।६३४।।

अस्य श्रीदुर्गास्तोत्रराजस्य श्रीमहेश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीदुर्गाष्टाक्षरा देवता, दुं बीजं, ह्रीं शक्तिः, नमः कीलकम्। धर्मार्थकाममोक्षार्थे पाठे विनियोगः।

ध्यानम् -

दूर्वानिभां त्रिनयनां विलसत्किरीटां
शङ्खाब्जखड्गशरखेटकशूलचापान्।
सन्तर्जनीं च दधतीं महिषासनस्थां
दुर्गां नवारकुलपीठगतां भजेऽहम्।।६३५।।
तारं हारं मन्त्रमालासु बीजं ध्यायेदन्तर्योऽम्ब लम्बालकान्तः।
तस्य स्मारं स्मारमङ्घ्रिद्वयीं द्राग् रम्भायाति स्वर्गता कामवश्या।।३६६।।
मायां जपेद्यस्तव मन्त्रमध्ये दुर्गे सदा दुर्गतिखेदखिन्नः।
भवेत् स भूमौ नृपमौलिमालामाणिक्यनिर्घृष्टपदारविन्दः।।६३७।।
चक्रिकं यदि जपेत्तवाम्बिके चक्रमध्यगत ईश्वरेश्वरि!।
साधको भवति चक्रवर्तिनां नायको नयविलासकोविदः।।६३८।।
चक्रिबीजमपरं स्मरेच्छिवे योऽरिवर्गविहिताहितव्यथाः।
आजिमण्डलगतो जपेद्रिपून् वाजिवारणरथाश्रितो नरः।।६३९।।
दूर्वाबीजं यो जपेत् प्रेतभूमौ सायं मायाभस्मना लिप्तकायः।
गीर्वाणानां नायको देवि! मन्त्रीभूतव राज्यं प्राज्यमाढ्यं करोति।।६४०।।
वायव्यबीजं यदि साधको जपेत् प्रियाकुचद्वन्द्वविमर्दनक्षमः।।
समस्तकान्ताजननेत्रवागुराविलासहंसो भविता स पार्वति।।६४१।।
विश्वं विश्वेश्वरि यदि जपेत् कामकेलीकलान्ते
रात्रौ मात्राक्षरविलसितन्यास ईशानिवासः।
तस्य स्मेराननसरसिजा भ्राजमानाङ्गलक्ष्मी-
र्वश्यावश्यं सुरपुरवधूमौलिमालोर्वशी सा।।६४२।।
भूगेहाञ्चितवह्निवृत्तविलसन्नागारवृत्ताञ्चित-
द्व्यग्न्यारोल्लासिताग्निकोणविलसच्छ्रीबिन्दुपीठस्थिताम्।
ध्योयच्चेतसि शर्वपत्नि भवतीं माध्वीरसाघूर्णितां
यो मन्त्री स भविष्यति स्मरसमः स्त्रीणां धरण्यां दिवि।।६४३।।
दुर्गास्तवं मनुमयं मनुराजमौलि
माणिक्यमुत्तमशिवांगरहस्यभूतम्।
प्रातः पठेद्यदि जपावसरेऽर्चनायां।
भूमौ भवेत स नृपतिर्दिवि देवनाथः।।६४४।।
इति स्तोत्रं महापुण्यं पञ्चाङ्गैकशिरोमणिम्।
यः पठेदर्धरात्रे तु तस्य वश्यं जगत्त्रयम्।।६४५।।

इदं पञ्चाङ्गमखिलं श्रीदुर्गाया रहस्यकम्।
सर्वसिद्धिप्रदं गुह्यं सर्वाशापरिपूरकम्।।६४६।।
गुह्यं मन्त्ररहस्यं तु तव भक्त्या प्रकाशितम्।
अभक्तायाप्रदातव्यमित्याज्ञा पारमेश्वरि!।६४७।।

श्रीदेव्युवाच

भगवन् भवतानेन कथनेन महेश्वर।
श्रीपञ्चाङ्गस्य दुर्गाया ह्यद्य क्रीतास्म्यहं परम्।।६४८।।

श्री भैरव उवाच

इदं रहस्यं परमं दुर्गासर्वस्वमुत्तमम्।
पञ्चाङ्गं वर्णितं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत्।।६४९।।

अथ श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

श्रीविश्वसारतन्त्रे-

ईश्वर उवाच

शतनाम प्रवक्ष्यामि श्रृणुष्व कमलानने!।
यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती।।६५०।।
ॐ सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी।
आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी।।६५१।।
पिनाकधारिणी चित्रा चण्द्रघण्टा महातपाः।
मनो बुद्धिरहंकारा चित्तरूपा चिता चितिः।।६५२।।
सर्वमन्त्रमयी सत्ता सत्यानन्दस्वरूपिणी।
अनन्ता भाविनी भाव्या भवाभव्या सदागतिः।।६५३।।
शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा।
सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी।।६५४।।
अपर्णानिकवर्णा च पाटला पाटलावती।
पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीररञ्जिनी।।६५५।।
अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी।
वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता।।६५६।।
ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा।
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः।।६५७।।
विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा।
बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना।।६५८।।

निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी।
मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी।।६५९।।
सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी।
सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा।।६६०।।
अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रस्य धारिणी।
कुमारी चैककन्या च कैशोरी युवती यतिः।।६६१।।
अप्रौढ़ा चैव प्रौढ़ा च वृद्धमाता बलप्रदा।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला।।६६२।।
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी।
नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी।।६६३।।
शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी।
कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी।।६६४।।
य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्टकम्।
नासाध्यं विद्यते देवि! त्रिषु लोकेषु पार्वती।।६६५।।
धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेव च।
चतुर्वर्गं तथा चान्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम्।।६६६।।
कुमारीं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम्।
पूजयेत् परया भक्त्या पठेन्नामशताष्टकम्।।६६७।।
तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि! सर्वैः सुरवरैरपि।
राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवाप्नुयात्।।६६८।।
गोरोचनालक्तककुङ्कुमेन सिन्दूरकर्पूरमधुत्रयेण।
विलिख्य यन्त्रं विधिना विधिज्ञो भवेत् सदा धारयेत पुरारिः।।६६९।।
भौमावास्यानिशामग्रे चन्द्रे शतभिषां गते।
विलिख्य प्रपठेत् स्तोत्रं च भवेत् सम्पदां परम्।।६७०।।

।। इति श्रीमन्हेश्वरानन्दविरचिते श्रीदुर्गामन्त्रराजकल्पतन्त्रे चतुर्थोऽध्यायः।।

●

अथ पञ्चमोऽध्यायः

दुर्गोत्सवविधिः

बृहत्सिद्धान्तसारे-

आश्विनस्य सिते पक्षे नानाविधमहोत्सवैः।
प्रसादयेयुः श्रीदुर्गां चतुर्वर्गफलार्थिनः।।१।।

कालिकापुराणे-

दुर्गातन्त्रेण मन्त्रेण कुर्युर्दुर्गामहोत्सवम्।
महानवम्यां शरदि बलिदानं नृपादयः।।२।।
आश्विनस्य तु या शुक्ला भवेद्दुर्गाष्टमी तिथिः।
मूर्त्तिभेदैर्महादेवी पूजां गृह्णाणि भूतये।।३।।
कन्यासंस्थे रवौ वत्स शुक्लामारभ्य नन्दकाम्।
अयाची त्वथ नक्ताशी एकाशी त्वथ वाय्वदः।
प्रातः स्नायी जितद्वन्द्वस्त्रिकालं शिवपूजकः।।४।।

महानवम्यामिति तदुक्तं देवीपुराणे-

आश्विने शुक्लपक्षे तु सप्तम्यादितिथित्रये।
महाशब्दः प्रयोक्तव्यो नान्यत्रेति विनिश्चयः।।५।।

आरभ्येति। शुक्लां प्रतिपदमारभ्येत्यर्थः। अन्नद इति। ब्राह्मणान् भोजयित्वेत्यर्थः। वाय्वद इति पाठे तु वायुभक्ष इत्यर्थः। जितद्वन्द्व इति। शीतोष्णादिसहिष्णुरित्यर्थः। शिवपूजक इत्यत्र एकशेषो बोद्धव्यः।

रुद्रयामले-

एकोत्तराभिवृद्धया तु नवमी यावदेव हि।
चण्डीपाठं जपेच्चैव जापयेद्वा विधानतः।।६।।

तथा

एवं चतुर्वेदविदो विप्रान् सर्वान् प्रसादयेत्।
तेषां च वरणं कार्यं वेदपारायणाय वै।।७।।

तन्त्रान्तरे

वीररात्र्यादिषु श्रेष्ठा महारात्रिर्महेश्वरि।
उपोष्य पूजयेत् तेषां दुर्गां दुर्गार्त्तिनाशिनीम्।।८।।

वीररात्र्यादयः प्रोक्ताः शक्तिसङ्गमे-

वीररात्रिर्महारात्रिः कालरात्रिस्तथैव च।
महारात्रिर्घोररात्रिः क्रोधरात्रिस्तथैव च।।६।।
तथैव चाचला रात्रिस्ताराराात्रिस्तथैव च।
शिवरात्रिर्दिव्यरात्रिर्दारुणा च यथाक्रमात्।।१०।।
कथ्यते परमेशानि! शृणु सावहिता भव।
चतुर्दश्यां संक्रमे च कुलर्क्षे कुलवासरैः।।११।।
अर्धरात्रे यथायोगो वीररात्रिः प्रकीर्तिता।
शुक्लाष्टमी चाश्विनस्य नवरात्रं तु तस्य वै।।१२।।
महारात्रिर्महेशानि कालरात्रिं शृणु प्रिये!।
दीपोत्सवचतुर्दश्यां त्वमाया योग एव तु।।१३।।
कालरात्रिर्महेशानि ताराकालीप्रियङ्करी।
जन्माष्टमी महेशानि! मोहरात्रिः प्रकीर्तिता।।१४।।

तथा

चैत्रे मासि नवम्यां च शुक्लपक्षे तु भूसुते।
क्रोधरात्रिर्महेशानि तारारूपा भविष्यति।।१५।।
मासि मार्गशिरे प्राप्ते कृष्णाष्टम्यां महेश्वरि।
महाकालस्वरूपा च घोररात्रिः प्रकीर्तिता।।१६।।
प्राप्ते फाल्गुनके मासे कृष्णैकादशिका तु या।
भृगुभौमयुता चेत् स्यादचलारात्रिरीरिता।।१७।।
ज्यैष्ठी या दशमी शुद्धा भृगुवासरसंयुता।
दशयोगसमायुक्ता तारा चैकादशी यदि।।१८।।
सा तिथिर्दिव्यरात्रिश्च कीर्त्तिता परमेश्वरि!।
ज्यैष्ठो या दशमी शुद्धा दशयोगसमन्विता।।१९।।
बटुकस्य तिथिः प्रोक्ता बटुकोत्पत्तिकारिणी।
अमा भौमसमायुक्ता संक्रमेण समन्विता।।२०।।
कुलऋक्षसमायुक्ता ग्रहणं यदि चेद्भवेत्।
ताराारात्रिस्तु संप्रोक्ता भाग्यादेव तु लभ्यते।।२१।।
फाल्गुने कृष्णपक्षे तु ह्यर्धरात्रे भृगोः शिवे।
शिवरात्रिस्तु संजाता सर्वसिद्धिप्रदायिनी।।२२।।
अमा भृगुसमायुक्ता सूर्यग्रहणयुग्यदि।
अपराह्ने यदा योगो मृतसञ्जीविनी तिथिः।।२३।।

स्नानदानादिहोमान्तमनन्तफलदं भवेत्।
अष्टमी चैत्रमासीया संक्रमेण समन्विता।।२४।।
सिद्धिरात्रिरिति ख्याता ताराकालीसमा कलौ।
तृतीया माधवे शुद्धा कुलवारर्क्षसंयुता।
दारुणा कीर्त्तिता देवि! सर्वसिद्धीश्वरी परा।।२५।।

कुलवारादयश्च।

रविश्चन्द्रो गुरुः सौरिश्चत्वारस्तेऽकुला मताः।
भौमशुक्रो कुलाख्यौ तु बुधवारः कुलाकुलः।।२६।।
द्वितीया दशमी षष्ठी कुलाकुलमुदाहृतम्।
कुलानि समधिष्ण्यानि शेषभान्यकुलानि च।।२७।।

इति रुद्रयामले प्रोक्ताः। तथा

अष्टमी प्रतिमासं तु कृष्णपक्षस्य पार्वति!।
भौमयुक्ता तथा ऋक्षयुक्ता वा केवला च वा।
देवीरात्रिरिति ख्याता सर्वसिद्धिप्रदायिनी।।२८।।

ऋक्षयुक्ता कुलर्क्षयुक्ता। तथा

बुधाष्टमी महेशानिः! प्रतिमासं तु या भवेत्।
विष्णुरात्रिरिति ख्याता भाद्रे मासि विशेषतः।।२९।।

तत्रैव नवरात्रनिर्णये-

नवशक्तिसमायुक्तं नवरात्रं तदुच्यते।
एकैव देवदेवेशि! नवधा परिनिष्ठिता।।३०।।
शयनं बोधनाख्यं च नवरात्रं द्विधा भवेत्।
शयनं चैत्रमासीयमाश्विनस्थं च बोधनम्।।३१।।
द्वयोस्तु समुपोष्यैव सर्वसिद्धिं लभेन्नरः।
निराहारी फलाहारी त्वेकभक्तो जलव्रतः।
नक्तभोजी हविष्याशी यथाशक्ति समाचरेत्।।३२।।

अथ देवीपूजोपयुक्तमण्डपलक्षणं देवीपुराणे-

ऐशाने पूर्वभागे वा सिद्धयर्थं मनसः प्रियम्।
देवीगृहं प्रकर्तव्यं सर्वलक्षणलक्षितम्।
दश द्वादश वाऽऽरभ्य यावद्धस्तशतं भवेत्।।३३।।

भविष्योत्तरे-

दुर्गागृहं प्रकर्त्तव्यं चतुरस्रं सुशोभनम्।
रहस्यं स्वस्तिकाद्यैश्च चर्चितं वस्त्रमण्डितम्।।३४।।

दीपमालापरिक्षिप्तं द्वारदामोपशोभितम्।
गौरमृद्गोमयाभ्यां च लिप्तं शस्तं समीरितम्।।३५।।
तन्मध्ये वेदिका कार्या चतुर्हस्ता समा शुभा।
तस्य सिंहासनं सौम्यं कम्बलाजिनसंयुतम्।।३६।।
तत्र दुर्गां प्रतिष्ठाप्य सर्वलक्षणसंयुताम्।
सर्वदेवमयीं प्रौढ़यौवनोन्मादशालिनीम्।।३७।।
भुजैश्चतुर्भी रुचिरैर्दशभिर्वा विभूषिताम्।
तप्तहाटकवर्णाङ्गीं त्रिनेत्रां शशिशेखराम्।।३८।।
पीताम्बरपरीधानां नीलकौशेयसंयुताम्।
ग्रैवेयहारकेयूरनूपुराभरणान्विताम् ।।३९।।
नानारत्नविचित्रेण मुकुटेन विराजिताम्।
अनेककुसुमाकीर्णकपर्देन विराजिताम्।।४०।।
नितम्बबिम्वसन्नद्धकिङ्किणीक्वणनादिनीम् ।
शूलचक्रदण्डशक्तिंवज्रचापासिधारिणीम् ।।४१।।
घण्टाक्षमालाकरकपानपात्रलसत्कराम् ।
तदग्रे छिन्नशिरसं महिषं रुधिराप्लुतम्।।४२।।
निःसृतार्धतनुं कण्ठनालाच्च्वर्मासिधारिणम्।
देवीकरधृतग्रीवं शूलेनोरसि ताड़ितम्।।४३।।
दैत्यं करालदंष्ट्रास्यं विद्युत्कपिशमूर्धजम्।
नागपाशेन विक्षिप्तं हर्यक्षेणाभिविद्रुतम्।।४४।।
वमद्रुधिरवक्त्रेण धुन्वतोऽर्धं शटारुषा।
ऊर्धलाङ्गूलदण्डेन देव्यधिष्ठानशोभिना।।४५।।
सर्वतो मातृचक्रेण सेव्यामानां सुरैस्तथा
पूजयेत् प्रयतो देवीं नरो नियममास्थितः।।४६।।

स्थापने विशेष उक्तो देवीपुराणे

याम्यास्या शुभदा दुर्गा पूर्वास्या जयवर्धिनी।
पश्चिमाभिमुखो नित्यं न स्थाप्या सौम्यादिङ्मुखी। इति ।४७।।

मत्स्यपुराणोक्तदशभुजाध्यानं यथा-

कात्यायन्याः प्रवक्ष्यामि मूर्त्तिं दशभुजां तथा।
त्रयाणामपि देवानां धर्मकामार्थकारिणीम्।।४८।।
जटाजूटसमायुक्तामर्धेन्दुकृतलक्षणाम् ।
नेत्रत्रयसमायुक्तां पद्मेन्दुसदृशाननाम्।।४९।।

अतसीपुष्पवर्णाभां सुप्रतिष्ठां सुलोचनाम्।
नवायैवनसम्पन्नां सर्वाभरणभूषिताम्।।५०।।
सुचारुदशनां तद्वत्पीनोन्नतपयोधराम्।
त्रिभङ्गस्थानसंस्थानां महिषासुरमर्दिनीम्।।५१।।
त्रिशूलं दक्षिणे दद्यात् खड्गचक्रं क्रमादधः।
तीक्ष्णं बाणं तथा शक्तिं वामतोऽपि निबोधत।।५२।।
खेटकं पूर्णचापं च पाशमङ्कुशमूर्ध्वतः।
घण्टां वा परशुं चापि वामतः सन्निवेशयेत्।।५३।।
अधस्तान्महिषं तद्वद्विशिरस्कं प्रदर्शयेत्।
शिरश्छेदोद्भवं तद्वद्दानवं खड्गपाणिनम्।।५४।।
सपाशं वामहस्तेन धृतकेशं च दुर्गया।
वमद्रुधिरवक्त्रं च देव्याः सिंहं प्रदर्शयेत्।।५५।।
देव्यास्तु दक्षिणं पादं , समं सिंहोपरिस्थितम्।
किञ्चिदूर्ध्वं तथा वाममङ्गुष्ठं महिषोपरि।
स्तूयमानं च तद्रूपममरैः सन्निवेशयेत्।।५६।।

अथ षोडश भुजाध्यानम् कालिकापुराणे

योगनिद्रा महामाया जगद्धात्री जगन्मयी।
भुजैः षोडशभिर्युक्ता भद्रकालीति विश्रुता।।५७।।
क्षीरोदस्योत्तरे तीरे बिभ्रती विपुलां तनुम्।
अतसीपुष्पवर्णाभा ज्वलत्काञ्चनकुण्डला।।५८।।
जटाजूटमखण्डेन्दुमुकुटत्रयभूषिता ।
नागहारेण सहिता स्वर्णहारविभूषिता।।५९।।
शूलं खड्गं च शङ्खं चक्रं बाणं तथैव च।
शक्तिं वज्रं च दण्डं च नित्यं दक्षिणबाहुभिः।।६०।।
बिभ्रती सततं देवि! विकाशिनयनोज्ज्वला।
खेटकं चर्म च चापं च पाशं चाङ्कुशमेव च।।६१।।
घण्टां परशुं मुशलं बिभ्रती वामपाणिभिः।
सिंहस्था नयनै रक्तवर्णैस्त्रिभिरभिज्ज्वला।।६२।।
शूलेन महिषं भित्त्वा तिष्ठन्ती परमेश्वरी।
वामपादेन चाक्रम्य तत्र देवी जगन्मयी।।६३।।

अष्टादशभुजाध्यानं प्रागेवोक्तम्

अथ चण्डिकाध्यानं

तत्रैव-

धम्मिल्लसंयुतकचा विधोश्चाधोमुखीं कलाम्।
केशान्ते तिलकस्योर्ध्वे दधती सुमनोहरा।।६४।।
मणिकुण्डलसंघृष्टगण्डा मुकुटमण्डिता।
सज्ज्योतिः कर्णपूराभ्यां कर्णावापूर्य सङ्गता।।६५।।
सुवर्णमणिमाणिक्यनागहारविराजिता।
सदा सुगन्धिभिः पद्मैरम्लानैरतिसुन्दरी।।६६।।
मालां बिभर्त्ति ग्रीवायां रत्नकेयूरधारिणी।
मृणालायतवृत्तैस्तु बाहुभिः कोमलैः शुभैः।।६७।।
राजन्ती कञ्चुकोपेता पीनोन्नतपयोधरा।
क्षीणमध्या पीतवस्त्रा त्रिवलीमध्यभूषिता।।६८।।
शूलं वज्रं च बाणं च खड्गं शक्तिं तथैव च।
ऊर्ध्वादिक्रमतो देवि! दधती वामपाणिभिः।।६९।।
सिंहस्योपरि तिष्ठन्ती व्याघ्रचर्मणि कौशिकी।
बिभ्रती रूपमतुलं ससुरासुरमोहनम्।।७०।।

अथ सर्वमङ्गलाध्यानं देवीपुराणे-

ब्रह्मोवाच

अवतारे समासेन कथिता सर्वमङ्गला।
प्रतिमालक्षणं सम्यक् कथयामि यथा भवेत्।।७१।।
सिंहपद्मासना सौम्या जटामुकुटमण्डिता।
शूलाक्षसूत्रवरदा कमण्डलुकरा शुभा।।७२।।
चतुर्भुजा समाख्याता तथा चाष्टभुजां शृणु।
वरदं चाभयं खड्गमक्षसूत्रं च दक्षिणे।।७३।।
दर्पणं शूलचापं च चतुर्थे खेटकं भवेत्।
एवं चाष्टभुजा देवी मङ्गला सर्वमङ्गला।।७४।।

अथ देवीबोधनकालनिर्णयः। तत्रैकस्या एव महिषमर्दिन्या अष्टादशभुजादि-ध्यानभेदेन बोधनकाल उक्तो महाथर्वणसंहितायाम्-

अष्टादशभुजा दुर्गा उग्रचण्डेति या स्मृता।
सैवेयं षोडशभुजा भद्रकालीति गीयते।।७५।।
दशभिर्बाहुभिर्युक्ता सैव कात्यायनी स्मृता।
भिन्नध्याना कल्पभेदान्महिषासुरमर्दिनी।।७६।।

अतसीपुष्पवर्णाभां सुप्रतिष्ठां सुलोचनाम्।
नवायैवनसम्पन्नां सर्वाभरणभूषिताम्।।५०।।
सुचारुदशनां तद्वत्पीनोन्नतपयोधराम्।
त्रिभङ्गस्थानसंस्थानां महिषासुरमर्दिनीम्।।५१।।
त्रिशूलं दक्षिणे दद्यात् खड्गचक्रं क्रमादधः।
तीक्ष्णं बाणं तथा शक्तिं वामतोऽपि निबोधत।।५२।।
खेटकं पूर्णचापं च पाशमङ्कुशमूर्ध्वतः।
घण्टां वा परशुं चापि वामतः सन्निवेशयेत्।।५३।।
अधस्तान्महिषं तद्वद्विशिरस्कं प्रदर्शयेत्।
शिरश्छेदोद्भवं तद्वद्दानवं खड्गपाणिनम्।।५४।।
सपाशं वामहस्तेन धृतकेशं च दुर्गया।
वमद्रुधिरवक्त्रं च देव्याः सिंहं प्रदर्शयेत्।।५५।।
देव्यास्तु दक्षिणं पादं , समं सिंहोपरिस्थितम्।
किञ्चिदूर्ध्वं तथा वाममङ्गुष्ठं महिषोपरि।
स्तूयमानं च तद्रूपममरैः सन्निवेशयेत्।।५६।।

अथ षोडश भुजाध्यानम् कालिकापुराणे

योगनिद्रा महामाया जगद्धात्री जगन्मयी।
भुजैः षोडशभिर्युक्ता भद्रकालीति विश्रुता।।५७।।
क्षीरोदस्योत्तरे तीरे विभ्रती विपुलां तनुम्।
अतसीपुष्पवर्णाभा ज्वलत्काञ्चनकुण्डला।।५८।।
जटाजूटमखण्डेन्दुमुकुटत्रयभूषिता।
नागहारेण सहिता स्वर्णहारविभूषिता।।५९।।
शूलं खड्गं च शङ्खं चक्रं बाणं तथैव च।
शक्तिं वज्रं च दण्डं च नित्यं दक्षिणबाहुभिः।।६०।।
बिभ्रती सततं देवि! विकाशिनयनोज्ज्वला।
खेटकं चर्म च चापं च पाशं चाङ्कुशमेव च।।६१।।
घण्टां परशुं मुशलं बिभ्रती वामपाणिभिः।
सिंहस्था नयनै रक्तवर्णैस्त्रिभिरभिज्ज्वला।।६२।।
शूलेन महिषं भित्त्वा तिष्ठन्ती परमेश्वरी।
वामपादेन चाक्रम्य तत्र देवी जगन्मयी।।६३।।

अष्टादशभुजाध्यानं प्रागेवोक्तम्

अथ चण्डिकाध्यानं

तत्रैव-

धम्मिल्लसंयुतकचा विधोश्चाधोमुखीं कलाम्।
केशान्ते तिलकस्योर्ध्वे दधती सुमनोहरा।।६४।।
मणिकुण्डलसंघृष्टगण्डा मुकुटमण्डिता।
सज्ज्योतिः कर्णपूराभ्यां कर्णावापूर्य सङ्गता।।६५।।
सुवर्णमणिमाणिक्यनागहारविराजिता।
सदा सुगन्धिभिः पद्मैरम्लानैरतिसुन्दरी।।६६।।
मालां बिभर्त्ति ग्रीवायां रत्नकेयूरधारिणी।
मृणालायतवृत्तैस्तु बाहुभिः कोमलैः शुभैः।।६७।।
राजन्ती कञ्चुकोपेता पीनोन्नतपयोधरा।
क्षीणमध्या पीतवस्त्रा त्रिवलीमध्यभूषिता।।६८।।
शूलं वज्रं च बाणं च खड्गं शक्तिं तथैव च।
ऊर्ध्वादिक्रमतो देवि! दधती वामपाणिभिः।।६९।।
सिंहस्योपरि तिष्ठन्ती व्याघ्रचर्मणि कौशिकी।
बिभ्रती रूपमतुलं ससुरासुरमोहनम्।।७०।।

अथ सर्वमङ्गलाध्यानं देवीपुराणे-

ब्रह्मोवाच

अवतारे समासेन कथिता सर्वमङ्गला।
प्रतिमालक्षणं सम्यक् कथयामि यथा भवेत्।।७१।।
सिंहपद्मासना सौम्या जटामुकुटमण्डिता।
शूलाक्षसूत्रवरदा कमण्डलुकरा शुभा।।७२।।
चतुर्भुजा समाख्याता तथा चाष्टभुजां शृणु।
वरदं चाभयं खड्गमक्षसूत्रं च दक्षिणे।।७३।।
दर्पणं शूलचापं च चतुर्थे खेटकं भवेत्।
एवं चाष्टभुजा देवी मङ्गला सर्वमङ्गला।।७४।।

अथ देवीबोधनकालनिर्णयः। तत्रैकस्या एव महिषमर्दिन्या अष्टादशभुजादिध्यानभेदेन बोधनकाल उक्तो महाथर्वणसंहितायाम्-

अष्टादशभुजा दुर्गा उग्रचण्डेति या स्मृता।
सैवेयं षोडशभुजा भद्रकालीति गीयते।।७५।।
दशभिर्बाहुभिर्युक्ता सैव कात्यायनी स्मृता।
भिन्नध्याना कल्पभेदान्महिषासुरमर्दिनी।।७६।।

अतसीपुष्पवर्णाभां सुप्रतिष्ठां सुलोचनाम्।
नवायैवनसम्पन्नां सर्वाभरणभूषिताम्।।५०।।
सुचारुदशनां तद्वत्पीनोन्नतपयोधराम्।
त्रिभङ्गस्थानसंस्थानां महिषासुरमर्दिनीम्।।५१।।
त्रिशूलं दक्षिणे दद्यात् खड्गचक्रं क्रमादधः।
तीक्ष्णं बाणं तथा शक्तिं वामतोऽपि निबोधत।।५२।।
खेटकं पूर्णचापं च पाशमङ्कुशमूर्ध्वतः।
घण्टां वा परशुं चापि वामतः सन्निवेशयेत्।।५३।।
अधस्तान्महिषं तद्वद्विशिरस्कं प्रदर्शयेत्।
शिरश्छेदोद्भवं तद्वद्दानवं खड्गपाणिनम्।।५४।।
सपाशं वामहस्तेन धृतकेशं च दुर्गया।
वमद्रुधिरवक्त्रं च देव्याः सिंहं प्रदर्शयेत्।।५५।।
देव्यास्तु दक्षिणं पादं , समं सिंहोपरिस्थितम्।
किञ्चिदूर्ध्वं तथा वाममङ्गुष्ठं महिषोपरि।
स्तूयमानं च तद्रूपममरैः सन्निवेशयेत्।।५६।।

अथ षोडश भुजाध्यानम् कालिकापुराणे

योगनिद्रा महामाया जगद्धात्री जगन्मयी।
भुजैः षोडशभिर्युक्ता भद्रकालीति विश्रुता।।५७।।
क्षीरोदस्योत्तरे तीरे विभ्रती विपुलां तनुम्।
अतसीपुष्पवर्णाभा ज्वलत्काञ्चनकुण्डला।।५८।।
जटाजूटमखण्डेन्दुमुकुटत्रयभूषिता ।
नागहारेण सहिता स्वर्णहारविभूषिता।।५९।।
शूलं खड्गं च शङ्खं चक्रं बाणं तथैव च।
शक्तिं वज्रं च दण्डं च नित्यं दक्षिणबाहुभिः।।६०।।
बिभ्रती सततं देवि! विकाशिनयनोज्ज्वला।
खेटकं चर्म च चापं च पाशं चाङ्कुशमेव च।।६१।।
घण्टां परशुं मुशलं बिभ्रती वामपाणिभिः।
सिंहस्था नयनै रक्तवर्णैस्त्रिभिरभिज्ज्वला।।६२।।
शूलेन महिषं भित्त्वा तिष्ठन्ती परमेश्वरी।
वामपादेन चाक्रम्य तत्र देवी जगन्मयी।।६३।।

अष्टादशभुजाध्यानं प्रागेवोक्तम्

अथ चण्डिकाध्यानं

तत्रैव-

धम्मिल्लसंयुतकचा विधोश्चाधोमुखीं कलाम्।
केशान्ते तिलकस्योर्ध्वे दधती सुमनोहरा।।६४।।
मणिकुण्डलसंघृष्टगण्डा मुकुटमण्डिता।
सज्ज्योतिः कर्णपूराभ्यां कर्णावापूर्य सङ्गता।।६५।।
सुवर्णमणिमाणिक्यनागहारविराजिता।
सदा सुगन्धिभिः पद्मैरम्लानैरतिसुन्दरी।।६६।।
मालां बिभर्त्ति ग्रीवायां रत्नकेयूरधारिणी।
मृणालायतवृत्तैस्तु बाहुभिः कोमलैः शुभैः।।६७।।
राजन्ती कञ्चुकोपेता पीनोन्नतपयोधरा।
क्षीणमध्या पीतवस्त्रा त्रिवलीमध्यभूषिता।।६८।।
शूलं वज्रं च बाणं च खड्गं शक्तिं तथैव च।
ऊर्ध्वादिक्रमतो देवि! दधती वामपाणिभिः।।६९।।
सिंहस्योपरि तिष्ठन्ती व्याघ्रचर्मणि कौशिकी।
बिभ्रती रूपमतुलं ससुरासुरमोहनम्।।७०।।

अथ सर्वमङ्गलाध्यानं देवीपुराणे-

ब्रह्मोवाच

अवतारे समासेन कथिता सर्वमङ्गला।
प्रतिमालक्षणं सम्यक् कथयामि यथा भवेत्।।७१।।
सिंहपद्मासना सौम्या जटामुकुटमण्डिता।
शूलाक्षसूत्रवरदा कमण्डलुकरा शुभा।।७२।।
चतुर्भुजा समाख्याता तथा चाष्टभुजां शृणु।
वरदं चाभयं खड्गमक्षसूत्रं च दक्षिणे।।७३।।
दर्पणं शूलचापं च चतुर्थे खेटकं भवेत्।
एवं चाष्टभुजा देवी मङ्गला सर्वमङ्गला।।७४।।

अथ देवीबोधनकालनिर्णयः। तत्रैकस्या एव महिषमर्दिन्या अष्टादशभुजादि-ध्यानभेदेन बोधनकाल उक्तो महाथर्वणसंहितायाम्-

अष्टादशभुजा दुर्गा उग्रचण्डेति या स्मृता।
सैवेयं षोडशभुजा भद्रकालीति गीयते।।७५।।
दशभिर्बाहुभिर्युक्ता सैव कात्यायनी स्मृता।
भिन्नध्याना कल्पभेदान्महिषासुरमर्दिनी।।७६।।

कालभेदे बोधनीया सा दुर्गोत्सवकर्मणि।
आश्विनासितपक्षे तु दिवा सम्पूज्य भक्तितः।
खड्गे नवम्यामार्द्रायामुग्रचण्डां प्रबोधयेत्।।७७।।

आश्विनासितपक्ष' इति पौर्णमास्यन्ताश्विनकृष्णपक्ष इत्यर्थः। तथा च। आर्द्रानक्षत्रयुक्तायां पूर्णमास्यन्ताश्विनकृष्णनवम्यामुग्रचण्डां दिवा खड्गे संपूज्य प्रबोधयेदिति वाक्यार्थः।

लिङ्गपुराणे देवीपुराणेऽपि

यदा त्वष्टादशभुजां महामायां प्रपूजयेत्।
कन्यायां कृष्णपक्षे तु पूजयित्वाऽऽर्द्रभे दिवा।।७८।।
नवम्यां बोधयेद्देवीं गीतवादित्रनिःस्वनैः।
शुक्लपक्षे चतुर्थ्यां तु देवीकेशविमोचनम्।।७९।।
प्रातरेव तु पञ्चम्यां स्नापयेयुः शुभैर्जलैः।
सप्तम्यां पत्रिकापूजा अष्टम्यां चाप्युपोषणम्।।८०।।
पूजा च जागरैश्च नवम्यां विधिवद्बलिः।
संप्रेषणं दशम्यां तु क्रीड़ाकौतुकमङ्गलैः।।८१।।

महाकालसंहितायामपि

येऽष्टादशभुजां देवीमुग्रचण्डाभिधां प्रिये!।
पिपूजयिषवो मर्त्यास्तदुपासकतामिताः।।८२।।
तथाऽश्विननवम्यां वै कृष्णायां सुसमाहिताः।
करवाले बोधयेयुर्मध्याह्ने शङ्खनिःस्वनैः।।८३।। इति

मध्याह्नस्तु पञ्चधा विभक्तदिनतृतीयांशः।

अह्नस्तु प्रथमो भागः प्रातः काल इति स्मृतः।
द्वितीयः सङ्गवः प्रोक्तो मध्याह्नस्तु तृतीयकः।।८४।।
अपराह्नश्चतुर्थः स्यात् सायाह्नः पञ्चमः स्मृतः इति वचनात्।

शङ्खनिः स्वनैरित्युपलक्षणम्। शङ्खादिनानाविधवाद्यानिः स्वनैरित्यर्थः।

अत्र यस्मिन् दिने नवम्यां **दिवार्द्रा**लाभस्तत्रैव बोधनं कार्यम्। दिनद्वये नवम्यां **दिवार्द्रा**लाभे तु युग्मविधिवाक्यबलादष्टमीविद्धायामेव नवम्यां बोधनं कार्यम्। एवमार्द्राया अलाभेऽपि युग्मादरेणैव व्यवस्थेति वर्षक्रियाकौमुदीकृतः।

वस्तुतस्तु-मध्याह्ने शङ्खनिःस्वनैः-इति महाकालवचनान्मध्याह्नस्य बोधन-कालत्वप्रतीतेस्तद्व्याप्त्यैव निर्णयः।

कर्मणो यस्य यः कालस्तत्कालव्यापिनी तिथिः-इति बृहद्याज्ञवल्क्योक्तेः। दिनद्वये मध्याह्नव्याप्तौ नक्षत्रेण निर्णयः। नक्षत्रस्य दिनद्वये प्राप्तावप्राप्तौ च युग्मादरः।

युग्मवाक्यान्युक्तानि निगमे-

युग्माग्नियुगभूतानां षण्मुन्योर्वसुरन्ध्रयोः।
रुद्रेण द्वादशीयुक्ता चतुर्दश्या च पूर्णिमा।।८५।।
प्रतिपदा त्वमावास्या तिथ्योर्युग्मं महाफलम्।
व्यस्तमेतन्महादोषं प्रवदन्ति मनीषिणः।।८६।। इति।

अत्र युग्मादिरन्ध्रान्ताः शब्दा द्वितीयादिनवम्यन्ततिथिवाचकः। रुद्र एकादशो शेषं स्पष्टम्।

यद्यपि युग्माग्नीत्यादिवाक्यानि शुक्लपक्षपरतयोक्तानि (निर्णयामृतादौ) पूर्णिमाया अमाप्रतिपद्युग्मस्य च कृष्णपक्षेऽसम्भवादिति। तथाऽपि पूर्वविद्धेव नवमी पक्षयोरुभयोरपीति माधवोक्तेः।

कृष्णपक्षेऽपि नवम्याष्टमीयुतैव ग्राह्या।

निबन्धव्याख्याकृतस्तु। चतुर्दश्या च पूर्णिमा-इत्यत्र त्रयोदश्या चतुर्दशी इति पाठस्य स्मृत्यन्तरे श्रवणादेतानि युग्मवाक्यानि पक्षद्वयपरणीत्याहुः।

निर्णयसिन्धुकृतोऽपि अमा प्रतिपद्युग्मात् कृष्णपक्षलिङ्गात् पक्षद्वयपरमिदं तत्तद्विशेषवाक्यैः कृष्णे तिथिविशेषेऽपीडयत इति व्याजह्रुः।

पूजयित्वाऽऽर्द्रभे दिवाइत्यार्द्रानक्षत्रयोगाभिधानं तु नक्षत्रयोगस्य प्रशस्ततया सम्भवाभिप्रायम्।

तथा च मध्याह्नव्यापिन्यां नवम्यां सति सम्भवे आर्द्रानक्षत्रयुक्तायां बोधानं कुर्यादिति निष्कर्षः।

तिथिनक्षत्रयोर्योगे द्वयोरेवानुपालनम्।
योगाभावे तिथिर्ग्राह्या देव्याः पूजनकर्मणि-इति **निर्णयसिन्धुधृत-देवलोक्तेः**-

तत्तन्नक्षत्रयोगस्तु फलाधिक्याय कल्पते।
भानामलाभे तु पुनः प्रशस्ता केवला तिथिः।। इति महाकाल वचनाञ्च- **निर्णयामृतकृतस्तु**

पूजयित्वेति पूजनक्रियायाः समानकर्त्तृकयोः पूर्वकाल इति क्त्वाप्रत्ययस्य नवम्यां बोधयेदिति बोधनक्रियाकालान्नवमीरूपात् पूर्वकालेऽष्टमीरूपे विधानात् क्त्वाप्रत्ययसामर्थ्यादिवाष्टम्यां पूजनं नवम्यां बोधमित्याहुः।

पूजयित्वाऽष्टमीदिने-इति **निर्णयसिन्धौ** स्थितम्।

यत् तु आर्द्रानक्षत्रयुक्तायामष्टम्यां पूजनं नवम्यां प्रबोध इति मतं तत् तुच्छम्।

आश्विनासितपक्षस्य नवमी या शिवर्क्षयुक्।
बोधयित्वेश्वरीं तस्या शरदर्चनमारभेत्।।

इति नवम्यामेवार्द्रानक्षत्रयोगस्य महाकालेनाभिहितत्वात्।

एवमाश्विनकृष्णनवमीमारभ्याश्विनशुक्लनवमीपर्यन्तमुत्सवो ऽष्टादशभुजापक्षः। महाथर्वणसंहितायाम् -

इषे शुक्लप्रतिपदि भुजैः षोडशभिर्युताम्।
बोधयित्वा भद्रकालीं नवम्यन्तं प्रपूजयेत्।।८७।।

महाकालसंहितायामपि--

प्रतिपद्येव शुक्लायां बोधयित्वा सुरेश्वरीम्।
अभ्यर्चयेन्नवाहानि तन्त्रपौराणिकक्रमैः।।८८।।

केवलपौराणिकक्रमेणोत्सवे कर्त्तव्ये तु आश्विनकृष्णचतुर्दश्यामेव षोडशभुजाया बोधनं कार्यम्।

तदुक्तं कौमुद्यां लिङ्गपुराणे च-

यदा तु षोडशभुजां महामायां प्रपूजयेत्।
दुर्गातन्त्रेण मन्त्रेण विशेषं तत्र वै शृणु।।८९।।
कन्यायां कृष्णपक्षे तु एकादश्यामुपोषितः।
द्वादश्यामेकभक्तं च नक्तं कुर्यात् परेऽहनि।।९०।।
चतुर्दश्यां महामाया बोधयित्वा विधानतः।
गीतवादित्रनिर्घोषैर्नानानैवेद्यवेदनैः ।।९१।।
अयाचित बुधः कुर्यादुपवासं परेऽहनि।
एवमेव व्रतं कुर्याद्यावद्दै नवमी भवेत्।।९२।। इति

कलशस्थापनं तु प्रतिपद्येवोक्तं यामले

प्रतिपद्येव कर्त्तव्यं कलशस्थापनं तथा- इति।

तृतीयपक्षे तु सप्तम्यां कलशस्थापनं वक्ष्यते।

अथाश्विनशुक्लप्रतिपन्निर्णीयते। सा च दुर्गात्सवोपवासादिषु परविद्धा प्राद्या।

या चाश्वयुजि मासे स्यात् प्रतिपद्भद्रयाऽन्विता।
शुक्ला ममार्चनं तस्यां शतयज्ञफलप्रदम्।।९३।।

इति देवीपुराणे परविद्धायाः प्राशस्त्यविधानात्।

पूर्वविद्धा तु या शुक्ला भवेत् प्रतिपदाश्विनी।
नवरात्रव्रतं तस्यां न कार्यं शुभमिच्छता।।९४।।
देशभङ्गो भवेत् तत्र दुर्भिक्षं चोपजायते।
नन्दायां दर्शयुक्तायां यत्र स्यान्मम पूजनम्।।९५।।

इति मार्कण्डेयदेवीपुराणयोः पूर्वविद्धानिषेधाच्च। रुद्रयामले-

अमायुक्ता सदा चैव प्रतिपन्निन्दिता मता।

तत्र न स्थापयेत् कुम्भं दुर्भिक्षं जायते ध्रुवम्।
प्रतिपत् सद्द्वितीया तुं कुम्भारोपनकर्मणि।।६६।।

कल्पतरुः-

कुहूकाष्ठोपसंयुक्तां वर्जयेत् प्रतिपत्तिथिम्।
राज्यनाशाय सा प्रोक्ता निन्दतं तत्र पूजनम्।।६७।।

देवीपुराणे-

शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि चण्डिकापूजनक्रमम्।
आश्विनस्य सिते पक्षे प्रतिपत् सुशुभे दिने।।६८।। इत्युपक्रम्य
शुद्धे तिथौ प्रकर्त्तव्यं प्रतिपच्चोर्ध्वगामिनी।
आद्यास्तु नाडिकास्त्यक्त्वा षोडश द्वादशापि वा।।६६।।
अपराह्ले च कर्त्तव्यं शुद्धसन्ततिकाङ्क्षिभिः।।१००।।

अपराह्ले योगिन्याः प्राशस्त्यं तु द्वितीयदिने प्रतिपदोऽभावे बोध्यम्। तत्रैव (उडड्डामरतन्त्रे) च देवीवचनम्—

अमायुक्ता न कर्त्तव्या प्रतिपत् पूजने मम।
मुहूर्त्तमात्रा कर्त्तव्या द्वितीयादिगुणान्विता।।१०१।।
आद्याः षोडश नाडीस्तु लब्ध्वा यः कुरुते नरः।
कलशस्थापनं तत्र अरिष्टं जायते ध्रुवम्।।१०२।।

शक्तिसङ्गमे-

घटिकाः षोडश त्याज्या आद्याः प्रतिपदस्तु याः।
कलशस्थापनं कुर्यात् कल्याणं जायते तदा।।१०३।।

तथा-

अमायुक्ता न कर्तव्या प्रतिपत् कालिकार्चने।।१०४।।

स्कान्दे-

वर्जनीया प्रयत्नेन अमायुक्ता तु पार्थिव।
द्वितीयादिगुणैर्युक्ता प्रतिपत् सर्वकामदा।।१०५।।

देवीपुराणे देवीवाचः-

यो मां पूजयते भक्त्या द्वितीयादिगुणान्विताम्।
शरत्प्रतिपदं ज्ञात्वा सोऽश्नुते सुखमव्ययम्।।१०६।।
यदि कुर्यादमायुक्तप्रतिपत्स्थापनं मम।
तस्य शापायुतं दत्त्वा वंशनाशं करोम्यहम्।।१०७।।
आग्रहात् कुरुते यस्तु प्रथमे स्थापनं मम।
तस्य सम्पद्विनाशः स्याज्ज्येष्ठपुत्रश्च नश्यति।।१०८।।
अमायुक्ता न कर्तव्या प्रतिपच्चण्डिकार्चने।
धनार्थिभिर्विशेषेण वंशहानिश्च जायते।।१०६।।

न दर्शकलया युक्ता प्रतिपच्चण्डिकार्चने।
उदये द्विमुहूर्त्ताऽपि ग्राह्या सोदयगामिनी।।११०।।

अन्यत्रापि

परविद्धा च या शुद्धा भवेत् प्रतिपदाश्विनो।
तत्र दुर्गोत्सवं कुर्यादमायुक्तां विवर्जयेत्।।१११।। इति

नन्वेतानि वाक्यानि

प्रतिपदा त्वमावास्या तिथ्योर्युग्मं महाफलम्। इति।

एतद्युग्मवाक्यविरुद्धानीति चेन्न। युग्मवाक्यस्यैतत्प्रतिपदभिन्न प्रतिपद्विषयत्वात्। अत एवोक्तं **देवीपुराणे**-

शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
सा कार्योदयगामिन्यां न तत्र तिथियुग्मता-इति।।

न च

संपूज्य नवदुर्गां च नक्तं कुर्यात् समाहितः।
नवरात्राभिधं कर्म नक्तव्रतमिदं स्मृतम्।।११२।।

इति (स्कान्दात्) अस्य नवरात्रव्रतस्य नक्तव्रतत्वे सिद्धे-

नक्तव्रतेषु सर्वेषु रात्रियोगः प्रशस्यते।।

इति वचनात् पूर्वविद्धैव ग्राह्येति वाच्यम्। अमायुक्ता न कर्त्तव्य इत्यादिविशेषवचनैर्निषेधात्। किञ्च न केवलं नक्तव्रतमेतत्।

एवं च विन्ध्यवासिन्यां नवरात्रोपवासतः।
एकभक्तेन नक्तेन तथैवायाचित्तेन च।
पूजनीया जनैर्देवी स्थाने स्थाने पुरे पुरे।।११३।।

(हेमाद्रौ भविष्ये) व्रतचतुष्टयस्योक्तत्वात्। अतः एवोक्तं **कमलाकरभट्टैः** पाक्षिकनक्तानुवादोऽयमिति।

अत्र केचिद् **(रुद्रयामले देवीपुराणादि)** वचनेषु कलशस्थापनश्रुतेस्तदेव प्रथमदिने निषिद्धं न तूपवासादि तस्य प्रतिपदा त्वमावास्या-इति युग्मवाक्यात्।

शुक्लपक्षे दर्शविद्धा इति माधवोक्तेश्च पूर्वादिने प्राप्तेऽस्य वाधे प्रमाणाभावादित्याहुः। वस्तुतस्तु-

अत्र देवीपूजायाः प्राधान्येन पूर्वदिने तस्या निषेधात् तदङ्गोपवासादावपि परैव ग्राह्येति युक्तम्। अतएवोक्तं देवलेन।

व्रतोपवासनियमे घटिकैकाऽपि या भवेत्।
सा तिथिस्तद्दिने पूज्या विपरीता तु पैतृके इति।।

अत्र घटिकाशब्दो मुहूर्त्तपर इति गौड़ाः। **कमलाकरभट्टस्तु-**

घटिकैकेति मुहूर्त्तमात्रा कर्त्तव्येति च द्विमुहूर्त्तस्तुतिः। तेनौदयिकी प्रतिपद्-द्विमूहूर्त्ता ग्राह्या। अन्यथा द्विमुहूर्त्तविधेवैयर्थ्यापत्तेः।

यदा तु पूर्वदिने संपूर्णा शुद्धा भूत्वा परदिने वर्धते तदा संपूर्णत्वाद-मायोगाभावाच्च पूर्वैव ग्राह्या।

यानि च द्वितीयायोगनिषेधकानि वचनानि केचित् पठन्ति तान्यपि शुद्धा-दिकनिषेणपराणीत्याहुः।

द्विमुहूर्त्तवचसोऽपि त्रिमुहूर्त्तस्तावकत्वात् परदिने यदि प्रतिपन्मुहूर्त्तत्रयान्न्यूना तदा दर्शयुक्ताऽपि पूर्वैव ग्राह्येति समयप्रकाशकृतः। वस्तुतस्तु-

त्रिमुहूर्त्तविधिर्मुख्यः। द्विमुहूर्त्तविधिस्त्वनुकल्पः।
द्विमुहूर्त्ताऽपि कर्त्तव्येति दक्षेणापि-शब्दस्योक्तत्वात्।
परदिने प्रतिपदोऽभावे त्वमायुक्ताऽपि सा ग्राह्या।
अमायुक्ताऽपि कर्तव्या यदि न स्यात् परेऽहनि।

इति निबन्धव्याख्यालिखितवचनात्। अत्र केचित्

वृद्धौ समाप्तिरष्टम्यां ह्रासेऽमाप्रतिपन्निशि।
प्रारम्भो नवचण्ड्यास्तु नवरात्रमतोऽर्थवत्।।११४।।

इति**(निर्णयसिन्धु)** धृत **(देवीपुराणोक्त)** वचनान्नवरात्रशब्दो नवाहोरत्रपरः। अमायुक्तप्रतिपन्निषेधकानि वाक्यानि तु तिथिह्रसाभावविषयाणीत्याहुः। अयं च नेपालदेशसम्प्रदायः। वस्तुतस्तु-

न रात्रौ स्थापनं कार्यं न च कुम्भाभिषेचनम्।

इति **(मत्स्य-)** पुराणीयवचनेन रात्रौ कलशस्थापनादिनिषेधात् प्रारम्भो नवचण्डस्त्विति पूजनादेरपूर्वकत्वाभिधानाच्च नवभिर्दिनैर्नवावृत्तिचण्डीपाठविषय-मेतद्वचनम्।

नवरात्रशब्दस्तु नवतिथिपर एव।

प्रारम्भो नवरात्रस्य इत्यादौ तु कर्मणि लाक्षणिकः। तस्य नवाहोरात्रपरत्वे तु तिथिह्रासवृद्धयोर्न्यूनाधिकत्वापत्तेः। अत एवोक्तं **(निर्णयामृते देवीपुराणे च)**

तिथिवृद्धौ तिथिह्रासे नवरात्रमपार्थकम्।
अष्टरात्रेण दोषोऽयं नवरात्रतिथिक्षये।।११५।।
अष्टरात्रेण दोषो हि पूर्णां मुक्त्वा तु पूजनम्।
तिथिह्रासेऽपि कर्त्तव्यं प्रतिपद्याश्विने सिते।।११६।।इति

प्रतिपदि चित्रावैधृतियोगनिषेध उक्तस्तत्रैव।

त्वाष्ट्रवैधृतियुक्ता चेत् प्रतिपच्चण्डिकार्चने।
तयोरन्तर्विधातव्यं कलशारोपणं गृहे इति।।११७।।

तथा

आश्विने प्रतिपत् पूर्णा शुद्धा या तु भवेन्नृप।
आरभ्यं नवरात्रं स्याद्धित्वा चित्रां च वैधृतिम्।।११८।।

यदा तु चित्रावैधृत्योः परिहारेण प्रतिपन्न लभ्यते तदा कात्यायनः।

प्रतिपद्याश्विने मासि नरो वैधृतिचित्रयोः।
आद्यपादौ परित्यज्य प्रारभेन्नवरात्रकम्।।११९।।

रुद्रयामलेऽपि

वैधृतो पुत्रनाशः स्याच्चित्रायां धननाशनम्।
तस्मान्न स्थापयेत् कुम्भं चित्रायां वैधृतो तथा।।१२०।।
सम्पूर्णा प्रतिपद्देवि चित्रायुक्ता यदा भवेत्।
वैधृत्या वाऽपि युक्ता स्यात् तदा मध्यन्दिने रवौ।
अभिजित् तु मुहूर्तं यत् तत्र स्थापनमिष्यते।।१२१।।

भविष्ये

चित्रावैधृतिसम्पूर्णा प्रतिपच्चेद्भवेन्नृप।
त्याज्या ह्यंशास्त्रयस्त्वाद्यास्तुरीयांशे तु पूजनम्।।१२२।।

चित्रादियुक्ताऽपि द्वितीयायुता चेन्न दुष्टेत्युक्तं (दुर्गोत्सवे)

भद्रान्विता चेत् प्रतिवत् तु लभ्यते विरुद्धयोगैरपि सङ्गता सती।
सा वै पराह्ले विवुधैर्विधेया श्रीपुत्रराज्यादिविवृद्धिहेतुः।।१२३।। इति

अथ यववपनविधिः (रुद्रयामले)

स्नानं माङ्गलिकं कृत्वा ततो देवीं प्रपूजयेत्।
शुभाभिर्मृत्तिकाभिश्च पूर्वं कृत्वा तु वेदिकाम्।।१२४।।
यवान् वै वापयेत् तत्र गोधूमैश्चापि संयुतान्।

तन्त्रान्तरे-

बालुका गृह्य यत्नेन नदीनदसमुद्भवाः।।१२५।।
वेदीं कुर्यात् प्रयत्नेन चतुरस्र शुभावहाम्।
द्विहस्ता चोत्तमा वेदी मध्यमा सार्धहस्तका।।१२६।।

अधमा हस्तमात्रा च न्यूनाधिक्यं न कारयेत्।
भूरसीति पठेन्मन्त्रं देवीं संस्पृश्य मानवः।।१२७।।
अपामग्निं समुच्चार्य प्रोक्षयेच्चन्दाम्भसा।
तन्मध्ये विलिखेन्मन्त्रं जयदुर्गाख्यमुत्तमम्।।१२८।।
तत्रावाह्य यजेद्देवीमष्टादशभुजां पराम्।
पञ्चोपचारैः संपूज्य दिक्पालाँश्चापि पूजयेत्।।१२९।।
पश्चान्नवार्णमनुना पूजयेदस्त्रमातृकाम्।
संशोध्य यवराशिं च यवोऽसीति मनुं पठन्।।१३०।।
प्रक्षिपेद्वेदिकामध्ये वक्ष्यमाणमनुं जपन्।
ॐ यव त्वं यवरूपोऽसि यज्ञार्थे निर्मितो विधेः।।१३१।।
देवानां तृप्तिकृद्यस्मात् तस्मात् त्वं वरदो भव।
जयन्ती मङ्गलाकाली भद्रकाली कपालिनी।।१३२।।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।

तथा

भेरीमृदङ्गडमरूघण्टापटहनिःस्वनैः ।।१३३।।
महोत्सवं प्रकुर्वीत यवारोपणकर्मणि।
प्रसृते च दशम्यां वै भद्राभद्रं विचारयेत्।।१३४।।

विचारस्त्वन्यत्र-

सम्यक् समुद्गता दीर्घा ऋजवश्चाङ्कुराः शुभाः।
अनुद्गताः कुण्ठिताग्रा ह्रस्वाः शुष्काश्च भङ्गुराः।
कीटाखुभुक्ताः शटिताः विषमाश्चाशुभाः स्मृताः।।१३५।।
संग्रहान्तरलिखितविचारान्तरं तु प्रमाणाभासमूलकत्वादुपेक्षितम्।

रुद्रयामले-

तत्र संस्थापयेत् कुम्भं विधिना मन्त्रपूर्वकम्।
सौवर्णं राजतं वाऽपि ताम्रं मृण्मयमेव वा।।१३६।।

मात्स्ये-

न रात्रौ स्थापयेत् कुम्भं न च कुम्भाभिषेचनम्।।१३७।।

विष्णुः-

भास्करोदयमारभ्या यावत् तु दश नाडिकाः।
प्रातःकाल इति प्रोक्तः स्थापनारोपणादिषु।।१३८।।
कलशस्थापनविधिस्तु दशभुजापक्षे वक्ष्यते (वैष्णवीकल्पे)
नैमित्तिकोक्तविधिना नवाहानि प्रपूजयेत्।
उपोषणं तथाऽष्टम्यां प्रभूतबलिदानकम्।।१३९।।

नवम्यामाचरेद्धीमान् दशम्यां तु विसर्जयेत्।।१४०।।

पुत्रिणा तु महाष्टम्यामुपवासो न कार्यः।

उपवासं महाष्टम्यां पुत्रवान् न समाचरेत्।
यथा तथा संयातात्मा व्रती देवीं प्रपूजयेत्।।१४१।।

इति (कालिका पुराणात्) नवम्यां प्रभूतबलिदानमित्यनेनाष्टम्यादौ पूजाङ्गबलिदानमायति।

अष्टम्यां बलिदानेन पुत्रनाशो भवेद्ध्रुवम्।।१४२।।

इति नामशून्यं वचनं केचित् पठन्ति। तत्र मूलं मृग्यम्। समूलत्वाभिधाने तु प्रभूतबलिदाननिषेधकमिति मन्तव्यम्। पूजाबलिदानविसर्जनादिविधिस्त्वग्रे व्यक्तीभविष्यति।

अथ दशभुजापक्षः (कालिकापुराणे)

बोधयेद्बिल्वशाखासु षण्ठ्या देवीं फलेषु च।
सप्तम्यां विल्वशाखां तामाहृत्य प्रतिपूजयेत्।।१४३।।
पुनः पूजां तथाऽष्टम्यां विशेषेण समाचरेत्।
जागरं च स्वयं कुर्याद्बलिदानं महानिशि।।१४४।।
प्रभूतबलिदानं च नवम्यां विधिवच्चरेत्।
जपहोमसमायुक्तो भोजयेद् वै कुमारिकाः।।१४५।।
ध्यायेद्दशभुजां देवीं दुर्गातन्त्रेण पूजयेत्।
विसर्जनं दशम्यां तु कुर्याद् वै शावरोत्सवैः।।१४६।।

फलेषु इति। फलयुक्तासु शाखास्वित्यर्थः। दुर्गातन्त्रेणेति दुर्गातन्त्र संज्ञकेन पूर्वोक्तजयदुर्गामन्त्रेणेत्यर्थः। शाबरोत्सवैरिति। शबरोचितवेशभाषाधूलिकर्दमविक्षेपादिभिरित्यग्रे स्फुटीभविष्यति। षष्ठ्यां च सायाह्ने वा बोधनं कार्यम्।

सायाह्ने विल्वशाखायां षष्ठ्यां देवीं प्रबोधयेत्।

इति महाकालोक्तैः

षष्ठ्यां विल्वतरौ बोधं सायंसन्ध्यासु कारयेत्।।१४७।।

इति (भविष्यपुराणाच्च)

पञ्चधा विभक्तिदिनपञ्चमांशः सायाह्नः। सन्ध्या तु दिनरात्रयोः सन्धौ मुहूर्तः।

(देवीपुराणे)

ज्येष्ठानक्षत्रयुक्तायां षष्ठ्यां विल्वाभिमन्त्रणम्।
सप्तम्यां मूलयुक्तायां पत्रिकायाः प्रवेशनम्।।१४८।।

इति नक्षत्रयोगे फलातिशयः।

मूलाभावेऽपि सप्तम्यां केवलायां प्रवेशयेत्।

इति (नन्दिकेश्वपुराणात्)
एवं च।

ज्येष्ठायामेव सम्बोध्य मूलेनैव प्रवेशयेत्।
पूर्वोत्तराभ्यां सम्पूज्य श्रवणान्ते विसर्जयेत्।।१४९।।

इत्यादौ सर्वत्रापि तिथिनक्षत्रयोगे फलभूयस्त्वं वेदितव्यम्। पूर्वोत्तराभ्यामिति। पूर्वाढान्वितायामष्टम्यामुत्तराषाढ़ान्वितायां नवम्यामित्यर्थः। नक्षत्रानुरोधेन पत्रिकाप्रवेशनं विसर्जनं च रात्रौ न कर्तव्यम्।

ऋक्षयोगानुरोधेन रात्रौ पत्रीप्रवेशनम्।
विसर्जनं चरेद्यस्तु सराष्ट्रः स विनश्यति।।१५०।।

इति (दुर्गाभक्तितरङ्गिणी-) लिखितवचनात्।
तथा च।

अन्त्यपादो निशाभागे श्रवणस्य यदा भवेत्।
तदा देव्या समुत्थानं दशम्यां दिनभागतः।।१५१।।

इति वचनान्त श्रवणान्ते विसर्जयेत् इत्यादिवचनानुरोधेन रात्रौ विसर्जनं न कार्यमिति तत्रैवोक्तम। अत्र दिनत्रये तिथित्रयविहितपूजात्रयं प्रायिकं कदाचित् तिथिह्रासवशाद्द्वाभ्यां पूजात्रयं कदाचित्। तिथिवृद्धिवशाद्दिनचतुष्टयेन पूजात्रयं तिथित्रयलाभे तु निर्विवादैव व्यवस्था।

व्रती प्रपूजयेद्देवीं सप्तम्यादिदिनत्रये।
द्वाभ्यां चतुरहोभिर्वा ह्रासवृद्धिवशात् तिथेः।।१५२।।

इति (भविष्य-) वचनात्। अस्मिन् पक्षेऽपि प्रतिपदादिदिनकृत्यान्युक्तानि (भविष्ये)

केशसंस्कारद्रव्याणि प्रदद्यात् प्रतिपत्तिथौ।
पट्टडोरं द्वितीयायां केशसंयमहेतवे।।१५३।।
दर्पणं च तृतीयायां सिन्दूरालक्तकं तथा।
मधुपर्कं चतुर्थ्यां तु तिलकं नेत्रमण्डनं।।१५४।।
पञ्चम्यामङ्गरागं च शक्त्याऽलङ्करणानि च।
षष्ठ्यां विल्वतरौ बोधं सायंसन्ध्यासु कारयेत्।।१५५।। इति।।

अत्र च पत्रिकाप्रवेशात् पूर्वेद्युः सायंकाले षष्ठ्यभावे तत्पूर्वदिनेऽधिवासनं कार्यम्। षष्ठ्याः सायंकालेऽत्यन्तासत्त्वे त्वधिवासनलोपः।

षष्ठ्यां सायं प्रकुर्वीत विल्ववृक्षेऽधिवासनम्।

इति (कल्पतरु-) वचनादिति। एवं देवीबोधनेऽपिव्यवस्था।

वस्तुतस्तु-

अनेकतन्त्रबोधितकर्त्तव्यताकस्य देवीबोधनस्यावश्यकतया यस्मिन् दिने सायंसमये षष्ठीलाभस्तत्रैव बोधनम्। उभयदिने सन्ध्यायां षष्ठीलाभे तु युग्मादरेण व्यवस्था। दिनेद्वये सन्ध्यायां षष्ठ्यभावे तु प्रदोषादिसमये षष्ठ्यामिति कौमुदी-कृन्मतमेवादरणीयम्। गौणकालव्याप्तेः सत्त्वात्। तदुक्तम्।

स्वकालादुत्तरः कालो गौणः स्यात् पूर्वकर्मणः- इति।

अत एवं सायं श्रुतिः फलार्थातिशयार्था न तु कर्मलोपः कार्य इत्या-चार्यचूड़ामणिः। प्रदोषस्तु-

त्रिमुहूर्त्तः प्रदोषः स्याद्भानावस्तं गते सति।

इति (मदनरत्ने) व्यासेनोक्तः।

वत्सेन तु-

प्रदोषोऽस्तमयादूर्ध्वं घटिकाद्वयमिष्यते।। इत्युक्तम्।

एवं च पत्रिकाप्रवेशादौ सप्तम्युदयव्यापिन्येव ग्राह्या न तु षण्मुन्योरिति युग्मक क्यात् पूर्वविद्धा।

युगाद्या वर्षवृद्धिश्च सप्तमी पार्वतीप्रिया।
रवेरुदयमिच्छन्ती न तत्र तिथियुग्मता।।१५६।।

इति (कृत्यतत्त्वार्णय-) लिखितवचनात्।

भगवत्याः प्रवेशादिविसर्गान्ताश्च याः क्रियाः।
तिथावुदयगामिन्यां सर्वास्ताः कारयेद्बुधः।।१५७।।

इति (तिथितत्त्व) लिखित-(नन्दिकेश्वरपुराणाच्च)। अधिवासनं तु पत्रिकाप्रवेशा व्यवहितपूर्वदिन एवं सायंकाले षष्ठ्यभावेऽपि कार्यम्।

ज्येष्ठा वा यदि वा षष्ठी सायंकाले न चेद्भवेत्।
सायमेव तथाऽपि स्याद्बिल्ववृक्षेऽधिवासनम्।
पूर्वां षष्ठीं सनक्षत्रां सायं प्राप्तामपि त्यजेत।।१५८।। इति

तथा च ज्योतिःशास्त्रम्।

पूर्वाह्णे नवपत्रिका शुभकरी सर्वार्थसिद्धिप्रदा।
आरोग्यं धनदा करोति विजयं चण्डीप्रवेशे शुभा।
मध्याह्ने न च पीडनं क्षयकरी नृणामघोरावहा।
सायाह्ने वधवन्धमादिकलहं सर्वक्षतिं दास्यति।।१५९।।
सप्तम्यामस्तगायां यदि विशति गृहं पत्रिका श्रीफलाद्या
राज्ञः सप्ताङ्गराज्यं जनसुखसहितं हन्ति मूलानुरोधात्।

तस्मात् सूर्योदयस्थां नरपतिशुभदां सप्तमीं प्राप्त देवीं
भूपालो वेशयेत् तां सकलजनहितां राक्षसर्क्षं विहाय।।१६०।।

मत्स्यसूक्तवचनात्।

पत्रीप्रवेशात् पूर्वेद्युः सायाह्ने विल्ववासिनीम्।
चण्डीमामन्त्रयेद्विद्वान्नात्र षष्ठीपुरस्क्रिया।।१६१।।

इति (ब्रह्माण्डपुराणाच्च) विल्वनिमन्त्रणपत्रिकाप्रवेशादिविधिरग्रे वक्ष्यते। एकाह-पक्षोऽपि (कालिकापुराणे)

यस्त्वेकस्यामथाष्टम्यां नवम्यामथ साधकः।
पूजयेद्वरदां देवीं महाविभवविस्तरैः।।१६२।। इति

रुद्रयामले

मूलनक्षत्रमारभ्य पूजनीया सरस्वती।
पूजयेत् प्रत्यहं देवीं यावद्वैष्णवमृक्षकम्।।१६३।।
नाध्यापयेन्न च लिखेन्नाधीयीत कदाचन।
पुस्तके स्थापिते देवि विद्याकामो द्विजोत्तमः।।१६४।।

संग्रहे

आश्विनस्य सिते पक्षे मेधाकामः सरस्वतीम्।
मूलेनावाहयेद्देवीं श्रवणेन विसर्जयेत्।।१६५।।

अथ महाष्टमी निर्णीयते। सा च पूजोपवासादिषु परयुता ग्राह्या वसुरन्ध्रयोरिति युग्मवाक्यात्।

शुक्लेपक्षेऽष्टमी चैव शुक्लपक्षे चतुर्दशी।
पूर्वविद्धा न कर्त्तव्या कर्त्तव्याऽपरसंयुता।।१६६।।

इति ब्रह्मवैवर्त्ताच्च।

तथा च (स्मृतिसंग्रहे)

शरन्महाष्टमी पूज्या नवमीसंयुता सदा।
सप्तमीसंयुता नित्यं शोकसन्तापकारिणी।।१६७।।
जम्भेन सप्तमीयुक्ता पूजिता तु महाष्टमी।
इन्द्रेण निहतो जम्भस्तस्माद्दानवपुङ्गवः।।१६८।।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन सप्तमीमिश्रिताऽष्टमी।
वर्जनीया प्रविज्ञाय मनुजैः शुभकाङ्क्षिभिः।।१६९।।
सप्तमीं शल्यसंयुक्तां मोहादज्ञानतोऽपि वा।
महाष्टमीं प्रकुर्वाणो नरकं प्रतिपद्यते।।१७०।।

सप्तमी कलया यत्र परताश्चाष्टमी भवेत्।
तेन शुल्यमिदं प्रोक्तं पुत्रपौत्रक्षयप्रदम्।।१७१।।

तथा

पुत्रान् हन्ति पशून हन्ति हन्ति राष्ट्रं सराजकम्।
हन्ति जातानजाताँश्च सप्तमीसहिताऽष्टमी।।१७२।।

(निर्णायामृते) स्मृत्यन्तरवचनम्।

नाष्टमी सप्तमीयुक्ता सप्तमी नाष्टमीयुता।
नवम्या सह कार्या स्यादष्टमी सर्वथा बुधैः।।१७३।।

तत्रैव

अष्टमी नवमीयुक्ता महोत्साहो महोत्सवः।।१७४।।

इति (देवीपुराणे)

स्पतमी वेधसंयुक्ता यैः कृता तु महाष्टमी।
पुत्रदारधनैर्हीना भ्रमन्तीह पिशाचवत्।।१७५।।

भोजराजीये

उमाया नवमी प्रोक्ता हरस्य तिथिरष्टमी।
द्वयोरैक्ये महापुण्या उमामाहेश्वरी तिथिः।।१७६।।

मदनरत्ने स्मृतिसमुच्चये

सप्तमी शल्यसंविद्धा वर्जनीया महाष्टमी।
स्तोकाऽपि सा महापुण्या यस्यां सूर्योदये भवेत्।।१७७।।

स्तोकाऽपिति घटिकामात्राऽपीत्यर्थः।

अत एव घटिकामात्राऽप्यष्टम्यौदयिकी ग्राह्या।

व्रतोपवासनियमे घटिकैकाऽपि या भवेत्।

इति देवलोक्तेरिति निर्णयसिन्धुकृतः। गौड़ा अप्येवमेवाहुः।

एवं च सप्तमीवेधः कलारूपोऽप्यष्टमीवर्जनप्रयोजको न तु त्रिमुहूर्तेति द्रष्टव्यम्।

समयप्रकाशादिग्रन्थकारास्तु त्रिमुहूर्त्ताऽष्टम्येव सप्तमी वर्जनप्रयोजिका न तु ततो न्यूना। स्तोकाऽपीत्यादीनि वचनान्यवयवद्वारा त्रिमुहूर्त्त स्तुवन्ति तेनाष्टमी परदिने यदि मुहूर्त्तत्रयान्न्यूना तदा सप्तमीयुता पूर्वैव ग्राह्येत्याहुः।

कलाकाष्ठा घटिकामुहूर्त्तद्विमुहूर्त्तवचांसि त्रिमुहूर्त्तप्रशंसा पराणीति निबन्ध व्याख्याकारोऽपि बभाण।

यत् तु-

महाष्टम्याश्विने मासि शुक्ला कल्याणकारिणी।
सप्तम्याऽपि युता कार्या मूलेन तु विशेषतः।।१७८।।

इति वचनं तत् परदिनेऽष्टम्यभावविषयम्।
तदुक्तं (निर्णयामृते देवीपुराणे)

उत्तरास्तियो यत्र क्षयं यान्ति नराधिप।
तदा पूर्वाष्टमीं कुर्यादन्यथा त्वशुभं भवेत्।।१७९।।

इति। यच्च-

यदाऽष्टमीं तु सम्प्राप्य ह्यस्तं याति दिवाकारः।
तत्र दुर्गोत्सवं कुर्यान्न कुर्यादपरेऽहनि।।१८०।।
दुर्भिक्षं तत्र जानीयान्नवम्यां यत्र पूज्यते।

इति परदिनेऽष्टमीसत्त्वेऽपि पूर्वविद्धाविधायकं वचनं तत परदिने नवम्याभावविषयम्

यदा सूर्योदये न स्यान्नवमी चापरेऽहनि।
तदाऽष्टमीं प्रकुर्वीत सप्तम्या सहितां नृप।।१८१।।

इति (स्मृतिसंग्रहात्)
यत् तु-

सप्तम्यामुदिते सूर्ये परतो याऽष्टमी भवेत्।
तत्र दुर्गोत्सवं कुर्यान्न कुर्यादपरेऽहनि।।१८२।।

इति परविद्धाष्टमीनिषेधकविश्वरूपनिबन्धवचनं तदाश्विनकृष्णपक्षनवम्यां विहिते देवीबोधने तदङ्गत्वेन कृष्णाष्टम्यां क्रियमाणदेवीपूजाविषयम्।

कृष्णपक्षेऽष्टमी चैव कृष्णपक्षे चतुर्दशी।
पूर्वविद्धा तु कर्त्तव्या परविद्धा न कुत्र चित्।
उपवासादिकार्येषु एष धर्मः सनातनः।।१८३।।

इति कृष्णाष्टम्याः परविद्धाया एव प्राशस्त्यविधानादिति निबन्धव्याख्याकृतः। निर्णयामृतोऽप्येवमाह।

यानि च-

अहं भद्रा च भद्राऽहं नावयोरन्तरं क्व चित्।
सर्वसिद्धिं प्रदास्यामि भद्रायामर्चिताऽप्यहम्।।१८४।।

तथा

महाष्टम्यां भगवती भद्रायामपि पूजिता।
ददाति चायुरारोग्यं यतो भद्रास्वरूपिणी।।१८५।।

इत्यादीनि (देवीपुराण-)वचनानि तानि तु विष्टिकरणमध्ये पूजाविधानार्थानि।

विष्टिं त्यक्त्वा महाष्टम्यां ममपूजां करोति यः।
तस्य पूजाफलं न स्यात् तेनाहमवमानिता।।१८६।।

इति देवीवाक्यात्।

भद्रायां भद्रकाल्याश्च मध्ये स्यादर्चनक्रिया।
तस्माद्वै सप्तमीविद्धा कार्या दुर्गाष्टमी बुधैः।।१८७।।

इति वचनं तु पूर्वदिनेऽष्टम्यभावविजयमिति सर्वसम्मतम्। महाष्टमी भौमवारान्विता चेदतिप्रशस्ता। तदुक्तं (मदनरत्ने)

अष्टम्यामुदिते सूर्ये दिनान्ते नवमी भवेत्।
कुजवारो भवेत् तत्र पूजनीया प्रयत्नतः।।१८८।। इति

मूलयुक्तेयमतिप्रशस्तेत्युक्तं (स्कान्दे)

महाष्टमी मूलयुक्ता त्रैलोक्येऽपि सुदुर्लभा। इति

मूलयुक्ताऽपि सप्तमीविद्धा चेत् त्याज्यैवेत्युक्तं (दुर्गोत्सवे)

मूलेनापि हि संयुक्ता सदा त्याज्याऽष्टमी बुधैः।
लेशमात्रेण सप्तम्या अपि स्याद्यदि दूषिता।।१८९।। इति

यदा तु पूर्वदिने सम्पूर्णा सती परदिने वर्धते तदा संपूर्णत्वात् सप्तमी योगभावाच्च पूर्वैव ग्राह्या न तूत्तरा।

षष्टिदण्डात्मिकायाश्च तिथेर्निष्क्रमणे परे।
अकर्मण्यं तिथिमलं भवेदेकादशीं विना-।। इति स्मार्त्त वचनात्।

एवं च-

सप्तमी कलया युक्ता वर्जनीया महाष्टमी।

इत्यादिवाक्यैः पूर्वविद्धाया निषेधात् परविद्धैव महाष्टमीति सिद्धम्। शुद्धायां तु न कश्चित् संदेहः। केचित् तु-

तत्राष्टम्यां भद्रकाली दक्षयज्ञविनाशिनी।
प्रादुर्भूता महाघोरा योगिनीकोटिभिः सह।।१९०।।
अतोऽर्थं पूजनीया सा तस्मिन्नहनि मानवैः।
त्रिसन्ध्यं पूजयेद्देवीं जपस्तोत्रपरायणः।।१९१।।

इत्यादिवाक्यविहितायां दिवातनपूजायां परविद्धाऽष्टमी ग्राह्या।

आश्विनस्य सिते पक्षे या तु स्यात् तिथिरष्टमी।
तस्यां रात्रौ पूजनीया महाविभवविस्तरैः।।१९२।।

इत्यादिवचनप्राप्तायां रात्रिपूजायां त्वष्टम्यां रात्रियोग एवादरणीयः।

कर्मणो यस्य यः कालस्तत्कालव्यापिनी तिथिः।
तया कर्माणि कुर्वीत ह्रासवृद्धी न कारणम्।।१९३।।

इति वचनादित्याहुः। महाष्टमीकृत्यमग्रे वक्ष्यते।

अथ महानवमी निर्णीयते-सा च पूर्वयुता ग्राह्या वसुरन्ध्रयोरिति युग्म-वाक्यात्

अष्टम्या सहिता कार्या सा महानवमी तिथिः।

इति (बृहत्सिद्धान्तसाराच्च)

अष्टम्या सहिता रिक्ता न कदाचित् परायुता।।१९४।।

इति लघुतिथिनिर्णये मत्स्यपुराणाच्च।

पैठीनसिरपि

प्रतिपन्नवमी चैव कर्तव्या सम्मुखी तिथिः।

सम्मुखी सायाह्नव्यापिनी।

ब्रह्मवैवर्त्ते-

अष्टम्या नवमी विद्धा कर्तव्या फलकाङ्क्षिभिः।।१९५।।

पाद्मे-

अष्टमी नवमीयुक्ता नवमी चाष्टमीयुता।

मात्स्ये

अष्टम्या सहिता रिक्ता प्रकर्तव्या सदा बुधैः।
पूर्णायुक्तां तदा कुर्यात् काचिन्नास्त्यष्टमीयुता ।।१९६।।

हेमाद्रौ पाद्मे-

श्रावणी दुर्गनवमी दूर्वा चैव हुताशनी।
पूर्वविद्धा च कर्तव्या शिवरात्री वलेर्दिनम्।।१९७।।

भविष्ये

अश्वयुक् शुक्लपक्षे तु याऽष्टमी मूलसंयुता।
सा महानवमी नाम त्रिषु लोकेषु दुर्लभा।।१९८।।

अष्टमीमूलाभ्यां युक्तेत्यर्थः। मूलेत्युपलक्षणम्।

तथा च मदनरत्ने लैङ्गे

दुर्गापूजासु नवमी मूलाद्यृक्षत्रयान्विता।
महती कीर्त्तिता तस्यां दुर्गा महिषमर्दिनीम्।।१९९।।

पूजयेदिति शेषः

अष्टभ्या नवमी विद्धा नवम्या चाष्टमी तथा।
मूलादिभत्रयेणाद्या त्रैलोक्येऽपि प्रपूजिता।।२००।। इति

अत्र मुहूर्त्तत्रयात्मको वेधो वेदितव्यः।
तदाह पैठीनसिः।

पक्षद्वयेऽपि तिथयस्तिथिं पूर्वां तथोत्तराम्।
त्रिभिर्मुहूर्त्तैर्विध्यन्ति सामान्योऽयं विधिःस्मृतः।।२०१।। इति।

यद्यपि-

उदिते दैवतं भानौ पित्र्यं चास्तमिते रवौ।
द्विस्त्रिर्मुहूर्त्तमह्नो यः सा तिथिर्हव्यकव्ययोः।।२०२।।

इति (हेमाद्रौ विष्णुधर्मे) मुहूर्त्तद्वयात्माऽपि वेध उक्तस्तथाऽपि प्रातरेव सः। सायं तु त्रिमुहूर्त्त एव वेधः।
तदुक्तं स्कान्दे

यां तिथिं समनुप्राप्य यात्यस्तं पद्मिनीपतिः।
सा तिथिस्तद्दिने प्रोक्ता त्रिमुहूर्त्तैव या भवेत्- इति।।२०३।।

सूर्योदयेऽपि द्विमुहूर्त्तत्वमनुकल्प एवं

द्विमुहूर्त्ताऽपि कर्त्तव्या या तिथिर्वृद्धिगामिनी।

इति दक्षोणापि शब्दग्रहणात्।
निर्णयसिन्धुकृतोऽपि त्रिमुहूर्त्तयोगे पूर्वा नवमी पूर्वोक्तवचनात्।

न कुर्यान्नवमीं तात दशम्या तु कदाचन।।२०४।।

इति (स्कान्दे) परानिषेधाच्च। त्रिमुहूर्त्तयोगाभावे तु निषिद्धाऽपि परैव ग्राह्या।

व्रतोपवासनियमे घटिकैकाऽपि या भवेत्।
सा कार्योदयगामिन्याम्....... ।।२०५।।

इत्यादिवचनानि नवमीभिन्नतिथिपराणि नवम्यां विशेषोक्तेरित्याहुः। यद्यप्येव निर्णयः प्रामाणिकैः कृतस्तथाऽपि।

तत्राश्वयुक्तनवमी मुहूर्त्तं वा कला यदि।
सा तिथिः सकला ज्ञेया लक्ष्मीविद्याजयार्थिभिः।।२०६।।

इति सौरपुराणात्

अष्टम्यामुदिते सूर्ये दिनान्ते नवमी भवेत्।
प्रभाते बलिदाने तु कियन्मात्राऽपि लभ्यते।
नवम्यां तत्र सम्पूज्य दुर्गां दुर्गार्त्तिनाशिनीम्।।२०७।।

इति सिद्धान्तसंग्रहोदाहृतवचनात्।

सूर्योदये परं रिक्ता पूर्णा स्यात् परतो यदि।
बलिदानं प्रकर्तव्यं तस्मिन् देशे शुभावहम्।
बलिदाने कृतेऽष्टम्यां पुत्रभङ्गो भवेन्नृप।।२०८।।

इति (देवीपुराणाच्च) बलिदाने परविद्धायाः प्राशस्त्यमेवावगन्तव्यम्। उपवासे तु पूर्वैव पूर्वोक्तवचननिचयात्।

एकादशी च नवमी दिशा विद्धा भवेद्यदि।
तदा वर्ज्या प्रयत्नेन गङ्गाम्भः सुरया यथा।
नवमी दशमी चैव नोपोष्या परसंयुता।।२०६।।

इति पाद्मब्रह्मवैवर्त्तयोः उपवासे परानिषेधाच्च। पूजाङ्गवलिदानमष्टम्यामपि कर्त्तव्यम्।

अष्टम्यामधिकं देयं सप्तमीवलिदानतः।

इति महाकालोक्तेः।

किन्तु प्रभूतबलिदानं तत्र निषिद्धम्।

प्रभूत बलिदानं तु न कुर्यान्नवमीं विना।।२१०।।

इति भैरवोक्तेः।

नवम्यामुदव्यापिन्यां प्रभूतबलिदानमुक्तं (भविष्ये)

एवं हृष्टैर्निशां नीत्वा प्रभाते अरुणोदये।
घातयेन्महिषान् मेषान् रटतो नतकन्धरान्।
शतमर्धशतं वाऽपि तदर्धं वा यथेच्छया।।२११।।

निशामष्टमीरात्रिम्। अरुणोदयः सूर्योदयः इत्यर्थः।

सूर्योदये नवम्यां तु दद्याद्बलिमतन्द्रितः।।२१२।।

इति तन्त्रान्तरसंवादात्।

अरुणो भास्करेऽपि स्यात्...............।

इति (अमरकोषाच्च)

यानि तु-

नन्दायां ज्वलते वह्निः पूर्णायां पशुघातनम्।
भद्रायां गोकुलक्रीड़ा राज्यनाशाय जायते।।२१३।।
नवम्यामपराह्णे तु वलिदानं प्रशस्यत।
दशर्मी वर्जयेत् तत्र नात्र कार्या विचारणा।।२१४।।

इत्यादीनि ब्रह्मवैवर्त्तादि वचनानि तानि शुद्धाधिक निषेधपराणीतिदिक्।

नवमीकृत्यमग्रे वक्ष्यते।

अथ विजयादशमी निर्णीयते। सा च देवीविसर्जनव्यतिरिक्तकर्मसु तारकोदयव्यापिनी ग्राह्या।

ईषत्सन्ध्यामतिक्रान्तः किञ्चदुद्भिन्नतारकः।
विजयो नाम कालोऽयं सर्वकार्यार्थसिद्धिदः।।२१५।।

इति (ज्योतिर्निबन्धे) नारदवचनात्।

दिनद्वये नक्षत्रोदयव्यापिन्या दशम्याः। सत्त्वे पूर्वा।

या पूर्णा नवमीयुक्ता तस्यां पूज्याऽपराजिता।
क्षेमार्थं विजयार्थं च पूर्वोक्तविधिना नरैः।।२१६।।
नवमीशेषयुक्तायां दशम्यामपराजिता।
ददाति विजयं देवीपूजिता जयवर्धिनी।।२१७।।

इति (हेमाद्रो स्कन्दात्) निर्णयसिन्धुमते तूत्तरा अपराह्णव्याप्तेराधिक्यात्। असत्त्वे तु एकादशमुहूर्त्तव्यापिनी ग्राह्या।

आश्विने शुक्लपक्षे तु या भवेद्दशमीतिथिः।
एकादशमुहूर्त्ता सा ग्राह्या श्रवणसंयुक्ता।।२१८।।

इति धौम्योक्तेः।

आश्विनस्य सिते पक्षे दशम्यां सर्वरात्रिषु।
सायंकाले शुभा यात्रा दिवा वा विजयक्षणे।।२१९।।
एकादशो मुहूर्तोऽपि विजयः परिकीर्तितः।
तत्र सर्वै र्विधातव्या यात्रा विजयकाङ्क्षिभिः।।२२०।।

इति भृगुवचनाच्च-

दिनद्वये तद्व्याप्तौ पूर्वतारकोदयव्याप्तेराधिक्यात्। यदा तु परदिने स्वल्पाऽपि श्रवणयुक्ता तदा यात्रायां परैवोपादेया।

उदये दशमीं किंचित् संपूर्णैकादशी यदि।
श्रवणर्क्षं यदा काले सा तिथिर्विजयाभिधा।।२२१।।
श्रवणर्क्षे तु पूर्णायां काकुत्स्थः प्रस्थितो यतः।
उल्लङ्घयेयुः सीमानं तद्दिनर्क्षे ततो नराः।।२२२।।

इति (हेमाद्रौ) काश्यपोक्तेः।

एवमुक्तलक्षणाया दशम्याः परदिने सत्त्वे देवीविसर्जनेऽपि परैव ग्राह्या।

प्रातरेव दशम्यां च श्रवणर्क्षे विसर्जने।
विसर्जने तु तद्दुष्टं लक्ष्मीविद्या बलक्षयम्।।२२३।।

तिथिनिर्णये देवीपुराणे पूर्वानिषेधात्।

अत एव नारदः।

सूर्योदये यदा राजन् दृश्यते दशमी तिथिः।
आश्विने मासि शुक्ले तु विजयां तां विदुर्बुधाः।।२२४।।

इति श्रवणान्वितायां दशम्यां केवलायामेव दशम्यां वा विसर्जनं कार्यम्।

तन्नक्षत्रयोगे तु फलभूमा प्रजायते।
नक्षत्राणामलाभे तु केवलायां तिथौ चरेत्।।२२५।।

इति महाकालोक्तेः

तिथिः शरीरं तिथिरेव कारणं तिथिः प्रमाणं तिथिरेव साधनम्।

इति लल्लवचनाच्च।

परदिने दशम्यसत्त्वे तु पूर्वदिन एव दशमीभागे विसर्जनं कार्यम्।

सम्प्रेषणं दशम्यां तु क्रीड़ाकौतुकमङ्गलैः।

इति (नन्दिकेश्वरपुराणात्)

स्थापनविसर्जनयोर्लग्नमाह

क्रूरे च स्थापयेद्देवीं चरलग्ने तु चालयेत्।।२२६।।

महाकालसंहितायाम्

शरदर्चाविधौ देव्याः स्थापनं च विसर्जनम्।
चरलग्ने चरांशे वा कुर्यात् सर्वसमृद्धये।
अन्यलग्नेऽन्यांशके वा विपरीतफलप्रदम्।।२२७।।

इत्युक्तं तन्त्रान्तरे।

ततो विसर्जयेद्देवीं स्तुत्वा नत्वा पुनः पुनः।
श्रवणस्यान्तिमे पादे दशम्यां शावरोत्सवैः।।२२८।।

श्रवणानुरोधेन रात्रौ विसर्जनं न कर्तव्यमिति प्रागेवोक्तम्।

तिथि तत्त्वे देवीपुराणे-

प्रातरावाहयेद्देवीं प्रातरेव प्रवेशयेत्।
प्रातरेव च सम्पूज्य प्रातरेव विसर्जयेत्।।२२९।।

एतद्विसर्जनं परविद्धामिति ज्ञेयम्।

तथा-

वर्षे वर्षे विधातव्यं स्थापनं च विसर्जनम्।

तन्त्रान्तरे

ततोऽपराह्ने सम्पूज्य श्रवणे चापराजिताम्।
प्रस्थानं नृपतिः कुर्यात् सामात्यबलवाहनः।।२३०।।

एतयोर्विधिरग्रे वक्ष्यते।

प्रस्थानं च दशमीगुल्लङ्घ्य एकादशीभागे न कार्यम्।

दशमीं यः समुल्लङ्घ्य प्रस्थानं कुरुते नृपः।
तस्य तं वत्सरं राज्ये न क्वापि विजयो भवेत्।।२३१।।

इति (निर्णयामृते स्कान्दात्)

उदये दशमी किञ्चित्-इत्यादिकाश्यपोक्तेस्तु दशम्याः कर्मकालव्याप्तिरपि नापेक्षितेति प्रतिभाति तेनेदं स्कान्दवचनं श्रवणशून्यदशमीविषयम्।

इति दशमीनिर्णयः।

अथाशौचे विशेषो (विश्वरूपनिबन्धे)

आश्विनस्य सिते पक्षे प्रारब्धे नवरात्रके।
शावे शौचे समुत्पन्ने क्रियाः कार्याः कथं बुधैः।।२३२।।
सूतके वर्तमाने च तत्रोत्पन्नं यदा भवेत्।
देवीपूजा प्रकर्तव्या पशुयज्ञविधानतः।।२३३।।
सूतके पूजनं प्रोक्तं दानं चैव विशेषतः।
देवीमुद्दिश्य कर्तव्यं तत्र दोषो न विद्यते।।२३४।।

विष्णुः

व्रते यज्ञे विवाहे च श्राद्धे होमेऽर्चने जपे।
प्रारब्धे सूतकं न स्यादनारब्धे तु सूतकम्।।२३५।।

तन्त्रेऽपि

सूतकेऽत्र समुत्पन्ने प्रारब्धं न त्यजेद्बुधः-इति।

प्रारब्ध इति आरम्भश्चात्र सङ्कल्परूपः।

सङ्कल्पो व्रतसत्रयो..............।

इति विष्णूक्तेः

आरब्धे स्वयमेव देवीपूजादि कुर्यात्। अनारब्धे त्वग्निहोत्रादिवत् कारयितव्यमिति सर्वमतम्। रजस्वलाऽन्येन कारयेदिति विशेषवचनाभावात्।

तदुक्तं (मात्स्ये)

अन्तरा तु रजोयोगे पूजामन्येन कारयेत्-इति।

तत्र पूजादिकं प्रवृत्तिरूपं कर्म पुत्रादिद्वारा निर्वाह्यम। उपवासादिकं स्वयमेवकर्तव्यं निवृत्तावशौचस्याकिञ्चित्करत्वात्।

तत्राहाङ्गिराः।

नियमस्था यदा नारी प्रपश्येदन्तरा रजः।
उपोष्यैव तु ता रात्रीः स्नात्वा शेषे चरेद्व्रतम्।।२३६।। इति

अत्र पारणाहे सूतकादिप्राप्तौ तदतिक्रम्य पारणं कुर्यादिति केचित् तदसत्।

सूतके पारणं कुर्यान्नवम्यां होमपूर्वकम्।
तदन्ते भोजयेद्विप्रान् दानं दद्याच्च शक्तितः।।२३७।।

इति रुद्रयामलोक्तवचनेन सूतकेऽपि पारणविधानात्। गौड़ाख्यसम्प्रदाय-मभिप्रेत्य नवम्यामित्युक्तेः।

तदुक्तं प्रकटयोगिनीमते-

गौड़ाख्यसम्प्रदाये तु नवम्यां पारणं भवेत्।
वर्जयेत् तां दिशा विद्धां काश्मीरे सैव शोभना।।२३८।।

केरलाख्ये सम्प्रदाये दशम्यामेव पारणमिति शक्तिसङ्गमेप्येवम्। सैवशोभनेति

काश्मीरसम्प्रदाये दशमीविद्धैव नवमी प्रशस्तेत्यर्थः। गौड़सम्प्रदायिभिस्तु नवम्यां दशमीयुक्तयां पारणं न कार्यम्।

योमोहाद्दशमीवेधे नवम्यां चण्डिकां यजेत्।
पारणं च प्रकुर्याद्वै तस्य पुण्यं निरर्थकम्।।२३९।।

इति तत्रैवोक्तं।।

यजननिषेधस्तु पूर्वदिने कर्मार्हनवमीलाभे वेदितव्यः। दशम्यां पारणं कुर्यात्-इति मुण्डमालावचनं तु पुरश्चरणविषयम्।

निर्णयसिन्धुकृतस्तु नवम्यां पारणं विधायकान्येतदादिवचनानि निर्मूलान्येव समूलत्वाभिमाने तु लौहाभिसारिकपराणि तस्याष्टमीपर्यन्तमेवोक्तेः।

नवरात्रव्रतस्य नवमीपर्यन्तकर्त्तव्यताकृतया दशम्यामेव नियमपारणा कार्येत्याहुः।

अथेयं शारदी पूजा नित्या। अकरणे प्रत्यवायश्रवणादिति केचित्। शरदागमनिमित्तकत्वान्नैमित्तिकीत्यन्ये।
नानाविधफलश्रुतेः काम्येत्यपरे। वस्तुतस्तु नित्यकाम्यरूपेयं न तु नैमित्तिकी।

अन्यथा कार्यमात्रं प्रति कालस्य हेतुतया नित्यस्यापि कर्मणो नैमित्तिक चापत्तेरित्युक्तं महाकालसंहितायाम्-
यथा—

अधुना कथयिष्यामि सरहस्यं विशेषतः।
शारदीयां च वासन्तीमर्चां नानाफलप्रदाम्।।२४०।।
मनीषिणो विदधति विचारानत्र भूयशः।
स्मृत्यध्वचारिणः सर्वे कौलिकाः सर्व एव च।।२४१।।
त्रैविध्यमध्ये किंरूपाः भवतीयं समर्हणा।
यस्याकरणतः पापं जायते नित्यमेव तत्।।२४२।।
विधानाद्यस्य च फलं जायते काम्यमेव तत्।
अननुष्ठानतो यस्य पापमुत्पद्यते परम्।।२४३।।
विधानाच्च फलं वाऽपि तन्नैमित्तिकमुच्यते।
इयं या शारदी पूजा कथ्यते सा किमात्मिका।।२४४।।
केचित् काम्यां वदन्त्येनां के चिन्नैमित्तिकीमपि।
पूर्वं फलश्रवणतः शरदागमनात् परे।।२४५।।
नित्यामेनावमेव केचिद्वदन्ति कुलमार्गगाः।

तथा

त्रिपुरघ्नाय यद्वाक्यं पुरोवाच सुरेश्वरी।।२४६।।
शारदीयामिमां पूजां न करिष्यन्ति ये नराः।
ते पतिष्यन्ति निरये पापाः पूजापहारकाः।।२४७।।

इत्यादिवाक्यान्नित्यत्वमभिधानादथ श्रुतेः।
घटके काम्यता चास्यास्तत्र हेतुं वदामि ते।।२४८।।
अत्रापि चण्डिकावक्त्राम्बुजोद्भूतसुधासमम्।
वचः कलय कल्याणि काम्यताप्रतिपादकम्।।२४९।।
शरत्कालीनपूजां ये कर्त्तारो भक्तिभाविताः।
तेषां दारान् सुतान् भोगं वित्तमारोग्यमुन्नतिम्।।२५०।।
तुष्टा दास्याम्यहं शम्भो स्वर्लोके वसतिं सदा।
इत्थं नानाफलोल्लेखश्रवणात् काम्यताऽपि च।।२५१।।
शरदागमनं हेतुमुपन्यस्यास्य ये बुधाः।
नैमित्तिकत्वं ब्रुवते न ते पण्डितबुद्धयः।।२५२।।
कालो न स्यादुपादानकारणं कस्य वस्तुनः।
तदागमनहेतुत्वे नित्यस्यापि न नित्यता।।२५३।।
अकृते जायते नैनः कृते च न भवेत् फलम्।
नैमित्तिकस्येदृशं हि ब्रवाणैर्लक्षणं प्रिये।।२५४।।
फलाद्याधायके किं नो दृश्येते वचने उभे।
तस्मादत्र हि विज्ञेयं नित्यकाम्यत्वमीश्वरि।।२५५।।
यथा च शारदीयार्चा वासन्त्यर्चा तथैव च।
नानयोर्विद्यते भेदः स्वल्पोऽपि निगमादिषु।।२५६।।

शारदोत्सवनिदानमाह

आसीत् पूर्वं महापूजा वासन्त्येव जगत्त्रये।
रामरावणयोर्युद्धे जाते त्रेतायुगान्तरे।।२५७।।
कालिकाङ्गीतकृत्वेन हन्तु रामोऽशकन्न तम्।
ततो वै चिन्तितो भूत्वा ब्रह्मा सुरगणैर्वृतः।।२५८।।
कालिकां बोधयामास हिमालयकृतालयाम्।
त्वदुपासकयोर्देवि युध्यतोर्घोरमाहवे।।२५९।।
अस्त्रशिक्षां लाघवं च समागत्यावलोकय।
एवमभ्यर्थिता देवी अकाले बोधिता तथा।।२६०।।
जगाम ब्रह्मणा सार्धं लङ्कां द्रष्टुं रणं तयोः।
शुक्लप्रतिपदीषस्य प्राप्ता तं देशमीश्वरी।।२६१।।
सप्तरात्रं निराहारं महद्युद्धमहर्निशम्।
तयोर्दिव्यास्त्रप्रयोगसंहारपरयोरभूत्- ।।२६२।।

रामः शशाक नो हन्तु राक्षसं काल्युपासकम्।
स चापि नाशकद्रामं स्वयं विष्णुमुपागतम्।।२६३।।
समीक्ष्य राक्षसो बाहुबलं देवीं तुतोष ह।
स्वभक्त इति कृत्वाऽस्मिन् पक्षपातं चकार च।।२६४।।
रक्षस्यनुग्रहं दृष्ट्वा ब्रह्मा सर्वैः सुरैः सह।
संतुष्टाव स्तवैर्दिव्यैर्भक्त्या प्रणतकन्धरः।।२६५।।
काकूक्त्या प्रणिपातैश्च नमस्कारैः स्तवैरपि।
तुष्टा ब्रह्माणमूचे सा हृत्स्थं वत्स वरं वृणु।।२६६।।
वरं वव्रे ततः सार्धं त्रिदशैश्च चतुर्मुखः।
त्वत्पादयोर्भक्तमपि त्यजैनं दुष्टराक्षसम्।।२६७।।
मय्यनुग्रहलेशेन विष्णोर्मान्यतयाऽपि च।
कृपादृष्ट्या च देवेषु धर्मसंस्थापनाय च।।२६८।।
त्रिलोकी जायतां सुस्था देवाः सन्तु मखाशिनः।
तपस्तपन्तु मुनयश्चातुर्वर्ण्यं प्रवर्ततताम्।।२६९।।
एष वीरजिताँल्लोकाञ्छस्त्रपूतश्च गच्छतु।
पूजां प्रवर्त्तयिष्यामि तव देव्यमरैः सह।।२७०।।
तिथिमाद्यां समारभ्य यावद्रक्षोवधो भवेत्।
दिनानि नव ते पूजां भविष्यति जगत्त्रये।।२७१।।
नवम्यां निहते वीरे रावणे विश्वकण्टके।
प्रीतिमुत्पादयिष्यामः प्रभूतवलिभिस्तव।।२७२।।
अपरेऽह्नि दशम्यां ते नीराजनमहोत्सवम्।
गीतैर्नृत्यैस्तथा वाद्यैर्जलकर्दमकेलिभिः।।२७३।।
अश्लीलवेशवचनैः शस्त्रास्त्ररचनैरपि।
रथद्विरदवाहानां सज्जनाविधिभिस्तथा।।२७४।।
सुराः प्रवर्त्तयिष्यन्ति मनुष्याश्च महीतले।
भक्तोऽयं रावणो यद्वत् पादयोस्तक कालिके!।।२७५।।
रामो भविष्यति तथा सदैव तव पूजकः।
मन्त्रः कोऽपि च ते देवि! रामोपासितसंज्ञया।।२७६।।
सद्यस्तव प्रीतिकरः ख्यातिं जगति यास्यति।
इत्युक्त्वा ब्रह्मणा काली बभूवास्य पराङ्मुखी।।२७७।।
ततो जघान दिव्यास्त्रै राघवो रावणं रणे।
तत आरभ्य देवेशि! शारद्यर्चा प्रवर्त्तिता।।२७८।।

अत एव द्वयो कार्या वासन्ती शारदी तथा।
केषां चिदपि वासन्त्यां मतभेदो न विद्यते।।२७६।।
शारद्यां तु त्रयो भेदाः कथ्यन्ते ते मयाऽधुना।
आश्विनाशितपक्षस्य नवमी या शिवर्क्षयुक्।।२८०।।
बोधयित्वेश्वरीं तस्यां शरदर्चनमाचरेत्।
यावत् स्यावन्नवमी शुक्ला तावत् पूजा प्रवर्त्तते।।२८१।।
इत्येकः पक्ष उदितो द्वितीयमवधारय।
प्रतिपद्येव शुक्लायां बोधयित्वा सुरेश्वरीम्।।२८२।।
अभ्यर्चयेन्नवाहानि तन्त्रपौराणिकक्रमैः।
उदीरितो द्वितीयोऽयं तृतीयं कथयाम्यथ।।२८३।।
सायाह्ने विल्वशाखायां षष्ठ्यां देवीं प्रबोधयेत्।
प्रातः प्रवर्त्तते पूजा सप्तम्यादिदिनत्रये।।२८४।।
त्रैविध्य ईदृश्यर्चाया विवदन्ते मिथो बुधाः।
ब्रवीमि तत्र सिद्धान्तं छिन्नं येन तमो भवेत्।।२८५।।
रम्भकल्पे पुरा देवी रम्भासुरतनूद्भवम्।
अष्टादशभुजा भूत्वा महाघोरतराकृतिः।।२८६।।
उग्रचण्डा स्वरूपेण जघान महिषासुरम्।
सितेन करवालेन मृतमेनं जहौ तथा।।२८७।।
पतितं च क्षितावस्य व्यशीर्यत कलेवरम्।
नीललोहितकल्पे तु पुनरेव व्यजायत।।२८८।।
उद्वेगकृद्द्देवतानां तथा यज्ञविनाशकृत्।
इति कृत्वा महामाया भद्रकाली वपुर्धरा।।२८६।।
सम्भूय षोडशभुजा विशिषेण शितेन हि।
अवधीत् तं पुनश्चापि तत्याज गलितं भुवि।।२६०।।
श्वेतवाराहकल्पादावजायत पुनः स हि।
जैगोषव्यप्रसादेन पूर्वजातिस्मरोऽभवत्।।२६१।।
वारद्वयं हतं ज्ञात्वा देव्यात्मानं पुराऽसुरः।
स्त्रीवध्यतां च विज्ञाय स्वस्यामुष्यां जनावपि।।२६२।।
कात्यायनमुनेः शापात् स्वप्नदर्शनतोऽपि च।
एकान्ते भक्तिमास्थाय त्रिविधां महिषासुरः।।२६३।।
आराधयामास कालीं स्वोदर्कपरिशुद्धये।
दिव्यद्वादशसाहस्रवर्षानन्तरमीश्वरी।।२६४।।

प्रत्यक्षमागता तस्य वरं वृण्विति चाब्रवीत्।
ततोऽसुरः स ऊचे तां निरीक्ष्य पुरतः स्थिताम्।।२९५।।
वरं पश्चाद्ग्रहीष्यामि देवि त्वत्तो मनोगतम्।
आदौ मे संशयं छिन्धि जागरूकं हृदि स्थितम्।।२९६।।
वारद्वयं मामवधीः सुरारिरणमूर्धनि।
धृत्वा कां कामाकृतिं त्वमघोरामथ भीषणाम्।।२९७।।
जन्मन्यस्मिन्नपि पुनः केनाकारेण कालिके।
मां हनिष्यसि दुर्वृत्तं निखिलामरकण्टकम्।।२९८।।
निशम्येदृग्वचस्तस्य विहस्य जगदम्बिका।
चालयन्ती शिरः किञ्चिदुवाच मधुराक्षरम्।।२९९।।
मदीयतादृशाकारदर्शनेन फलं तव।
किं भविष्यति दैत्येन्द्र किन्तु त्रासमवाप्स्यसि।।३००।।
दिदृक्षसे चेदथ तां करालामाकृतिं मम।
पश्येत्युक्त्वा जगद्धात्री विहाय ललितं वपुः।।३०१।।
उग्रचण्डा तनूरूपं दर्शयामास दानवम्।
ज्वालाकरालवदनमष्टादशभुजान्वितम् ।।३०२।।
दिव्यशस्त्रास्त्रकलितं मुण्डमालाभयङ्करम्।
विदीर्णसृक्कयुगलं घोरदंष्ट्रातिभीषणम्।।३०३।।
चलत्सौक्षमिनीतुल्यरसनं नाददारुणम्।
तद्रूपं दितिजो वीक्ष्य न्यमीलयत लोचने।।३०४।।
कृताञ्जलिपुटो भूत्वा प्रत्युवाच च कालिकाम्।
घोरमीदृशमाकारं न शक्नोमि तवेक्षितुम्।।३०५।।
त्रैलोक्यत्रासनं रूपं देवि संहर संहर।
इत्युक्त्वाऽसुरराजेन पुनः सा प्राकृतं वपुः।।३०६।।
कृत्वा तं दर्शयामास ततः सुस्थो बभूव सः।
भद्रकाली वपुर्भूत्वा पुनः सा परमेश्वरी।।३०७।।
निरीक्षयामास रूपं द्वितीयं जीवनापहम्।
तद्रूपदर्शनेऽप्येष पुनयस्त्रासमुपेयिवान् ।।३०८।।
तस्यापि परिवृत्तौ स प्राकृतः सम्बभूव ह।
गतभीरथ तां देवीमुवाच दितिजाधिपः।।३०९।।
ईदृशाकारधारिण्या कथं देवि त्वया सह।
समरं योद्धुमशकमहं वरमदोद्धतः।।३१०।।

गरुत्मता सह यथा डुण्डुभस्य रणस्पृहा।
दावाग्निना पतङ्गानां तिमिरस्य च भास्वता।।३११।।
मृगाणां हरिणा चैव द्रुमाणां वायुना तथा।
भेकानामवाहिना चापि प्राणीनां शमनेन च।।३१२।।
तद्वद्भवत्या समं मे कथमासीन्महान्रणः।
यदतीतमतीतं तदिदानीं ते वरत्रयम्।।३१३।।
वृणेऽहं मम तद्देहि मनोरथपदातिगम्।
एव सौम्याकारधरा भूत्वाऽस्मिन् जन्मनीश्वरि।।३१४।।
त्वं मां वधिष्यसि त्राण हेतोरध्वरभोजिनाम्।
द्वितीयं ते मच्छिरसि वाम पादाम्बुजं सदा।।३२५।।
स्थास्यति प्राणयुक्तस्य पश्यतस्त्वन्मुखच्छविम्।
तृतीयं देवि यज्ञस्य भागं प्राप्नोमि कंचन।।३१६।।
इत्येवमुक्ते महिषे वचनेन सुरारिणा।
उवाच सस्मितं देवी भक्तप्रणतकन्धरम्।।३१७।।
दैत्येन्द्र शुणु मद्वाक्यं यथार्थं मधुराक्षरम्।
रम्भासुरस्ते जनकस्तपस्तप्त्वा सुदारुणम्।।३१८।।
शङ्करं तोषयामास रम्भकल्पे हिमालये।
वच ऊचे हरस्तुष्टो महाभाग वरं वृणु।।३१९।।
हित्वा सोऽन्यवरं वव्रे भवान् पुत्रो भवत्विति।
भक्त्या नियन्त्रितः कार्यगतित्वात् स महेश्वरः।।३२०।।
वरं ददौ स आत्मानं पुत्राकृतमनुष्ठ्य हि।
तस्माज्जातो हि महिषीगर्भे त्वं काममोहितात्।
साक्षात् त्वं रुद्र एवासि न सामान्या हराकृतिः।।३२१।।

तथा

शिवस्त्वं वरदानेन रम्भस्य सुततां गतः।
मन्वन्तरत्रयं साग्रं भुक्तवाँश्च जगत्त्रयम्।।३२२।।
अतः परं न वस्तव्यं त्वया दितिजदेहिना।
स्वपुरं प्रति गन्तव्यं मम लोकादधः स्थितम्।।३२३।।
कात्यायनस्य शापाच्च शिरश्छेदनहेतुकात्।
युक्तकाले स्थास्यति नो भक्तिरेतादृशी तव।।३२४।।
कपोतशापादीदृक्षादित्युक्ताः पञ्चहेतवः।
महिषायेदृशं दत्त्वा वरमुक्त्वा पुरा कथाम्।।३२५।।

सपद्यन्तर्दधे काली वर्षासु चपला यथा।
देव्यामन्तर्हितायां स सर्वं विस्मृतवान् क्षणात्।।३२६।।
बभूव पूर्ववद्दुष्टो यज्ञदेवद्विजन्मनाम्।
प्रणष्टा भक्तिरस्यापि देव्यामव्यभिचारिणी।।३२७।।
पूर्वदत्तमतिर्भ्रष्टा ज्ञानमन्तर्हितं चरेत्।
इति ते कथितो देवि वृतान्तः पूर्वसम्भवः।।३२८।।
सिद्धान्तमनयोर्बोद्धुं रीत्या शक्त्या विचक्षणात्।
सिद्धान्तनिर्णयकृते कथिताऽऽख्यायिकाऽप्यसौ।।३२९।।
इयं हि शारदीपूजा मूर्तिभेदात् त्रिधा मता।
तत्तद्द्रव्यमधिष्ठाय नृणां गृह्णाति सार्चनम्।।३३०।।
येऽष्टादशभुजां देवीमुग्रचण्डाभिधां प्रिये!।
पिपूजयिषवो मर्त्यास्तदुपासकतामिताः।।३३१।।
तथाऽऽश्विननवम्यां वै कृष्णायां सुसमाहिताः।
करवाले बोधयेयुर्मध्याह्ने शङ्खनिः स्वनैः।।३३२।।
खगानजान् वा महिषानेणान् वाऽन्यवलीनपि।
रीतिं संकलितां कृत्वा दद्युः षोडशवासरान्।।३३३।।
एषाऽऽद्या महिषालम्भकर्तृपूजाविधिर्मतः।
अथ माध्यमिकः पक्ष इषस्याद्यतिथौ सिते।।३३४।।
प्रातः पटहनिःस्वानैः सढक्कानकगोमुखैः।
ईश्वरीं षोडशभुजां भद्रकालीति नामिकाम्।।३३५।।
सम्बोध्य ये पूजयेयुर्दिनानि नव वै प्रिये!।
अपूपमोदक प्रायवलिसंकलितक्रमैः।।३३६।।
तृतीयः पक्ष ईदृक्ष उदितस्त्रिपुरारिणा।
अश्वयुक्सितषष्ठ्यां वै शाखायां विल्वशाखिनः।।३३७।।
सायंकाले बोधयित्वा वाद्यैरुच्चावचोद्धतैः।
दुगदिवीमर्चयीत सप्तम्यादिदिनत्रये।।३३८।।
दशबाहुधरां देवीं महासौन्दर्यशालिनीम्।
रीतिसंकलिते पात्रे विल्वपत्रस्य कीर्त्तिता।।३३९।।
अथ वा करवीरस्य शक्त्या च महिषाजयोः।
स्वस्वशक्त्यनुसारेण सर्वमन्यत् प्रकीर्त्तितम्।।३४०।।
होमो जपः कुमार्यर्चा साधकानां च भोजनम्।
उपोषणथो मौनं प्रभूतफलहेतवे।।३३१।।

हननात् खड्गबाणाभ्यां तत्र तत्र तु बोधनम्।
आविर्भावो विल्वतरोरत्र बोधनमाचरेत्।।३४२।।
तत्तन्नक्षत्रलाभे तु फलभूमा प्रजायते।
नक्षत्राणामलाभे तु केवलायां तिथौ चरेत्।।३४३।।
सत्या शक्तौ चतुर्थ्यां वै देव्याः केशं विमोचयेत्।
तत्र पूजा विधातव्या महाविभवविस्तरैः।।३४४।।
उद्वर्त्तनं कण्टकिंकां केशबन्धनडोरकम्।
नखरञ्जं शलाकां च सिन्दूरालक्तकज्जलम्।।३४५।।
सुगन्धितैलोष्णजलपिष्टातामलकादिकम् ।
दद्याद्देव्यै विशेषेण भक्तिभावेन पार्वति।।३४६।।
पूजायाः कथितं चात्र द्वैविध्यं मुनिपुङ्गवैः।।३२६।।
पौराणिकं तान्त्रिकं च कालिकाप्रीतिसिद्धये।।३४७।।
श्रुतध्वजाय प्राङ्नन्दिकेश्वरेण यदीरितम्।
तद्वै बहुलविस्तारं शारदीयार्चनं मतम्।।३४८।।
यद्देव्या स्वयमाख्यातं कपिलाय महर्षये।
तन्नातिबहुलं नातिस्वल्पं मध्यममुच्यते।।३४९।।
यदौर्वेण समाख्यातं सगराय महीभृते।
तद्विज्ञेयं सुरेशानि! कनीयः शरदर्चनम्।।३५०।।
तान्त्रिकं बहुतन्त्रोक्तं सर्वैः स्वस्वमतागतम्।
यो येनैव क्रमेणैतां शरदर्चां वरानने।।३५१।।
विधत्ते स समाप्नोति फलं तत्तत्क्रमेण हि।
इयं हि पूजा द्विविधा पौराणी तान्त्रिकी तथा।।३५२।।
तान्त्रिके कौलिकी रीतिः पुराणे वैदिकी मता।
यद्येभ्यो रोचते देविः प्रतिनन्दति ते हि तत्।।३५३।।
अथ पूजा प्रकर्तव्या केषु केषु स्थलेषु हि।
तत्रोत्तरं ते वदामि श्रृणुश्वावहिता सती।।३५४।।
तैजसे प्रतिमा यन्त्रेऽथ वा माहेयदारवे।
शैलेय अथ वा देवि धातवे गिरिसम्भवे ।।३५५।।
विल्ववृक्षपत्रिका च घटः पूर्ववदीरितः।
गोमयेनोलिप्तं वा स्थण्डिलं जगदीश्वरि!।।३५६।।
सिन्दूराङ्कं मण्डलं वा शूलखड्गशरास्तथा।
पुस्तकं वा चित्रपटं सर्वतोभद्र एव वा।।३५७।।

अनादिपीठं च तथा शिवलिङ्गं तथैव च।
जलमग्निस्तथा खातनृकरोटिस्थलं शुभम्।।३५८।।
एवमादीनि चान्यानि स्थानान्यर्चनहेतवे।
पत्रिकाश्च परिज्ञेयाः कदलीविल्वदाडिमाः।
हरिद्राशोकच्यौ च जयन्ती धान्यमालिनी।।३५९।।

भविष्येऽपि-

रम्भा कची हरिद्रा च जयन्ती विल्वदाडिमौ।
अशोको मानकश्चैव धान्यानि नव पत्रिकाः।।३६०।।

महाकालसंहितायाम्-

एकाशीतिपदं चक्रं सर्वतोभद्रमण्डलम्।
भित्तौ चित्रीकृता देवी पूजिता फलदायिनी।।३६१।।
अष्टम्यां तु विशेषेण पूजा कार्याऽत्र पार्वति!।
प्रभूतबलिदानं तु नवम्यां होम एव च।
अष्टमीनवमीसन्धौ विशेषात् पूजनं चरेत्।।३६२।।
नवम्यां बलिदानानु कुमारीपूजनं तथा।
दिनत्रयेऽपि च महादेव्याः स्नानं प्रकल्पयेत्।।३६३।।

तथा-

उपवासं तथा कुर्यादष्टम्यां कालिकामुदे।
सिद्ध्यर्थ स्वाभिलाषाणां तथान्येषां च शर्मणाम्।।३६४।।
किन्तु पुत्री न कुर्वीत कृते पुत्रः प्रणश्यति।
स्त्र्युपयोगीनि वस्तूनि रचनादीनि यानि हि।।३६५।।
तानि देव्यै प्रदेयानि विभवाद्यनुरूपतः।
तिथौ शुक्लप्रतिपदि कृत्वोपक्रममीश्वरि।।३६६।।
षष्ठेऽह्नि सांयसमये कृतनित्यक्रियो दिवा।
बोधयेद्विल्वशाखायां देशिकः परमेश्वरीम्।।३६७।।
सङ्कल्पं पुरतः कृत्वा स्वस्तिवाचनपूर्वकम्।
सराशिमासपक्षस्य तिथेरुल्लिखनक्रमात्।।३६८।।
सगोत्रनामोच्चारणं यजमानो विधाय हि।
दुर्गाबोधनकर्माहं करिष्ये इति कीर्त्तियेत्।।३६९।।
भूतशुद्धिं ततः कृत्वा षडङ्गं सर्षि तत्परम्।
आवाह्य विल्वशाखायामथ वा मूर्त्तिपीठयोः।।३७०।।
उपचारैः षोडशभिर्मूलमन्त्रेण देशिकः।
पूजयित्वा जगद्धात्रीमर्धमस्तमिते रवौ।।३७१।।

विल्ववृक्षं च सम्पूज्य गन्धपुष्पाक्षतादिभिः।
शङ्खतूर्यनिनादैश्च मुरजध्वनिगीतिभिः।।३७२।।
बोधयेत् स्तुतिसंलापैर्वन्दीव वसुधाधिपम्।
प्रोच्यमानं समुच्चार्य मन्त्रं संचालयेच्छिवाम्।
तारमैधे शाकिनी च कूटं स्वप्नावतं तथा।।३७३।।
विसन्धिभगवत्युक्त्वोत्तिष्ठ द्वयमुदीरयेत्।
निद्रां जहि युगं चापि प्रतिबुद्धयस्व च द्वयम्।।३७४।।
मम शत्रून् हन द्वन्द्वं पातय द्वितयं तथा।
लज्जा रमा डाकिनी च फट्स्वाहा तदनन्तरम्।।३७५।।

तारः प्रणवः। मैधं वाग्भवम्। शाकिनी फ्रें। स्वप्नावतीकूटम् ख्स्ह्क्ष्व्लीं डाकिनी ख्फ्रें। तन्त्रान्तरे तु श्लोकरूपा मन्त्रा उक्ताः।
यथा—

रावणस्य वधार्थाय रामस्यानुग्रहाय च।
अकाले ब्रह्मणा बोधो देव्यास्त्वयि कृतः पुरा।।३७६।।
अहमप्याश्विने षष्ठ्यां सायह्ने बोधयामि वै।
शक्रेणापि च सम्बोध्य राज्यं प्राप्तं सुरालये।।३७७।।
तस्मादहं त्वां प्रति बोधयामि विभूतिराज्यप्रतिपत्तिहेतोः।
यथैव रामेण हतो दशास्यस्तथैव शत्रुं विनिपातयामि।।३७८।। इति।
तथा—

षष्ठ्यां सायं प्रकुर्वीत विल्ववृक्षेऽधिवासनम्।
महाकालसंहितायाम्—

रजन्याद्ये मुहूर्त्ते तु चण्डिकामधिवासयेत्।।३७९।।
सुगन्धितैलपाताभ्यां पञ्चभिर्गन्धजातिभिः।
पुष्पजातिविशेषैश्च तावद्भिरधिवायेत्।।३८०।।
सर्वमाङ्गल्यवस्तूनि विधायैकत्र भाजने।
प्रशस्तवदनं देव्याः कारयेत् तदनन्तरम्।
समांसमीनसिद्धान्नवलिं भूतेभ्य उत्सृजेत्।
गीतवाद्यैश्च नाद्यैश्च नमस्कारैश्च जागरैः।।३८१।।
देवीं सन्तोष्य वचनैर्व्याजस्तुत्याद्यनिन्दनैः।
सिद्धार्थकैर्मन्त्रपाठपूर्वं रक्षां विधाय च।।३८२।।
पूर्ववत् सर्वमाभाष्य मासपक्षतिथिक्रमैः।
शरत्कालीनपूजाङ्गं ततश्च कृत्यपत्रिका।।३८३।।

अथ वा प्रतिमापीठयन्त्रस्थापनकर्मणि।
दुगदिव्या गन्धपुष्पपट्टवासस्रगादिभिः।।३८४।।
अधिवासनकर्माहं कुर्वीयेत्यभिजल्प्य वै।
पूर्ववद्भूतशुद्धिं च सर्षिं करषडङ्गकम्।।३८५।।
प्राणायामत्रयं चापि कृत्वाऽर्घस्थापनं चरेत्।
गणेशमथ दिक्पालान् मातृग्राहाँस्तथैव च।।३८६।।
वटुकान् क्षेत्रपालाँश्च द्वाराध्यक्षाँश्च योगिनीः।
शक्त्योपचारैः सम्पूज्य पत्रिकापीठमूर्तिषु।।३८७।।
आवाह्य देवीमिष्टां च मूलमन्त्रोपचारकैः।
शताहरिद्रातैलानि एकीकृत्य समानि हि।।३८८।।
चैतन्यकमलालज्जागन्धचारेरुड़स्त्रकम्।
उच्चार्य दद्यादलिके शिरस्यपि च पादयोः।।३८९।।
ततः कुङ्कुमकर्पूरकस्तूरीमलयोद्भवैः।
एकीकृतैर्डाकिनीहृन्मन्त्रैस्तान्येव भूषयेत्।।३९०।।
विल्वपत्रजवापद्मकरवीरापराजिताः।
एकीकृत्यार्पयेन्मूर्ध्नि वदन्मदनमस्तके।।३९१।।
माल्यैवरापूरयेद्यन्त्रं प्रतिमां पत्रिकामपि।
शङ्खोनोसवदौ क्रौडौ मृत्तिकामलयोद्भवः।।३९२।।
गोरोचनाधान्यदूर्वादृषत्सिन्दूरकज्जलम्।
हरिद्रास्वस्तिकालक्तदध्यक्षतफलाम्बुजम्।।३९३।।
धूपदीपौ मधुघृतं कुमारीकरतन्तवः।
घनसारो मृगमदं कक्कोलं कुङ्कुमं तथा।।३९४।।
महौषधिगणाः सिद्धार्थफलं स्वर्णमणी तथा।
रौप्यं व्याघ्रनखोऽम्भोजं विष्णुक्रान्ताऽपराजिता।।३९५।।
एवमादीनि माङ्गल्यद्रव्याण्युक्तानि यानि वै।
एकस्मिन् भाजने तानि एकीकृत्य पृथक् पृथक्।।३९६।।
देव्याः शिरो वक्षसि च तारमैधत्रपाशिरः।
प्रोच्चरन् समनुत्तोल्य त्रिवारं स्पर्शयेच्छनैः।।३९७।।
भूतादिभ्यो बलिं दद्यात् तत्तद्बीजं पुरः स्मरन्।
तत्तन्नामाभ्यसन्तं च सन्धिनैष बलिर्नमः।।३९८।।
दशदिक्षु क्षिपेच्चापि राजिकाश्वेतसर्षपौ।
ताराद्रक्षयुगं चास्त्रं शिरः कूर्चोऽन्तिमे तथा।।३९९।।

वर्णैश्चतुर्भिः संवेष्ट्य ताँश्च कल्माषतन्तुभिः।
अस्त्राण्यस्याः पुरः कृत्वा जागृयात् सकलां निशाम्।।४००।।

इति षष्ठीकृत्यम्।

अथ सप्तमीकृत्यं

तत्रैव-

अथो उषसि सप्तम्यां सृतनित्यक्रियो बुधः।
पूर्ववद्विल्वशाखायां देवीमभ्यर्च्य मानवः।।४०१।।
शितां गृहीत्वा छुरिकां मन्त्रमेनं समुच्चरेत्।
फलद्वययुतां शाखां छिन्द्याद्विल्वस्य साधकः।।४०२।।
चैतन्यं प्रणवं माया रोषरावौ च डाकिनी।
इमां शाखां छिन्धि युगं छेदय द्वितयं तथा।।४०३।।
अस्त्रयुग्मं शिरश्चापि गृहीत्वा तां करद्वये।
बद्धाञ्जलिश्चतुर्मन्त्रान् पठेत् पौराणिकान् प्रिये!।।४०४।।
मेरुमण्डलकैलाशहिमवच्छिखरे गिरौ।
जातः श्रीफलवृक्षस्त्वमम्बिकायाः सदा प्रियः।।४०५।।
श्रीशैले शिखरे जातः श्रीफलः श्रीनिकेतनः।
नेतव्योऽसि मया गच्छ पूज्यो दुर्गास्वरूपतः।।४०६।।
विल्ववृक्ष महाभाग सदा त्वं शङ्करप्रिय।
गृहीत्वा तव शाखां हि देवीपूजां करोम्यहम्।।४०७।।
शाखाछेदोद्भवं दुःखं न च कार्यं त्वया तरो।
देवैर्गृहीत्वा शाखां ते पूजिताऽम्बेति विश्रुतिः।।४०८।।
पुनरन्यत् पद्यरूपं मन्त्रं ब्रूयाच्च साधकः।
पुत्रायुर्धनवृद्ध्यर्थं नेष्यामि त्वामुमाप्रियाम्।।४०९।।
विल्वशाखां समाश्रित्य राज्यं देवि प्रयच्छ मे।
आगच्छ चण्डिके देवि सर्वकल्याणहेतवे।।४१०।।
कात्यायनि गृहाणार्चां नमस्ते शङ्करप्रिये।
ततः पूर्वोदिताश्चान्या आहरेदष्ट पत्रिकाः।।४११।।

तन्त्रान्तरे

पत्रिकास्ताः समानीय गीतवाद्यपुरःसरम्।
ब्रह्मघोषादिभिः सार्धं नीत्वाऽन्यस्येद्गृहाङ्गणे।।४१२।।

महाकालसंहितायाम्

ता एकीकृत्य लतयाऽपराजितसमाह्वया।
संवेष्ट्य वसनेनापि पूजासङ्कल्पमाचरेत्।।४१३।।

पूर्ववत् सर्वमुच्चार्य पत्रिकापीठमूर्तितः।
ततश्च स्थापनमहं करिष्ये इति कीर्त्तयेत्।।४१४।।
पत्रिकायां तथा मूर्त्तौ खड्गे वा यन्त्रमूर्त्तयोः।
देवीमावाह्य सम्पूज्य विल्वपत्राञ्जलित्रयम्।।४१५।।
दत्त्वा शक्तौ प्रकुर्वीत देव्याः स्नानं महोत्तरम्।
तद्वै पौराणवैदिक्यमपि संकीर्तयामि ते।।४१६।।
शक्तौ दिनत्रयं कुर्यादशक्तौ तु दिनद्वयम्।
सर्वाभावे नवम्यां तु स्नानमावश्यकं मतम्।।४१७।।
कुर्यादत्रापि सङ्कल्पं काम्यमेतद्यतः प्रिये!।
शतजन्मकृतात् पापान्मोचने प्रथमं स्मृतम्।।४१८।।
तथा चाष्टसहस्राब्दावच्छिन्नपदतः खलु।
दुर्गालोकस्थितिरिति शतयज्ञफलाप्तियुक्।।४१९।।
नवाऽपि पत्रिका शुद्धतोयेन स्नापयेत् ततः।
प्रत्येकं तत्तदाख्याभिर्मूर्त्तौ नाम्ना धियाऽपि च।।४२०।।
मन्त्राणां पद्यरूपाणामादौ तारस्त्रपा स्मरः।
रमा मेधं रावरौषौ डाकिन्यष्ट च वै नव।।४२१।।
प्रत्येकं देवि देयानि तान्त्रिकस्नापनक्रमे।
कदलीतरुसंस्थाऽसि शम्भुवक्षःस्थलस्थिते।।४२२।।
स्नापयाम्यद्य पत्रि त्वां नमस्ते हरवल्लभे।
कच्चित् त्वं स्थावरीभूता सद्यः सिद्धिविधायिनी।।४२३।।
दुर्गारूपेण सर्वत्र स्नानेन विजयं कुरु।
हरिद्रे हर दुःखानि शङ्करस्य सदा प्रिये।।४२४।।
रुद्ररूपाऽसि देवि त्वं सर्वशान्तिं प्रयच्छ मे।
जयन्ती जयरूपाऽसि जगतां जयकारिणी।।४२५।।
स्थापयामीह देवि त्वां जयं देहि गृहे मम।
श्रीफल श्रीनिकतोऽसि सदा विजयवर्धन।।४२६।।
देहि मे धर्मकामार्थान् प्रसन्नो भव सर्वदा।
दाडिम्यघप्रणाशाय क्षुन्नाशाय तथा नृणाम्।।४२७।।
निर्मिताऽसि पुरा धात्रा प्रसीद त्वमुमाप्रिये।
स्थिरा भव सदा लोके दुर्गे शोकविनाशिनि।।४२८।।
मया त्वं पूजिता नित्यं स्थिरा भव हरप्रिये।
ब्राह्मेषु मानो मानेषु माननीयः सुरासुरैः।।४२९।।

स्नापयामि महादेवीं मानं देहि नमोऽस्तु ते।
लक्ष्मीस्त्वं धान्यरूपाऽसि प्राणिनां प्राणदायिनी।।४३०।।
स्थिराऽत्यन्तं हि नो भूत्वा गृहे कामप्रदा भव।
ततो द्वित्रिनदीतोयं कृत्वा कलशगर्भगम्।।४३१।।
चन्दनालोडितं चापि स्नापयेत् तेन चण्डिकाम्।
शीता चालकनन्दा च चक्षुर्भद्रादृषद्वती।।४३२।।
तुङ्गभद्रा कृष्णवर्णा पयोष्णी नर्मदा तथा।
तापी भीमरथी सिप्रा वितस्तैरावती तथा।।४३३।।
गोदावरी विपाशा च शतद्रुः सिन्धुरेव।
चर्मण्वती च कावेरी ताम्रपर्णी महानदी।।४३४।।
करतोया बाहुदा च शोणा वेत्रवती तथा।
देविका भैरवः कोका गोमती चोत्पलावती।।४३५।।
आत्रेयी भारती गङ्गा यमुना च सरस्वती।
सरयूर्गण्डकी चापि श्वेतगङ्गा च कौशिकी।।४३६।।
भोगवती च पाताले स्वर्गे मन्दाकिनी तथा।
एताश्चान्याश्च या नद्यो भाषिता याश्च नेरिताः।।४३७।।
देवखातानि तीर्थानि कूपा निर्झरसंज्ञकाः।
सरांसि सिन्धवश्चापि सम्भेदा ये च भूतले।।४३८।।
सर्वे त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणः प्रभुः।।४३९।।
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवतीं स्नापयन्त्विमे।
ख्याता ये द्वादशादित्या रुद्रा एकादशापि च।।४४०।।
मरुतश्चोनपञ्चाशद्वसवोऽष्टर्त्तवश्च षट्।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा।।४४१।।
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहितः शेषो दिक्पालाः स्नापयन्त्वमी।।४४२।।
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्षमा रतिः।
बुद्धिर्लज्जा क्रिया शान्तिस्तुष्टिः कान्तिश्च मातरः।।४४३।।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु शक्तिरूपधरास्तव।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमबुधजीवसितार्कजाः।।४४४।।
राहुः केतुश्च भवतीं स्नापयन्तु ग्रहा नव।
ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च।।४४५।।

देवपत्न्योऽध्वरा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः।
त्रिशूलचक्रचापष्टिर्भुशुण्डी परिघो गदा।।४४६।।
कुन्तमुद्गरखट्वाङ्गशक्तितोमरपर्शवः।
पट्टिशो मुद्गलः प्रासभिन्दिपालकटङ्कका:।।४४७।।
हूना शतध्नी कुलिशपाशकर्त्तृहलानि च।
चत्वार ऋग्यजुःसामार्थर्वणो निगमा हि ये।।४४८।।
अङ्गानि शिक्षा कल्पश्च छन्दो व्याकरणं तथा।
निरुक्तं ज्यौतिषं चापि पुराणान्यखिलानि च।।४४९।।
मीमांसान्यायवेदान्ताक्षपात्साङ्ख्यपतञ्जलाः।
स्मृतिशास्त्राणि सर्वाणि दण्डनीतिर्विधाऽपि च।।४५०।।
गन्धर्वायुर्धनुर्वेदाश्चतुः षष्टिश्च याः कलाः।
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि वाहनानि नृपास्तथा।।४५१।।
औषधानि च सर्वाणि शिल्पविद्यादिकानि वा।
मुक्तामाणिक्यवैदूर्यवज्रेन्द्रमणयस्तथा।।४५२।।
गोमेदपद्मरागौ च प्रवालः श्याम एव च।
रत्नानि यानि चान्यानि कालस्यावयवाश्च ये।।४५३।।
मन्वन्तराणि सर्वाणि चत्वार्यपि युगानि हि।
अब्दमासर्त्तुपक्षाहोरात्रायनकलालवाः।।४५४।।
राशिनक्षत्रयोगाश्च कलांशाश्चापि सूक्ष्मकाः।
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।।४५५।।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये।।४५६।।
सिन्धुरैवतशोणाद्या ये ह्रदा भुवि विश्रुताः।
सर्वे सुमनसो भूत्वा भृङ्गारैः स्नापयन्तु ते।।४५७।।
तक्षकाद्याश्च ये नागाः पातालतलवासिनः।
स्नापयन्तु जगद्धात्रि भृङ्गारैस्त्वां सुवासितैः।।४५८।।
अथ द्रव्यविशेषेण मन्त्रभेदान् ब्रवीमि ते।
पौराणानपि तान्त्रीयान्महास्नापनकर्मणि।।४५९।।
सर्वेषामधियो देव ईशानो नाम नामतः।
शूलपाणिर्महादेवः स त्वां संस्नापयेत् प्रभुः।।४६०।।
स्नापयेच्छङ्खतोयेन मन्त्रमेनमुदीरयेत्।
मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं परम्।।४६१।।

स्वर्गस्रोतः समुद्भूतं स्नानं भवतु तेन ते।
गाङ्गेन वारिणा देवीं स्नापयेन्मनुनाऽमुना॥४६२॥
उष्णं सुखस्पर्शकरं ज्योतिर्वह्निसमन्वितम्।
मलापहारकं कल्यं तेन स्नानं समाचर॥४६३॥
स्नापयेत् पाथसोष्णेन पठन्मन्त्रममुं प्रिये।
गन्धाढ्यं शोभनं चैव शीतलं सुमनोहरम्॥४६४॥
सर्वपापहरं तोयं तत् ते स्नानाय कल्पताम्।
अमुनाऽऽमोदिसलिलकुम्भेन स्नापयेच्छिवाम्॥४६५॥
पुण्यं पवित्रं स्वच्छं च शीतलं स्वादु यज्जलम्।
स्नानाय कल्पतां तत् ते तथैव श्रमशान्तये॥४६६॥
मेध्याच्छीतलाम्भोभिः स्नापयेदमुनेश्वरीम्।
गावः पवित्रा ह्यनघा गावो विश्वमातरः॥४६७॥
गावोऽध्वराणां धात्र्यश्च गोषु सर्वं प्रतिष्ठितम्।
तदङ्गप्रसृतैः पञ्चगव्यैस्त्वां स्नापयाम्यहम्॥४६८॥
इति सामान्यतो मन्त्रं पठित्वा तदनु प्रिये।
प्रत्येकं पञ्चगव्येन स्नापयेज्जगदम्बिकाम्॥४६९॥
गवां मूत्रेण पुण्येन सर्वाघपरिमोषिणा।
स्नापयामि जगद्धात्रीं पुत्रायुर्धनवृद्धये॥४७०॥
एतेन स्नापयेद्देवीं गोमूत्रेण शनैः शनैः।
पवित्रताकरं भूमेर्विभूतेः कारणं परम्॥४७१॥
गोमयं सर्वपापघ्नं तेन त्वां स्नापयाम्याहम्।
मन्त्रमेनं पठेद्देवीं स्नापायेद्गोमयाम्भसा॥४७२॥
यद्गवायङ्गसम्भूतं हविषं कारणं हि यत्।
दधि तत् तेऽङ्गलावण्यकरणाय भवत्विदम्॥४७३॥
दग्ध्नाऽमुना भगवतीं स्नापयेद्देशिकोत्तमः।
यज्ञक्रियाकलापोऽयं सर्वो यस्मिन् प्रतिष्ठितः॥४७४॥
पयसा तादृशेन त्वां स्नापयामि हरप्रियाम्।
गृणन्नमुं गव्यदुग्धैः स्नापयेज्जगदम्बिकाम्॥४७५॥
यद्धोमसाधनत्वेन प्रथितं निगमादिषु।
यच्चाप्यग्निमुखेनैव भुञ्जते निखिलाः सुराः॥४७६॥
यस्मात् पवित्रं नैवास्ति बलवीर्यकरं च यत्।
तेन त्वां स्नापयाम्यद्य गव्येन हविषेश्वरीम्॥४७७॥

कालीममूभ्यां मन्त्राभ्यां घृतेन स्नापयेद्बुधः।
एकीकृत्य ततः पञ्चगव्यानि सकलानि हि।।४७८।।
तथाऽनामिकयाऽऽलोड्य कुशमूलेन वा प्रिये।
यस्मात् परं नापरमस्ति मेध्यं देहे गतं यद्वृजिनं निहन्ति।
नास्ते परं ह्यमतस्तदेतत् स्नानाय भूयात् तव पञ्चगव्यम्।।४७९।।
स्नापयेत् पञ्चगव्येन मन्त्रेणानेन कालिकाम्।
गव्यं पयो दधि घृतं माध्वीकं सितशर्कराः।।४८०।।
पञ्चामृतमिदं प्रोक्तममुना स्नापयेदुमाम्।
सारं गृहीत्वा जगतां त्रयाणां सन्निर्मितं यज्ञकृते विधात्रा।।४८१।।
पञ्चामृतं तन्मधुरं मनोज्ञं संस्नापकं ते जगदम्ब भूयात्।
मनुनैवामुना पञ्चामृतेन स्नापयेच्छिवाम्।।४८२।।
तथा-
ॐ कात्यायन्यै विद्महे भगवत्यै धीमहि तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्।
एतेनेक्षुरसैनैव स्नापयीत सुरेश्वरीम्।।४८३।।
तन्त्रान्तरे-
महौषधीभिः सर्वाभिः सर्वकामार्थसिद्धये।
या औषधीति मन्त्रेण स्नापयेज्जगदम्बिकाम्।।४८४।।
महौषध्य उक्ता मात्स्ये-
सहदेवी तथा व्याघ्री बला चातिबला तथा।
शङ्खपुष्पी च सिंही च वचा चैव सुवर्चसा।।४८५।।
महौषध्यष्टकं प्रोक्तं महास्नाने नियोजयेत्।
व्याघ्री कण्टकारिका। वला वाट्यलकः
सर्वोषधयस्तु प्रागेवोक्ताः।
तथा
सहस्रधारकुम्भेन स्नापयेज्जगदम्बिकाम्।।४८६।।
महाकालसंहितायाम्
सागराः सरितः सर्वाः स्वर्गस्रोतो नदास्तथा।
तिस्रः कोटयोऽर्धकोटिश्च तीर्थानि पृथिवीतले।।४८७।।
कूपाः सरः प्रस्रवणा देवखाताः सगर्तकाः।
कुल्याश्च निर्झरी वाप्यो यावन्तश्च जलाशयाः।।४८८।।
लवणेक्षुसुरासर्पिर्दधिदुग्धजलात्मिकाः।
समुद्राः सप्त तद्द्वीपा ये च सप्त प्रकीर्त्तिताः।।४८९।।

जम्बूप्लक्षकुशक्रौञ्चशाकशाल्मलिपुष्कलाः ।
अभिषिञ्चन्तु सर्वे त्वां मन्त्रपाठवशीकृताः ॥४९०॥
अग्निमीलेति मन्त्रेण ऋग्वेदस्याद्यया ऋचा ।
त्वां स्नापयतु गव्येन पयः कुम्भेन चण्डिकाम् ॥४९१॥
इषे त्वाख्येन मन्त्रेण स्नापयत्विक्षुजद्रवैः ।
षडशीतिभिदा युक्तो यजुर्वेदः सुरेश्वरीम् ॥४९२॥
सहस्रशाखासंयुक्तः सामवेदो मधुद्रवैः ।
अग्न आयाहि मन्त्रेण त्वां स्नापयतु चण्डिकाम् ॥४९३॥
अथर्ववेदो हविषा बहुशाखासमन्वितः ।
शन्नो देवीति मन्त्रेण देवि त्वामभिषिञ्चतु ॥४९४॥
अष्टादश पुराणानि व्यासेनोक्तानि यानि हि ।
यानि चोपपुराणानि दध्ना त्वां स्नापयन्तु हि ॥४९५॥
महर्षिभिः प्रणीतानि धर्मशास्त्राणि यानि च ।
शतं चाशीतिरूपाणि स्नापयन्तु महेश्वरीम् ॥४९६॥
सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ।
स्वर्गनद्यम्बुपूर्णेन आद्येन कलशेन तु ॥४९७॥
अमुना गाङ्गतोयेन स्नापयेत् परमेश्वरीम् ।
मरुतश्चाभिषिञ्चन्तु भक्तिमन्तः सुरेश्वरीम् ॥४९८॥
मेघतोयाम्बुपूर्णेन द्वितीयकलशेन च ।
एतेन वृष्टिनीराढ्यकुम्भेन स्नापयेच्छिवाम् ॥४९९॥
सारस्वतेन तोयेन स्वच्छमेध्येन चण्डिके ।
विद्याधराः स्नापयन्तु तृतीयकलशेन तु ॥५००॥
सरस्वत्यम्बुसम्पूर्णघटेनाप्लावयेच्छिवाम् ।
त्वां स्नापयन्तु शक्राद्या लोकपालाः समागताः ॥५०१॥
सागरोदकपूर्णेन तुर्येण कलशेन हि ।
अभावेनाम्बुना देवीं स्नापयेन्मनुनाऽमुना ॥५०२॥
वारिणा परिपूर्णेन पद्मरेणुसुगन्धिना ।
पञ्चमेनाभिषिञ्चन्तु नागास्त्वां कलशेन हि ॥५०३॥
पद्मपुष्पसमायुक्तजलकुम्भमनुस्त्वसौ ।
हिमवन्मेरुकैलाश अभिषिञ्चन्तु पर्वताः ॥५०४॥
निर्झरोदकपूर्णेन षष्ठेन कलशेन हि ।
अमुना निर्झराम्भोभिः स्नापयेत् परमेश्वरीम् ॥५०५॥

सर्वतीर्थाम्बुपूर्णेन कलशेन सुरेश्वरीम्।
सप्तमेनाभिषिञ्चन्तु ऋषयः सप्त खेचराः।।५०६।।
मन्त्रेणैतेन तीर्थाम्बुकुम्भेन स्नापनं चरेत्।
वसवस्त्वाऽभिषिञ्चन्तु कलशेनाष्टमेन तु।।५०७।।
सारसेनैव तोयेन दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।
देवीमनेन मन्त्रेण सिञ्चेत् कासारवारिणा।।५०८।।
धर्मो ज्ञानं च वैराग्यं तपः सत्यं क्षमा धृतिः।
यशो विवेको नियमो ब्रह्मचर्यं दया दमः।।५०९।।
शान्तिर्मौनं तथा शौचं सन्तोषो मितभाषिता।
यावत्यश्चोपनिषदः कैवल्यप्रतिपादकाः।।५१०।।
स्थावरं जङ्गमं चापि त्रैलोक्ये यत् प्रतिष्ठितम्।
यद्ब्रह्मसृष्टावुत्पन्नं मूर्त्तं चामूर्त्तमेव च।।५११।।
अचरं यच्चरं चापि यद्वाङ्मयमवाङ्मयम्।
ते सर्वे स्नापयन्तु त्वां नवमेन घटेन हि ।।५१२।।
स्नापयेच्छुद्धतोयेन चण्डिकां मनुनाऽमुना।
इत्युक्तं ते महास्नानं शरदर्चाविधौ प्रिये।।५१३।।
दिनान्तरेऽपि कुर्वीत भक्तश्चेद्भक्तिभावितः।
अनेन विधिना यस्तु स्नापयेज्जगदम्बिकाम्।।५१४।।
सप्तजन्मकृतात् पापान्मुक्तः स्यान्नात्र संशयः।
दिव्याष्टाब्दसहस्त्राणि देवीलोके वसेत् तथा।।५१५।।
नवम्यां तु महास्नानं धनपुत्रविवर्धनम्।
सहस्रयज्ञस्य फलं लभते नात्र संशयः।।५१६।।
राजा राज्यमवाप्नोति शत्रुनाशं तथैव च।
स्वाभीष्टमाप्नुवन्त्यन्ये महास्नानेन पार्वति।।५१७।।
महास्नानादनु ततो भूतेभ्यो बलिमुत्सृजेत्।
स कौलानां मांसमद्ये माषान्नं स्मृतिवर्त्तिनाम्।।५१८।।
गृहीत्वा तममूभ्यां वै मनुभ्यामुत्सृजेद्बलिम्।
भूताः प्रेताः पिशाचाश्च ये वसन्त्यत्र भूतले।।५१९।।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं बलिमेनं प्रसाधितम्।
पूजिता गन्धपुष्पाद्यैर्बलिभिस्तर्पितास्तथा।।५२०।।
देशादस्माद्विनिःसृत्य पूजां पश्यन्तु मत्कृताम्।
ताररावौ कूर्चभूतौ भ्यसन्तो भूत एव च।।५२१।।
ससन्ध्येष बलिर्हृच्च मन्त्रावेतावुदाहृतौ।

रावः फ्रैँ। भूतः स्फ्रोँ

अकृते बलिदाने तु महास्नानादनन्तरम्।।५२२।।
अफलं तद् भवेद्देवि! पूजाङ्ग हीयते तथा।
विलुम्पन्ति सदा लुब्धा न च गृह्णन्ति देवताः।।५२३।।
तस्माद् यत्नेन कर्त्तव्यं भूतानामपसारणम्।
लाजचन्दनसिद्धार्थभस्मदूर्वाक्षतादिकम् ।।५२४।।
गृहीत्वा ताररोषानु निश्रेण्यस्त्रे उदीरयेत्।
अपसर्पन्तु भूतास्ते ये भूताः शारदार्चिकाः।।५२५।।
भूतानामविरोधेन देवीपूजां करोम्यहम्।
वेतालाश्च पिशाचाश्च राक्षसाश्च सरीसृपाः।।५२६।।
अपसर्पन्तु सर्वत्र मन्त्ररूपास्त्रताडिताः।
अन्ते मनूनामेतेषां हूँ अः फडिति कीर्त्तयेत्।।५२७।।
भूतादीनपसार्याथ द्वारपालेभ्य एव च।
त्रपाहृद्विल्वशाखान्ते वासिन्यै तदनन्तरम्।।५२८।।
दुर्गायै कूर्चमस्त्रं च मन्त्रेणैतेन पार्वति!।
पाद्यादिभिः समभ्यर्च्च्य कुर्यान्नीराजनाविधिम्।।५२९।।
द्वारदेशं समानीय कुर्यान्निर्मच्छनं ततः।

इति तन्त्रान्तर वचनात्।

तथा-

धृत्वाऽऽसनं ततो देवीं पत्रिकां मृण्मयीमपि।।५३०।।
सञ्चाल्य गीतवाद्यादीनिमं मन्त्रं समुच्चरेत्।
स्थापयेत् सुस्थिराकारां ततः कल्पित आसने।।५३१।।
तारत्रपारावलक्ष्मीयोगिनीकामयोषितः ।
डाकिनीं चापि फेत्कारीं चण्डिके भगवत्यपि।।५३२।।
चलद्वयं चालय द्विर्वर्जकापालिनीत्यपि।
पूजालयं द्विः प्रविश हूँ फट् स्वाहा ततः परम्।।५३३।।
आगच्छ मद्गृहे देवि सह शक्तिभिरष्टभिः।
पूजां गृहाण विधिवत् सर्वकल्याणहेतवे।।५३४।।
अनेन स्थापयेद् देवीं सर्वकल्याणदायिनीम्।
दिनत्रयस्य पूजार्थं वेदिकाद्यासनादिषु।।५३५।।

त्रपा ह्रीं। रावः फ्रैँ। योगिनी छ्रीँ। कामः क्लीँ। योषित् स्त्रीँ।
डाकिनी ख्फ्रैँ। फेत्कारी हस्ख्फ्रैँ।

तथा-

तारचिद्रावडाकिन्यः स्थाँ स्थीँ त्वमम्बिके तथा।
स्थिरीभव शिरश्चेति स्थिरीकुर्यात्ततः परम्।।५३६।।

चिद्वाग्भवम्।

कलशस्थापनमाह।

ततः पुनर्विरचिते सर्वतोभद्रमण्डले।
चित्रितं पञ्चवर्णेन दध्यक्षतफलान्वितम्।।५३७।।
पञ्चरत्नेन हेम्ना च गर्भगेन विभूषितम्।
पट्टाच्छादनसंवीतग्रीवं पल्लवशोभितम्।।५३८।।
ब्रीहीनां वा यवानां वा स्थापयित्वोपरि प्रिये।
वैदिकेन विधानेन कलशस्थापनं चरेत्।।५३९।।
भूमिं स्पृष्ट्वा जपेन्मन्त्रं भूरसीति वरानने!।
अथ धान्यमसीत्युक्त्वा ब्रीहीणे वाऽभिमन्त्रयेत्।।५४०।।
आजिघ्रेत्युच्चरन्मन्त्रं कलशं तत्र विन्यसेत्।
वरुणस्येति मन्त्रेण पाथोभिः परिपूरयेत्।।५४१।।
काण्डात् काण्डादिति प्रोच्य पल्लवं विन्यसेत् ततः।
फलं वा फलिनीत्युक्त्वा श्रीश्चेत्युक्त्वा प्रसूनकम्।।५४२।।
गन्धद्वारेत्यो गन्धं सहस्रेत्यक्षतं न्यसेत्।
स्थिरीभवेति मन्त्रेण स्थिरीकरणमाचरेत्।
वल्मीककुञ्जररदनदीसङ्गमपर्वतात् ।।५४३।।
गोकुलाद्देवनृपतिद्वारादपि च मृत्तिकाः।
आहृत्य हार्दमन्त्रेण प्रत्येकं निःक्षिपेद् घटे।।५४४।।

हार्दमन्त्रेण नम इत्ति मन्त्रेण।

पूर्ववत् सर्ववस्त्वादिशोधनं विदधीत वै।।५४५।।
प्रागुदीरितमन्त्रेण तथैवालोकनेन च।
यदात्मना ऽनवज्ञातं पूजाद्रव्यादिदूषणम्।।५४६।।
अस्पृश्यस्पर्शनं वाऽपि यदन्यायार्जितं च वा।
तथा निर्माल्यसंस्पृष्टं कीटारोहणदूषितम्।।५४७।।
नश्यन्ति तानि सर्वाणि दूषणान्यवलोकनात्।
भूतापसारणं कृत्वा भूतशुद्धिं विधाय च।।५४८।।
सम्पूज्यासनमात्मीयं गणेशगुरुदेवताः।
नत्वा विदध्यात् तदनु प्राणायामत्रयं बुधम्।।५४९।।

पत्रिकायास्ततः कुर्यादृष्यादि यतमानसः।
शरत्कालीन दुर्गार्चाविधेरस्य हि नारदः।।५५०।।
ऋषिश्छन्दश्च गायत्रीश्रीदुर्गा देवता मता।
बीजं ह्रीमिति निर्दिष्टं शक्तिः श्रीमपि पार्वति।।५५१।।
कीलकं क्लीमिति प्रोक्तं पूजायां विनियोगता।
अस्मिन्नेव ह्यवसरे सल्पं केऽपि कुर्वते।।५५२।।
काम्यत्वान्नेतरे चास्य नित्यत्वान्नित्यकृत्यवत्।
क्रियते यदि सङ्कल्पस्त्र्यहस्याप्येक एवं हि।।५५३।।
एकप्रयोगसंहारात् फलैक्याच्च विसर्जनात्।
पीठे मूर्त्तौ च नित्यं तमृषिं तत्तन्मनोश्चरेत्।।५५४।।
मृण्मूर्तिपत्रिकापक्षे मन्त्रं सर्पिं निशामय।
आदो वेदादिमालेख्य द्विवारं दुर्ग ईरयेत्।
सम्बुद्धिरथ रक्षिण्याः शिरसा सहकीर्त्तयेत्।।५५५।।
पत्रिकार्चोपचारादिप्रदानार्थ मनुस्त्वमौ।
एकं द्वे द्वे त्रीणि च द्वे सकलो मन्त्र एव च।।५५६।।
कराङ्गुलीहृदादिष्वमी न्यस्या मन्त्रवर्णकाः।

तथा

नित्यपीठे पुरोदीर्णं स्वं स्वं ध्यानं समाचरेत्।।५५७।।
माहेयपीठिकापक्षे ध्यानमाकलय प्रिये।।५५८।।
निस्तप्तस्वर्णवर्णाभां नवतारुण्यशालिनीम्।
पूर्णचन्द्राभवदनां जटामुकुटमण्डिताम्।।५५६।।
लोलदीर्घासितत्र्यक्षां खण्डेन्द्वाबद्धशेखराम्।
दाडिमीकुसुमाकारदन्तपङ्क्तिविराजिताम् ।।५६०।।
उत्तुङ्गपीनवक्षोजां बलित्रयविराजिताम्।
अतिक्षामोदरीं देवीं नितम्बाभोगभासुराम्।।५६१।।
त्रिभङ्गस्थानकतया भज्यन्मध्यामिव स्थिताम्।
बाहुभिर्दशभिर्युक्तां सर्वालङ्करणान्विताम्।।५६२।।
शूलं कृपाणं चक्रं च बाणं शक्तिं च दक्षिणे।
धारयन्तीमथो वामे पाशचर्माङ्कुशं धनुः।।५६३।।
कण्ठीरवोपरिन्यस्तदक्षिणाङ्घ्रिसरोरुहाम् ।
संमुखस्थितसंछिन्नमहिषासुरमस्तकाम् ।।५६४।।

कण्ठनालोत्थदितिजसकिरीटकचोच्चयाम् ।
पाशं वामकरेणेव बिभ्रतीं परमेश्वरीम् ।।५६५।।
शूलेन हृदि निर्भिन्नं पश्यन्तीं दानवं रुषा।
पाशाकारमहानागवेष्टितोदरबाहुकम् ।।५६६।।
भ्रुकुटीभीषणाकारं शोणितार्द्रकलेवरम्।
आकृष्टासिनिगलितकफोणिं हरिणा हठात्।।५६७।।
स्रवद्रुधिरसंदोहवदनेन महात्मना।
स्तूयमानां सुरैः सर्वैर्ब्रह्माजेशमुखादिभिः।।५६८।।
लीलया दानवं हत्वा किञ्चित् किञ्चिद्धसन्मुखीम्।
उग्रचण्डा प्रचण्डा च चण्डोग्रा चण्डनायिका।।५६९।।
चण्डा चण्डवती चैव चण्डरूपा च चण्डिका।
आभिः शक्तिभिरष्टाभिः सततं प्ररिवेष्टिताम्।।५७०।।
चिन्तयेदीदृशीं दुर्गां धर्मकामार्थमोक्षदाम्।
ध्यात्वेत्थं मानसैरेवोपचारैः परिपूज्य च।।५७१।।
पूर्वोक्तेनैव विधिना विदध्यादर्घसंस्थितिम्।
नैमित्तिकविधानेन विस्तारो यत्र कीर्त्तितः।।५७२।।
सत्यां शक्तौ तु पाद्यादीन् पृथक्त्वेन प्रविन्यसेत्।
अर्घस्योत्तरतः कार्य पाद्यमाचमनीयकम्।।५७३।।
स्नानीयं मधुपर्कं च उपचारास्तथा मया।
अस्मिन्नेव क्षणे देवीपञ्चायतनपूजकः।।५७४।।
गणेशार्कहरीशानां सम्भारैः कल्पितैर्यजेत्।
पीठार्चनं ततः कुर्यात् सामान्यं प्रथम बुधः।।५७५।।
सर्वशेषे योगरत्नं शेषमन्त्रोपबृंहितम्।
विधाय च पुनर्ध्यानमावाहनमथाचरेत्।।५७६।।
मुद्राविभक्तिकलितं साधको मीलितेक्षणः।
मूलमन्त्रेणाथ सावयवीकृत्य विभावनैः।।५७७।।
मन्वक्षरैः षडङ्गानि विन्यसेत् तदुपस्पृशन्।
मूलपीठप्रतिष्ठायां यो मनुः प्रागुदीरितः।।५७८।।
यन्त्रमूर्त्यांस्तु तेनैव प्रतिष्ठां स्थिरयोश्चरेत्।
मृन्मूर्तिपत्रिकाकुम्भशूलास्यादिष्वपि प्रिये।।५७९।।
केचनेच्छन्ति तन्मन्त्रं नैव कापालिकादयः।
अन्यान् पौराणिकान् मन्त्रान् वैदिकानपि काँश्चन्।।५८०।।

ईरयेत् पीठिकाकुम्भमाहेयप्रतिमादिषु।
ताँस्ते वदामि सुतनु नन्दिकेश्वरभाषितात्।।५८१।।
हस्तं दत्त्वा पत्रिकायां तारादि तत्सदित्यपि।
त्रिरुदीर्य पठेन्मन्त्रानेवैतान् स्थिरपीठयोः।।५८२।।
आगच्छ मद्गृहे देवि अष्टाभिः शक्तिभिः सह।
पूजां गृहाण विधिवत् सर्वकल्याणकारिणि।।५८३।।
एह्येहि भगवत्यम्ब शत्रुक्षयजयप्रदे।
भक्तितः पूजयामि त्वां नवदुर्गे सुरार्चिते।।५८४।।
दुर्गे देवि समागच्छ सान्निध्यं चापि कल्पय।
यज्ञभागं गृहाण त्वमष्टाभिः शक्तिभिः सहः।।५८५।।
शारदीयामिमां पूजां करोमि त्रिदशार्चिते।
आज्ञापय महादेवि! दैत्यदर्पनिषूदनि।।५८६।।
दुष्पारे घोरसंसारे सागरे पतितं सदा।
त्रायस्व वरदे देवि! नमस्ते शङ्कर प्रियेः।।५८७।।
ये देवा याश्च देव्यश्च चालितायां चलन्ति हि।
आवाहयामि तान् सर्वांश्चण्डिके परमेश्वरि!।।५८८।।
प्राणान् रक्ष यशो रक्ष रक्ष दारान् सुतं धनम्।
सर्वरक्षाकरी यस्मात् त्वं हि देवि! जगत्प्रिये!।।५८९।।
प्रविश्य तिष्ठ यज्ञेऽस्मिन् यावत् पूजां करोम्यहम्।
मेनानन्दकरे! देवि! सर्वसिद्धिं च देहि मे।।५९०।।
आगच्छ चण्डिके! देवि! सर्वकल्याणहेतवे।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शङ्करप्रिये!।।५९१।।
आवाहयामि देवि! त्वां मृण्मये श्रीफले तथा।
त्रिशूले कलशे खड्गे मण्डले चित्र एव च।।५९२।।
कैलाशशिखराद्देवि विन्ध्याद्रेर्हिमपर्वतात्।
आगत्य विल्वशाखायां चण्डिके कुरु सन्निधिम्।।५९३।।
स्थापिताऽसि मया देवि! पूजये त्वां प्रसीद मे।
चण्डे चण्डात्मिके! चण्डि! चण्डविग्रहधारिणि!।।५९४।।
विल्वशाखां समाश्रित्य तिष्ठ देवि! गणैः सह।
अथवा मृण्मये कुम्भे त्रिशूले खड्ग एव च।।५९५।।
तथा चित्रपटे वाऽरिनृमुण्डे वह्निमण्डले।
सर्वगा त्वं समागत्य सान्निध्यमिह कल्पय।।५९६।।

देवि त्वं जगतां मातः सृष्टिसंहारकारिणि।
मण्डलेषु समस्तेषु सान्निध्यमनुकल्पय।।५९७।।
चतुर्विंशतिसङ्ख्येषु अधिष्ठेयेषु चण्डिके।
आगत्य शारदीं पूजां गृह्ण देवि प्रसीद मे।।५९८।।
आवाहिताऽसि देवि! त्वं निखिले मण्डले तव।
भूत्वाऽत्रैव स्थिरात्म त्वं मद्गेहे कामदा भव।।५९९।।
चण्डि त्वं चण्डरूपाऽसि सुरतेजः समुद्भवे।
परिवारैः समागत्य स्थितिमत्र कुरु द्रुतम्।।६००।।
अष्टादशैतान् प्रजपेन्मन्त्रान् पौराणिकान् प्रिये!।
ततो हंसः शुचीत्येवं प्रतीद्विष्णुस्तवेत्यपि।।६०१।।
तथा विष्णुर्योनिमिमिति तार्त्तीयकत योदितम्।
तारव्याहृतिपूर्वा च गायत्री तारपश्चिमा।।६०२।।
त्र्यम्बकं चेति पञ्चैतान् वैदिकान् प्रजपेन्मनून्।
नेमानपि स्थिरे पीठे मूर्तौ वा परिकल्पयेत्।।६०३।।
अतः प्राणप्रतिष्ठां वै कुर्वीत मनुविस्तरैः।
आद्येन नित्यख्यातेन निमितोक्तेन तत्परम्।।६०४।।
आख्यास्यमानतार्त्तीयमनुना तदनन्तरम्।
तच्च शारदपूजायां नेतरस्यां कदाचन।।६०५।।
पीठमूर्त्योरपि तथा मण्डले नेतरत्र तथा।
तारमैधत्रपारावयोगिन्यो डाकिनी च।।६०६।।
फेत्कारीकूर्चवनिता बीजनीमानि वै नव।
एह्येहि भगवत्येवं ततो ब्रूयात् पदत्रयम्।।६०७।।
त्रयस्त्रिंशत्कोटिपदात् तथा त्रिदशशब्दतः।
तेजः कल्पितशब्दाच्च शरीरे परिकल्पयेत्।।६०८।।
पदात् तथा च महिषासुरतो मर्दिनीत्यपि।
ततो जगत्त्रयेत्युक्त्वा पालिनि प्रतिकीर्त्तयेत्।।६०९।।
कामप्रसादपाशाश्च नृसिंहकमले ततः।
आगच्छद्वितयं चापि सान्निध्यं कल्पद्वयम्।।६१०।।
पूजालयं प्रविश्योक्त्वा तिष्ठयुगमतः परम्।
ततो विसन्ध्यष्टशक्तिपदात् परिवृते वदेत्।।६११।।
ज्वलयुग्मं प्रज्वलयुगं स्फुर स्फुर चेदृशम्।
अङ्कुशप्रेतभैरव्योऽमाहारप्रलयास्ततः ।।६१२।।

विद्युन्महाक्रोधताराः शिरः शेषे ततःपरम्।
शतमष्टादशोपेतं वर्णानामत्र वै मनौ।।६१३।।
मन्त्रत्रयेणामुनैव कुर्यात् प्राणप्रतिष्ठितम्।
मृण्मूर्तिपत्रिकाकुम्भादिषु सर्वान्तिमं मनुम्।।५१४।।
श्रौतं पठेन्मनोजूतिरिति कौलेतरो नरः।
नैमित्तिकोक्तेन तथा कुर्यादावाहनं ततः।।६१५।।
मन्त्रेण त्रिरुदीर्णेन न पत्र्यां पीठं एव हि।
अथ कौलादयः कुर्युरस्मिन्नवसरे प्रिये।।६१६।।
नैमित्तिकेन विधिना पात्रस्थापनमुत्तमम्।
न्यासौघान् पुरतः कृत्वा नैमित्तिकविधीरितान्।।६१७।।
शक्तौ तु पञ्चकान् सर्वान् षोढ़ात्रितयमेव हि।
माहेयपत्र्योर्नैतां वै प्रकुर्वीत कदाचन।।६१८।।
पात्राणां स्थापनं चापि कुर्यात् स्वेन मतेन हि।
विचाररीति एषां वै नैमित्तिक उदीरिते।।६१९।।
सा कल्पना च ते मन्त्राः स क्रमः संस्थितिश्च सा।
ते न्यासाः शोधनं तच्च वस्तु वा तर्पणं च तत्।।६२०।।
शरदर्चापीठमूर्त्योर्नैमित्तिकसमर्हणात् ।
कस्यापि मत ईशानि नैवाणुरपि भिद्यते।।६२१।।
विशिष्यातो मया तन्त्रपौराणिकविधिद्वयम्।
उच्यते स मनुः प्रायो बुद्धिमद्बुद्धिगोचरम्।।६२२।।
पत्रिकादिषु पौराणं तान्त्रिकं पीठ एव हि।
वस्त्वर्पर्णस्य प्रत्येकं ये मन्त्राः पूर्वमीरिताः।।६२३।।
नैमित्तिकार्चनविधौ ग्राह्यास्तेऽत्रापि पार्वति।
प्रत्येकं मनवो ये वै पत्रिकादिषु संस्थिताः।।६२४।।
तानिदानीं प्रवक्ष्यामि तत्तद्वस्त्वर्पणाविधौ।
यथा तत्तन्मनूच्चारादनुमूलमनूदितान्।।६२५।।
कथ्यते वस्तुदानाय तथाऽत्रापि सुरेश्वरि!।
पौराणिकमनुं प्रोच्य तदन्ते परिकीर्त्तयेत्।।६२६।।
द्वात्रिंशद्वर्णकं मन्त्रमथ वा भैरवोदितम्।
कात्यायनोपासितं यज्जयदुर्गादशाक्षरम्।।६२७।।
ताभ्यां पौराणिकार्चायां वस्तुदानसमुद्धृतेः।
द्वयोरशक्तावेकं वा आवश्यकतयेरयेत्।।६२८।।

वक्ष्ये तयोरुद्धृतिं तदाद्यं नन्दीश्वरार्चितम्।
तारत्रपाभ्यां ङेन्ता स्याद्दक्षयज्ञविनाशिनी।।६२९।।
महाघोराऽपि च तथा योगिनीकोटिशब्दतः।
तद्वत् परिवृता कार्या मायाबीजं ततः परम्।।६३०।।
पूर्ववद्भद्रकाली च हृन्मन्त्रः सर्वशेषगः।
अथ वा तारतो दुर्गा इति वारद्वयं वदेत् ।।६३१।।
सम्बुद्ध्यन्तां रक्षर्णी च तर्जनीमनुरन्त्यगः।
यद्यपीमौ मनू देवि! तान्त्रिकौ समुदीरितौ।।६३२।।
तथाऽपि पौराणिकान्ते नियोज्यौ तत्तदर्हणे।
अथ सर्वोपचारीयान् वक्ष्ये पौराणिकान् मनून्।।६३३।।
पूर्वमेवोदिताः सन्ति निमित्तार्चासु तान्त्रिकाः।
त एवात्र नियोक्तव्याः प्रत्येकं तत्तदर्पणे।।६३४।।
पत्रिकादिषु पौराणाः पीठमूर्त्योस्तु तान्त्रिकाः।
आसनं पाद्यमर्घ्यं च ततोऽन्वाचमनीयकम्।।६३५।।
मधुपर्कं स्नानजलं वस्त्रं भूषणचन्दने।
पुष्पं धूपं च दीपं च नेत्राञ्जनमतः परम्।।६३६।।
अलक्तं चापि नैवेद्यं प्रदक्षिणनमस्कृती।
उपचारा इमे प्रोक्ता देवींतुष्टिविधायकाः।।६३७।।
यद्यद्वै दीयते द्रव्यमलङ्कारादिकाञ्चनम्।
तेषां दैवतमुच्चार्य कृत्वा च प्रोक्षणार्चने।।६३८।।
उत्सृज्य तत्तन्मन्त्रेण तत्तन्नाम्ना निवेदयेत्।
सर्वशुद्धिं तु पौराणक्रमेण धरयाऽऽचरेत्।।६३९।।
इदं त आसनं दत्तं मया सुरवरार्चिते।
भवैतस्मिन्निषण्णा त्वं यावत्र् पूजां करोम्यहम्।।६४०।।
दूर्वापराजितापद्मश्यामाकसहितं जलम्।
पाद्याय कल्पते देवि विशेषार्चासु नान्यथा।।६४१।।
पाद्यं गृह्ण महादेवि! सर्वदुःखापहारकम्।
त्रायस्व वरदे देवि घोरादस्माद्भवार्णवात्।।६४२।।
स्नाने वस्त्रे च नैवेद्ये दद्यादाचमनीयकम्।
तच्च स्वधापदैर्दद्यान्मधुपर्कं तथा प्रिये।।६४३।।
अर्घ्यं स्वाहापदेनैव सर्वमन्यन्नमः पदैः।
गन्धपुष्पाक्षतयवकुशाग्रतिलसर्षपान् ।।६४४।।

विल्वपत्रक्षीरदूर्वासहितं सलिलं शुचि।
शङ्खपात्रगतं कृत्वा कालिकायै निवेदयेत्।।६४५।।
दूर्वाक्षतसमायुक्तं विलपत्रसमन्वितम्।
शोभनं शङ्खपात्रस्थं गृहाणार्घं हरप्रिये।।६४६।।
नानातीर्थोद्भवं वारि सर्ववस्तुकल्पितम्।
गृहाणार्घमिमं देवि जगद्धात्रि नमोऽस्तु ते।।६४७।।
चन्द्रजातीलवङ्गैलाकक्कोलसहितं जलम्।
विशेषाचमनीयं वै दद्याद्देव्यै फलेच्छया।।६४८।।
आमोदवस्तुसुरभीकृतमेतदनूत्तमम्।
गृहाणाचमनीयं त्वं मया भक्त्या निवेदितम्।।६४९।।
इमा आपो मया भक्त्या तव पादतलेऽर्पिताः।
आचामय महादेवि! प्रीता शान्ति प्रयच्छ मे।।६५०।।
सुराभावे घृतदधि मधु कांस्ये निवेदयेत्।
मधुपर्कं तदुद्दिष्टं प्रार्थनीयं दिवौकसाम्।।६५१।।
मधुपर्कं महेशानि ब्रह्मणा परिकल्पितम्।
मया निवेदितं तुभ्यं गृहाण जगदीश्वरि!।।६५२।।
मधुपर्कप्रदानान्ते पुनराचमनीयकम्।
दातव्यं प्राशनान्तेऽस्य यत उच्छिष्टता भवेत।।६५३।।
वारीदं हि ममामोदि प्रसन्नं मेध्यमेव च।
मया निवेदितं भक्त्या स्नाह्मनेन सुरेश्वरि!।।६५४।।
नानावर्णसमायुक्तपट्टसूत्रादिनिर्मितम्।
वासः शुक्लं तथा रक्तं गृहाण त्रिदशेश्वरि!।।६५५।।
देहशोभाकरं पूतं रञ्जितं नागवस्तुभिः।
परिधत्स्व जगद्धात्रि वासो भक्त्या निवेदितम्।।६५६।।
वाससः परिधानान्ते पुनराचमनीयकम्।
दातव्यं भक्तिभावेन स्मृत्युक्तत्वान्मनुष्यवत्।।६५७।।
दिव्यरत्नसमायुक्ता वह्निभानुसमप्रभाः।
अलङ्कारास्तवाङ्गानि शोभयन्तु सुरेश्वरि।।६५८।।
अनुलेपनमेतत् ते महासुरभि शीतलम्।
मया निवेदितं देवि! गृहीत्वा लेपयाङ्गकम्।।६५९।।
इदं कुसुममामोदि ग्रामारण्यसमुद्भवम्।
प्राणसन्तर्पणं हृद्यं मयां दत्तं प्रगृह्यताम्।।६६०।।

कपूर्रागुरुसंमिश्रो वनस्पतिरसोद्भवः।
मया निवेदितो धूपो देवदेवि प्रगृह्यताम्।।६६१।।
अग्निज्योतो रविज्योतिश्चन्द्रज्योतिस्त्तथैव च।
ज्योतिषामुत्तमं ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।६६२।।
त्वं चन्द्रसूर्यज्योतींषि विद्युदग्न्योस्त्तथैव च।
त्वमेव जगतां ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।६६३।।
स्निग्धमुष्णं हृद्यतमं दृशां शोभाकरं तव।
गृहीत्वा कज्जलं सद्यो नेत्राण्यञ्जय पार्वति!।।६६४।।
त्वत्पादाम्भोजनखरद्युतिकारि मनोरमम्।
अलक्तकमिदं देवि मया दत्तं प्रगृह्यताम्।।६६५।।
नानाविधानि रम्याणि स्वादूनि रसवन्ति।
मया दत्तानि गृह्यन्तां नैवेद्यानि सुरार्चिते।।६६६।।
फलमूलानि सर्वाणि ग्रामकाननजानि च।
नानाकारसुगन्धीनि गृहाण परमेश्वरि!।।६६७।।
चतुर्विधमिदं भोज्यं देवि षड्भी रसैर्युतम्।
सदा तृप्तिकरं रम्यमिदमन्नं प्रगृह्यताम्।।६६८।।
गव्यसर्पिःपयोयुक्तं नानामधुरमिश्रितम्।
निवेदितं देवि मया परमान्नं प्रगृह्यताम्।।६६९।।
अमृतै रचितं दिव्यं घृतखण्डविनिर्मितम्।
पिष्टकं विविधं स्वादु गृहाण हरवल्लभे।।६७०।।
मोदकं स्वादु रुचिरं कर्पूरादिभिरन्वितम।
मिश्रं नानाविधैर्द्रव्यैः प्रतिगृह्याशु भुज्यताम्।।६७१।।
ताम्रपात्रे स्थितं सीधु पयो गव्यमथात्र वा।
नारिकेलोदकं कांस्ये गृहाण शङ्करप्रिये!।।६७२।।
पानीयं शीतलं स्वच्छं प्रसन्नं घनसारयुक्।
भोजने तृप्तिकृद्देवि कृपया प्रतिगृह्यताम्।।६७३।।
भोजनान्ते प्रदातव्यं पुनराचमनीयकम्।
पूर्वोक्तेनैव मन्त्रेण सर्वत्रैव शुचिस्मिते!।।६७४।।
फलपत्रकसंयुक्तं कर्पूरादिसुवासितम्।
मुखकान्तिकरं हृद्यं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।६७५।।
दूर्वाङ्कुरं ततो देव्यै दद्यात् साधकसत्तम्।
नमस्ते सर्वगे देवि नमस्ते भुक्तिमुक्तिदे।।६७६।।

दूर्वां गृहाण देवि त्वं मां निस्तारय सङ्कटात्।
विल्वपत्रं ततो देव्यै पृथक्त्वेन निवेदयेत्।।६७७।।
अमृतोद्भवं श्रीयुक्तं महादेवप्रियं सदा।
पवित्रं ते प्रयच्छामि पत्रं मालूरशाखिनः।।६७८।।
नानापुष्पेण रचितां स्तनबद्धा सुगन्धिनीम्।
प्रभ्रष्टां लम्बनां चापि तव देवि निवेदये।।६७९।।
सर्वशेषे प्रदातव्यं सिन्दूरं पत्रिकार्चने।
अनुलेपनकाले तु पीठमूर्त्त्योर्भिदेयती।।६८०।।
अलिकादिकशोभायाः कारकं रागसम्भवम्।
अतिरागि समुत्पिञ्जसिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।६८१।।
चमरीपुच्छजं श्वेतं हेमदण्डि सुलोम च।
मया ऽर्पितं राजचिह्नं चामरं प्रतिगृह्यताम्।।६८२।।
वर्हिवर्हकृताकारं मध्यदण्डसमन्वितम्।
गृह्यतां व्यजनं देविः देहस्वेदापनत्तये।।६८३।।
येन भीषयसे दैत्यान् येन पूरयसेऽम्बरम्।
तां घण्टां ते प्रयच्छामि महिषघ्नि प्रसीद मे।।६८४।।
दीपैरनेकैर्विहितमारात्रिकमिदं शुभम्।
निवेदयामि ते देवि संहराज्ञानजं तमः।।६८५।।
सर्वशेषे प्रदातव्यं पुष्पाणामञ्जलित्रयम्।
तन्मनुस्तु वरारोहे दुर्गागायत्र्युदीरिता।।६८६।।
ॐ चण्डिकायैविद्महे भगवत्यै धीमहि तन्नो गौरी प्रचोदयात्।
अनेन विधिना यस्तु मन्त्रैरेभिश्च पार्वतिः।
महिषघ्नीं महामायां पत्रिकासु प्रपूजयेत्।।६८७।।
अश्वमेधफलं प्राप्य स गच्छेच्चण्डिकालयम्।
इहापि च भवेत् सद्यः कल्याणानां स भाजनम्।।६८८।।
पूजारीतिर्वरारोहे पीठमूर्त्त्योरपीदृशी।
मन्त्रभेदः परो ज्ञेयः पात्राणां स्थापनं तथा।।६८९।।
प्रत्येकं तु ततः कुर्यात् पत्रिकाणां तु पूजनम्।
यावच्छक्योपचारेण मन्त्रेणापि पृथक् पृथक्।।६९०।।
एका तत्तदधिष्ठात्री देवता परिकीर्त्तिता।
तत्तन्नाम्ना चतुर्थ्यन्तां समवाह्यार्चयेत् प्रिये!।।६९१।।

आदौ तु रम्भाधिष्ठात्री ब्रह्माणी परिकीर्त्तिता।
कालिका कच्च्यधिष्ठात्री त्रिपुरघ्नेन भाषिता।।६९२।।
दुर्गा हरिद्राधिष्ठात्री जयन्त्यां कार्त्तिकी तथा।
शिवा च विल्वाधिष्ठात्री दाडिमाधिष्ठिता तथा।६९३।।
शत्रुसङ्घक्षयकरी विज्ञेया रक्तदन्तिका।
मुनिभिः शोकरहिताऽशोकाधिष्ठात्र्युदीरिता।।६९४।।
तथैव मानाधिष्ठात्री चामुण्डा परिकीर्त्तिता।
लक्ष्मीश्च धान्याधिष्ठात्री नन्दीशेनोपपादिता।।६९५।।
नवपत्रिकाधिष्ठात्री कात्यायन्यप्युदीरिता।
यथाऽऽसां क्रमतो देवि नामान्युक्तानि ते मया।।६९६।।
तथैव मन्त्रमेकैकं क्रमेण प्रब्रुवेऽधुना।
ब्रह्माणि त्वं समागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय।।६९७।।
रम्भारूपेण सर्वत्र शान्तिं कुरु नमोऽस्तु ते।
महिषासुरयुद्धेषु कच्चीभूताऽसि कालिके।।६९८।।
मनुष्यानुग्रहार्थाय लोकमेनमुपागता।
हरिद्रे वरदे देवि दुर्गारूपाऽसि शोभने ।।६९९।।
मम विघ्नविनाशाय पूजां गृह्ण प्रसीद मे।
निशुम्भशुम्भमथने सेन्द्रैर्देवगणैः पुरा।।६१०।।
जयन्ती पूजिताऽसि त्वमस्माकं वरदा भव।
महादेवप्रियकरो वासुदेवप्रियः सदा।।७०१।।
सदा कालीप्रीतिकरो विल्ववृक्ष नमोऽस्तु ते।
दाडिमि त्वं पुरा युद्धे रक्तबीजस्य संमुखे।।७०२।।
चामुण्डाप्रीतिमकरोत् तस्मात् त्वां पूजयाम्यहम्।
हरप्रीतिकरो वृक्षो ह्यशोकः शोकनाशनः।। ७०३।।
दुर्गाप्रीतिकरत्वेन मामशोकं सदा कुरु।
यस्य पत्रे वसेद्देवी मानवृक्ष शचीप्रिय।।७०४।।
ममैवानुग्रहार्थाय पूजां गृह्ण सुरेश्वरि!।
जगतः प्राणरक्षार्थं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा।।७०५।।
उमाप्रीतिकरं धान्यं तस्मात् त्वं रक्ष मां सदा।
पत्रिके नवदुर्गे त्वं महादेवमनोहरे।।७०६।।
पूजां समस्तां संगृह्य रक्ष मां त्रिदशेश्वरि।
प्रत्येकमित्थं संपूज्य मन्त्रैरेतैरुदीरितैः।।७०७।।

नामाभ्यामपि ङेन्ताभ्यामुक्ताभ्यां पूर्वमेव ते।
सामान्यपीठन्यासोक्तनामभिर्ङेन्तबृंहितैः ।।७०८।।
दिक्पालानपि नित्योक्तवाहनायुधसंयुतान्।
वस्तुभिः पीठमूर्त्त्योस्तु नित्यनैमित्तिकोदितैः।।७०९।।
प्रावृत्त्यार्चनविस्तारैर्यजेत् परमेश्वरीम।
यावती कथिता नित्य इतिकर्त्तव्यता मया।।७१०।।
यथा नैमित्तिके चापि द्वयीमपि नियोजयेत्।
संप्रयोगममन्त्राणामवदं नैत्यके विधौ।।७११।।
तं केवलं विधायेशि सर्वमन्यमुपाचरेत्।
नैमित्तिकीयः संग्राह्योऽन्यः सर्व उभयात्मकः।।७१२।।
प्रयोगो यादृशीयस्तु तादृशीयं हि तर्पणम्।
शक्तौ तु पत्रिकार्चायां दशास्त्राणि प्रपूजयेत्।।७१३।।
ङेऽन्तैस्तारहृदोर्मध्याधिष्ठितैस्तत्तदक्षरैः ।
ततोऽनु सर्वपूजान्ते पूजयेन् महिषासुरम्।।७१४।।
बलिं दद्यात् स्वशक्त्या च पशुनपि खगानपि।
नैमित्तिक तद्विधानं प्रागेव तव कीर्त्तितम्।।७१५।।

।। इति सप्तमीकृत्यम् ।।

अथाष्टमीकृत्यम्

तत्रैव

एतावत् सप्तमीकृत्यमथाष्टम्यर्चनं शृणु।
सप्तम्युक्तविधानं हि पूर्वमेवानुवर्त्तते।।७१६।।
अधिकं यत् तदाख्यास्ये सर्वमन्यत् पुरोक्तवत्।
शोधनं द्रव्यजातानामासनादेस्तथैव च।।७१७।।
प्राणायामो भूतशुद्धिर्मातृकान्यास एव च।
तथा पीठषडङ्गाख्यन्यासौ न्यासान्तराण्यपि।।७१८।।
विधाय पूर्वोक्तरीत्या च महास्नानं तथैव च।
दर्पणे प्रतिबिम्बं च कारयित्वा पुरोक्तवत्।।७१९।।
दन्तकाष्ठं निवेद्याथ संकल्पं विरचय्य च।
अर्घसंस्थापनादीनि विधाय च पुरोक्तवत्।।७२०।।
समाप्यात्मार्चनं चापि घटे गणपतिं यजेत्।
सूर्यादीनपि पञ्चायतनान् संपूज्य यत्नतः।।७२१।।

ध्यात्वाऽथ मानसैरेवोपचारैः परिपूज्य च।
उपचारैः षोडशभिर्महामायां समर्चयेत्।।७२२।।
तैस्तैर्मन्त्रैस्तदनुक्रमतश्चापि पार्वति।
मुद्राप्रदर्शनैस्तैस्तैरुपचारनिवेदनैः ।।७२३।।
पीठमूर्त्योस्तान्त्रिकोक्तरीत्या पूजनमाचरेत्।
पत्रिकासु च पौराणक्रमतो जगदीश्वरि।।७२४।।
कृत्वाऽवरणपूजां हि पीठे द्वाभ्यां समाचरेत्।
नित्यनैमित्तिकोक्ताभ्यां महाष्टम्यर्चनक्रमे।।७२५।।
विशेषं कं चिदाख्यास्ये पत्रिकायाः प्रपूजने।
पूर्वादिवसुकोणेषु दशोपचरणैर्यजेत् ।।७२६।।
देव्याः शक्तीः क्रमेणैवोग्रचण्डाद्या विशेषतः।
मन्त्रमालामयीसंस्थैर्मन्त्रैरासां तु कौलिकः।।७२७।।
नन्दिकेशपुराणोक्तैर्मनुभिः पद्यरूपिभिः।
श्रुत्यध्वन्याः पूजयेयुरुग्रचण्डादिकाः प्रिये।।७२८।।
मनूँस्तदीयानधुना ब्रवीमि तव सुन्दरि!।
तारह्रीकमला आदौ मध्ये ङेन्ताभिधा तथा।।७२९।।
अन्ते हृन्मनुरेवं हि परिपाटी प्रकीर्त्तिता।
उग्रचण्डा तु भयदा मध्याह्नर्कसमप्रभा।।७३०।।
सा मे सदाऽस्तु वरदा तस्यै नित्यं नमो नमः।
प्रचण्डे पुत्रदे नित्यं प्रचण्डगणसंवृते।।७३१।।
जगदानन्ददे देवि प्रसन्ना भव सर्वदा।
चण्डोग्रे घोररूपाऽसि सर्वभूतभयप्रदा।।७३२।।
सौम्या भूता मयि सदा वरदा भव शोभने!।
या सिद्धिरिति नाम्ना तु देवेशेन प्रकाशिता।।७३३।।
शासि त्वं साऽसि देवेशि नमस्ते चण्डनायिके।
देवि चण्डात्मिके चण्डे चण्डारिविजयप्रदे।।७३४।।
धर्ममोक्षप्रदाऽसि त्वं नित्यं मे वरदा भव।
या सृष्टिस्थितिसंहार गुणत्रयसमन्विता।।७३५।।
यस्याः परा न चान्याऽस्ति चण्डवत्यै नमो नमः।
चण्डारूपा महाचण्डा चण्डनायकचण्डिका।।७३६।।
सर्वसिद्धिप्रदा देवि तस्यै नित्यं नमो नमः।
बालार्कारुणनेत्रा या सर्वदा भक्तवत्सला।।७३७।।

चण्डासुरस्य मथनी वरदा साऽस्तु चण्डिका।
ततोऽष्टदलपद्मस्य अष्टावृत्त्या दलेषु च।।७३८।।
यजेच्चतुःषष्टिमिता योगिनीगणरूपिणीः।
तारत्रयं पुरो दत्त्वा शेषे नाम इदं पदम्।।७३९।।
ङेन्तं ततो नाम तासां मध्ये कृत्वा नियोजयेत्।
उपचारैः पञ्चभिर्वा पुष्पैर्वा केवलाक्षतैः।।७४०।।
ब्रह्माणी चण्डिका रौद्री गौरीन्द्राणी तथैव च।
कौमारी भैरवी दुर्गा नारसिंही च कालिका।।७४१।।
चामुण्डा शिवदूती च वाराही कौशिकी तथा।
माहेश्वरी शङ्करी च जयन्ती सर्वमङ्गला।।७४२।।
करालिनी मुक्तकेशी शिवा शाकम्भरी तथा।
भीमा शान्ता भ्रामरी च रुद्राणी चण्डरूपिणी।।७४३।।
क्षमा धात्री स्वधा स्वाहा अपर्णा च महोदारी।
घोररूपा महाकाली विद्युज्जिह्वा कपालिनी।।७४४।
क्षेमङ्करी महामाया मेघमाला बलाकिनी।
शुष्कोदरी चण्डघण्टा महाप्रेता प्रियङ्करी।।७४५।।
खरतुण्डी ऋक्षकर्णी बलप्रमथनी तथा।
मनोन्मथन्यपि ततः सर्वभूतदमन्यपि।।७४६।।
उमा तारा महानिद्रा विजया च जया तथा।
शैलपुत्री महोल्का च त्रिशूलिन्यञ्जनप्रभा।।७४७।
कूष्माण्डी विश्वसंत्रासा तथा कात्यायनी परा।
कालरात्रिर्महागौरी चतुःषष्टिरिमा मताः।।७४८।।
पूजयेन्मण्डलस्यान्तः सर्वकामार्थसिद्धये।
पुनश्च कोटियोगिन्यः पूज्या एकाख्यया प्रिये!।।७४९।।
पद्मपत्राग्रभागेषु पूर्ववन्मन्त्रकल्पनैः।
ततो देवीसन्निधाने सम्यग्दुर्गाफलप्रदा।।७५०।।
ऐशान्यादिक्रमे द्वे द्वे मध्ये वा नव पूजयेत्।
आसामप्युग्रचण्डादिवन्मन्त्रः परिकीर्त्तितः।।७५१।।
पाद्यादिभिः पूर्ववच्च तत्तन्मन्त्रैः प्रपूजयेत्।
मृत्युञ्जयप्राणसंस्थैरथ पौराणिकैरपि।।७५२।।
पूर्वपक्षः कौलिकानामुत्तरः श्रुतिशालिनाम्।
तन्मन्त्रानधुना वक्ष्ये सावधाना निशामय।।७५३।।

चतुर्मुखीं जगद्धात्री हंसारूढ़ां वरप्रदाम्।
सृष्टिकर्त्रीं महाभागां ब्रह्माणीं तां नमाम्यहम्।।७५४।।
वृषारूढ़ां शिवां भद्रां त्रिनेत्रां वरदां शिवांम्।
माहेश्वरी नमस्यामि जगत्संहारकारिणीम् ।।७५५।।
कौमारी पीतवसनां मयूरवरवाहिनीम्।
शक्तिहस्तां शोणदेहां नमामि वरदां सदा।।७५६।।
शङ्खचक्रगदापद्मधारिणीं कृष्णविग्रहाम्।
स्थितिरूपां खगेन्द्रस्था वैष्णवीं प्रणमाम्यहम्।।७५७।।
वराहरूपिणीं देवीं दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धराम्।
शुभदां नीलवसनां वाराहीं तां नमाम्यहम्।।७५८।।
नृसिंहरूपिणीं भीमां दैत्यदानवघातिनीम्।
विकरालनखां शुभ्रां नारसिंहीं नमाम्यहम्।।७५९।।
इन्द्राणीं गजकुम्भस्थां सहस्रनयनां शुभाम्।
नमामि वरदां देवीं सर्वदेवनमस्कृताम्।।७६०।।
चामुण्डां मुण्डमथनीं मुण्डमालोपशोभिताम्।
अट्टाट्टहासमुदितां नमाम्यात्मविभूतये।।७६१।।
कात्यायनीं दशभुजां महिषासुरमर्दिनीम्।
प्रसन्नवदनां देवीं वरदां प्रणमाम्यहम्।।७६२।।
चण्डिके नवदुर्गे त्वं महादेवप्रिये सदा।
पूजां समस्तां संगृह्य रक्ष मां त्रिदशेश्वरि।।७६३।।
कात्यायन्याश्च दुर्गाया मन्त्रद्वयमिदं मतम्।
इमे तेनैव मन्त्रेण पूजयेत् सुरवन्दिते!।।७६४।।
पुनः पूर्वोक्तविधिना देवीरेकादशार्चयेत्।
जयन्तीं मङ्गलां कालीं भद्रकाली कपालिनीम्।।७६५।।
दुर्गां क्षमां शिवां धात्रीं स्वधां स्वाहां च पूजयेत्।
ततोऽस्त्रपूजां कुर्वीत सप्तम्यर्चनतोऽधिकाम्।।७६६।।
प्रणवाद्यैर्नमोऽन्तैश्च मन्त्रैरेव सुरेश्वरि!।
आदौ तु दक्षिणे भागे ततो वामे प्रपूजयेत्।।७६७।।
पाद्यादिभिस्त्रिशूलादीन् केवलैरक्षतैरथ।
सर्वायुधानां प्रथमो निर्मितस्त्वं पिनाकिना।।७६८।।
शूलसारं समाकृष्य कृत्वा मुष्टिग्रहं शुभम्।
असिर्विशसनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः।।७६९।।

श्रीगर्भो विजयश्चैव धर्मपाल नमोऽस्तु ते।
चक्र त्वं विष्णुरूपोऽसि विष्णुपाणौ सदा स्थितः।।७७०।।
देवीहस्तगतश्चासि चक्रराज नमोऽस्तु ते।
सर्वायुधानां श्रेष्ठस्त्वं दैत्यसेनानिषूदन।।७७१।।
भयेभ्यः सर्वदा रक्ष तीक्ष्णबाण नमोऽस्तु ते।
शक्ते त्वं सर्वदेवानां गुहस्य च विशेषतः।।७७२।।
शक्तिरूपेण सर्वत्र रक्षां कुरु नमोऽस्तु ते।
रक्षारूपेण खेट त्वमरिसंहारकारकः।।७७३।।
सदा देवीकरगतो मां रक्ष बहुसङ्कटात्।
सर्वायुधमहामात्र सर्वासुरनिषूदन।।७७४।।
चाप मां सर्वतो रक्ष साकं सायकसत्तमैः।
पाश त्वं नागरूपोऽसि विषपूर्णो विषोदरः।।७७५।।
शत्रूणां दुःसहो नित्यं नागपाश नमोऽस्तु ते।
अङ्कुशोऽसि नमस्तुभ्यं गजानां त्वं नियामकः।।७७६।।
देवानामपि रक्षार्थं पार्वत्याऽसि धृतः करे।
यस्या निनादमाकर्ण्य शकृन्मूत्रे प्रसुस्रुवः।।७७७।।
दैत्यसङ्घाः पाहि सा त्वं घण्टे नानाविधाद् भयात्।
परशो त्वमतितीक्ष्णोऽसि सर्ववैरिविमर्दन।।७७८।।
देवीहस्तगतश्चासि सदा तुभ्यं नमो नमः।
यान यानीह मुख्यानि प्रसिद्धान्यायुधानि च।।७७९।।
क्षयकारीणि शूत्रणां विख्यातानि जगत्त्रये।
यानि यान्यम्बिका धत्ते करेषु स्वेषु सर्वदा।।७८०।।
भुशुण्डीपाशपरिघभिन्दिपालास्तु लागुडाः।
ऋष्टितोमरकुन्ताश्च पट्टिशो मुशलस्तथा।।७८१।।
गदाशतघ्नीकुणपच्छुरिकाकर्त्तरीमुखाः।
सर्वांस्तान् पूजयाम्यद्य महाष्टम्यां विशेषतः।।७८२।।
सर्वे रक्षन्तु मां नित्यं सर्वसिद्धिं ददत्वपि।
तारात् कूर्चाच्च दुर्गायै सर्वायुधपदान्यपि।।७८३।।
धारिण्यै नम उच्चार्य दद्यात् पुष्पाञ्जलित्रयम्।
ततो देव्याः किरीटादीनलङ्कारान् प्रपूजयेत्।।७८४।।
ताराद्येन नमोऽन्तेन नाम्ना ङेऽन्तेन तस्य च।
ततः प्रपूजयेद्देव्याः सिंहासनमनुत्तमम् ।।७८५।।

ताराद्यन्त्रनखदंष्ट्रायुधाय परिकीर्त्य हि।
महासिंहाय हुँ हृच्च सिंहमेतेन पूजयेत्।।७८६।।
यथोपकल्पितैरेवोपचारैः कुसुमाक्षतैः।
तदन्ते मनुनैतेन देव्याः सिंहासनं यजेत्।।७८७।।
आसनं चासि देव्यास्त्वं घोरदंष्ट्रोत्कटान्वितः।
हिमाद्रिशिखराकार सिंहराज नमोऽस्तु ते।।७८८।।
देव्या दत्तवरत्वेन विशेषान्महिषासुरम्।
अष्टम्यां च नवम्यां च पूजयेद्बहुविस्तरैः।।७८९।।
यावच्छक्योपचारैस्तु पाद्यादिभिरनेकधा।
नमोऽन्तः प्रणवादिश्च ङेन्तोऽन्तर्महिषासुरः।।७९०।।
एतेन मनुना सर्वोपचारानस्य चार्पयेत्।
न सामान्यासुरधिया साक्षाद्रुद्रधियैव हि।।७९१।।
पूजान्ते कीर्त्तयेन्मन्त्रानमून् बद्धाञ्जलिः प्रिये।
रुद्रोऽस्यसुरराज त्वं देवानां दर्पनाशकः।।७९२।।
पितुर्वरप्रार्थनया महिषगर्भसम्भवः।
कात्यायन्या समं योद्धुं सामर्थ्य कस्य विद्यते।।७९३।।
केनासुरेण विधृतः समरे मधुसूदनः।
केनान्येन विजित्याजौ त्रिदशाः सेवकीकृताः।।७९४।।
मन्वन्तरत्रयं केन भुक्तं राज्यमकण्टकम्।
बभूव कस्य वा सेना परार्धशतसंमिता।।७९५।।
रुद्ररूपधरायातो महिषासुर ते नमः।
ततः संपूजयेद्देवि चतुरो बटुकानपि।।७९६।।
सिद्धपुत्रं ज्ञानपुत्रं तथा सहजपुत्रकम्।
शेषे समयपुत्रं च मन्त्रमेषां निशामय।।७९७।।
वेदादिकमलाबीजे पुरतोऽन्ते नमोऽपि च।
तत्तन्नाम्ना सह तथा वटुको विग्रहीकृत!।।७९८।।
सङेऽन्ते इति मन्त्राः स्युरेतेषां जगदीश्वरि!।
समस्तैरुपचारैस्तु यथाविभवकल्पितैः।।७९९।।
पूजयेद्वटुकानेताञ्छृण्वन्यावृत्तिपूजनम्।
पूजयेत् क्षेत्रपालाँश्च मध्ये किञ्जल्कपक्षयोः।।८००।।
हेतुकं त्रिपुरघ्नं च अग्निजिह्नं तथैव च।
अग्निवेतालसंज्ञं च कालं चाथ करालकम्।।८०१।।

एकपादं भीमनाथमुत्तरादिक्रमेण तु।
अधुना मन्त्रमेतेषां ब्रवीमि शृणु पार्वति!।।८०२।।
तारकूर्चक्षेत्रपालबीजत्रयमिदं पुरः।
एतन्नाम्ना सह पुनः क्षेत्रपालः सविग्रहः।।८०३।।
ङेन्तो महाभीषणश्च तद्वदेव प्रकीर्त्तितः।
क्रोधो हृच्छिरसी चापि मन्त्र एषां वरानने।।८०४।।
मण्डलस्य चतुर्दिक्षु द्वौ द्वौ मध्ये च पूजयेत्।
भैरवान् नव देवेशि! शरदर्चनकर्मणि।।८०५।।
असिताङ्गो रुरुश्चण्डः क्रोध उन्मत्त एव च।
आनन्दश्च कपाली च भीषणस्तदनन्तरम्।।८०६।।
संहारी सर्वशेषे स्यात् कीर्त्तिता नव भैरवाः।
तारत्रपारोषबीजं तत्तन्नाम ततः परम्।।८०७।।
भैरवान्तं विग्रहि च ङेन्तं हृन्मन्त्रसंयुतम्।
दिक्ष्वष्टसु बहिः पद्माद्दिगीशानष्ट पूजयेत्।।८०८।।
इन्द्रोऽग्निश्च यमश्चैव नैर्ऋतो वरुणस्तथा।
वायुः सोमश्च ईशान एतन्नाम्ना परिस्थिताः।।८०९।
वज्रं शक्तिश्च दण्डश्च खड्गः पाशोऽङ्कुशस्तथा।
ध्वजशूले अमीषां तु शस्त्राणि कथितानि ते।।८१०।
नैर्ऋतो वरुणश्चापि मध्येऽनन्तः प्रकीर्त्तितः।
तदस्त्रं चक्रमुदितं यथेन्द्रेशानमध्यतः।।८११।।
ब्रह्मा सपद्म इत्येते दिगीशा दश ईरिताः।
मन्त्ररीती इदानीं त्वं समाकल्पय भामिनि।।८१२।।
प्रणवं पुरतो दत्वा तत्तन्नाम ततः परम्।
ततः परं तत्तदस्त्रं सशब्दपरिबृंहितम्।।८१३।।
सवाहनपरीवारं सायुधं तदनन्तरम्।
शब्दाश्चत्वार इत्येते ङेन्ताः कार्य नमस्ततः।।८१४।।
ततो दद्याद्बलिं देव्यै पूर्वोदितविधानतः।
अष्टम्यामधिकं दद्यात् सप्तमीबलिदानतः।।८१५।।

तन्त्रान्तरे-
ततो यथाशक्ति जपं कृत्वा स्तोत्रमुदीरयेत्।

बलिदानविधिः स्तोत्रं चाग्रे वक्ष्यते

तथा

साष्टाङ्गं प्रणमेद्भूमौ देवीं भक्तिपरायणः।

निर्णयामृते पुराणान्तरे

ततः खड्गं नमस्कृत्य शत्रूणां वधसिद्धये।
इच्छेत विजयं राज्ये सुभिक्षं चात्मनो नृपः।।८१६।।
पुनः पुनः प्रणम्यार्यां संस्मरेद्धृदये शिवाम्।
सर्वं कृत्वेति कौरव्य अष्टम्यां जागरं निशि।।८१७।।
नटनर्तकगीतैश्च कारयेच्च महोत्सवम्।

अथाष्टमीनवम्योः सन्धौ चामुण्डापूजा

महाकालसंहितायाम्–

अष्टमीनवमीसन्धौ कुर्वते केचिदर्चनम्।
तत्सन्धिपूजनमिति पुराणादिषु कीर्त्तितम्।।८१८।।
नवम्यामर्द्धरात्रे वा तत्परेणापि पूजनम्।
तान्त्रिकाः केचिदिच्छन्ति सिद्धिं तूभयथाऽर्चने।।८१९।।
चामुण्डारूपधारिण्यास्तत्र देव्यास्तु पूजनम्।
विहितं नान्यरूपिण्याः कृत इत्येष निर्णयः।।८२०।।
तन्मन्त्रं ध्यानमस्याश्च समाकलय साम्प्रतम्।
प्रणवश्चाङ्कुशः कालीशाकिनीचण्डयोगिनीः।।८२१।।
खेचरी क्रोधफेत्कारी विद्युत्कालरतित्रपाः।
भुजङ्गमहाक्रोधसौपर्णान् षोडशोद्धरेत्।।८२२।।
चामुण्डे इति संकीर्त्य ज्वल युग्मं हिलेः किलेः।
मम शत्रूनिति प्रोच्य युगं त्रासय मारय।।८२३।।
हनयुग्मं पच युगं भक्षय द्वितयं तथा।
कालीत्रपारुषां युग्मं द्विरस्त्रं पावकाङ्गना।।८२४।।
एकसप्तत्यक्षरोऽसौ मन्त्रः परमशोभनः।
राथीतरऋषिश्चास्य जगतीच्छन्द एव।।८२५।।
चामुण्डा देवता प्रोक्ता कूर्चं बीजमुदाहृतम्।
फेत्कारी शक्तिरुद्दिष्टा गरुडः कीलकं मतम्।।८२६।।
समस्तशत्रुक्षयाय विनियोगः प्रकीर्त्तितः।
चामुण्डाख्येन बीजेन षड्दीर्घान्वितवर्ष्मणा।।८२७।
षडङ्गद्वयमुद्धृत्य गायत्र्याभ्यर्चनं चरेत्।
घोररावा मुण्डमालिन्येतत् पदयुगं ततः।।८२८।।
चामुण्डा सर्वशेषे स्यादन्यत्सर्वं पुरोक्तवत्।
अथध्यानं ब्रुवे देवि येनार्चा सिद्धिमृच्छति।।८२९।।

धरालग्नशिरोजानुप्रसुप्तकुणपोपरि ।
निषेदुषीं निःपललसर्वावयवभीषणम् ।।८३०।।
त्वगस्थिमात्रघटितामत्युग्राकारदर्शनाम् ।
शिवाकारपिशङ्गाभजटाभारविराजिताम् ।।८३१।।
स्कन्धावसक्तसंशुष्कनृकरोट्यवतंसकाम् ।
नरास्थिनिर्मितानेकभूषणां भीषणाकृतिम् ।।८३२।।
मुण्डमालापरिक्षिप्तां ललज्जिह्वस्यचालिनीम् ।
विकरालमहादंष्ट्रां रौद्रीं रुद्रपरिग्रहाम् ।।८३३।।
अतिशुष्कोदर श्रोणिनितम्बोरुपयोधराम् ।
गणेशोभयपार्श्वस्थपञ्जरास्थिकरालिनीम् ।।८३४।।
दीर्घतालद्रुमाकारकरपादां हसन्मुखीम् ।
खर्जूरकण्टकाकाररोमराजिविराजिताम् ।।८३५।।
लौहसूर्पाकृतिनखां समुत्कम्पिशिरोरुहाम् ।
कूपाकारत्रिनयनां विद्युच्चपलतारकाम् ।।८३६।।
लम्बमानौष्ठाधरां तां नाभिलग्नपयोधराम् ।
विदीर्णसृक्कयुगलां नारान्त्रकटिसूत्रिणीम् ।।८३७।।
दिगम्बरां चर्वयन्तीं शवं कटकटारवैः ।
अष्टादशभुजां भीमां चरन्तीं पितृकानने ।।८३८।।
वामे करे चर्मचापखट्वाङ्गडमरून् क्रमात् ।
अङ्कुशं च तथा पाशं भिन्दिपालं शवं तथा ।।८३९।।
रक्तपूर्णकपालं च धारयन्तीं महोदरीम् ।
दक्षिणे बिभ्रतीं खड्गं विशिखं च त्रिशूलकम् ।।८४०।।
चक्रं शक्तिं गदां पर्शुमस्थिमालां च कर्तृकाम् ।
दिवा कालाभ्रसदृशीं जवापुष्पारुणां निशि ।।८४१।।
बलाकासमदन्तालीं भुजङ्गकुटिलभ्रुवम् ।
अतिभीमाकृतिधरां दृष्ट्यैव मरणप्रदाम् ।।८४२।।
घोराट्टहासां गगने प्लवन्तीं सर्वतोमुखम् ।
चिन्तयेदीदृशाकारां चामुण्डां मुण्डमालिनीम् ।।८४३।।
एवं ध्यात्वा च सम्पूज्य विविधोपायनादिभिः ।
शक्तौ तु मार्त्तिकीः स्थालीः पूरयेदन्न तेमनैः ।।८४४।।
पक्वान्नैराममांसैश्च रुधिरैर्देयपक्षिणाम् ।
ताश्च संपूजयेद्गन्धै रक्तपुष्पाक्षतैरपि ।।८४५।।

उपरिष्टाद्धूपदीपैरखिलैर्मनुभिश्च यः।
बलिं समुत्सृजेत् तेन महतीं श्रियमश्नुते।।८४६।।
शक्तियामे ततः पश्चात् केचित् कुर्वन्ति कौलिकाः।
तद्विधानं पुरैवोक्तं तेनैवैतां समापयेत्।।८४७।।
इत्यष्टमीकृत्यम्।

अथ नवमीकृत्यम्

भविष्यपुराणे—

नवम्यां श्रीसमायुक्ता देवैः सर्वैः सुपूजिता।
जघान महिषं दुष्टमवध्यं देवतादिभिः।।८४८।।
लब्ध्वाऽभिषेकं वरदा शुक्ले चाश्वयुजस्य च।
तस्मात् सा तत्र सम्पूज्या नवम्यां चण्डिकां बुधैः।।८४९।।
महत्त्वं हि यतः प्राप्ता तत्र देवी सरस्वती।
तदर्थं महती प्रोक्ता नवमीयं सदा बुधैः।।८५०।।
पूजयित्वा महादेवीं नवम्यां मन्त्रचण्डिकाम्।
महत्त्वं प्राप्तवान वीर ब्रह्मा विष्णुस्तथाऽमराः।।८५१।।
तस्मादित्यं महापुण्या नवमी पापनाशिनी।
उपोष्या तु प्रयत्नेन सततं सर्वपार्थिवैः।।८५२।।
पूर्वोत्तरेण ऋक्षेण संयुक्ता विधिवन्नृप।
विशेषतो नृपाद्यैश्च बालैर्वृद्धैः सयौवनैः।।८५३।।
ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यः शूद्रैरन्यैश्च सेवकैः।

इत्यादि दुर्गोत्सव पद्धतौ

तन्त्रान्तरे-

ततोमहानवम्यां च पूजयेज्जगदम्बिकाम्।।८५४।।
अष्टम्यां यावती प्रोक्ता विस्तरेण समर्हणा।
नवम्यामपि कर्त्तव्या तावत्येव वरानने।
विशेषस्तत्र कर्त्तव्यं प्रभूतबलिदानकम्।।८५५।।

महाकालसंहितायाम्

नैमित्तिकक्रमेणैव पीठमूर्त्यर्चनं चरेत्।
शक्तौ नित्योदितावृत्यर्चनं कुर्वीत साधकः।।८५६।।
नान्यां पूजां वरारोहे व्यवस्थेयं शिवोदिता।
पीठमूर्त्तौ पत्रिकामृन्मूर्त्तौ यो भक्तिभावितः।।८५७।।

कुरुते तस्य विहितं पूजनद्वितयं तदा।
पत्रिकायाः पुरः पूजाः पीठमूर्त्त्योस्ततः परम्।।८५८।।
सर्वाऽपि तान्त्रिकी रीतिः पीठमूर्त्त्योरुदीरिता।
पत्रिकादिषु पौराणी रीतिरुक्ता पुरारिणा।।८५९।।
असंसृष्टं पृथक्कृत्य द्वयमेतन्मयोदितम्।
ततः परं सुरेशानि! पाठयेदथ वा पठेत्।।८६०।।
मार्कण्डेयपुराणान्तर्गतां भगवतीस्तुतिम्।
समग्रं वा पठेदाहो वधं शुम्भनिशुम्भयोः।।८६१।।
महिषासुरस्याप्यथ वा मधुकैटभयोरपि।
कुर्यादुभयमेवात्र विधिं संकल्पपूर्वकम्।।८६२।।
ब्राह्मणान् वरयित्वैव वस्त्रालङ्करणासनैः।
विदध्यात् कामनोल्लेखं पूजां शक्त्या च पुस्तके।।८६३।।
शनैः पठेत् पाठकोऽपि वर्णोच्चारणपूर्वकम्।
सुव्यक्तं नातिविश्लिष्टं न शिरश्चालगीतवत्।।८६४।।
तनुमान्दोलयन्नापि न हसन् न रुदन् ब्रजन।
नाश्नान्नान्यैरालपँश्च न मध्येच्छिन्नवत् तथा।।८६५।।
आचान्तः कृतशौचश्च पदोरुद्गमनीयवान्।
एतेन विधिनाऽधीते तुष्यते जगदम्बिका।।८६६।।
यथोक्तफलदात्री च भवति प्राणवल्लभे।
यथैतत्पाठतो देघी प्रीता स्याद द्रुतमीश्वरि।।८६७।।
न तथा धूपदीपस्रग्बलिनैवेद्यविस्तरैः।
पठनं पाठनं वापि तस्मादेतस्य यत्नतः।।८६८।।
कार्यं शारदपूजायां कालिकातुष्टिमिच्छता।
देवि शारदपूजायां यथैतस्य हि नित्यता।।८६९।।
होमस्यापि तथा ज्ञेया मुख्ये अङ्गे इमे मते।
हस्तमात्रं विधायादौ स्थण्डिलं श्रद्धया मृदा।।८७०।।
तत्राग्निस्थापनं कृत्वा वैदिकैर्मनुभिः प्रिये!।
घृताहुतिं वा जुहुयात् तिलमिश्रामथापि वा।।८७१।।
विल्वपत्रं यवां पद्म पायसं वा मधूक्षितम्।
मन्त्रस्तत्र तु विज्ञेया भारती षोडशाक्षरी।
अथवा जयदुर्गाया मन्त्रो यः परिनिष्ठितः।।८७२।।

भारती षोडशाक्षरीति प्रकृताभिप्रायेण। जयदुर्गामन्त्रस्तु सकलसाधारण इति बोध्यम् तथा

सप्तशत्यास्तथा देवी एकैकश्लोक एव वा।
मन्त्रे सहस्रसंख्या स्याच्छक्तावयुतमेव वा।।८७३।।
उभयत्रापि दातव्याः कर्मान्ते दक्षिणाः शुभाः।
इदं कर्मद्वयं देवि मूर्तेः पुरत आचरेत्।।८७४।।
नाप्यदो द्वितयं कार्यं क्षपायां वासरादृते।
तस्यां कृतं तु विफलं जायते वेदशासनात्।।८७५।।
देवी सप्तशतीपाठं गृह्णाति विधिवत् कृतम्।
विधिना वाऽप्यविधिना पुनर्होमं प्रयच्छति।।८७६।।
तस्ताद् यत्नेन कर्त्तव्यो होमः शारदपूजने।
होमः सप्तशतीपाठो बलिर्वादित्रवादनम्।।८७७।।
चतुष्टयमिदं शस्तं मासीषे कालिकार्चने।
प्रभूतबलिदानं च कार्य भूत्यनुसारतः।।८७८।।

अथ बलिदानविधिः

तत्रैव

ततो दद्याज्जीवबलिं यथालाभं यथाविधि।
विधिस्तु द्विविधः प्रोक्तः श्रौत आगमिकस्तथा।।८७९।।
श्रौतः श्रृत्युक्तमन्त्रेणागमस्तन्त्रोक्तमन्त्रकैः।
श्रौतोऽपि स्वस्वगृह्योक्तविधिना संप्रदीयते।
पशुजातिविशेषेण तत्राप्यस्ति भिदाऽधिका।।८८०।।

मेरुतन्त्रे

बलिस्तु त्रिविधो ज्ञेयस्तान्त्रिकः स्मार्त्त एव च।।८८१।।
वैदिकश्चेति तत्रादौ तान्त्रिकोऽष्टविधः स्मृतः।
नरश्च महिषः कोलश्छागोऽविः सारसस्तथा।
कपोतः कुक्कुटश्चेति सामान्याः पूर्वपूर्वतः।।८८२।।

तथा

कूष्माण्डं नारिकेलं वा श्रीफलं चेक्षुमेव च।
वस्त्रसंवेष्टितं कृत्वा छेदयेच्छूरिकादिभिः।
एवं स्मार्तो वलिः प्रोक्तो धर्मशास्त्रानुगामिनाम्।।८८३।।

तथा

वैदिकं तु बलिं दद्यादोदनं खिन्नमाषवत्।
सरोचनमतिक्रूरदैवते वटकान्वितम्।।८८४।।

इत्युक्तम्। महाकालसंहितायाम्

श्रौतः श्रुतिषु सन्धेयो योऽध्वरेषु निरूपितः।
वक्ष्याम्यागमिकं सर्वं यागस्थानक्रमागतम्।।८८५।।
न स देवो न सा देवी देवयोनिभिदा न सा।
न स कालो न तद्भूतं यो नेच्छति बलिं प्रिये!।।८८६।।
अमूर्त्ता ये च कालाशा माससंवत्सरर्त्तवः।
पक्षायनाहोरजनीतिथिप्रहरसंक्रमाः ।।८८७।।
एतेऽपि बलिमिच्छन्ति किं पुनर्देवयोनयः।
वनस्पत्योषधिलतातरुगुल्मनगादयः ।।८८८।।
स्थावरा जङ्गमाश्चापि वल्याकाङ्क्षां प्रकुर्वते।
यस्य यस्य हि देवस्य यो यो वलिरुदीरितः।।८८९।।
एतत्प्रसङ्गेन शिवे स स कश्चन कथ्यते।
स्वयम्भुवो बलिः सिंहो विष्णोर्वाध्रीणसः स्मृतः।।८९०।।
अश्व इन्द्रस्य कथितो गण्डकः परमेष्ठिनः।

विष्ण्वादिनुद्दीश्य वार्धीणसादेरुत्सर्गमात्रं न तु हिंसेति विधानमुक्तावली कृतः वार्धीणसलक्षणं त्वग्रे वक्ष्यते।

तथा- शूकरो भैरवस्यापि प्रमथानां च जम्बुकः।।८९१।।
प्रियो द्वीपी वेधसश्च चित्रको बलिरिष्यते।
गणाध्यक्षस्य भल्लको यक्षाणां लोहितो मृगः।।८९२।।
स्कन्दस्य गोधा विश्वेषां देवानां चमरोऽपि च ।
विनायकानां च बलिः कृष्णसार उदीरितः ।।८९३।।
वेतालानां च महिषो गुह्यकानां च सम्बरः ।
शच्याः शल्यो रोहिषस्तु तुषितानां प्रकीर्त्तितः।।८९४।।
कृकलाशो दानवानां दैत्यानां श्येन उच्यते।
हिरण्यगर्भस्य बलिरष्टापद उदीर्यते।।८९५।।
ईशानस्य पदस्वर्चा रुरू रुद्रस्य कीर्त्त्यते।
बलिर्ममापि गोकर्णः साध्यानां गवयस्तथा।।८९६।।
सृमरो भासुराणां च वसूनामृक्ष इष्यते।
बृहस्पतेस्तु गवयो हस्ती चैव प्रजापतेः।।८९७।।
कुरङ्गो गणसाध्यानां तक्ष्ण उष्ट्रो निगद्यते।
श्राद्धीयविश्वदेवानां वृषभः परिकीर्त्तितः।।८९८।।
अग्नेस्तु कुटरुः पक्षी चक्रवातः प्रचेतसः।
पारुष्णो गार्हपत्यस्य दक्षिणाग्नेस्तु चीनकः।।८९९।।

चमूरुराहवनीयस्य शशोऽर्यम्ण उदीरितः।
वायोर्बलाका सोमस्य हंसश्चन्द्रस्य वै लवः।।६००।।
वरुणस्य तथा नक्रो मित्रस्य च कुलीयकः।
चाषोऽग्नीषोमयोर्ज्ञेय इन्द्राग्न्योः क्रौञ्च एव च।।६०१।।
मित्रमित्रस्य मद्गुः स्यात् कुलीकस्त्वष्टुरेव हि।
आदित्यानां तथा न्यङ्कु कृष्णोऽपि हि यमस्य च।।६०२।।
स्यात् प्राजापत्यवाय्वोश्च गोमृगौ बलिरीश्वरि।
नासत्ययोर्मयूरोऽपि पूष्णो जम्बुक उच्यते।।६०३।।
गर्दभो निर्ऋतेर्मित्रावरुणस्य कपोतकः।
गोधादि देवपत्नीनां मालिकः सवितुस्तथा।।६०४।।
कुलीको देवयोनीनां राजज्ञोऽप्सरसामपि।
अन्तरिक्षस्य योक्त्रस्तु भूमेराखुर्दिवः कशा।।६०५।।
दिशां बलिस्तु नकुलो विदिशां वभ्रुरेव च।
अपां मत्स्यस्तेजसस्तु होमीयाख्यो भुजङ्गमः।।६०६।।
जलः सामान्यकालस्य तथा कालस्य चिल्लिका।
सुपर्णश्चापि दात्यूहो बलिर्वत्सरमासयोः।।६०७।।
कपिञ्जलो वसन्तर्त्तोर्ग्रीष्मस्य कलविङ्ककः।
वर्षाणां तित्तिरिर्ज्ञेयः शरदो वर्त्तिका तथा।।६०८।।
क्रकरश्चापि हैमन्तः शैशिरो वैककर्यपि।
पक्षस्य खञ्जरीटः स्यादयनस्य तु सारसः।।६०९।।
पारावतो दिनस्यापि रात्रेः सीरायुरुच्यते।
प्रोक्ता जलौका सन्ध्याया यैज्ञराजस्तिथेरपि।।६१०।।
यामस्य सुखिलोकस्तु संक्रान्तेरन्यपायकः।
किरीकको ग्रहाणां च नक्षत्राणां शरव्यकः।।६११।।
राशीनामपि साकल्यो लग्नानामपि चुञ्चुटः।
शिशुमारः समुद्रस्य नदीनां च तिमिङ्गिलः।।६१२।।
आवर्त्तानां च मकरो विचीनां शङ्कलोऽपि च।
उष्ट्रः पातालदेवस्य शङ्कुर्वै ताण्डवस्य च।।६१३।।
पर्जन्यानां च मण्डूको वृष्टेरपि महीलताः।
विद्युतामपि शम्बूको भारद्वाजोऽशनेरपि।।६१४।।
सिनीवालीकुहूराकानुमतीनां क्रमेण हि।
शरादिकङ्कहारीतजीवञ्जीवाः प्रकीर्त्तिताः।।६१५।।

बलिः कलञ्जः प्रेतानां पिशाचानां वकोऽपि च।
भूतानां कुररश्चापि कुक्कुटो ब्रह्मराक्षसाम् ।।६१६।।
गन्धर्वाणां कोकिलोऽपि घोणकानां च वायसः।
वर्त्तकः क्षेत्रपालानां बटुकानां च कुक्कुटः।।६१७।।
यावत्यो जातिहारिण्यस्तासां भारुण्ड उच्यते।
छुच्छुन्दरीर्ह्यश्मनः स्याज्जलस्य शरभो बलिः।।६१८।।
चिल्लो बलिर्डाकिनीनां किन्नराणां च तक्षकः।
भूलिङ्गो योगिनीनां स्यान्निधीनां टिट्टिभो बलिः।।६१९।।
इन्द्रियाणामथो वच्मि चक्षुषोर्मशको बलिः।
श्रोत्रयोर्भ्रमरश्चापि घ्राणस्य सरघास्तथा।।६२०।।
रसनाया बलिश्चिक्का मक्षिका च त्वचो बलिः।
पतङ्गो मनसश्चापि प्लुषिर्वाचो बलिर्मतः।।६२१।।
झिल्लीकीटो बलिः पाण्योः खद्योतः पदयोरपि।
पायोर्यूका समुद्दिष्टा उपस्थस्य सिनीपतिः।।६२२।।
वनस्पतीनां मधुको लतानां तैलपायिका।
मत्कुणा औषधीनां स्युस्तरुणां च पिपीलिका।।६२३।।
गुल्मानां गन्धकीटोऽपि शैलानां वुद्गतास्तथा।
शवो बलिः पूतनाया राक्षसीनामहिर्बलिः।।६२४।।
जातमात्रशिशुः षष्ठ्याः शङ्ख बालग्रहस्य च।
चकोरो गरुड़स्यापि मातॄणां तैलपायिका।।६२५।।
विद्याधराणां कोलो यज्ञानां शुक एव च।
गृध्रोऽरुणस्य च बलिर्नरकस्य करेटुकः।।६२६।।
राज्ञो बलिर्मर्कटोऽपि कान्तारस्य प्लवः खगः।
सर्वेषामेव देवानां देवीनां च विशेषतः।।६२७।।
बलित्वेन विनिर्दिष्टा महिषच्छागलादयः।
जलजाः स्थलजाश्चापि ग्रामजारण्यजास्तथा।।६२८।।
पशवः पक्षिणः कीटास्तिर्यग्योनय एव च।
इमे विधात्रा विहिता बलित्वेन दिवौकसाम्।।६२९।।
नान्यैर्नैवेद्यसम्भारैस्तथा तुष्यन्ति देवताः।
यथा पशूनां बलिभिर्विहङ्गानां तथैव च।।६३०।।
अत एव हि देवेशि मीमांसावेदयोरपि।
देवानां प्रियशब्दस्तु पशुपर्याय उच्यते।।६३१।।

एवं विज्ञाय सिद्धान्तं देव्याः सन्तोषहेतवे।
पशून् दद्याद्बलित्वेन मेध्यानपि विहङ्गमान।।६३२।।
क्रिमिकीटादयः सर्वे ये तिर्यञ्च प्रकीर्त्तिताः।
न ते देवीबलित्वेन विधात्रा विहिताः प्रिये!।।६३३।।
आलभेत वृषं श्वेतं यज्ञे गोमेधनामानि।
नरमेधे नरं चापि गजक्रान्ते गजं तथा।।६३४।।
अश्वमेधे तथैवाश्वं शङ्खचूडे च हस्तिनम्।
ब्रवीति यत्र वेदोऽपि तत्र कैव विचारणा।।६३५।।
तस्मान्नैमित्तिकार्चायां बलिरावश्यकः प्रिये!।
विशेषेण प्रदात्तव्यो देवीसन्तोषहेतवे।।६३६।।
बलिं विना नैव देवी पूजामङ्गीकरोमि हि।
तत्राप्युभौ प्रशस्येते महिषश्छाग एव च।।६३७।।
अन्यदेवोचितबलिर्विचारैः किं प्रयोजनम्।
येन सन्तुष्यते काली तं विचारं ब्रुवेऽधुना।।६३८।।
याः काश्चिद्गुह्यकाल्यास्तु विहिताः पशुजातयः।
आरण्या अथ वा ग्राम्यां जलजानां च जातयः।।६३९।।
खगानां जातयाश्चापि ता एवादौ ब्रवीमि ते।
मत्स्या मृगा वराहाश्च कच्छपा महिषास्तथा।।६४०।।
गन्डका गोधिका ग्राहाः शार्दूला हरयोऽपि च।
नकुलाः शरभश्चापि गवयाश्छागलास्तथा।।६४१।।
मनुष्याः पक्षिणश्चापि तेषां कोशा अपि प्रिये!।
भगवत्या बलित्वेन विधात्रा बलिकल्पिताः।
एतेषां बलिदानेन सर्वकार्याणि साधयेत्।।६४२।।

बलिदानफलान्याह-

बलिभिर्वर्धते ह्यायुर्बलिभिः शाम्यते रुजा।
जयत्यरातीन् बलिभिः प्राप्यते बलिभिर्धनम्।।६४३।।
सिद्धिमाप्नोति बलिभिर्बलिभिस्त्रिदिवं व्रजेत्।
निष्कामाणां बलौ दत्ते प्राप्यो मोक्षोऽपि यज्ञवत्।।६४४।।

मत्स्यादीनां जातिभेदानाह-

जातिभेदानथो वक्ष्ये समासादवधारय।
अष्टादशमिधा मत्स्याश्चतुर्विंशतिधा मृगाः।।६४५।।

वराहाः पञ्चधा प्रोक्तास्त्रिभेदाः कच्छपा अपि।
द्विभेदा महिषास्तद्वद्गण्डकाश्च चतुर्विधाः।।६४६।।
गोधिका च त्रिभेदा स्याद्द्विभेदो ग्राह एव च।
त्रिविधौ व्याघ्रसिंहौ च नकुलो द्विविधोऽपि च।।६४७।।
शरभश्चैकजातिः स्यान्नस्य भेदो वरानने।
गवयस्त्रिविधः प्रोक्तश्छागः पञ्चविधो मतः।।६४८।।
चतुर्विधा मनुष्याश्च षट्त्रिंशज्जातयः खगाः।
क्रमेण नामान्येतेषां व्याहरामि तव प्रिये!।।६४९।।
शङ्कुलो रोहितः शालः पाठीनो राघवोऽपि च।
प्रोष्ठी नालशिशुद्ध्र्यङ्गमेरेटाङ्गुलिचाम्बटाः।।६५०।।
तिमिभाकूटराजीवगडकाः शस्तजातयः।
गोकर्णकृष्णसारैणरुरुर्न्यङ्कुचमूरवः।।६५१।।
प्रियवातप्रमीचीनसमूहसृमरक्रषाः।
रङ्कुशम्बरकन्दल्यः सुखरो रोहिषो वटः।।६५२।।
कदल्येन विसालाक्षपतङ्गोल्लाटरोहिताः।
वराहस्तब्धकक्रोडकुशाक्षीणजलस्वनाः।।६५३।।
कूर्मश्चित्री चित्रकटो वामनश्चेति वै त्रिधा।
अकेरः क्षीरिलश्चापि महिषो द्विविधो मतः।।६५४।।
कौञ्जरो वारिलश्चार्मी वैशः खड्गाश्चतुर्विधाः।
हिरण्या किलिका मीना गोधिका त्रिविधा मता।।६५५।।
दीर्घग्रीवश्चर्मपूरो ग्राहो द्विविध एव च।
तरक्षुस्तरुगश्चित्रो व्याघ्रस्त्रिविध उच्यते।।६५६।।
शरलः कृकयुर्मेदी सिंहोऽपि त्रिविधो मतः।
स्थूलः कलिङ्गश्च तथा नकुलोऽपि द्विधेरितः।।६५७।।
एकजातिं विना नैव शरभोऽन्यः प्रजायते।
लाटिको विट्चरः सास्नी गवयोऽपि त्रिधोच्यते।।६५८।।
त्रिपिवः पालितः क्षौरी वर्करो मारिषस्तथा।
पञ्चभेदो भवेच्छागोऽविरपि त्रिविधो मतः।।६५९।।
उर्मिकः पारिशो भेटो मनुष्यानपि मे शृणु।
न मनुष्यत्वसामान्ये चातुर्विध्यं हि वर्त्तते।।६६०।।
प्रकारभेदतस्तस्या भिन्नता परिकल्प्यते।
चण्डिकानुगृहीतस्या वितृष्णस्य भवाम्बुधौ।।६६१।।

तत्तल्लोकावाप्तिफलश्रवणोत्कण्ठितस्य च।
स्वतः प्रवृत्तिर्देव्यास्तु बलिरूपो भवाम्यहम्।।६६२।।
आगत्य च स्वयं ब्रूते मां बलित्वेन योजय।
प्रत्यक्षमेव सर्वेषां नृपस्य च विशेषतः।।६६३।।
स एक उदितो देवि द्वितीयमवधारय।
बहुवित्तस्य रत्नादेस्तेनो लोकधृतश्च यः।।६६४।।
निर्णीय परिषन्मध्ये प्राड्विपाकेन कीर्त्तितः।
शीर्षच्छेद्यतया देवि द्वितीयः स निगद्यते।।६६५।।
युद्धे जितो धृतः शत्रु कूटयोधी भटाकृतिः।
स तृतीयो विनिर्दिष्टश्चतुर्थमवधारय।।६६६।।
य आततायी पान्थानां कान्तारेऽप्यथ वा गृहे।
विदितश्चापि निर्णीतः साक्षिभिः सत्यवादिभिः।।६६७।।
स हि तुर्यः समाख्यातः पञ्चमो नोपपद्यते।
वक्ष्ये विहङ्गान् ये देव्यै बलित्वेन निरूपिताः।।६६८।।
पारावतास्ताम्रचूड़ा हंसा वार्ध्रीणसास्तथा।
उलूका लोहपृष्ठाश्च सर्वाघाटाश्च सारसाः।।६६९।।
कलविङ्काश्चकोराश्च चक्रवाकाः शुका अपि।
शतपत्रा भरद्वाजा भूलिङ्गाश्चटकास्तथा।।६७०।।
कारण्डवाश्चक्रवाकाः पारुश्नाश्च कुलीयकाः।
प्लवाः कुटरवश्चापि वर्त्तकाः कुक्कुभा अपि।।६७१।।
तित्तिर्युरुकक्रौञ्चाश्च नवचाषशिखण्डिनः।
योक्त्रदात्यूहसाकल्यपैङ्गराजन्यवायकाः।।६७२।।
जिहीका सुखिलीकाश्च मद्गुहारीतवर्त्तकाः।
जीवञ्जीवाश्च हारीताः कोयष्टचश्मटटिट्टिभाः।।६७३।।
वककोकिलगृधाश्च करेटुश्चोनखञ्जनाः।
चिरीकाश्चैव जहिकाः सीचापुञ्जन्तमेकलाः।।६७४।।
कशाः सुपर्णा भारुण्डा हामायाश्चापि पार्वति।
इति ते कथिता सर्वे षष्टिभेदा विहायसाम्।।६७५।।
देव्यै योग्यबलित्वेन नान्यं उक्ता विहङ्गमाः।
एतेषां जातिभेदासु वर्त्तन्ते डामरादिषु।।६७६।।
बहुत्वात् ते न कथ्यन्ते ग्रन्थगौरवभीतितः।
कपोतभ्रामका बङ्कमनित्थतुरुकादयः।।६७७।।

पारावतास्तु दशधा हंसाः पञ्चविधास्तथा।
राजहंसा मल्लिकाख्या धार्त्तराष्ट्राः परिस्फुटाः।
माहेया एवमन्येऽपि ज्ञेया विगहजातयः।।६७८।।

तथा-

अधुना संप्रवक्ष्यामि बलिना येन येन हि।।६७६।।
यं यं कालमभिव्याप्य तुष्टा भवति कालिका।
अष्टादशविधैर्मत्स्यैः कच्छपैरपि चण्डिका।।६८०।।
तृप्यते मासमात्रं हि बलित्वेन नियोजितैः।
ताम्रचूडस्य बलिना हंससारसयोरपि।।६८१।।
तृप्ता भवति मासौ द्वौत्रीन् मासान् द्वीपिनक्रयोः।
कलविङ्कैरुलूकैः स्यात् तृप्ता मासचतुष्टयम्।।६८२।।
पञ्चमासान् भवेत् तृप्ता शुकैः पारावतैरपि।
दार्वाघाटैश्चकोरैश्च षण्मासाँस्तृप्तिमाप्नुयात्।
तृप्यते सप्त मासान् सा जिहीकैश्च कुलीयकैः।।६८३।।
चतुर्विंशतिभेदैश्च कुरङ्गैर्गवयैरपि।
मासानष्टौ भवेत् तृप्ता नव मासान् पिकैरपि।।६८४।।
हारीतबलिना देवी दश मासाँश्च तृप्यते।
तथा दात्यूहदानेन गजराजैर्वरानने।।६८५।।
मासानेकादश शिवा तृप्तिमायाति सिद्धिदा।
गोधिकाबलिदानेन तृप्ताऽब्दं व्याप्य जायते।।६८६।।
अविना नकुलेनापि त्र्यब्दं तृप्ता भवेदपि।
आजेन बलिना वाऽपि तुष्टा स्यात् पञ्चवत्सरम्।।६८७।।
जीवञ्जीवेन पाङ्क्तेन तुष्यतेऽष्टौ च हायनान्।
पार्षतैणेन बलिना वराहबलिनाऽपि च।।६८८।।
द्वादशाब्दमभिव्याप्य तुष्टा भवति कालिका।
हामायननामा यः पक्षी सिंहाकृतिधरोऽरुणः।।६८६।।
तद्दानात् तुष्यते देवी पञ्चविंशतिवत्सरम्।
त्रिविधैरपि शार्दूलैर्महिषैर्द्विविधैरपि।।६६०।।
चतुर्विधैस्तथा खड्गैर्बलित्वेन समर्पितैः।
शतं संवत्सरं यावच्चण्डिकां प्रीतिमश्नुते।।६६१।।
एको वार्ध्रीणसोऽजश्च विशेषः परिकीर्त्यते।
अपरः पक्षिजातीयो हिमवच्चरणस्थितः।।६६२।।

वृद्धः श्मश्रुधरः श्वेतः पादस्फोटीन्द्रियोज्झितः।
त्रिविधो रक्तरसनो निःश्रृङ्गः स्वरभङ्गचजः।।९९३।।
पीतचञ्चू रक्तशिराः सितपक्षोऽसिताङ्घ्रिकः।
नीलग्रीवः पाटलाभगलो वार्ध्रीणसः खगः।।९९४।।

कालिकापुराणेऽपि-

त्रिपिवं त्विन्द्रियक्षीणं श्वेतं वृद्धमजं परम्।।९९५।।
वार्ध्रीणसं विजानीयाद्धव्यकव्येषु संस्कृतम्।
नीलग्रीवो रक्तशिराः कृष्णपादः सितच्छदः।
वार्ध्रीणसः स पक्षी स्यान्मम विष्णोरपि प्रियः।।९९६।।

महाकालरांहितायाम्-

अजवार्ध्रीणसैस्तुष्टा भवेत् त्रिंशतिवत्सरम्।
निरङ्कसामान्यशशैर्बलित्वेन निरूपितैः।।९९७।।
जायते गुह्यकाली सा तुष्टा पञ्चशतं समाः।
शरभैरथ सिंहैश्च शोणितैश्च स्वदेहजैः।।९९८।।
दत्ते सन्तुष्यते काली सहस्रं परिवत्सरान्।
वार्ध्रीणसविहङ्गेन दत्तेन विधिना प्रिये!।।९९९।।
अब्दं द्वादशसाहस्रं तुष्यते जगदम्बिका।
चौराततायिरूपेण नारेण बलिना तथा।।१०००।।
त्रीणि लक्षाणि वर्षाणां प्रीतये गुह्यकालिका।
एते ते कथिता देवि! बलयस्तृप्तिहेतवः।।१००१।।

अथ निषिद्धबलयस्तत्रैव-

अदेयानधुना वक्ष्ये पशूनपि विहङ्गमान।
भल्लूकान् मर्कटान फेरून् सर्पानोतून शुनस्तथा।।१००२।।
क्रमेलकाँश्च बालेयान् शल्यान् विट्चरशूकरान्।
जलजेष्वपि मण्डूकान् रासभान् शिशुमारकान्।।१००३।।
कुलीरान् दीर्घपृष्ठादीन् मीनानपि च भूरिशः।।१००४।।
खगेषु वायसाँश्चिल्लान् दुर्विदान् कुलिकानपि।
एवमन्येऽपि विज्ञेया नानाशास्त्रागमादिषु।।१००५।।

तथा-

काँश्चिन्निषिद्धान् वक्ष्यामि विहितेषु बलिष्वपि।
ग्राम्याणामथ वन्यानां पशूनां पक्षिणां तथा।।१००६।।

स्त्रियं नैव प्रयुञ्जीत बलिकर्मणि साधकः।
ज्ञानपूर्वं बलिं दत्त्वा नरकं प्रतिपद्यते।।१००७।।
अज्ञानेन वितीर्यापि किञ्चित् पापं समश्नुते।
अत्रिमाससमुत्पन्नं पशुं न विनिवेदयेत्।।१००८।।
न्यूनं तदर्धान्न खगं जातु देव्यै समर्पयेत्।
भग्नशृङ्गं भग्नदन्तं छिन्नलाङ्गूलमेव च।।१००९।।
काणं व्यङ्गं रोगिणं च शृंङ्गाहतनरं तथा।
दुष्टं गलितरोमाणं क्षीरपं च गलद्विशम्।।१०१०।।
पशुं न दद्याद्दीवृक्षं तथा चैव विहायसम्।
छिन्नत्रोटिं छिन्नपक्षं रुग्णमाहारवर्जितम्।
अनुड्डीनं तथाऽऽकाशे मातुरङ्के परिस्थितम्।।१०११।।
विहितावपि विज्ञातौ न दद्यात् पशुपक्षिणौ।

तन्त्रान्तरे-

कृष्णवर्णो बलिर्यस्तु श्वेतपुच्छो यदा भवेत्।।१०१२।।
छागलं तादृशं विद्वान् दूरतः परिवर्जयेत्।
एवं सितं कृष्णपुच्छं वर्जयेत् मतिमान् सदा।।१०१३।।

महाकालसंहितायाम्

यस्य यस्य निषिद्धो यः स इदानीं निरूप्यते।
परं केशरिणं व्याघ्रं चाषं खञ्जनमेव च।।१०१४।।
स्वकीयरुधिरं मद्यं न दद्याद्ब्राह्मणः क्वचित्।
तौ द्वौ खगौ तथा सिंहं द्वीपिनं मानुषं तथा।।१०१५।।
दत्त्वा देव्यौ द्विजो मद्यं ब्राह्मणाद्विच्युतो भवेत्।
चाण्डालत्वमाप्नोति सर्वकर्मविवर्जितः।।१०१६।।
न कृष्णसारं वितरेद्बर्हिणं च नराधिपः।
कृष्णसारं दददद्देव्यै द्वितीयो वर्ण ईश्वरि।।१०१७।।
ब्रह्मघ्नत्वमवाप्नोति सर्वकर्मविवर्जितः।
न वैश्याः शूकरं दद्युर्न वर्त्तककुलीयको।।१०१८।।
ददतां तत्क्षणादेव महापातकता भवेत्।
वर्णोऽपरो नो वितरेद्गोधिकाशुकखड्गिनः।।१०१९।।
मूषं मार्जारकं चाषं शूद्रो दत्त्वा पतत्यधः।
मोहाद्धठाद्वा ददतां सद्यो ब्रह्मघ्नता भवेत्।।१०२०।।
वानप्रस्थो ब्रह्मचारी गृहस्थो वा दयापरः।
सात्त्विको ब्रह्मनिष्ठश्च यश्च हिंसाविवर्जितः।।१०२१।।

ते न दद्युः पशुबलिमनुकल्पं चरन्त्यपि।

अनुकल्पविधिः

सात्त्विको जीवहत्यां हि कदाचिदपि नो चरेत्।।१०२२।।
इक्षुदण्डं च कूष्माण्डं तथा वन्यफलादिकम्।
क्षीरपिण्डैः शालिचूर्णैः पशुं कृत्वा चरेद् बलिम्।।१०२३।।
तत्तत्फलविशेषेण तत्तत्पशुमुपानयेत्।

तथा

महिषत्वेन कूष्माण्डं छागत्वेनैव कर्कटीम्।।१०२४।।
वृन्ताकं कुक्कुटत्वेन मेषत्वेन च तुम्बिकाम्।
रम्भापुष्पं बीजपूरं पिण्डं जीवं कलौ भवेत्।।१०२५।।
मानुषत्वेन पनसं मत्स्यत्वेनेक्षुदण्डकम्।
शूरणं शम्बरत्वेन तथा कोशातकं मृगे।।१०२६।।
पायसं तु गजत्वेन मार्जारत्वे कुलित्थकम्।
पटोलं शूकरत्वेन शर्कराबालुकं तथा।।१०२७।।
खड्गत्वेन महेशानि! मत्स्यत्वे कदलीफलम्।
मूषत्वे मूलकं चैव सारङ्गत्वे कलिञ्जकम्।।१०२८।।
करित्वे नारिकेलं च कल्पयेत् परमेश्वरि!।
माषाः सर्वबलित्वेन सर्वेषां कृशरान्नतः।।१०२९।।

तथा

तत्तत्पशुप्रदातॄणां फलावाप्त्यै वरानने!।
घृतगोधूमैक्षवाद्यैः फाणितैरन्नजैस्तथा।।१०३०।।
कृत्वां तं तं पशुं दद्युस्तत्फलमवाप्नुयुः-इति।

अथ प्रशस्तपशुलक्षणं (रत्नावल्याम्)

ऊर्ध्वशृङ्गो लम्बकर्ण एकवर्णोऽतिपीवरः।
नीरोगः पुष्टकायश्च सदर्पश्च बलोर्जितः।।१०३१।।
नाधिकाङ्गे न हीनाङ्ग एकद्वित्र्यादिहायनः।
प्रशस्तपशुरीदृक्षो देवीप्रीतिकरः शुभः।।१०३२।।

तन्त्रान्तरे

कृष्णवर्णश्छागलस्तु पृष्ठवंशे सितो यदि।
प्रशस्तं तं विजानीयाद्विपरीतं विवर्जयेत्।।१०३३।।

विपरीतमिति श्वेतवर्णम्। पृष्ठावच्छेदेन नीलमित्यर्थः।

त्रैपुरपद्धत्याम्-

बल्यन्ते छागलबलिं तथा मेषं सुरेश्वरि!।
प्रदद्यात् सर्वकालेषु सर्वकामार्थसिद्धये।।१०३४।।
नित्ये नैमित्तिके काम्ये माहिषं बलिमाहरेत्।
जयाय सर्वकामाय देवीलोकाप्तसिद्धये।।१०३५।।

महाकालसंहितायाम्

पशूनां यत्र बाहुल्यं भवेद्वित्तानुसारतः।
तत्रैतं प्रथमं देवि! सर्वलक्षणलक्षितम्।।१०३६।।
ऊर्जस्विनं सुन्दरं च बलिनं पशुमुत्सृजेत्।

तथा-

पशूनामिह सर्वेषां प्रोक्षणं चैवमेव हि।।१०३७।।
कश्चिद्विशेष उत्सर्गे फलं दैवाद्युदीरणे।

त्रैपुरद्धत्याम्-

सर्वलक्षणसंयुक्तं पशुं संस्नाप्य मन्त्रतः।।१०३८।।
देव्यग्रे स्थापयित्वाऽर्घोदकैः संप्रोक्षयेत् ततः।
अस्त्रमन्त्रेण संरक्ष्य कवचेनावगुण्ठ्य च।।१०३९।।
मूलमन्त्रं समुच्चार्य धेनुमुद्रामृतीकृतम्।
गन्धपुष्पाक्षतैः सम्यक् परिपूज्योपचारकैः।।१०४०।।
कर्णे तस्य पठेन्मन्त्रं पशुपाशविमोचनम्।
ॐ पशुपाशाय विध्महे विप्रकर्णाय धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात्।
गायत्रीयं समाख्याता पशुपाशविमोचिनी।
इमां पठेद्दक्षकर्णे तस्य मुक्तिप्रसिद्धये।।१०४१।।

संप्रोक्षयेदिति प्रोक्षणं मूलमन्त्रेणैव।

अर्घपात्रोदकैः शुद्धैर्मूलेन प्रोक्षयेत् त्रिशः।

इति महाकालोक्तेः।

गायत्र्यन्तरमुक्तं तत्रैव।

योगिनीबीजतो ङेन्तं बलिरूपं तु विद्महे।।१०४२।।
देवीप्रियं पूर्ववच्च धीमहीति ततः परम्।
तन्नः पशुरिति प्रोच्य वदेच्चाथ प्रचोदयात्।।१०४३।।इति
योगिनीबीजं छ्रीमिति (त्रैपुरपद्धत्याम्)।

ततः खड्गं यजेन्मन्त्री मन्त्रेणानेन दक्षतः।
तारं च भुवनेशानीं कालीयुग्मं समालिखेत्।।१०४४।।

वज्रेश्वरीपदं पश्चाल्लोहद्रंष्ट्रां ततः परम्।
ङेन्तां हृद्वसुयुग्मैकसङ्ख्यवर्णो मनुर्मतः।।१०४५।।
अनेन गन्धपुष्पाद्यैः खड्गमभ्यर्चयेद्बुधः।
ततस्तस्य मुष्टिदेशे मध्ये चाग्रे यथाक्रमम्।।१०४६।।
गन्धपुष्पाक्षतैर्मन्त्री मिथुनत्रितयं जयेत्।
वागीशीसहितो ब्रह्मा लक्ष्मीनारायणो तथा।।१०४७।।
उमामहेश्वरौ चेति संप्रोक्तं मिथुनत्रयम्।
ततश्चानेन मन्त्रेण तं खड्गमभिमन्त्रयेत्।।१०४८।।
खड्गायासुरनाशाय शक्तिकार्याय तत्पर।
पशुश्छेद्यस्त्वया शीघ्रं खड्गनाथ नमोऽस्तु ते।।१०४९।।
ततस्तु ताम्रपात्रस्थकुशाक्षतजलादिकम्।
गृहीत्वा मूलमुच्चार्य संकल्प्य पशुमुत्सृजेत्।।१०५०।।
गृहीत्वाऽक्षततोयादि पशोः शिरसि संत्यजेत।
ततस्तेनैव खड्गेन मूलमन्त्रेण साधकः।।१०५१।।
पशुच्छेदं प्रकुर्वीत स्वयं देवीमनुस्मरन्।

मेरुतन्त्रसिद्धान्तसारयोः-

यदा संचालयेद्गात्रं गृहीतस्तु यथेच्छया।।१०५२।।
यावन्न चालयेद्गात्रं पशुस्तावन्न हन्यते।
उत्तराभिमुखो भूत्वा बलिं पूर्वमुखं तथा।।१०५३।।
निरीक्ष्य साधकः पश्चादिमं मन्त्रमुदीरयेत्।
पशुस्त्वं बलिरूपेण मम भाग्यादुपस्थितः।।१०५४।।
प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम्।
चण्डिकाप्रीतिदानेन दातुरापद्विनाशनम्।।१०५५।।
चामुण्डाबलिरूपाय बले तुभ्यं नमो नमः।
यज्ञार्थे पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयम्भुवा।।१०५६।।
अतस्त्वां घातयाम्यद्य तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः।
इमं देहं परित्यज्य भूत्वा देववपुर्धरः।।१०५७।।
मोदस्व प्रमथैः सार्धं यावदिन्द्राश्चतुर्दश।
ऐं ह्रीं श्रीमिति मन्त्रेण त्वं बलिं मत्स्वरूपिणम्।।१०५८।।
चिन्तयित्वा न्यसेत् पुष्पं कुम्भकेनास्य मस्तके।

महाकालसंहितायाम्

ध्यायेत् कुसुममादाय खड्गमादौ वरानने।।१०५९।।

कृष्णां पिनाकपाणिं च कालरात्रिस्वरूपिणम्।
उग्रं रक्तास्यनयनं रक्तमाल्यानुलेपनम्।।१०६०।।
रक्ताम्बरधरं चैव पाशहस्तं कुटुम्बिनम्।
पिवमानं च रुधिरं भुञ्जानं क्रव्यसंहतिम्।।१०६१।।
क्षोभयन्तं जगत् सर्वं कम्पनादिप्रचारणैः।
वेष्टितं मृत्युकालाभ्यां वामदक्षिणभागतः।।१०६२।।

तन्त्रान्तरे-

ततः खड्गं यजेन्मन्त्री पाद्याद्यैरुपचारकैः।
गन्धपुष्पाक्षताद्यैश्च मन्त्रेणानेन मन्त्रवित्।।१०६३।।

मन्त्रस्तु पूर्वोक्त एव।

महाकालसंहितायाम्-

ततो बद्धाञ्जलिर्मन्त्रं पठेत् खड्गं निरीक्ष्य वै।
रसना त्वं चण्डिकायाः सुरलोकप्रसाधकः।।१०६४।।
भुङ्क्ष्वैतस्य पशो रक्तं क्रव्यसंहतिमेव च।
छिन्धीममिव मे शत्रुं मङ्गलानि प्रयच्छ मे।।१०६५।।
दैत्यदानवरक्षोऽसृङ्मेदोन्मत्त नमोऽस्तु ते।
एतेन खड्गमामन्त्र्य तन्नामाष्टकमुच्चरन्।।१०६६।।
गृह्णीयान्निशितं खड्गं येन सद्यो भवेद्वधः।
असिर्विशसनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः।।१०६७।।
श्रीगर्भो विजयश्चैव धर्मपाल नमोऽस्तु ते।

मेरुतन्त्रे-

आँ हूँ फडिति मन्त्रं जपन् संछेदयेद्बलिम्।
एकेनैव प्रहारेण च्छिन्नो दैवततुष्टये।।१०६८।।

महाकालसंहितायामपि-

चन्द्रहासेन खड्गेन छिन्द्यादेकप्रहारतः।
उत्थाय हननं कुर्यान्नोपविश्य कदाचन।।१०६९।।

कालिकापुराणे-

चन्द्रहासेन कर्त्र्या वा छेदनं मुख्यमुच्यते।
दात्रासिधेनुक्रकचशङ्कुलाभिस्तु मध्यमम्।।१०७०।।
असिधेनुः स्वल्पखड्गः शङ्कुला चक्रकर्त्तरी।
क्षुरक्षुरप्रभल्लैश्च मध्यमं परिकीर्त्तितम्।।१०७१।।

एभ्योऽन्यैः शक्तिबाणाद्यैर्बलिश्छेद्यः कदाऽपि न।
नात्ति देवी बलिं तं तु दाता मृत्युमवाप्नुयात्।।१०७२।।
हस्तेन छेदयेद्यस्तु प्रोक्षणं साधकः पशुम्।
पक्षिणं वा ब्रह्महत्यां स प्राप्नोतिदुरुत्सहाम्।।१०७३।।
नामन्त्र्य खड्गं तु बलिं नियुञ्जीत विचक्षणः।

तन्त्रान्तरे-

सर्वेषामुत्तमः खड्गश्चन्द्रहासः सुखावहः।।१०७४।।
पञ्चाशदङ्गुलः कार्यः किं वा तालत्रयेण तु।
करवीरदलाकारः किं वा पद्मदलाकृतिः।।१०७५।।
अथ वा कुब्जखड्गेन दण्डखड्गेन न भेदयेत्।

महाकालसंहितायाम्-

सहस्रायुतलक्षाणां बलीनां सम्भवे सति।।१०७६।।
द्वौ त्रीन पञ्च तथाऽष्टौ वा दश वा द्वादशापि वा।
एभ्योऽधिकान् नैव कुर्याद्देवीभावतया स्थितान्।।१०७७।।
प्राच्याशाभिमुखान् कृत्वा युगपन्मन्त्रमीरयेत्।
तन्त्रेणैव बलीन् सर्वान् प्रोक्षयेद्देशिकोत्तमः।।१०७८।।
छेदका अपि भूयांसः कर्त्तव्याः कमलानने।
हरिद्वीप्यजकोरभ्रलुलायाकाशगामिनः ।।१०७९।।
दद्यादेतान् वामभागे पानकानि च यानि च।

उरभ्रो मेषः। तथा-

मत्स्यान् ग्राहान् शशान् खड्गान् कमठान् कोलगोधिकाः।
यावतो मृगभेदाँश्च दद्यात् संमुख एव हि।।१०७८।।

श्रीक्रमसंहितायाम्-

यत्नतस्तं बलिं दद्यान्न हन्यादात्मना पुनः।
यदि हन्यात् प्रमादेन रौरवं नरकं व्रजेत्।।१०८१।।

महाकालेऽपि

स्वहस्तेन पशुं हत्वा पशुयोनिमवाप्नुयात्।

तन्त्रान्तरे-

स्वयं वा भ्रातृपुत्रो वा भ्राता वा सुहृदेव वा।
सपिण्डश्छेदयेद्वापि शुद्धान्तः करणो यदि।।१०८२।।

न रिपुं नाङ्गहीनं वा न काणं नापि कुब्जकम्।
न योजयेच्छत्रुपक्षं अलिच्छेदनकर्मणि।।१०८३।। इत्युक्तम्

महिषबलिदाने विशेष उक्तो (महाकालसंहितायाम्)-

विशेषः कश्चिदधिको महिषे तं ब्रुवेऽधुना।
तदङ्गे देवताः सर्वाः पूजयेत् कुसुमाक्षतैः।।१०८४।।
प्रणवादिनमोऽन्तैश्च मध्ये ङेन्तैः पदैस्तथा।
स्थानानि देवताश्चापि क्रमेण कथयामि ते।।१०८५।।
ब्रह्मरन्ध्रे च नासायां कर्णयो रसने तथा।
नैत्रयोर्वदने चैव ललाटे तदनन्तरम्।।१०८६।।
दक्षगण्डे वामगन्डे ग्रीवायां केश एव च।
दक्षभ्रुवि तथा वामभ्रुवि चैव वरानने।।१०८७।।
ओष्ठेऽधरे च स्कन्धे च हृदये पृष्ठ एव च।
जठरे चरणे पुच्छे सर्वस्मिन् देह एव च।।१०८८।।
ब्रह्मा मेदिन्यथाकाशः सर्वतो मुख एव च।
ज्योतोषि विष्णुश्चन्द्रश्च शक्रो वह्निर्महेश्वरः।।१०८९।।
निर्ऋतिर्मित्रवरूणौ तथा लक्ष्मीः सरस्वती।
धनेश्वरः सर्पराज आदित्यः साध्य एव च।।१०९०।।
गन्धर्वेन्द्रस्तथा सिद्धा चामुण्डा सर्वशेषगा।
अनेनैव प्रकारेण नरस्यापि प्रपूजयेत्।।१०९१।।
क्रमसिद्धं पूर्वगतमदोऽधिकमिहार्हणम्।
अथोभयोः शेषगतान् मन्त्रानाकलय प्रिये!।।१०९२।।
यमस्य वाहनत्वेन ख्यातस्त्वमसि कासरः।
वसतः शृङ्गयोरग्रे मृत्युकालौ सदा तव।।१०९३।।
भवानेव परिद्वेष्टि जवनाँस्तुरगानपि।
तव रूपं समास्थाय रम्भासुरसुतः पुरा।।१०९४।।
भगवत्या समं युद्धं कृतवान् दर्पमोहितः।
देव्या त्वं निहतश्चासि तथा क्रान्तं शिरस्तव।।१०९५।।
वहस्यतश्चण्डिकां त्वं शिरसा भङ्गुरेण वा।
त्वत्तो नान्यो बलिः कश्चिद्देव्याः प्रीतिप्रदायकः।।१०९६।।
अतो ददामि काल्यै त्वां भक्तियुक्तेन चेतसा।
मयि कल्याणमाधाय गच्छ कासर सद्गतिम्।।१०९७।।

नरबलौ विशेषमाह–

मनुष्यबलिदाने तु विशेषः कश्चिदीरितः।
पूर्वोद्युरकृताहारं संपरित्यक्तमैथुनम्।।१०९८।।
स्नातं रक्ताम्बरधर नरं मुण्डितमस्तकम्।
रक्तचन्दनदिग्धाङ्ग कृतश्मश्रुनखं तथा।।१०९९।।
अजाताश्रुकमुद्रिकं दीनं नाप्यधोमुखम्।
न बाडवं न चाण्डालं न क्लीबं पतितं न च।।११००।।
चतुर्विधेभ्योऽपि शिवे स्वयमागतमुत्तमम्।
प्रोक्ष्येत् पशुसामान्यरूपेण प्रथमं ततः।।११०१।।
महिषोक्तप्रकारेण पश्चादेतान् मनून जपेत्।
सर्वेषु प्राणिषु श्रेष्ठस्त्वं मनुष्य इति स्थितः।।११०२।।
बलिश्रेष्ठ महाभाग देवगर्भश्रिया वृतः।
रक्ष मां सर्वभीतिभ्यः सिद्धिं देहि तथोत्तमाम्।।११०३।।
राज्यं देहि यशो देहि चानुत्तमां गतिम्।
आरोग्यं दीर्घमायुश्च प्रजावृद्धिं रणे जयम्।।१००४।।
कल्याणं विपुलान् भोगान् दारानपि- हृदीप्सितान्।
कात्यायन्यां दृढ़ां भक्ति लक्ष्मीमप्यधिकां स्थिराम्।।११०५।।
दत्त्वा राज्यं परित्यज्य शरीरं पाञ्चभौतिकम्।
देवीलोकं व्रज क्षिप्रं सज्ञातिसुतबान्धवम्।।११०६।।
महादानैर्महायज्ञैस्तपोभिरतिदुष्करम् ।
यत् स्थानं नाप्यते लोकैस्तत् त्वं गच्छ नरर्षभ्।।११०७।।
अङ्गीकृतो महाकाल्या मांसशोणितलिप्सया।
देवीलोकं सुदुष्प्राप्यं प्राप्नुहि त्वं द्रुतं गतः।।११०८।।
तत्र गत्वा शिवं ध्याहि मामकीनं जगत्पते।
देवीलोकगतिः काम्या मत्प्रसादात् तवेदृशः।।११०९।।
त्वत्प्रसादादहं शत्रून् जयेयं रणमूर्धनि।
श्लोकानष्टाविमान् देवि! पठेन्नरबलिक्षणे।।१११०।।

गण्डकेऽपि विशेष उक्तस्तत्रैव–

खङ्गमन्त्रं समाख्यास्ये गण्डको येन दीयते।
द्विपदेहाकृते खङ्ग शस्त्राभेद्यकलेवर।।११११।।
तृप्ता भवेयुः पितरस्त्वन्मांसेन सुरा अपि।
न च त्वत्तोऽधिकः कश्चित् पवित्रः पृथिवीतले।।१११२।।

त्वत्करोटिजपात्राणि शस्तानि श्राद्धकर्मणि।
मया देव्या बलित्वेन त्वमद्य विनिवेदितः।।१११३।।
मम विघ्नान् समुत्सार्य सद्यो देवीगणे भव। इति।

यामले-

एवं हत्वा पशून् सद्यस्तदीयरुधिरं तथा।
स्वर्णादिरचिते पात्रे गृहणीयादुष्णफेनिलम्।।१११४।।

कालिकापुराणे

ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं श्रीं कौशिकी रुधिरेणाप्यायताम्-इति।
पात्रे नियोजयेद्रक्तं शिरस्येव प्रदीपकम्।।१११५।।

महाकालसंहितायाम्-

अथ पात्राणि वक्ष्येऽहं स्थाप्यते यत्र शोणितम्।
हैमे वा राजते ताम्रे ग्राह्यां रक्तं महीभृता।।१११६।।
सामन्तैर्माण्डिलकैश्च ताम्रे वा कांस्यरैत्ययोः।
दरिद्रगृहिभिश्चापि मार्त्तिके वाऽथ दारवे।।१११७।।
अथ वा पत्रपुटके नैव लोहे कदाचन।
न रङ्गे सीसके चापि नारिकेलफलत्वचि।।१११८।।
कौलानां सर्वपात्रेभ्यः कपालं श्रेष्ठमिष्यते।
एषां पशूनां पललैर्यावती तृप्तिरीरिता।।१११९।।
भगवत्याः प्रिये तृप्ती रुधिरैरपि तावती।
नित्ये नैमित्तिके वाऽपि कात्यायन्याः प्रपूजने।।११२०।।
विना वलिं नैव दद्यादामे पललशोणिते।
पशोर्वा पक्षिणो वाऽपि नरस्यापि विशेषतः।।११२१।।

अथ मस्तकपतनफलं तत्रैव-

एवं दत्वा बलिं देव्यै बलिदानविधिर्यथा।
शुभाशुभं विजानीयाद्राज्यस्य च नृपस्य च।।११२२।।
यदि वायव्यदिग्भागे नैर्ऋत्ये दक्षिणेऽपि वा।
मस्तके पतिते चैव हानिरत्र विनिर्दिशेत्।।११२३।।
शेषेषु दिक्षु सर्वासु विदिक्षु च फलं शृणु।
पूर्वे चोत्तरदिग्भागे पतते यदि मस्तकम्।।११२४।।
सर्वसम्पत्करं विद्याद्राजा राज्यं विनिर्दिशेत्।
भ्रमित्वा दक्षिणे कर्णे यदि पतति वै शिरः।।११२५।।
तदा सिद्धिश्च मासान्ते वामकर्णे विपद्भवेत्।
राज्ञामग्रे भवेद्धानिर्गृहस्थानां भवेच्छुभम्।।११२६।।

ऐशान्यां मध्ययोश्चैव पतते यदि मस्तकम्।
छिन्नं शिरो निपतितं सहास्यं यदि दृश्यते।।११२७।।
विभूतिं तस्य जानीयाद्राजा राज्यं विनिर्दिशेत्।
तदा स्वल्पेन कालेन सर्वसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम्।।११२८।।
एकवारे भवेत् सिद्धिर्द्विवारे हानिरुच्यते।
गृहस्थानां विजानीयाद्राज्ञां तु विपरीतकम्।।११२९।।
यदाऽश्रु दृश्यते नेत्रे तदा हानिं विनिर्दिशेत्।
यदा कटकटाशब्दो दन्तानां श्रूयते क्वचित्।।११३०।।
तदा तु मरणं विद्याद्धानिं सर्वत्र निर्दिशेत्।

त्रैपुरपद्धत्याम्-

दक्षिणे पतिते सिद्धिर्वामभागे च निन्दितम्।।११३१।।
सव्ये तु पतिते छेदे देवीमन्त्रं स्मरेद्बुधः।
ततः कुण्डादिके हुत्वा हुतिभिर्दशपञ्चभिः।।११३२।।
शमयेद्धङ्क्तेर्दोषं बलिलक्षणलक्षितम्।

महाकालसंहितायाम्-

दद्याद्राक्षसदिग्भागे मन्त्री बलिशिरः स्वयम्।।११३३।।
तद्दक्षिणे रक्तपात्रं विपरीतं न सददेत्।
देवस्य संमुखं कृत्वा छिन्नं भागं प्रकल्पयेत्।।११३४।।
तदेव शस्तं जानीयान्मध्यमं तदुदीरितम्।
बलीनामिति संज्ञानं शिरश्च पुरतो ददेत्।।११३५।।

तथा-

न भूभौ स्थापयेच्छीर्षं न चैव विपरीतकम्।
शिरः सलोहितं दद्यात् पुर एव न चान्यतः।।११३६।।
रुधिरादानकाले तु पात्रे स्वविभावाहृते।
सैन्धवं स्थापयेत् किञ्चित् फलानामेकमेव हि।।११३७।।
तद्रक्तं हविरेव स्यात् पुरोडाशं च तच्छिरः।
नासाग्रीवागण्डपुच्छपललानि निकृत्य हि।।११३८।।
पशूनां वदने क्षिप्त्वा ततः संस्थापयेत् पुरः।
तथा पक्षत्रिपत्रं च वीनां त्रोटौ विनिःक्षिपेत्।।११३९।।
पशुवच्चरणस्यापि शीर्षे कमललोचने।
बलीनां मस्तके दद्यात् प्रदीपं धूपवर्त्तिकाम्।।११४०।।
दहनाल्लोमकेशानां यो गन्ध उपतिष्ठते।
घ्राति तं चण्डिका देवी सन्तुष्टा तु प्रजायते।।११४१।।

तस्मिन्नेव ह्यवसरे आधिक्यं धूपदीपयोः।
यथाविभतो देवि! कर्त्तव्यं भक्तितत्परः।।११४२।।
बल्याधिक्ये च शीर्षाणां विधेयाः पङ्क्यस्तथा।
सधूपदीपाः कुसुमाक्षतपुञ्जान्वितास्तथा।।११४३।।

तथा

शिरश्च संमुखे स्थाप्यं सदीपं पात्रवर्जितम्।
स चापि हविरक्तं स्यादथ वा तिलजोक्षितः।।११४४।।
सार्षपं न प्रदातव्यं न चान्यफलसम्भवम्।
मूर्धाभिषिक्तो हविषा तैलेन बहुसिद्धिभाक्।।११४५।।
अन्यबीजोद्भवै रोगं शोकं मृत्युं च विन्दति।
यथा लोमानि दह्यन्ते यत्नात् कार्यं तथा नरैः।।११४६।।

तन्त्रान्तरे-

सूत्रवर्तिं प्रदद्याच्च वस्त्रवर्त्तिः प्रशस्यते।
अङ्गुष्ठस्य प्रमाणं च दीर्घं चैव षड्ङ्गुलम्।।११४७।।
कार्पाससूत्रकैर्दद्यादेकविंशतिसूत्रकैः।
सुगन्धिद्रव्यैस्तत् कुर्यात् कर्पूरागुरुचन्दनैः।।११४८।।
ग्राहाणां कच्छपानां च गोधायाश्च विशेषतः।
मत्स्यानामपि पक्षिणां न दीपं दापदयेच्छिवे!।।११४६।।
शीर्षोपरि ज्वलद्दीपं यावत्कालं प्रवर्त्तते।
तावत्कालं वसेत् स्वर्गे तस्माद्यत्नेन दापयेत्।।११५०।।
लोमदाहोद्भवं गन्धं घ्रात्वा देवी प्रसीदति।
तस्मात् संवर्धयेद्दीपं तस्मात् पात्रं विवर्जयेत्।।११५१।।
निर्वाणे मृत्युमाप्नोति दीयमाने प्रदीपके।

महाकालसंहितायाम्

ततः पात्रं पुरः कृत्वा देव्याः सपशु शोणित्।।११५२।।
शर्करायुतदूर्वाणां प्रदद्यात् त्रिर्महाघृतम्।
सैन्धवं शृंगवेरं च कदलीफलमेव च।।११५३।।
पातयेन्मधुराणां च काममुद्दिश्य साधकः।
अष्टधा विभजेद्दिग्वन्मध्ये चैवं कुशादिभिः।।११५४।।
दत्वा किञ्चिद्घृतं तत्र कुर्यात् तर्पणमुद्रया।
तर्पणां भागभाजां वै देवीनां द्विद्धिरेव च।।११५५।।

आद्यन्तिमौ तारहार्दी मध्ये आदिमनोरपि।
तत्तन्नाम्ना मन्त्रमपि तर्पयामीति संयुक्तम्।।११५६।।
द्वितीयरूपं ङेन्तं च तद्द्वितीयपदोदितम्।
मध्ये नित्योदितश्रयाख्यपात्रवत् पीठगा क्रिया।।११५७।।
पूर्वस्यां दिशि चामुण्डा दक्षिणास्यां तु योगिनी।
डाकिन्युक्ता पश्चिमायामुत्तरस्यां तु भैरवी।।११५८।।
विदारिकाऽऽग्नेयकोणे नैर्ऋत्यां पापराक्षसी।
पूतना चापि वायव्ये ईशाने कालिका तथा।।११५९।।
ततः स्तुतिं प्रकुर्वीत बद्धाञ्जलिपुटोऽग्रतः।
जय देवि जगन्मातर्जय पापौघहारिणि।।११६०।।
जय जन्मजराव्याधितृणदावानलाकृते।
जय सर्वविपत्तिघ्ने जय त्रिदशवन्दिते।।११६१।।
जय नित्यानन्दरूपे जय कल्याणदायिनि।
जय शत्रुक्षयकरे जय रोगप्रणाशिनि।।११६२।।
जय भीमे जयाघोरे जय सङ्कटतारिणि।
जयामृतरसास्वादतुन्दिलामन्दविग्रहे।।११६३।।
त्रिनेत्रे विकरालास्ये मुण्डमालाविभूषिते।
सर्वासुरक्षयकरि खड्गखट्वाङ्गधारिणि।।११६४।।
महाघोरे महारावे दैत्यदर्पनिषूदिनि।
इमं पशुबलिं देवि गृहीत्वा कालरात्रिके।।११६५।।
प्रीता भव महाचण्डे रक्ष मां शरणागतम्।
आयुर्देहि धनं देहि भाग्यं कीर्त्तिं च देहि मे।।११६६।।
स्त्रियं देहि सुतान् देहि सर्वान् कामाँश्च देहि मे।
उग्रचण्डे प्रचण्डाऽसि प्रचण्डकरवालिनि।।११६७।।
महाचण्डोग्रदोर्दण्डे विश्वेश्वरि नमोऽस्तु ते।
रक्ष मां शरणापन्नं त्वत्पादार्पितमानसम्।।११६८।।
हर पापं हर क्लेशं हर शोकं हरासुखम्।
हर रोगं हर क्षोभं हर दैन्यं हर प्रिये।।११६९।।
स्तुतिमेतां पठित्वैवं दण्डवत् प्रणमेद्भुवि।
गुह्यकालि जगद्धात्रि सर्वान्तर्यामिनीश्वरि।।११७०।।
गृहीत्वेमं पशुबलिं यथोक्त फलदा भव।
कायेन मनसा वाचा त्वत्तो नान्या गतिर्मम।।११७१।।

अन्तश्चरसि भूतानां दष्ट्री त्वं परमेश्वरि!।

यामले-

कात्यायनि! महामाये! दुर्गेः दुर्गतितारिणि।।११७२।।
नमस्तुभ्यं जगद्धात्रि कालरात्रिस्वरूपिणि।
एवं स्तुत्वा महादेव्यै दत्त्वा च सुमनोऽञ्जलीन्।
साष्टाङ्ग प्रणमेद्भूमौ भक्तियुक्तेन चेतसा।।११७३।।

सुमनोऽञ्जलीनिति बहुवचनं कपिञ्जलाधिकरणन्यायेन त्रित्वे पर्यवस्यति। तथा च पुष्पाञ्जलित्रयं दत्त्वा प्रणमेदित्यर्थः।

।। इति बलिदानविधिः ।।

अथ पशुपक्षिणां वस्त्वन्तराणां च दैवतानि

महाकालसंहितायाम्-

पशूनां च विहङ्गानामन्येषामपि वस्तूनाम्।
ब्रवीमि देवताः सर्वाः क्रमेणोत्सर्गकर्मणि।।११७४।।
प्राजापत्यो गजः प्रोक्तस्तुरगो यमदैवतः।
तथा चैकशफाः सर्वे कथिता यमदैवताः।।११७५।।
महिषश्च तथा याम्य उष्ट्रौ वै नैर्ऋतो मतः।
गोवृषौ रुद्रदैवत्यो छाग आग्नेय उच्यते।।११७६।।
मेषस्तु वारुणो ज्ञेयो वराहो वैष्णवो मतः।
गौरीदेव्यै व्याघ्रसिंहौ गण्डको ब्रह्मदैवतः।।११७७।।
यावन्तो मृगभेदाः स्युः कथिता वायुदेवताः।
यावन्तः पक्षिणः सर्वे वायव्याः परिकीर्त्तिता।।११७८।।
प्राजापत्यास्तथा मत्स्याः कच्छपाः साध्यदैवताः।
गोधा वरुणदैवत्या ग्राहा अपि च तादृशाः।।११७९।।
तथा च बभ्रूशलभावादित्येशानदैवतौ।
कन्या दासस्तथा दासी प्राजापत्या नरास्तथा।।११८०।।
अभयं शिवदैवत्यं धरित्री विष्णुदैवता।
तथा समुद्रदैवत्यं रत्नमुक्ताफलादिकम्।।११८१।।
जलाशयास्तथा सर्वे वारिधानी कमण्डलुः।
प्रपा कुम्भश्च करकं ज्ञेयं वरुणदैवतम्।।११८२।।
सुवर्णमग्निदैवत्यं लौहं भैरवदैवतम्।
कांस्ये पूषाऽश्विनौ चापि देवता परिकीर्त्तिताः।।११८३।।

रङ्गं नासत्यदैवत्यं सीसकं वायुदैवतम्।
ताम्रं च सूर्यदैवत्यं पित्तलं कुजदैवतम्।।११८४।।
रजतं चन्द्रदैवत्यं खर्परं पितृदैवतम्।
गुडं कुबेरदैवत्यं शर्करा मित्रदैवता।।११८५।।

अन्यत्र तु।

आपो गुडे देवताः स्यु................इत्युक्तम्।

तथा-

जाङ्गलं वह्निदैवत्यं मधु स्याद्यमदैवतम्।
ताम्बूलदेवता ज्ञेया शक्रो विद्याधरोऽथ वा।।११८६।।

तन्त्रान्तरे-

ताम्बूले देवताः शक्रविद्याधरविनायकाः।

महाकालः-

तथा मृत्युञ्जयो देवो घृतेषु परिनिष्ठितः।।११८७।।
तैलं तु राहुदैवत्यं कार्पासं केतुदैवतम्।
क्षीरं च तारादैवत्यं दधि चौषधिदैवतम्।।११८८।।

अन्यन्त्र तु-

क्षीरे नारायणः प्रोक्तो दधिसर्पाः प्रकीर्त्तितम् । इत्युक्तम्।

तथा

पिष्टं शचीदैवतं च सिन्दूरमपि पार्वति!।

तन्त्रान्तरे-

अन्येषु देवताः सर्वे देवः पिष्टे प्रजापतिः।।११८९।।

महाकालः

लवणं चाब्धिदैवत्यं जलं वरुणदैवतम्।
देवः स्मरश्च गन्धर्वो मधुपर्के च चन्दने।।११९०।।
पुष्पं च लक्ष्मीदैवत्यं धूपे देवो वनस्पतिः।
अप्सरोदैवतं ज्ञेयं सर्वं मृगमदादिकम्।।११९१।।
दीपोऽपि वह्निदैवत्यो नैवेद्यं विष्णुदैवतम्।
पादुका सोमदैवत्या छत्रं स्यादिन्द्रदैवतम्।।११९२।।
देवता कामधेनुः स्याच्चामरे त्रिदशेश्वरि!।
व्यजनं वायुदैवत्यमिन्द्रः सिंहासनस्य च।।११९३।।
माला च रतिदैवत्या डाकिनी देवता सुरा।
मांसं निर्ऋतिदैवत्यं वितानं चन्द्रदैवतम्।।११९४।।

प्राजापत्यानि शस्यानि पक्वान्नानि च सर्वशः।
वाचस्पत्यानि वासांसि पाण्डुराण्यसितानि च।।११९५।।
मयुदैवानि रक्तानि दुर्गादैवं तु पट्टकम्।
विद्या ब्राह्मी विनिर्दिष्टा विद्याप्रकरणानि च।।११९६।।
सारस्वतानि ज्ञेयानि पुस्तकाद्यानि पार्वति।
पात्राणामपि सर्वेषां विश्वकर्माऽधिदैवतम्।।११९७।।

यामले-

वाद्यं चतुर्विधं ज्ञेयं रुद्रगन्धर्वदैवतम्।

महाकालः-

द्रुमाणां च लतानां 'तु शाकानां हरितैः सह।।११९८।।
फलानामपि सर्वेषां देवो ज्ञेयो वनस्पतिः।
अजिनानि तथा शय्या रथ आसनमेव च।।११९९।।
उपानहौ तथा दोला यच्चान्यत् प्राणिवार्जितम्।
उत्तानाङ्गिरदैवत्यां प्रवदन्ति मनीषिणः।।१२००।।
ध्वजो वै धर्मदैवत्यः सीरं पर्यन्यदैवतम्।
पाषाणादि तथा रत्नं कथितं शक्रदैवतम्।।१२०१।।
गृहं तु सर्वदैवत्यमनुक्तं यन्मया प्रियेः।
तत् सर्व रुद्रदैवत्यं ज्ञेयमुत्सर्गकर्मणि।।११०२।।

।। इति दैवतानि ।।

अथ कुमारी पूजाविधिः

महाथर्वणसंहितायाम्-

ततः कुमारीयजनं कुर्यात् साधकसत्तमः।
यस्मिन् कृते तु विधिवत् कर्मणः साङ्गता भवेत्।।१२०३।।
अकृते चाङ्गहानिः स्याद्विशेषाच्छरदर्चने।

महाकालसंहितायाम्-

समाप्य पूजामासायं प्रदोषे पर्युपस्थिते।
कुमारीपूजनं कुर्याद्विधिना पञ्चमं हितम्।।१२०४।।

तथा-

भक्तभद्राभद्रमुभे तदनक्ति सुरेश्वरि!।
स्वयं तद्रूपमास्थाय मूढ़भावामुपेयुषी।।१२०५।।

दिदृक्षुरायाति शिवा भक्तिपूजनसम्भृतिः।
तस्मात् तत्रादरः कार्यो भक्तिभावं च जानता।।१२०६।।
देवतास्त्रिविधोत्पातैर्यथादेशे हिताहितम्।
सूचयन्ति तथैवैषां वार्षिकं सुरवन्दिते।।१२०७।।
तद्विज्ञानार्थमप्येषा पूजितव्या प्रयत्नतः।
चतुर्णामपि कौलानां स्मर्त्तानामानुकल्पिनाम्।।१२०८।।
नैवात्र मतभेदोऽस्ति नैवार्चनभिदाऽपि वा।
न च पूर्वोत्तरौ पक्षौ न च संदेहकल्पना।।१२०९।।
भवेच्च फलबाहुल्यं तुष्टिर्देव्यास्तथैव च।
विशिष्य ज्ञायतेऽनेन तथा भावि शुभाशुभम्।
ज्ञाते शुभे भवेत् तोषोऽन्यस्मिँश्चोपायचिन्तनम्।।१२१०।।

तथा

न तथा तुष्यति शिवा बलिहोमस्तुतीरणैः।
कुमारीपूजनेनात्र यथा सद्यः प्रसीदति।।१२११।।
न केवलं पूजयेत् तां भोजयेच्चापि यत्नतः।

तथा-

व्यङ्गता चाप्यकरणात् पूजायाः परिकीर्त्तिता।।१२१२।।
कुमारीपूजनेनात्र यथा सद्यः प्रसीदति।
करणात् साङ्गताऽपि स्यादन्यस्मिन्नकृतेऽपि हि।।१२१३।।

तथा-

कौलानां निशि पूजोक्ता स्मार्त्तानामपराह्निको।
नित्या तु शारद्यर्चायां काम्या नैमित्तिकीतरा।।१२१४।।

कुमारीलक्षणमाह-

सुस्नातां रक्तपीतादिनानारागोज्ज्वलांशुकाम्।
सर्वालङ्कारचित्राङ्गीमज्ञातानङ्गचेष्टिताम् ।।१२१५।।
अजातपुम्मनःसङ्गां सप्ताष्टनववार्षिकीम्।
अनीचजातिं गौराङ्गीं पितृमातृमतीमपि।।१२१६।।
अदन्तुरामवाग्दतामधिकोनाङ्गवर्जिताम् ।
अदीर्घकेशीमुद्दीप्तां सुस्मितास्यामलोभनाम्।।१२१७।।

निषिद्धालक्षणमुक्तं तत्रैव-

श्यामां दीर्घदतीमोतुनयनां पिङ्गमूर्धजाम्।
तनुमूनगतिं क्रुद्धां कुब्जां खञ्जां च खर्विकाम्।।१२१८।।

भ्रूकेशाल्पत्वसहितां तथा चैव गलद्व्रणाम्।
जातस्तनरजोऽनङ्गां प्रयत्नेन विवर्जयेत्।।१२१६।।

तन्त्रान्तरे-

अधिकाङ्गीं च हीनाङ्गीं रोगिणीं च व्रणाङ्किताम्।
अन्धां काणां केकरां च कुरूपां लोमशां त्यजेत्।।१२२०।।

महाकालसंहितायाम्-

एतद्भिन्ना कुमारी तु वरणीयाऽर्चनक्रमे।

मेरुतन्त्रे-

विप्रां सर्वेष्टसंसिद्ध्यै यशसे क्षत्रियोद्भवाम्।
वैश्यजां धनलाभाय पुत्राप्त्यै शूद्रजां यजेत्।।१२२१।।

स्कान्दे-

दारुणे चान्त्यजां कन्यां पूजयेद्विधिना नरः।

यामले-

यः कुमारीं यजेन्मन्त्री सर्वपर्वसु सर्वदा।
तेनार्चिता महादेवी सत्यं सत्यं न संशयः।।१२२२।।
सन्ध्यैकवर्ष संप्रोक्ता द्विवर्षा च सरस्वती।
त्रिधामूर्तिस्त्रिवर्षा च चतुरव्दा च कालिका।।१२२३।।
सुभगा पञ्चवर्षेयमुमा षड्वार्षिकी भवेत्।
मालिनी सप्तवर्षा च अष्टमी कुब्जिका मता।।१२२४।।
नवाव्दा काल संकर्षा दशवर्षाऽपराजिता।
एकादशाव्दा रुद्राणी द्वादशाव्दा च भैरवी।।१२२५।।
तत्परा स्यान्महालक्ष्मीस्तत्परा कुलनायिका।
क्षेत्रज्ञा तत्परा प्रोक्ता षोडशाब्दा च चण्डिका।।१२२६।।
एवं क्रमेण विज्ञेया विना पुष्पं कुमारिका।

हेमाद्रौ स्कान्दे-

एकैकां पूजयेत् कन्यामेकवृद्ध्या तथैव च।
द्विगुणं त्रिगुणं वाऽपि प्रत्येकं नवकं तु वा।।१२२७।।

तथा-

नवभिर्भजते भूमिमैश्वर्यं द्विगुणेन तु।
एकवृद्ध्या लभेत् क्षेममेकैकेन श्रियं लभेत्।।१२२८।।
एकवर्षा तु या कन्या पूजार्थे तां विवर्जयेत्।
गन्धपुष्पफलादीनां प्रीतिस्तस्या न विद्यते।।१२२९।।

वाड़वानलीये-

उत्तमा सा परिज्ञेया सप्ताष्टनवहायना।
मध्यमा पञ्चवर्षा च षडब्दा दशहायना।
एकद्वित्रिचतुर्वर्षा रुद्राब्दाद्याऽवरा स्मृता।।१२६०।।

महाकालसंहितायाम्-

गीतवादित्रनिर्घोषैरानन्दादरपूर्वकम् ।
नीत्वा पूजागृहद्वारि कुमारीस्ता अयुग्मिकाः।।१२३१।।
पञ्च वा सप्त वा चापि नवैकादश वा पुनः।
मुख्यैका तासु कर्त्तव्या या स्यात् सर्वाङ्गसुन्दरी।।१२३२।।
बह्वीनामप्यभावे हि भवेदेका कुमारिका।
काम्ये नैमित्तिके चैका बह्वयः शारदपूजने।।१२३३।।
श्रेणीभूता उत्थिताश्च नमीभूतानना अपि।
स्थापयित्वा क्रमेणैता मुख्यामादौ नियोज्य च।।१२३४।।
देवीबुद्धिं विधायास्यां साधको विगतत्वरः।
गृहीतमदिरामत्तः कल्पितार्चनसम्भृतिः।।१२३५।।
प्राणायामं विधायादौ ततौ भूतापसारणम्।
गुरुं गणपतिं नत्वा वामदक्षिणयोस्ततः।।१२३६।।
मध्ये कुमारीं च तथा मूलदेवीस्वरूपिणीम्।
छोटिकाभिस्तथा तालत्रितयैर्बन्धनं दिशाम्।।१२३७।।

तथा-

कुमर्या मूलभूतायाः पादौ प्रक्षालयेत् ततः।

तथा-

तज्जलं मस्तके दद्याद्देवीपादोदप्रज्ञया।
स्वोत्तरीयांशुकेनैव पादाम्बूपनयेत् ततः।।१२३८।।
पुनरक्षतमादाय विघ्नानुत्सारयेत् प्रिये!।
उदीर्यमाणमन्त्रेण तालत्रयपुरःसरम्।।१२३६।।
तारपाशकलाकूर्चास्त्राणि प्रथमतो वदेम्।
भूतान्यपसारय च विघ्नान् नाशय चेत्यपि।।१२४०।।
हृच्छीर्षे चरमे दद्यादेकविंशाक्षरो मनुः।
कुमार्या सहिताः सर्वे तया देवीस्वरूपया।।१२४१।।
दर्शनार्थं समायान्ति यावन्तो देवयोनयः।
प्रेता भूताः पिशाचाश्च गन्धर्वा गुह्यका अपि।।१२४२।।

राक्षसा दानवा यक्षा ये चान्ये क्रूरकर्मिणः।
सह प्रविश्य कौमार्या मण्डपं शारदार्चनम्।।१२४३।।
लुम्पन्ति च कुमार्यर्चां पूजां विध्वंसयन्ति च।
अतो वारद्वयं कार्यं विघ्नस्योत्सारणं प्रिये!।।१२४४।।
ततः स्ववामहस्तेन कुमार्या दक्षिणं करम्।
गृहीत्वा दक्षचरणविनिःक्षेपपुरःसरम्।।१२४५।।
पङ्क्तीभूताः कुमारीस्ताः श्लोकरूपं मनुं पठन्।
पूजागृहान्तः शनकैर्नमन्मौलिः प्रवेशयेत्।।१२४६।।
समस्तजगतामाद्ये जगदाधाररूपिणि।
कुमारीरूपमास्थाय प्रविशेदं गृहं मम।।१२४७।।
भवत्याः कीदृशं रूपं जाने मातरहं न हि।
कुमारीरूपमेवेदं पश्यामि नरचक्षुषा।।१२४८।।
भक्तिं मदीयां विज्ञाय त्वत्पादाम्बुजयोः शिवे!।
त्वया प्रकटितं रूपमीदृशं सर्वसिद्धये।।१२४९।।
दृष्टिः कार्या न मे पापे सञ्चारेणासतः पथः।
दृढ़ायां केवलं भक्तौ दातव्या सुरवन्दिते!।।१२५०।।
शिवाद्यास्तव रूपं हि कीदृशं नेति जानते।
ज्ञास्यामि को वराकोऽहं पाञ्चभौतिकविग्रहः।।१२५१।।
इति पञ्च पठन् श्लोकान् स्वपृष्ठेनैव तारयेत्।
अनीक्षमाण एवेशि गीतवाद्यपुरःसरम्।।१२५२।।

यामले-

स्नापिता गन्धतैलेन नानाभरणभूषिता।
आनीय देवतापार्श्वे स्थापनीया सुधीमता।।१२५३।।

महाकालसंहितायामपि-

मुख्यं तत्पूजनं प्रोक्तं मुख्याया एव तन्मनुम्।
तत्पूजयेव ताः सर्वाः पूजिताः स्युर्न संशयः।।१२५४।।

तथा-

बलिं दत्त्वां ततो देवयोनिभ्यः परमेश्वरि।
आरभेत निरालस्यः कुमारीन्यासमुत्तमम्।।१२५५।।
नामान्यादौ खलु महाचण्डयोगेश्वरी मता।
ततः सिद्धिकराली च पुनः सिद्धिविकराल्यपि।।१२५६।।

महान्ता मार्यथ ज्ञेया वज्रकापालिनी ततः।
मुण्डमालिन्यट्टहासिन्येते द्वे परिकीर्त्तिते।।१२५७।।
चण्डकापालिनी कालचक्रेश्वर्यप्यनन्तरम्।
गुह्यकाली ततः कात्यायनी कामाख्यया सह।।१२५८।।
चामुण्डा सिद्धिलक्ष्मीश्च कुब्जिका तदनन्तरम्।
मातङ्गी तदनु ज्ञेया चण्डेश्वर्यथ कीर्त्त्यते।।१२५९।।
सर्वशेषेऽथ कौमारी एता अष्टादशेरिताः।
एतानि गुह्येशीविषयाणि।

अन्यत्र तु-

नामान्यादौ व्याहरामि दुर्गा नारायणी शिवा।।१२६०।।
महामाया योगनिद्रा कालरात्री कपर्दिनी।
उग्रचण्डा भद्रकाली अजिता चापराजिता।।१२६१।।
कात्यायनी महाकाली कामाख्याकुलनायिका।
भैरवी भुवनेशी च कौमार्यष्टादश स्मृताः।।१२६२।।

। इति नामान्तरमुक्तानि।

तथा-

अङ्गान्यतो वच्मि शिरो मुखं तदनु चक्षुषी।
कर्णौ नासापुटे चापि कपोलौ तत्पुरौ पुनः।।१२६३।।
अधरोष्ठौ दन्तपङ्क्ती स्कन्धौ हृदयमेव च।
बाहू च जठरं पृष्ठमूरुजानू तथैव च।
जङ्घे पादौ च सर्वाङ्गं तावन्त्येव स्थलानि च।।१२६४।।

त्रिशक्तिरत्ने-

कलादि च कलान्तं ताः पूजयेद्विधिना बुधः।
उपवेश्यासने दिव्ये कुमारीं साधकोत्तमः।।१२६५।।
वक्ष्यमाणेन विधिना देहेऽस्या न्यासमाचरेत्।
कुमारिका स्यात् प्रथमा द्वितीया नायिका मता।।१२६६।।
तृतीया भैरवी ख्याता तुर्या वागीश्वरी भवेत्।
पालिका पञ्चमो प्रोक्तो सम्बुद्ध्यन्ताः कुलादिकाः।।१२६७।।
न्यस्याः पञ्चाङ्गयोगेन कुमारीणां कलेवरे।
वामावर्त्तक्रमादास्यचतुष्कं पूजयेत् क्रमात्।।१२६८।।
ततः सिद्धा जया पूर्वा जयाऽन्या कुब्जिका परा।
कालिका पञ्चमी प्रोक्ता विज्ञेया बोधिता इमाः।।१२६९।।

पूर्वादिवक्त्रसंयुक्ता चतुर्थ्यन्ता नमोऽन्तकाः।
तत्रत्स्थानेषु विन्यस्याः स्वधिया क्रमपूर्वकम्।।१२७०।।
पञ्चप्रणवयोगेन चैतन्यमनुना सह।
न्यासजालं हि पूर्वोक्तं कुर्यात् साधकसत्तमः।।१२७१।।

महाकालसंहितायाम्-

ततोऽर्घस्थापनं कुर्यान्नित्यके यदुदाहृतम्।
पूजोपकरणस्यापि शुद्धिरुक्ता पुरोक्तवत्।।१२७२।।

तथा-

ततो ध्यानं प्रकुर्वीत कुमार्या वक्ष्यमाणकम्।

तन्त्रान्तरे-

प्रसन्नवदनाम्भोजां प्रोद्यद्बालार्कसप्रभाम्।
रक्ताम्बरां रक्तमाल्यां नानालङ्कारभूषिताम्।।१२७३।।
सस्मितां दिव्यकन्याभिः क्रीड़ारसपरायणाम्।
ध्यायेत् कुमारिकां बालां स्वभक्ताभीष्टसिद्धिदाम्।।१२७४।।

तथा-

उपचाराँस्ततः सर्वान् पाद्यादीन् स्तुतिपश्चिमान्।
समर्पयेदिति शेषः।

यामले-

यष्टव्या पूर्वमार्गेण वक्ष्यमाणेन वा पुनः।
स्वनामभिश्चतुर्थ्यन्तैस्त्रितारांद्यैर्नमोऽन्तकैः ।।१२७५।।
देवता पश्चिमे मन्त्री यजेदेताः सलक्षणाः।
आद्या शुद्धा कालिकाऽन्या तृतीया ललिता स्मृता।।१२७६।।
चतुर्थी मालिनी ख्याता पञ्चमी स्याद्वसुन्धरा।
सरस्वती रमा गौरी दुर्गा तु नवमी भवेत्।।१२७७।।
पञ्चाब्दं नववर्षं च यजेद्बालं विचक्षणः।
पञ्चाब्दो बटुकः प्रोक्तो नववर्षो गणेश्वरः।।१२७८।।

तथा-

प्रदद्यादासनं वाचा ह्रिया पाद्यं समर्पयेत्।
रमयाऽर्घं निवेद्याथ स्त्रिया चन्दनमर्पयेत्।।१२७९।।
कुमार्यै शक्तिबीजेन प्रदद्यात् कुसुमोच्चयम्।
चैतन्यमनुना मन्त्री धूपदीपादिकं न्यसेत्।।१२८०।।

तारा एते समाख्याता भृगुर्भवसमन्वितः।
बिन्दुनादसमाक्रान्तश्चैतन्यमनुरीरितः ।।१२८१।।
क्व चिद्भैरवबीजं तु पञ्चमः प्रणवो मतः।
एकस्या एव पूजने त्रिताराद्यमन्त्रेणैव समस्तोपचारसमर्पणं बोध्यम्।
त्रिताराद्येन मन्त्रेण सर्वं तस्यै निवेदयेत्-इति वचनात्।

महाकालसंहितायाम-

भूषणानि दुकूलानि सिन्दूरालक्तकावपि।
कज्जलादर्शविख्याततालवृन्तानि पेटिका।।१२८२।।
परिकर्माधारचोलमञ्चिकापीठदोलिका ।
पाञ्चालिका च मञ्जूषा पादुके कुथपट्टके।।१२८३।।
चन्द्रातपोपसङ्ख्याने तथोद्वर्त्तनभाजनम्।
शय्योपधानपर्यङ्काः समुद्गं च प्रसाधनी।।१२८४।।
प्रतिग्राहश्च हिन्दोला तथा सीमन्तवर्त्तिका।
गोरोचनामृगमदौ कर्पूरं कुंकुमं तथा।।१२८५।।
एवमादीनि चान्यानि यावच्छक्यानि सुन्दरि!।
प्रदातव्यानि वस्तूनि कुमारी तुष्यते यथा।।१२८६।।

तथा-

ततो यत् स्थापितं पात्रं कुमार्यै प्रतिपादयेत्।
स्वीकुर्यात् सा च तत्रैव तथा यत्नं समाचरेत्।।१२८७।।
अगृहीते तु तत्पात्रे महान् दोषोऽभिजायते।
अतो यत्नस्तथा कार्यः स्वीक्रियेत् यथा तया।।१२८८।।
ततो गृहीत्वा कुसुमाक्षतं तस्याः कलेवरे।
पञ्चाशत्संख्यकाः शक्तिः क्रमतः परिपूजयेत्।।१२८९।।
ता इदानीं प्रवक्ष्यामि सावधाना निशामय।
आद्या जया च विजया ऋद्धिदा माययान्विता।।१२९०।।
कला च सिद्धिदा सूक्ष्मा प्रभा स्यात् सुप्रभा ततः।
विद्युता च विशुद्धिश्च नन्दिनी च विशुद्धियुक्।।१२९१।।
अपराजिता च ललिता लक्ष्मीर्गौरी तथैव च।
अथ मेधा च गायत्री सावित्री च स्वधा पुनः।।१२९२।।
स्वाहेच्छे च क्रिया विद्या प्रज्ञा दीप्ता च चेतना।
भद्रा ज्येष्ठा तथोमा च शिवा च मुदिता क्षमा।।१२९३।।

श्रद्धाऽथ विमला कौमुद्यपि वै विशदा ततः।
अशोक ज्ञानदा चैव बलदा राज्यदाऽपि च।।१२९४।।
मैत्री तदनु रुद्राणी भवानी च मृडान्यपि।
सर्वज्ञा चण्डिका चापि कुमारी सर्वशेषगा।।१२९५।।
पञ्चाशत्सङ्ख्यका एताः कुमार्याःशक्तयः स्मृताः।
भैरवानष्ट तदनु पूजयेदक्षतादिभिः।।१२९६।।
भैरवीभ्येस्ततो विघ्नविनायकेभ्य एव च।
बटुकक्षेत्रपालाभ्यां योगिनिभ्यस्तथैव च।।१२९७।।
भूतेभ्यः प्रेतयक्षेभ्यो डाकिनीभ्यस्तथैव च।
कुर्वीत पूजनं देवि! कुसुमाक्षतचन्दनैः।।१२९८।।
पुनरष्टौ सर्वशेषे ङेऽन्ता देवीर्यजेत् प्रिये!।
महामाया कालरात्री ततो वै सर्वमङ्गला।।१२९९।।
पूजा डमरुका पश्चाद् राजराजेश्वरी तथा।
सम्पत्प्रदा भगवती कुमारी तदनन्तरम्।।१३००।।

यामले-

कुलान्तः पूजयेदेनां कुलकोणेष्विमान् यजेत्।
कामेश्वरी च वज्रेशी तृतीया भगमालिनी।।१३०१।।
उपरिष्टात् कुलद्वन्द्वकोणेष्वेतः समर्चयेत्।
अनङ्गकुसुमाऽनङ्गमन्मथाऽनङ्गपूर्विका ।।१३०२।।
मदनानन्दशब्दाद्या चतुर्थी कुसुमोत्तरा।
पञ्चम्यनङ्गमदनाऽऽतुराऽनङ्गपदादिका ।।१३०३।।
शिशिरा कथिता ह्येताः शक्तयो रससङ्ख्यकाः।
अनेन विधिना पूज्या कुमारी साधकोत्तमैः।।१२०४।।

महाकालसंहितायाम्-

समाप्येत्थं कुमार्यर्चां तत्पुरो भुवि वारिणा।
वर्त्तुलं मण्डलं कृत्वा तन्मध्ये कुलकामिनीम्।।१३०५।।
विलिख्य जलकुसुमाक्षतचन्दननागजैः।
पूजयेन्मण्डलं तच्च शुभदायै नमो वदेत्।।१३०६।।
स्थालीगतं च तत्सर्वमन्नं तत्र निवेश्य हि।
नानाविधां च सामग्री लेह्यचोष्यादिघट्टिताम्।।१३०७।।
मांसमीनसुरापूर्णां भक्ष्यचर्व्यादिपूरिताम्।
कुमारीदक्षहस्तं च स्थापयित्वाऽतन्नमूर्धनि।।१३०८।।

उत्तानं वक्ष्यमाणेन मनुनाऽत्र समुत्सृजेत्।

अन्नोत्सर्गमन्त्रस्तु-

ऐं ह्रीं श्रीं स्त्रीं सौं सर्वशक्तिस्वरूपायै सर्वसिद्धिदायै भगवत्यै कुमार्ये भक्ष्यभोज्यनानाविधान्नकल्पितषड्रसोपेतमिदं महाभोगनैवेद्यं तुभ्यमहं निवेदयामि गृहाण गृहाण भुङ्क्ष्व भुङ्क्ष्व प्रसीद प्रसीद सर्वसिद्धिं मे प्रयच्छ प्रयच्छ ऐं ह्रीं श्रीं नमः स्वाहा।। इति पद्धतिकृतोक्तः।

विविधविधानोत्सर्गमन्त्रः-

मैधतारो शाकिनी च त्रपा प्रेतश्च भैरवी।।१३०९।।
योगिनीकामकमला बीजानि पुरतो नव।
जय द्वयं भगवति महाचण्डपदादनु।।१३१०।।
योगेश्वरि कुमारीरूपधारिणि ततो वदेत्।
स्वरूपं दर्शय द्वन्द्वं ततः प्रकटय द्वयम्।।१३११।।
डाकिनी नरसिंहश्च क्रोधादपि महापदम्।
भोगानु वैभवे प्रोच्य इदमन्नं ततः परम्।।१३१२।।
गृह्णद्वयं भुञ्ज युगं खाहि युग्मं ततः परम्।
मम शत्रून् संहर द्विर्नाशय द्वितयं तथा।।१३१३।।
साम्राज्यं तदनु द्विर्द्विर्दद देहि पदद्वयम्।
क्षेममाब्दिकमुच्चार्य ब्रूहियुग्ममनन्तरम्।।१३१४।।
ततः सिद्धिकराल्युक्त्वा सिद्धितो विकरालि च।
बीजानि त्रीणि ततश्चात् फेत्कारीहारकर्णिकाः।।१३१५।।
स्फुरद्वयं प्रस्फुर द्विर्मां रक्षयुगलं तथा।
कूर्चद्वयं चास्त्रयुगं नमः स्वाहा च पश्चिमे।।१३१६।।
शतमेकोनपञ्चाशदक्षराणि मनाविह।

अन्यकुमारीपूजाविधिः-

इतरासां कुमारीणां प्रत्येकं पूजनं चरेत्।।१३१७।।
गन्धपुष्पैर्धूपदीपैर्नैवेद्येरन्नसङ्कुलैः ।

तथा

अन्नानि यादृशान्यस्यै मुख्यायै कल्पितानि हि।।१३१८।।
अन्याभ्यस्तादृशान्येव दातव्यान्येष निश्चयः।
फलाफलं तु मुख्याया ज्ञेयमत्र विपश्चिता।।१३१९।।

कुमारीभोजनकालिककर्त्तव्योपदेशः-

भुञ्जानासु कुमारीषु न तूर्यध्वनिमाचरेत्।
नान्यत्र च मनो दद्यात् संवाधं नैव कल्पयेत्।।१३२०।।

कोलाहलं निषेधेत अमङ्गल्यानि यानि च।
रुदितापानवायुं च प्रयत्नेन विवर्जयेत्।।१३२१।।
सावधानो भवेदत्र किमादौ भक्षयन्ति ताः।
मिथः किं वा प्रजल्पन्ति कुत्र वा वस्तुविग्रहः।।१३२२।।
कुत्र दृष्टिं प्रक्षिपन्ति भीताः किं चा वदन्त्यमूः।
इत्यादि नानाजातीयाश्चेष्टा आसां प्रयत्नतः।।१३२३।।
सावधानतया ज्ञेया भद्राभद्रस्य सूचकाः।
भक्षयन्तीषु तास्वेवं पठेत् तत्स्तोत्रमत्वरम्।।१३२४।।
कृताञ्जलिर्नम्रशिरा आसामन्ने क्षिपन् दृशौ।

कुमारी भोजनकालिकस्तोत्रम्

जय कालि महाभीमे भीमरावे भयापहे।।१३२५।।
संसारदावाग्निशिखे वृजिनार्णवतारिणि।
ब्रह्मेन्द्रोपेन्द्रभूतेशप्रभृत्यमरवन्दिते ।।१३२६।।
सर्गपालनसंहारकारण्यहितमारिणि ।
गुह्यकालि परानन्दरसपूरितविग्रहे।।१३२७।।
परब्रह्मरसास्वादकैवल्यानन्ददायिनि ।
गुणातीतेऽपि सगुणे महाकल्पान्तनर्त्तकि।।१३२८।।
कुमारीरूपमास्थाय विज्ञाप्रज्ञास्वरूपिणि।
आगताऽसि ममागारं शारद्यर्चासमाप्तये।।१३२९।।
सांवत्सरिककल्याणसूचनाय तथैव च।
धन्योऽस्मि कृतकृत्योऽस्मि सफलं जीवितं मम।।१३३०।।
यस्मात् त्वमीदृशं कृत्वा कौमारं रूपमुत्तमम्।
गुह्यकालि समायाताऽऽब्दिकपूजाजिघृक्षया।।१३३१।।
त्वमेवैतेन रूपेण देवेभ्यः प्रार्थिता पुरा।
दत्तवत्यसि साम्राज्यं वरानपि समीहितान्।।१३३२।।
मह्यमप्यद्य देवेशि वरं देहि सुपूजिता।
ब्रह्मणे सृष्टिसामर्थ्यं त्वं पुरा दत्तवत्यसि।।१३३३।।
विष्णवे च त्वमेवादास्तथा पालनशक्तिताम्।
महारुद्राय संहारकर्त्तृत्वमददः शिवेः।।१३३४।।

देवेभ्यश्चापि दैत्यानां नाशने दक्षतामपि।
अन्तर्यामिन्यसीशानि त्रिलोकीवासिनामपि।।१३३५।।
निवेदयामि किं तेऽहं सर्वकर्मैकसाक्षिणि।
शत्रुनाशं राज्यलाभं शरीरारोग्यमेव च।।१३३६।।
त्वत्पादाम्बुजयोर्भक्तिं याचेऽहं चतुरो वरान्।
नमस्ते भगवत्यम्ब नमस्ते भक्तवत्सले।।१३३७।।
नमस्ते जगदाधाररुपिणि त्राहि मां सदा।
मातरं वेद्मि रूपं ते न शरीरं न वा गुणम्।।१३३८।।
भक्त्या हृत्स्थितया पूजां तव जानाम्यनन्यधीः।
त्वं माता त्वं पिता बन्धुस्त्वमेव जगदीश्वरि!।।१३३९।।
त्वं गतिः शरणं त्वं च स्वर्गस्त्वं मोक्ष एव च।
विहाय त्वां जगन्मातर्नान्यां जानामि देवताम्।।१३४०।।
नमस्तेऽस्तु नमस्तेऽस्तु नमस्तेऽस्तु नमो नमः।
एभिः श्लोकैः स्तुतिं कुर्यात् कुमारीणां वरानने!।।१३४१।।
दद्यादाचमनीयं हि भोजनान्ते गतत्वरः।
ततः प्रदद्यात् ताम्बूलं मृगचन्द्राधिवासितम्।।१३४२।।
सह वाद्यादिभिस्तावदनुव्रज्य विसर्जयेत्।

कुमारीभोजनचेष्टाभ्यां शुभाशुभफलज्ञानम्-

शुभाशुभफलं वच्मि साम्प्रतं तव पार्वति!।।१३४३।।
तत्राप्यादौ शुभं वक्ष्ये विपरीतं ततोऽस्य च।
तदुच्छिष्टं ततो दद्याज्जम्बुकेभ्योऽथ भूतले।।१३४४।।
निखनेदप्सु वा देवि समालोड्य विसर्जयेत्।
आदौ भक्ते करे दत्ते सुभिक्षं विषये भवेत्।।१३४५।।
पायसे यजमानस्य पशुवृद्धिः प्रजायते।
घृते स्यादायुरारोग्यं पूजामैश्वर्यवृद्धये।।१३४६।।
तथा मोदकशष्कुल्योः सन्ततिर्भूयसी भवेत्।
मत्स्यजातिष्वर्थलाभः कृशरे यानसम्पदः।।१३४७।।
मांसे त पुत्रलाभः स्यात् तेमने कामिनी भवेत्।
फलं मांसविशेषस्य भिन्न भिन्न ब्रुवे हि तत्।।१३४८।।
अर्थलाभस्तु वाराहे खाड्गे तु विजयो रणे।
माहिषेण तु मांसेन राज्यप्राप्तिर्भवेद्ध्रुवम्।।१३४९।।

आरोग्यं हारिणेनाशु कार्ष्णसारेण वाग्मिता।
शाशे मेधावितां गच्छेदाजेष्वजरतामपि।।१३५०।।
आवेये पलले देवि! सर्वकल्याणमाप्नुयात्।
कामठे मेदिनीलाभो बह्वन्नत्वं च राङ्कुवे।।१३५१।।
वार्ध्रीणसे शत्रुनाशो हांसे मनुजवश्यता।
तैत्तिरेऽभीष्टसिद्धिश्च वर्त्तके पापसंक्षयः।।१३५२।।
मनस्तोषो बलाकायां फलेक्षोर्विश्ववश्यता।
कीर्त्तिस्तु महती दध्नि दुग्धे सम्पदनुत्तमा।।१३५३।।
पिष्टके तनयावाप्तिः शोके च रिपुसंक्षयः।
हालायां पुण्यवृद्धिं स्याच्चोष्ये संपत् सुवाग्मिता।।१३५४।।
धनागमः फाणिते तु कूर्चिकायां बलोन्नतिः।
तुम्बीवृन्ताककूष्माण्डकारवेल्लपटोलकैः ।।१३५५।।
घोषशूरणदीर्घाङ्घ्रिमूलकैस्तेमने कृते।
विद्यालाभो भवेद्देवि! तक्रे वाक्पटुताऽपि च।।१३५६।।
गोधूमचूर्णघटिते वस्तुनि प्रतिभा रणे।
वेद्यां दृष्टौ भवेन्मोक्षो मण्डपेऽप्युन्नतिर्भवेत्।।१३५७।।
चामरच्छत्रयोस्तालवृन्तपर्यङ्कयोरपि ।
घण्टादर्पणयोश्चापि दृग्दाने भूतिरुत्तमा।।१३५८।।
आकल्पालङ्करणयोः स्पर्शचालनदृष्टिषु।
नानाविधानि द्रव्याणि भवन्ति महितुः प्रिये!।।१३५९।।
एवंविधानि भूयांसि चेष्टितान्यशनानि च।
शुभादेशीनि जायन्ते विपरीतान्यतः शृणु ।।१३६०।।
मुख्यभूता कुमारी चेद्वमति द्वित्रिवारकम्।
दुर्भिक्षं जायतेऽवश्यं प्रजाः स्युः पीडिता अपि।।१३६१।।
राजा विनाशमायाति कुमार्या रोदने कृते।
उच्चारे तु महामारी पुरीषे पुरदाहनम्।।१३६२।।
अभोजने शत्रुभयमापदो बहुभोजने।
अभाषणे त्वामयाः स्युर्विपदो बहुभाषणे।।१३६३।।
उपसर्गा बहुविधाश्चेष्टया करपादयोः।
अतिलज्जा विनाशाय तथा निर्लज्जता शुभा।।१३६४।।

नानोत्पातास्तु मौने स्युः स्वापे बाहोर्विनाशनम्।
सर्वनाशस्तु भीतायां क्रुद्धायां मृत्युरेव च।।१३६५।।
आवेशे तत्क्षणाद्राजा म्रियते नात्र संशयः।
शङ्कितायां शत्रुशङ्का शान्तायामीतितो भयम्।।१३६६।।
चिन्तितायां तु विज्ञेयं तद्राष्ट्रस्यैव पातनम्।
मोहे वित्तविनाशः स्याज्जाड्ये पूजा च निष्फला।।१३६७।।
चाञ्चल्ये चञ्चला लक्ष्मीः पूजकस्यैव जायते।
विषादवत्यथ यदि कुमारी तत्र जायते।।१३६८।।
सरुज सप्रजं राष्ट्रं तदा सीदति पार्वति!।
रोगेण म्रियते राजा यदि रुग्णा प्रजायते।।१३६९।।
दुर्भिक्षमरकातङ्का यद्यश्रूणि विमुञ्चति।
सर्वनाशो भवेत् तर्हि धुनोति यदि मस्तकम्।।१३७०।।
त्रस्तायां रिपुस्त्रासस्तस्य राज्ञः प्रदिश्यते।
कम्पे सति स्याद्विमुखी कालिका परमेश्वरी।।१३७१।।
नीचैः शिरश्चेत् कुरुते असन्तुष्टा तदेश्वरी।
हीनायुः स्यात् तदा पृथ्वीपतिश्चेद्गद्गदस्वरा।।१३७२।।
पूजकस्य भवेद्दैन्यं व्याकुला यदि जायते।
मोहने व्याकुलायां तु सर्वं नगरमाकुलम्।।१३७३।।
व्रीडितायां भवेद्रोगः स्वेदे दारधनक्षयः।
अधोवायुं पतति चेत् कुमारीदैवयोगतः।।१३७४।।
पीडितं परचक्रेण तदा भवति पत्तनम्।
गीतं गायति चेत् तत्र कुमारी रहितक्रिया।।१३७५।।
संप्रजाराष्ट्रतनयदारस्य नृपतेर्मतिः।
सहगताभिः कदा चिन्मुख्या विवदते यदि।।१३७६।।
तदा समायात्यकस्मात् परचक्रं सुदारुणम्।
यया कया चित् सार्द्धं वा येन केन चिदेव वा।।१३७७।।
कुमारी भाषते वीतभयं मन्दाक्षसाध्वसा।
प्रजायन्ते तदा तस्य विषयेषु षडीतयः।।१३७८।।
व्यत्यासं यदि भक्ष्यस्य कुर्वते करचालनैः।
ग्रस्तं समस्तं भवति मनसो वाञ्छितं प्रिये!।।१३७९।।
उपायनीकृतं यद्यद्द्रव्यं देव्यै तु मण्डपे।
तच्चेत् कराभ्यां स्पृशति कान्दिशीको भवेन्नृपः।।१३८०।।

निर्वापयति चेद्दीपं कुमारी मुखमारुतैः।
बुद्धिभ्रंशो भवेत् तर्हि ज्ञानदीपश्च नश्यति।।१३८१।।
दैवयोगाच्च नृत्यन्ति कुमार्यश्चेत् सुराकुलाः।
सराजकः सविषयः शमशानमिव जायते।।१३८२।।
वासांस्यु सृज्य नग्नाः स्युर्यदि तत्र कुमारिकाः।
शत्रुभिर्धृयते तर्हि राजा समरमूर्धनि।।१३८३।।
यदि फूत्कृत्य कूर्दन्ते करौ धृत्वा भ्रमन्ति च।
भूतावेशः क्षितीशस्य जायते नात्र संशयः।।१३८४।।
वामे वा दक्षिणे वाऽपि चलत्तारकया दृशा।
रक्तोग्रया घूर्णयते शिरः स्वस्य कुमारिका।।१३८५।।
कुरुते वाऽऽट्टहासं सा येन त्रस्यन्ति मानवाः।
भूतावेशो भवेत् तर्हि प्रेता नृत्यन्ति वा पुरे।।१३८६।।
दन्तैर्दन्तान् पीडयित्वा कुर्यात् कटकटारवम्।
प्रयाति सदनं मृत्योः सदारसुतबान्धवः।।१३८७।।
दृशावनिमिषे कृत्वा सन्दश्यौष्ठं रदेन हि।
संतर्जयति शीर्षं च कम्पयन्ती कुमारिका।।१३८८।।
तदेव फलमुद्दिष्टं यत् स्यात् कटकटारवे।
आद्यन्तिकं भजेन्मौनं करेणान्नं स्पृशेन्न च।।१३८९।।
शिरोऽत्यर्थं च नमयेदङ्गुष्ठेन लिखेद् भुवम्।
विदध्यात् भूतले रेखां करजैर्निष्प्रयोजनम्।।१३९०।।
संहताभ्यां कराभ्यां च कण्डूयेदथवा शिरः।
तृणान्यकारणाच्छिन्द्यादङ्गुलीस्फोटमाचरेत् ।।१३९१।।
पाणिभ्यां मुद्रयेन्नेत्रे द्वौ कर्णौ पिदधाति वा।
कुर्वीत वा बाहुरिकां पार्ष्णिघृष्टिं करोति वा।।१३९२।।
महान्तं ग्रासमादत्ते मुखं व्यादाय तिष्ठति।
अन्नोपरि क्षुतं धत्ते जृम्भणं वा मुहुर्मुहुः।।१३९३।।
गृहीत्वा पाणिना वाऽन्नं चतुर्दिक्षु क्षिपत्यपि।
उत्थाय वा प्रचलति त्यक्त्वाऽन्नं पूजनं तथा।।१३९४।।
आयाति वमनं वाऽस्याः स्यातां रोमाञ्चवेपथू।
निर्गच्छतो वा तद्गात्रात् पूयास्त्रे हेतुमन्तरा।।१३९५।।
अकस्मादेव कुरुते काकुं चेत् कारणं विना।
अश्लीलं वल्गति तथा स्ववर्ग्यार्थे प्ररोदिति।।१३९६।।

आमुक्त ऩङ्कृतीर्मुञ्चेद्गृहं यास्यामि वा वदेत्।
यस्य क ्रापि वा कुर्याद् भर्त्सनं तत्स्थले स्थिता।।१३९७।।
उपालभेत वा कांचित् सहैवास्या उपेयुषी।
भिनन्ति वा निदानं वा स्वहस्तबलयानि वा।।१३९८।।
मृते मृतस्य कस्यापि बन्धोः शोचति तत्र सा।
यत्किञ्चिद्वा प्रलपति निर्निमित्तं कुमारीका।।१३९९।।
सर्वमेतदमंगल्यं विज्ञेयं त्रिदशार्चिते।
दुर्भिक्षं धननाशं च रोगो मारीभयं तथा।।१४००।।
पदे पदे च विपदः शोको व्याधी रिपून्नतिः।
परचक्रागमोऽकस्मादग्निदाहः पुरे गृहे।।१४०१।।
मृत्युत्रासश्च दारिद्र्यं विच्छेदो बन्धुभिः सह।
भूतप्रेतपिशाचाभिनिवेशोऽपि गृहे गृहे।।१४०२।।
अष्टाभिस्तु महारोगैः प्रजानां निधनं भवेत्।
कुमारीचेष्टितद्वारा ज्ञायते हि शुभाशुभम्।।१४०३।।
वार्षिकं च फलं राज्ञो जयो वाऽथ पराजयः।
मृत्युर्दुःखं धनं सौख्यं शत्रुभीतिर्बलोन्नतिः।।१४०४।।
राज्यवृद्धिः प्रजापीड़ा व्यङ्गताऽनीकसंक्षयः।
कुमारीपूजनात् सर्वं ज्ञायते भोजनादपि।।१४०५।।
परीक्षा यत्नतस्तस्माद्राज्ञा स्वस्य शुभाशुभम्।
अर्चातोऽपि विशेषेण भोजनेन सुरेश्वरि!।।१४०६।।
ज्ञाते शुभे समीचीनं वृत्ते तदितरत्र हि।
कार्य्यं बहुसम्भारैर्दोषं तज्जं निवारयेत्।।१४०७।।
निवृत्य स्वगृहं रुग्णा याता यदि कुमारिका।
तस्मिन्नेवाहनि भवेत् तथाऽपि न शुभं फलम्।।१४०८।।
इत्यादि फलबाहुल्यं शुभस्याप्यशुभस्य च।
मया विविच्य कथितं ध्रियस्व हृदि यत्नतः।।१४०९।।

पीठमूर्त्योर्निशीथपूजाविधिः-

ततो निशीथसमये विधिवत् पूजनं ततः।

वाड़वानलीये-

पूजिता शरदर्चायां या कुमार्युक्तलक्षणा।।१४१०।।
सर्वपर्वसु सा पूज्या यावत् पुष्पं न दृश्यते।

पुष्पमित्युपलक्षणम्।

निर्वापयति चेद्दीपं कुमारी मुखमारुतैः।
बुद्धिभ्रंशो भवेत् तर्हि ज्ञानदीपश्च नश्यति।।१३८१।।
दैवयोगाच्च नृत्यन्ति कुमार्यश्चेत् सुराकुलाः।
सराजकः सविषयः शमशानमिव जायते।।१३८२।।
वासांस्यु सृज्य नग्नाः स्युर्यदि तत्र कुमारिकाः।
शत्रुभिर्धूयते तर्हि राजा समरमूर्धनि।।१३८३।।
यदि फूत्कृत्य कूर्दन्ते करौ धृत्वा भ्रमन्ति च।
भूतावेशः क्षितीशस्य जायते नात्र संशयः।।१३८४।।
वामे वा दक्षिणे वाऽपि चलत्तारकया दृशा।
रक्तोग्रया घूर्णयते शिरः स्वस्य कुमारिका।।१३८५।।
कुरुते वाऽऽट्टहासं सा येन त्रस्यन्ति मानवाः।
भूतावेशो भवेत् तर्हि प्रेता नृत्यन्ति वा पुरे।।१३८६।।
दन्तैर्दन्तान् पीडयित्वा कुर्यात् कटकटारवम्।
प्रयाति सदनं मृत्योः सदारसुतबान्धवः।।१३८७।।
दृशावनिमिषे कृत्वा सन्दश्यौष्ठं रदेन हि।
संतर्जयति शीर्षं च कम्पयन्ती कुमारिका।।१३८८।।
तदेव फलमुद्दिष्टं यत् स्यात् कटकटारवे।
आद्यन्तिकं भजेन्मौनं करेणान्नं स्पृशेन्न च।।१३८९।।
शिरोऽत्यर्थं च नमयेदङ्गुष्ठेन लिखेद् भुवम्।
विदध्यात् भूतले रेखां करजैर्निष्प्रयोजनम्।।१३९०।।
संहताभ्यां कराभ्यां च कण्डूयेदथवा शिरः।
तृणान्यकारणाच्छिन्द्यादङ्गुलीस्फोटमाचरेत् ।।१३९१।।
पाणिभ्यां मुद्रयेन्नेत्रे द्वौ कर्णौ पिदधाति वा।
कुर्वीत वा बाहुरिकां पार्ष्णिघृष्टिं करोति वा।।१३९२।।
महान्तं ग्रासमादत्ते मुखं व्यादाय तिष्ठति।
अन्नोपरि क्षुतं धत्ते जृम्भणं वा मुहुर्मुहुः।।१३९३।।
गृहीत्वा पाणिना वाऽन्नं चतुर्दिक्षु क्षिपत्यपि।
उत्थाय वा प्रचलति त्यक्त्वाऽन्नं पूजनं तथा।।१३९४।।
आयाति वमनं वाऽस्याः स्यातां रोमाञ्चवेपथू।
निर्गच्छतो वा तद्गात्रात् पूयास्रे हेतुमन्तरा।।१३९५।।
अकस्मादेव कुरुते काकुं चेत् कारणं विना।
अश्लीलं वल्गति तथा स्ववर्ग्यार्थे प्ररोदिति।।१३९६।।

आमुक्तालङ्कृतीर्मुञ्चेद्गृहं यास्यामि वा वदेत्।
यस्य कस्यापि वा कुर्याद् भर्त्सनं तत्स्थले स्थिता।।१३९७।।
उपालभेत वा कांचित् सहैवास्या उपेयुषी।
भिनत्ति वा निदानं वा स्वहस्तबलयानि वा।।१३९८।।
कृते मृतस्य कस्यापि बन्धोः शोचति तत्र सा।
यत्किञ्चिद्वा प्रलपति निर्निमित्तं कुमारीका।।१३९९।।
सर्वमेतदमंगल्यं विज्ञेयं त्रिदशार्चिते।
दुर्भिक्षं धननाशं च रोगो मारीभयं तथा।।१४००।।
पदे पदे च विपदः शोको व्याधी रिपून्नतिः।
परचक्रागमोऽकस्मादग्निदाहः पुरे गृहे।।१४०१।।
मृत्युत्रासश्च दारिद्र्यं विच्छेदो बन्धुभिः सह।
भूतप्रेतपिशाचाभिनिवेशोऽपि गृहे गृहे।।१४०२।।
अष्टाभिस्तु महारोगैः प्रजानां निधनं भवेत्।
कुमारीचेष्टितद्वारा ज्ञायते हि शुभाशुभम्।।१४०३।।
वार्षिकं च फलं राज्ञो जयो वाऽथ पराजयः।
मृत्युर्दुःखं धनं सौख्यं शत्रुभीतिर्बलोन्नतिः।।१४०४।।
राज्यवृद्धिः प्रजापीड़ा व्यङ्गताऽनीकसंक्षयः।
कुमारीपूजनात् सर्वं ज्ञायते भोजनादपि।।१४०५।।
परीक्षा यत्नतस्तस्माद्राज्ञा स्वस्य शुभाशुभम्।
अर्चातोऽपि विशेषेण भोजनेन सुरेश्वरि!।।१४०६।।
जाते शुभे समीचीनं वृत्ते तदितरत्र हि।
काम्यार्चा बहुसम्भारैर्दोषं तज्जं निवारयेत्।।१४०७।।
निवृत्य स्वगृहं रुग्णा याता यदि कुमारिका।
तस्मिन्नेवाहनि भवेत् तथाऽपि न शुभं फलम्।।१४०८।।
इत्यादि फलबाहुल्यं शुभस्याप्यशुभस्य च।
मया विविच्य कथितं ध्रियस्व हृदि यत्नतः।।१४०९।।

पीठमूर्त्योर्निशीथपूजाविधिः-

ततो निशीथसमये विधिवत् पूजनं ततः।

वाड़वानलीये-

पूजिता शरदर्चायां या कुमार्युक्तलक्षणा।।१४१०।।
सर्वपर्वसु सा पूज्या यावत् पुष्पं न दृश्यते।

पुष्पमित्युपलक्षणम्।

महाकालः-

पीठमूर्त्योः प्रकुर्वीत धूपदीपानुलेपनैः।
नैवेद्यैरुपहारैश्च गीतवाद्यादिभिस्तथा।।१४११।।

यामले-

कुमारीपूजिता हन्ति कलुषं पूर्वसञ्चितम्।
कुमारिकां विजानीयात् साक्षात् प्रकृतिरूपिणीम्।।१४१२।।
पत्रं पुष्पं फलं तोयं यत्किञ्चिद्वस्तु शोभनम्।
अनन्तफलदं प्रोक्तं कुमार्यै चेत् समर्पयेत्।।१४१३।।
भोजिता चेत् कुमारी स्याद् भोजितं भुवनत्रयम्।
ब्राह्मणाय सुशीलाय कुमारी यः समर्पयेत्।।१४१४।।
पृथ्वीदानजं पुण्यं सोऽश्नुते नात्र संशयः।
स सर्वसिद्धिमाप्नोति यः कुमारीं समर्चयेत्।।१४१५।।
वसन्ति सततं देहे कुमार्या योगिनीगणाः।
अतः पूज्या नमस्या सा लालनीया तदिच्छया।।१४१६।।
अशक्त्या पूजयेदेकां कुमारीं साधकोत्तमः।
विना कुमरिकापूजां न पर्व परिहापयेत्।।१४१७।।
यो नित्यमर्चयेदेतां तस्य स्यात् सिद्धिरुत्तमा।
नवरात्रे समायाते नवम्यन्तं निशातधीः।।१४१८।।
नानोपहारैरभ्यर्च्य कुमारीं वृद्धिपूर्वकम्।
वृद्धिक्रमेण प्रयजेद्वाञ्छितां सिद्धिमाप्नुयात्।।१४१९।।
अथ वा पूजयेन्मन्त्री युवतीर्नव संख्यकाः।
हल्लेखा गगना रक्ता महासूक्ष्मा करालिका।।१४२०।।
इच्छा ज्ञाना क्रिया दुर्गा नवनाभिरीताः।
पूर्ववत् पूजयेन्मन्त्री जपेत् साग्रं सहस्रकम्।।१४२१।।
यदि सा क्षोभमायाति स्वयमेव विलासिनी।
तया सह नयेद्रात्रिं वासरं वा निशातधीः।।१४२२।।
कुमारीं न स्पृशेदेव भावयुक्तेन चेतसा।
अन्यथा मृत्युमाप्नोति नो चेद्देवी पराङ्मुखी।।१४२३।।

महाकालसंहितायाम्-

एवं दोषगुणौ ज्ञात्वा कुर्वीत विधिपूर्वकम्।
कुमारीपूजनं भक्त्या शरत्पूजनकर्मणि।
बलिहोमादयश्चास्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्।।१४२४।।

।। इति कुमारी पूजा विधिः ।।

अथ शिवाबलिः

कुलचूड़ामणौ-

विल्वमूले प्रान्तरे वा श्मशाने वाऽपि साधकः।
मांसप्रधानं नैवेद्यं सन्ध्याकाले निवेदयेत्।।१४२५।।

महाकालसंहितायाम्--

पुराद् बहिर्निशाकाले महारण्यसमीपतः।
गृहीत्वा भक्ष्यवस्तूनि पूजासम्भृतिमप्युत।।१४२६।।
आप्तैरनुगतो द्वित्रैः प्रदद्यात् फेरवीबलिम्।
आमानि पक्वान्यपि च मांसानि विधिनाऽर्पयेत्।।१४२७।।
तत्रोदीचीदिग्वदनो वीतभी शुचिरूर्जितः।
प्राणायामं षडङ्गं च विधायार्घं प्रपूर्य वै।।१४२८।।
उत्थाय मुक्तचिकुरः शिवा आकारयेच्छनैः।

कुलचूड़ामणौ-

कालि कालीति वक्तव्यं तत्र सा शिवरूपिणी।।१४२९।।
पशुरूपा समायाति परिवारगणैः सह।
भुक्त्वा रौति यदैशान्यां मुखमुत्तोल्य सुस्वरम्।।१४३०।।
तदैव मङ्गलं तस्य नान्यथा कुलभूषण।
अवश्यमन्नदानेन तोषयेन्नियतं शिवाम्।।१४३१।।
नित्यश्राद्धं यथासन्ध्यावन्दनं पितृतर्पणम्।
तथेयं कुलदेवीनां नित्यता कुलपूजने।।१४३२।।
पशुरूपां शिवां देवीं यो नार्चयति निर्जने।
शिवारावेण तस्याशु सर्वं नश्यति निश्चितम्।।१४३३।।
जपपूजाविधानानि यत्किञ्चित्सुकृतानि च।
गृहीत्वा शापमासाद्य शिवा रोदिति निर्जने।।१४३४।।
एकया त्वश्यते यत्र शिवया देवभैरव।
तत्रैव सर्वशक्तीनां प्रीतिः परमदुर्लभा।।१४३५।।
पशुशक्तिनरे शक्तिः पक्षिशक्तिश्च भैरव।
पूजिता विगुणं कर्म सगुणं कारयेद्यतः।।१४३६।।
तेन सर्वप्रयत्नेन कर्त्तव्यं पूजनं महत्।
राजादिभयमापन्नं देशान्तरभयादिकम्।।१४३७।।
शुभाशुभानि कर्माणि विचिन्त्य बलिमाहरेत्।
गृह्ण देवि महाभागे शिवे! कालाग्निरूपिणि।।१४३८।।

शुभाशुभफलं व्यक्तिं ब्रूहि गृह्ण बलिं तव।
एवमुच्चार्य दातव्यो बलिं कुलजनप्रिये।।१४३९।।

महाकालसंहितायाम्-

स्थानादस्मादपसरेत् किञ्चिद्दूरतरं प्रिये!।
शिवा यथा वीतभया आगच्छन्त्यन्नसन्निधौ।।१४४०।।
तत्र स्थित्वा निरीक्षेत किं किं ता भक्षयन्ति हि।
सर्वा आगत्य चेत् सर्वं प्रदत्तं भक्षयन्ति हि।।१४४१।।
विनिर्दिशेत् सर्वसिद्धिं राज्यलाभं धनागमम्।
यद्यत् ता भक्षयन्त्यन्नं तत्तत् फलमवाप्नुयात्।।१४४२।।
यद्यच्च नैव खादन्ति तत्तन्नैव फलं लभेत्।
कुमारीपूजनादौ तु विशेषोऽस्योपवर्णितः।।१४४३।।
तेन नात्र ब्रुवे देवि! ग्रन्थाधिक्यभयादपि।
कुमारीरूपमास्थाय यथाऽऽयाति महेश्वरी।।१४४४।।
शिवारूपं तथा कृत्वा स्वयमायाति कालिका।
ततो भक्तिः प्रकर्त्तव्या तासु यत्नेन साधकैः।।१४४५।।
शिवासु भक्षयन्तीषु सर्वेभ्यो बलिमाहरेत्।
संहारभैरवायादौ बटुकेभ्यस्ततः परम्।।१४४६।।
विनायकेभ्यो मातृभ्यः क्षेत्रपालेभ्य एव च।
योगिनीभ्यो डाकिनीभ्यः शिवदूतीभ्य एव च।।१४४७।।
पुरोक्तो मन्त्र आसिद्धिं तेन तेन बलिं हरेत्।
महदैश्वर्यमाप्नोति निःशेषं भक्षयन्ति चेत्।।१४४८।।
अर्धे तु मध्यमा सिद्धिरभक्षे तु विपद् भवेत्।

कुलचूड़ामणौ-

यदि नो गृह्यते वत्स तदा नैव शुभं भवेत्।
शुभं यदि भवेत् तत्र भक्ष्यते तदशेषतः।।१४४९।।

शिवाबलीमाहात्म्यम्

महाकालसंहितायाम्-

फलवाप्तिर्भूयसी च जायते परमेश्वरि।
विद्यावान् बलवान् वाग्मी चिरञ्जीवी निरामयः।।१४५०।।
धार्मिको विजयी दक्षो यशस्वी भूपसन्निभः।
ज्ञातिश्रेष्ठः पुत्रवांश्च सर्वयोषित्प्रियः सुखी।।१४५१।।

रूपवान् धनवान् धीरो विक्रान्तो विश्वपूजितः।
कुलीनः सर्वविच्चैव भवत्यत्र न संशयः।।१४५२।।
सौन्दर्यबलविक्रान्तिविद्यायुर्धनधीरताः।
प्रतापकान्तिप्रभुत्वशीलौदार्यदयादयः।।१४५३।।
अणिमाद्याः सिद्धयश्च दासा इव भजन्ति तम्।
यत्किञ्चिदस्ति देवेशि! समस्ते जगतीतले।।१४५४।।
करामलकवत्सर्वं भवन्त्यस्य न संशयः।
शिवाबलेस्तु महिमा मया वक्तुं न शक्यते।।१४५५।।
न चापि फलबाहुल्यं सत्यं सत्यं सुरेश्वरि!।
अव्याहतगतित्वं च सर्वाकर्षणमोहनम्।।१४५६।।
सर्वं साधयति क्षिप्रं शिवाबलिविधानतः।
आरोग्यं मनसः सौख्यं विजयोऽबाधता तथा।।१४५७।।
अविघ्नता दुःखनाशः पुत्रलाभः सुखोन्नतिः।
सर्वकल्याणवाञ्छाप्तिः भयनाशो महोदयः।।१४५८।।
नानाविपद्विनाशश्च जायते हि शिवाबलेः।
बलिदानस्य माहात्म्यं कथयिष्ये कियत्तव।।१४५९।।
निशामयातः प्रकृतं फलस्यान्तो न विद्यते।
खादितोत्थाय तिष्ठत्सु शिवावृन्देषु तत्र हि।।१४६०।।
दण्डवत् प्रणमेत् सर्वाः स्वेष्टदेवीधिया स्वयम्।
पुष्पाञ्जलिं समादाय गन्धचन्दनचर्चितम्।।१४६१।।
उत्थाय मुक्तचिकुरो मीलिताक्षो दिगम्बरः।
भक्तिशाली वीतभयः किञ्चित्प्रणतकन्धरः।।१४६२।।
स्तुतिं कुर्यात् स्तवैरेतैर्वरप्रार्थनपूर्वकम्।

शिवास्तुतिः

शिवारूपधरे देवि! गुह्यकालि नमोऽस्तु ते।।१४६३।।
उल्कामुखि ललज्जिह्वे घोररावे शृगालिनि।
श्मशानवासिनि प्रेते शवमांसप्रियेऽनघे।।१४६४।।
अरण्याचारिण्यनघे शिवे जम्बुकरूपिणि।
नमोऽस्तु ते महामाये जगत्तारिणि कालिके।।१४६५।।
मातङ्गि कुक्कुटे रौद्रि महाकालि नमोऽस्तु ते।
सर्वसिद्धिप्रदे भीमे भयङ्करि भयापहे।।१४६६।।

प्रसन्नाभव देवेशि! मम भक्तस्य चण्डिके!।
संसारसागरतरे जय सर्वशुभङ्करि।।१४६७।।
विस्रस्तचिकुरे चण्डि चामुण्डे मुण्डमालिनि।
संहारकारिणि क्रुद्धे सर्वसिद्धिं प्रयच्छ मे।।१४६८।।
दुर्गे किराति शवरि प्रेतासनगतेऽभये।
अनुग्रहं कुरु सदा कृपया मां विलोकय।।१४६९।।
राज्यं प्रयच्छ विकटे वित्तमायुः सुतान् स्त्रियम्।
शिवाबलिदानेन त्वं प्रसन्ना भवेश्वरि!।।१४७०।।
नमस्तेऽस्तु नमस्तेऽस्तु नमस्तेऽस्तु नमोऽस्तु ते।
इत्येतैरष्टभिः श्लोकैः शिवास्तोत्रमुदीरयेत्।।१४७१।।
ततस्तच्छेषमन्नं यद्भाजनं चान्यदेव वा।
सर्वं हि निखनेद्भूमौ प्रयत्नेनैव पार्वति!।।१४७२।।
यदि काकाः खराः श्वानो ये चान्ये पापजातयः।
भक्षयन्ति तदुच्छिष्टं तदा विघ्नः प्रजायते।।१४७३।।
रात्रावेव समागच्छेन्निर्भयो विपिनान्तरात्।

।। इति शिवाबलि विधिः ।।

अथ कृत्यशेषमाह

आगत्य गन्धपुष्पाद्यैः पुनर्देवीं प्रपूजयेत्।।१४७४।।

तथा-

ततः प्रदक्षिणीकृत्य पतित्वा दण्डवद्भुवि।
भक्तिनम्रः स्तुतिं जल्पेत् काकुगद्गदया गिरा।।१४७५।।
अलिका नासिका बाहू वृक्षो जठरमेव च।
पादौ क्ष्मां स्पर्शतो दण्डप्रणामः स हि गद्यते।।१४७६।।
आयुर्देहि यशो देहि भगं भगवति देहि मे।
पुत्रान् देहि धनं देहि कामान् सर्वांश्च देहि मे।।१४७७।।
प्रचण्डे पुत्रदे नित्यं सुप्रीते सुरनायिके।
कुलोद्योतकरे चोग्रे जयं देहि नमोऽस्तु ते।।१४७८।।
उग्रचण्डे प्रचण्डासि प्रचण्डबलनाशिनि।
नमस्ते सर्वदा देवि विश्वेश्वरि नमोऽस्तु ते।।१४७९।।
दुर्गोत्तारिणि दुर्गे त्वं सर्वाशुभनिषूदनि।
धर्मार्थमोक्षदे देवि नित्यं मे वरदा भव।।१४८०।।

दुर्गे देवि महाभागे त्राहि मां शरणागतम्।
महिषासृङ्मदोन्मत्ते प्रणतोऽस्मि प्रसीद मे!।।१४८१।।
हर पापं हर क्लेशं हर शोकं हराशुभम्।
हर रोगं हर क्षोभं हर मानं हर प्रिये!।।१४८२।।
कालि कालि महाकालि कालिके पापहारिणि।
धर्मकामप्रदे देवि नारायणि नमोऽस्तुते।।१४८३।।
संग्रामे विजयं देहि धनं देहि सदा गृहे।
धर्मकामार्थसम्पत्तिर्देहि देवि नमोऽस्तु ते।।१४८४।।
महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि।
आयुरारोग्यविजयं देहि देवि नमोऽस्तु ते।।१४८५।।
आयुर्ददात मे काली पुत्रानपि सदाशिवा।
अर्थकामौ महामाया विभवं सर्वमङ्गला।।१४८६।।
शिरो मे चण्डिका पातु कण्ठं पातु सुरेश्वरी।
हृदयं पातु चामुण्डा सर्वतः पातु कालिका।।१४८७।।
ब्रह्माणी चैव कौमारी वाराही वैष्णवी तथा।
माहेश्वरी नारसिंही इन्द्राणी शिवदूत्यपि।।१४८८।।
महाकाली च चामुण्डा भैरवी कौशिकी तथा।
उग्रचण्डा प्रचण्डा च चण्डोग्रा चण्डनायिका।।१४८९।।
चण्डा चण्डवती चैव अतिचण्डा च चण्डिका।
एताश्चान्याश्च रुद्राणि यास्ते तिष्ठन्ति शक्तयः।।१४९०।।
ताभिः सहैव मां रक्ष संग्रामे संकटे तथा।
नानापुराणवाक्येन नानादेवर्षिं भाषितैः।।१४९१।।
सदाशिवाज्ञया चापि त्वमेव शरणं मम।
त्वां विहायेतरां नैव संश्रये देवतां शिवे।।१४९२।।
अतः परं यदुचितं तत् कर्त्तुं मातरर्हसि।
आध्याकुलं च दारिद्र्यं रोगं शोकं च दारुणम्।।१४९३।।
वन्धुस्वजनवैराग्यं दुर्गे त्वं हर दुर्गतिम्।
राज्यं तस्य प्रतिष्ठा च लक्ष्मीस्तस्य सदा स्थिरा।।१४९४।।
प्रभुत्वं तस्य सामर्थ्यं यस्य त्वं मस्तकोपरि।
धन्योऽहं कृतकृत्योऽहं सफलं जीवितं मम।।१४९५।।
अगताऽसि यतो दुर्गे माहेश्वरि ममालयम्।
अर्घ्यं पुष्पं च नैवेद्यं धूपं दीपं बलिं तथा।।१४९६।।

गृहाण वरदे देवि कल्याणं कुरु सर्वदा।
कृत्वैवं विधिना दण्डप्रणामस्तुतिपूर्वकम्।।१४९७।।
पूजां समर्पयेद्देव्यै गृहीत्वा पाणिना जलम्।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।।१४९८।।
यदर्चितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे।
गृहीतं शारदीं पूजां मर्त्यमण्डलमागताम्।।१४९९।।
चण्डिके त्वां नमाम्यद्य पूजेयं प्रतिगृह्यताम्।
कायेन मनसा वाचा त्वत्तो नान्या गतिर्मम।।१५००।।
अन्तश्चरसि भूतानां ज्ञात्री त्वं सर्वसाक्षिणी।
एतावत् कृत्यमुदितं शरदीयार्चनक्रमे।।१५०१।।
प्रातरारभ्य देवेशि! रात्रेर्यामत्रयावधि।
शिवाबलिं कुमार्यर्चा प्रभूतं बलिमेव वा।।१५०२।।
हित्वाऽदस्त्रयमष्टम्यामयमेव विधिः प्रिये!।
ततः प्रसादं देव्या यदवशिष्ठं भवेदनु।।१५०३।।
गन्धं पुष्पं च नैवेद्यं सिद्धं वाऽसिद्धमेव वा।
बन्धुभिः सह भुञ्जीत हास्यकौतुकपूर्वकम्।।१५०४।।
गीतनृत्यादिकं पश्चाद्देव्यग्रे विनियोजयेत्।
क्रीड़ा च ज्ञातिभिः सार्धं विदधीत विचक्षणः।।१५०५।।

एतावदशक्ता संक्षिप्तपूजोक्ता।

कालिकापुराणे-

सम्यक्कल्पोदिता पूजा यदि कर्तुं न शक्यते।
गन्धं पुष्पं च धूपं दीपं नैवेद्यमेव च।।१५०६।।
अभावे तोयपुष्पाभ्यां तदभावे च भक्तितः।
संक्षेपपूजा कथिता..............इति।।

।। इति नवमीकृत्यम्।।

अथ द्वितीयादिनवमीपर्यन्त रेवन्तादिपूजाविधिः।

तदुक्तं स्कन्दपुराणे-

शान्तये वृद्धयेऽश्वानामात्मनो विजयाय च।
द्वितीयादिनवम्यन्तं रेवन्तं पूजयेन्नृपः।।१५०७।।

ग्रन्थान्तरे-

आश्विनस्य सिते पक्षे नवमीं यावदेव हि।
द्वितीयां तिथिमारभ्य पूजयेद्विविधार्हणैः।।१५०८।।

रेवन्तमुच्चैःश्रवसं तुरङ्गानभिरक्षितान्।
वर्धन्ते वाजिनस्तेन सर्वोपद्रववर्जिताः।।१५०९।।

अभिरक्षितानीति रक्षणहेतुस्तद्विधिचोक्तः।

शालिहोत्रे-

अश्वयुजि शुक्लपक्षे द्वितीयादि सप्तरात्रं तु।
वड़वारूपेणैका स्वातिः सौरं रथं वहति।।१५१०।।
सा भारेणाक्रान्ता क्रुद्धाऽन्यान्यान्निरीक्षते वाहान्।
तेषां तेजः सत्त्वं बलं च कृत्स्नं निगृह्णति।।१५११।।
सञ्जायन्ते रोगा महोपसर्गैः समन्विताः कष्टाः।
तस्मात् स्वात्युपतापे वाजिषु पीडा भवेन्महती।।१५१२।।
एवं च सप्तरात्रं स्वातेः सम्पात् एव निर्दिष्टः।
तत्र दिवाकरकिरणैरस्पृष्टा वाजिनो रक्ष्याः।।१५१३।।
शालां ततोपलिप्तां मनोरमां वर्जितां च रविकिरणैः।
नानाकारैः पुष्पैरलङ्कृतां धूपितां कुर्यात्।।१५१४।।
तस्यां स्नातास्तुरगाः सुधूपिता अर्चिता द्वितीयायाम्।
पुरुषैश्च शस्त्रहस्तैः सप्ताहं रक्षितव्यास्तु।।१५१५।।

तथा-

शुभेऽहनि मुहूर्त्ते च क्ष्मापतिः सपुरोहितः।
कृतमङ्गलसंस्कारान् वाहान् शालां प्रपूजयेत्।।१५१६।।

ज्योतिःशास्त्रेऽपि-

स्वाती नाम रवेः पत्नी वरदा रूपिणी रथम्।
वाहन्ती साऽऽश्विने मासि सूर्यरश्मिसमाश्रिता।।१५१७।।
सप्ताहं पीडयेदश्वाँस्ततः स्नानार्चितान् गृहे।
रेवन्तं पूजयित्वाऽथ बद्ध्वा पोटलिकां गले।।१५१८।।

तथा-

शुक्लपक्षे द्वितीयायां शालां संवेष्ट्य रक्षयेत्।
आदित्यरश्मितो वाहान् कटैर्वस्त्रादिकैस्तथा।।१५१९।।
अस्तं गते दिनकरे कटादीनपकर्षयेत्।
प्रवातार्थं पुनर्दद्याद्यावत् सन्ध्या न जायते।।१५२०।।
शालाप्रवेशविहितां रक्षां कण्ठे प्रदापयेत्।
लोहकं निम्बपत्राणि गुग्गुलं सर्षपान् घृतम्।।१५२१।।
चैलबद्धां वचां हिङ्गु बध्नीयाद्वाजिनां गले।
घर्षणं भ्रामणं चैव तथा चैवापवर्त्तनम्।।१५२२।।

निशाशेषे प्रकर्त्तव्यं यावद्दूरे दिवाकरः।
एतत्प्रतिदिनं कुर्यात् सप्तरात्रमतन्द्रितः।।१५२३।।
कारयेद्ब्राह्मणाँश्चैव शान्तिस्वस्त्ययनानि च।

ब्रह्मपुराणेऽपि-

शान्तिस्वस्त्यने कार्ये तदा तेषां दिने दिने।।१५२४।।
धान्यं भल्लातकं कुष्ठं वचां सिद्धार्थकाँस्तथा।
पञ्चरङ्गेन सूत्रेण कण्ठे तेषां तु बन्धयेत्।।१५२५।।
वायव्यैर्वारुणैः सौरैः शाक्तैर्मन्त्रैः सवैष्णवैः।
वैश्वदेवैस्तथाऽऽग्नेयैर्होमः कार्यो दिने दिने।।१५२६।।
तुरगा रक्षणीयाश्च पुरुषैः शस्त्रपाणिभिः।
न च ताड्याः क्वचित् तत्र न च वाह्याः कदाचन।।१५२७।।

शालिहोत्रे-

शिरसि स्थापयेद्देवीं रेवन्तं पूजयेत् सदा।

तथा

नानाखाद्यनिवेद्यानि रेवन्ताय निवेदयेत्।।१५२८।।

तथा

वेदीं च कल्पयित्वा धुरि च विधानेन पावकं जुहुयात्।

धुरि शालाशिरोभागे

सायं प्रातश्च शुचिः पुरोहितो ब्रह्मचारी स्यात्।।१५२६।।
शालिहोत्रगदितेन मन्त्रेणानेन होमयेत्।
रोहिताश्व महाभाग हव्यवाडमरोत्तम।।१५३०।।
धूमध्वज क्रतुद्वार स्वर्गस्य प्रथितः पथि।
उत्तिष्ठ होमं गृह्णेयं शान्तिरस्य हयेषु च।।१५३१।।
स्वाहेति तत्र मन्त्रेण प्रापयेत् प्रथमाहुतिम्।
ततः प्रजापतीन्द्राय सोमाय वरुणाय च।।१५३२।।
विवस्वते कुबेराय सुषेणायाहिशालिने।
आदित्येभ्यस्तथाऽश्विभ्यां रुद्रेभ्यो वसुभिः सह।।१५३३।।
विष्णोश्च विश्वदेवानां साध्यानां मरुद्भिः सह।
वासुकिप्रमुखानां च नागानां गरुडस्य च।।१५३४।।
सर्वासां पौर्णमासीनां तिथीनां चैव सर्वशः।
देवीनां नदीनां सागराणां वनस्पतीनाम्।।१५३५।।

स्वाहाकारेण जुहुयात् तृतीयं च हुताशने।
देवानामेव सर्वेषां स्वाहाकारेण होमयेत्।।१५३६।।
दुर्बलानीह रक्षांसि प्रत्यूषे ब्रह्मतेजसा।
भवन्ति तस्मात् प्रत्यूषे स्वापयेत् पोषयेद्धयान्।।१५३७।।
पुरोहितस्तु द्विःकालं तर्पयित्वा द्विजोत्तमम्।
पुण्याहं कारयेन्नित्यं स्वस्त्याशीर्मङ्गलान्वितम्।।१५३८।।
नटनर्तकगन्धर्वाः सूतचारणमागधाः।
तुरगानुपतिष्ठेयुः सप्ताहं शान्तिकारणात्।।१५३९।।
मनोज्ञान् मधुरान् शब्दान् श्रुत्वा गच्छन्ति वै ग्रहाः।
वादित्रं वाहनागारे तस्मान्नित्यं प्रयोजयेत्।।१५४०।।
अतिक्रम्य च सप्ताहमष्टम्यां स्नापयेद्धयान्।
वरुणाय बलिं दत्त्वा पश्चात् तोयेऽवगाहयेत्।।१५४१।।
अष्टम्यामिति द्वितीयामारभ्याष्टमीतिथावित्यर्थः।

ग्रन्थान्तरे

तानश्चान समलङ्कृत्य वाजिशालां प्रवेश्य च।
प्रतिमायां चित्रपटे स्थण्डिले मण्डलेऽथ वा।।१५४२।।
नानोपचारसम्भारै रेवन्तं देवमर्चयेत्।
नमो देवाधिदेवाय तुरङ्गबलचारिणे।।१५४३।।
सूर्यपुत्राय देवाय तुरङ्गानां हिताय च।
तुरङ्गपरिषद्यस्य नृगजोपरि धावति।।१५४४।।
साश्वमश्वाधिपं रक्षं रक्षणं त्वां व्रजाम्यहम्।
इति पुष्पाञ्जलिं दत्वां रेवन्ताय बलिं हरेत्।।१५४५।।

तथा

सूर्यपुत्र महाबाहो छायाहृदयनन्दन।
शान्तिं कुरु तुरङ्गानां रेवन्ताय नमोऽस्तु ते।।१५४६।।
एवं स्तुत्वाऽथ विधिवदुच्चैः श्रवसमर्चयेत्।

ब्रह्मपुराणे

अश्वयुक्शुक्लपक्षे तु स्वातीयोगे सुशोभने।।१५४७।।
पूर्वमुच्चैःश्रवा नाम प्रथमं सूर्यमावहत्।
तस्मात् साश्वैर्नरैस्तत्र पूज्योऽसौ श्रद्धया सदा।।१५४८।।
पूजनीयाश्च तुरगा नवमीं यावदेव हि।

ग्रन्थान्तरे

उच्चैः श्रवो नमस्तुभ्यं नमः क्षीराब्धिनन्दन।।१५४९।।

निशाशेषे प्रकर्त्तव्यं यावद्दूरे दिवाकरः।
एतत्प्रतिदिनं कुर्यात् सप्तरात्रमतन्द्रितः।।१५२३।।
कारयेद्ब्राह्मणाँश्चैव शान्तिस्वस्त्ययनानि च।

ब्रह्मपुराणेऽपि-

शान्तिस्वस्त्यने कार्ये तदा तेषां दिने दिने।।१५२४।।
धान्यं भल्लातकं कुष्ठं वचां सिद्धार्थकाँस्तथा।
पञ्चरङ्गेन सूत्रेण कण्ठे तेषां तु बन्धयेत्।।१५२५।।
वायव्यैर्वारुणैः सौरैः शाक्तैर्मन्त्रैः सवैष्णवैः।
वैश्वदेवैस्तथाऽऽग्नेयैर्होमः कार्यो दिने दिने।।१५२६।।
तुरगा रक्षणीयाश्च पुरुषैः शस्त्रपाणिभिः।
न च ताड्याः क्वचित् तत्र न च वाह्याः कदाचन।।१५२७।।

शालिहोत्रे-

शिरसि स्थापयेद्देवीं रेवन्तं पूजयेत् सदा।

तथा

नानाखाद्यनिवेद्यानि रेवन्ताय निवेदयेत्।।१५२८।।

तथा

वेदीं च कल्पयित्वा धुरि च विधानेन पावकं जुहुयात्।

धुरि शालाशिरोभागे

सायं प्रातश्च शुचिः पुरोहितो ब्रह्मचारी स्यात्।।१५२६।।
शालिहोत्रगदितेन मन्त्रेणानेन होमयेत्।
रोहिताश्व महाभाग हव्यवाडमरोत्तम।।१५३०।।
धूमध्वज क्रतुद्वार स्वर्गस्य प्रथितः पथि।
उत्तिष्ठ होमं गृह्णेयं शान्तिरस्य हयेषु च।।१५३१।।
स्वाहेति तत्र मन्त्रेण प्रापयेत् प्रथमाहुतिम्।
ततः प्रजापतीन्द्राय सोमाय वरुणाय च।।१५३२।।
विवस्वते कुबेराय सुषेणायाहिशालिने।
आदित्येभ्यस्तथाऽश्विभ्यां रुद्रेभ्यो वसुभिः सह।।१५३३।।
विष्णोश्च विश्वदेवानां साध्यानां मरुद्भिः सह।
वासुकिप्रमुखानां च नागानां गरुडस्य च।।१५३४।।
सर्वासां पौर्णमासीनां तिथीनां चैव सर्वशः।
देवीनां नदीनां सागराणां वनस्पतीनाम्।।१५३५।।

स्वाहाकारेण जुहुयात् तृतीयं च हुताशने।
देवानामेव सर्वेषां स्वाहाकारेण होमयेत्।।१५३६।।
दुर्बलानीह रक्षांसि प्रत्यूषे ब्रह्मतेजसा।
भवन्ति तस्मात् प्रत्यूषे स्वापयेत् पोषयेद्धयान्।।१५३७।।
पुरोहितस्तु द्विःकालं तर्पयित्वा द्विजोत्तमम्।
पुण्याहं कारयेन्नित्यं स्वस्त्याशीर्मङ्गलान्वितम्।।१५३८।।
नटनर्तकगन्धर्वाः सूतचारणमागधाः।
तुरगानुपतिष्ठेयुः सप्ताहं शान्तिकारणात्।।१५३९।।
मनोज्ञान् मधुरान् शब्दान् श्रुत्वा गच्छन्ति वै ग्रहाः।
वादित्रं वाहनागारे तस्मान्नित्यं प्रयोजयेत्।।१५४०।।
अतिक्रम्य च सप्ताहमष्टम्यां स्नापयेद्धयान्।
वरुणाय बलिं दत्त्वा पश्चात् तोयेऽवगाहयेत्।।१५४१।।
अष्टम्यामिति द्वितीयामारभ्याष्टमीतिथावित्यर्थः।

ग्रन्थान्तरे

तानश्चान समलङ्कृत्य वाजिशालां प्रवेश्य च।
प्रतिमायां चित्रपटे स्थण्डिले मण्डलेऽथ वा।।१५४२।।
नानोपचारसम्भारै रेवन्तं देवमर्चयेत्।
नमो देवाधिदेवाय तुरङ्गबलचारिणे।।१५४३।।
सूर्यपुत्राय देवाय तुरङ्गानां हिताय च।
तुरङ्गपरिषद्यस्य नृगजोपरि धावति।।१५४४।।
साश्वमश्वाधिपं रक्षं रक्षणं त्वां व्रजाम्यहम्।
इति पुष्पाञ्जलिं दत्वां रेवन्ताय बलिं हरेत्।।१५४५।।

तथा

सूर्यपुत्र महाबाहो छायाहृदयनन्दन।
शान्तिं कुरु तुरङ्गानां रेवन्ताय नमोऽस्तु ते।।१५४६।।
एवं स्तुत्वाऽथ विधिवदुच्चैः श्रवसमर्चयेत्।

ब्रह्मपुराणे

अश्वयुक्शुक्लपक्षे तु स्वातीयोगे सुशोभने।।१५४७।।
पूर्वमुच्चैःश्रवा नाम प्रथमं सूर्यमावहत्।
तस्मात् साश्वैर्नरैस्तत्र पूज्योऽसौ श्रद्धया सदा।।१५४८।।
पूजनीयाश्च तुरगा नवमीं यावदेव हि।

ग्रन्थान्तरे

उच्चैः श्रवो नमस्तुभ्यं नमः क्षीराब्धिनन्दन।।१५४९।।

वाहान् वर्धय वाहेन्द्र सर्वोत्पातं विनाशय।
एवं स्तुत्वोच्चैःश्रवसं तुरगान् पूजयेत् ततः।।१५५०।।
नानोपचारैस्तेषां तु कर्णजापमिदं पठेत्।
गन्धर्वकुलजातोऽसि मा भूयाः कुलदूषकः।।१५५१।।
ब्रह्मणः सत्यवाक्येन सोमस्य वरुणस्य च।
तेजसा चैव सूर्यस्य मुनीनां तपसा तथा।।१५५२।।
रुद्रस्य ब्रह्मचर्येण पवनस्य बलेन च।
प्राभावाच्च हुताशस्य वर्त्तस्व त्वं तुरङ्गम् ।।१५५३।।
स्मर त्वं राजपुत्रोऽसि कौस्तुभं च मणिं स्मर।
सुरासुरैर्मथ्यमानात् क्षीरोदादमृतादिभिः।।१५५४।।
जात उच्चैः श्रवा पूर्वं तेन जातोऽसि तत स्मर।
यां गतिं ब्रह्महा गच्छेत् पितृहा मातृहा तथा।।१५५५।।
भूम्यर्थेऽनृतवादी च रणे यस्तु पराङ्मुखः।
सूर्याचन्द्रमसौ वायुर्यावत् पश्यन्ति दुष्कृतम्।।१५५६।।
व्रज त्वं तां गतिं क्षिप्रं तच्च पापं भवेत् ततः।
विकृतिं यदि गच्छेथा युद्धेध्वनि तुरङ्गम।।१४५७।।
रिपून् विजित्य समरे भर्त्रा सह सुखी भव।
तुरङ्गम चिरं जीव परशस्त्रैरलक्षितः।।१५५८।।
सदा मां समरे रक्ष स्वामिकार्यं सदा कुरु।

ज्योतिःशास्त्रे

नार्चयेज्जलजैः पुष्पैर्वाहनार्घविधिं प्रति।।१५५९।।
सौगन्धिकं विशेषेण तेषां दद्यान्न सर्वदा।
ग्रहहोमस्तु कर्त्तव्यो ग्रहाणामर्चनं तथा।।१५६०।।
अनेन विधिना यस्तु करोति तुरगोत्सवम्।
तस्य तुरङ्गनाथस्य न कदा चिद्भयं भवेत्।।१५६१।।

गजपूजाऽप्युक्ता ब्रह्मपुराणे

ज्येष्ठायोगे पुरा तत्र गजाश्चाष्टौ महाबलाः।
पृथिवीमवहन् पूर्वं सशैलवनकाननाम्।।१५६२।।
कुमुदैरावतौ पद्मः पुष्पदन्तोऽथ वामनः।
सुप्रतीकोऽञ्जनो नीलस्तस्मात् ताँस्तत्र पूजयेत्।।१५६३।।
शाक्रादृक्षात् समारभ्य नवम्यन्तं च पूर्ववत्।

गजपूजामन्त्रस्तु

पान्तु वो बसवो रुद्रा आदित्याः समरुद्गणाः।।१५६४।।

भर्त्तारं रक्ष नागेन्द्र समयः प्रतिपाल्यताम्।
अवाप्नुहि जयं युद्धे समये स्वस्ति नो व्रज।।१५६५।।
श्रीस्तु सोमाद्बलं कृष्णात् तेजः सूर्याज्जवोऽनिलात्।
स्थैर्यं मेरोर्जयो रुद्राद्यशो देवात् पुरन्दरात्।।१५६६।।
युद्धे रक्षन्तु नागास्त्वां दिशश्च सह देवतैः।
अश्विनौ सह गन्धर्वैः पान्तु त्वां सर्वतः सदा।।१५६७।।

इति ज्योतिःशास्त्रे प्रोक्तः।

।। इति रेवन्तादिपूजाविधिः।।

अथ शक्तिसङ्गमोक्ताः काम्यविशेषा लिख्यन्ते

नवरात्रव्रतासक्तो नवनाथो भवेद्ध्रुवम्।
गौड़काश्मीरद्रविड़मार्गेण त्रिविधो भवेत्।।१५६८।।
अष्टम्यन्तं जपः कार्यस्ततोऽष्टम्यां तु होमयेत्।
अर्धरात्रे समायाता पूर्वविद्धाऽपि पार्वति!।।१५६९।।
साष्टमी सर्वकार्याणां कर्त्री भवति निश्चितम्।
होमपूजादिकं तत्र कुर्याद् यत्नेन पार्वति!।।१५७०।।
द्वितीयदिवसे चेत् सा तदैवोपोषणं चरेत्।

तथा-

घटिकाः षोडश त्याज्या आद्याः प्रतिपदस्तु याः।।१५७१।।
कलशस्थापनं कुर्यात् कल्याणं जायते तदा।
नवम्यां पारणं कुर्याद्दशम्यां तु विसर्जनम्।।१५७२।।
काश्मीराख्यं क्रमं देवि श्रृणु! यत्नेन पार्वति!।
नवरात्रं निराहारो होमोऽष्टभ्यां तथ्ज्ञा भवेत्।।१५७३।।
नवम्यां विप्रभोज्यं स्याद्दिग्वेधे पारणं चरेत्।
नवरात्रं निराहारो निर्विकल्पं जितेन्द्रियः।।१५७४।।
अष्टमीनवमीसन्धौ होमकर्म समाचरेत्।
नवम्यां विप्रभोज्यं स्याद्दशम्यां पारणं चरेत्।।१५७५।।
केरलाख्यः क्रमः प्रोक्तो निर्णयं श्रृणु पार्वति!।
तिथिक्षये तथा वृद्धौ यथोक्तेन तु वर्त्मना।।१५७६।।
अष्टमीनवमीप्राप्तौ पूर्ववेधो न दूष्यति।
अष्टम्यामर्धरात्रे तु यत्किञ्चित् कुरुते नरः।।१५७७।।
तत्तदक्षयमायाति नवदुर्गाप्रयोगतः।
एकोत्तरप्रविद्धया वा स्तोत्र जापादिकं चरेत्।।१५७८।।

प्रथमेऽह्नि जपो यावत् तावत् कुर्याच्च वा सुधीः।
उदयास्तमयं जप्त्वां त्रैलोक्यविजयी भवेत्।।१५७९।।
नवरात्रव्रते स्त्रीणां मृत्युयोगो भवेत् यदा।
सैव देवी न संदेहस्तां पूज्य विजयी कलौ।।१५८०।।
ताम्बूलागुरुकस्तूरीदिव्याम्बरविभूषणैः ।
सूर्योदयं समारभ्य पुनः सूर्योदयान्तरम्।।१५८१।।
तावज्जप्त्वा निरातङ्कः सर्वसिद्धीश्वरो भवेत्।
एकासनगतो भूत्वा नवरात्रं तु शाम्भवीम्।।१५८२।।
मुद्रामालम्बयेद्देवि नवनाथाधिपो भवेत्।
गुहायां मठिकायां वा निर्जने पर्वतेऽपि वा।।१५८३।।
अधोमुखो वा देवेशि नवरात्रं निरम्बुभुक्।
स्वमाच्छाद्या मृदा देवि तत्र संस्थापयेद्घटम्।।१५८४।।
यवाङ्कुरान् समारोप्य शाम्भवीं मुद्रिकां चरेत्।
दृढ़ासनी वाऽशयनी यथोद्दिष्टं समाचरेत्।।१५८५।।
कापालिकावधूतानां व्रतमेतन्मयेरितम्।।१५८६।

शाम्भवीमुद्रा मुद्रा तु त्रिपुरासारसमुच्चये
अथ पार्ष्णिनिरुद्धकम्बुनिर्ना ध्वजमूलस्थितसव्यपादपार्ष्णिः।
ऋजुकाय शिरोधरो यतात्मा विषयेभ्यो विनिवर्त्तितेन्द्रियश्च।।१५८७।।
काकीचञ्च्वग्रकृष्टैर्मुहुरुदरदरीं पूरयित्वा समीरै-
रङ्गुष्ठाभ्यामुभाम्यां नररिपुविवरे तर्जनीभ्यां च नेत्रे।
नासारन्ध्रं निरुध्य स्थिरविमलमतिर्मध्यमाभ्यामथास्य।
त्वन्याभिर्नातिगाढं कमलजनिलये स्थापयेन्मानसं स्वम्।।१५८८।।

तथा शक्तिसङ्गमे
आज्ञा भवति देवेशि तदैवोपोषणं चरेत्।
आज्ञा यदि न जायेत तदा ग्रामाधिपस्य च।।१५८९।।
देशाधिपस्य विप्रस्य पूजकस्य स्त्रियस्तथा।
आज्ञां गृहीत्वा देवेशि वरं प्रार्थ्य सुखी भवेत्।।१५९०।।
भक्तप्रीता च सा दुर्गा स्वयमाज्ञां प्रयच्छति।
वीरशाक्तविधानेन चण्डदर्पव्रतं चरेत्।।१५९१।।
जिह्वां संत्रोटय यत्नेन द्विवेदेषुरसाङ्गुलाम्।
जिह्वा सा पुनरायाति तेन सिद्धीश्वरो भवेत्।।१५९२।।
नवरात्रं समासाद्य महाष्टम्यां निशामुखे।
देवीं यत्नेन संपूज्य सङ्कल्पं कामनान्वितम्।।१५९३।।

शिरःपुष्पं कर्त्तयित्वा पूर्णं मध्यकनिष्ठतः।
यन्त्रे देवे निवेद्याथ शिवतुल्यो भवेद्ध्रुवम्।।१५९४।।
पुनः शिरः समायाति महाचीनवरः स तु।
अथ वाऽन्यप्रकारेण प्रयोगः कथ्यते शृणु।।१५९५।।
नवरात्रं निराहारः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः।
महाष्टम्यामर्धरात्रे अङ्गुष्ठान्मस्तकावधि।।१५९६।।
मांसं संकर्त्त्य यत्नेन यथोक्तं कुण्डमाचरेत्।
होमयेत् तत्र देवेशि! देवी प्रत्यक्षतामियात्।।१५९७।।
देवीदेहं भवेत् तद्धि नात्र कार्या विचारणा।
अथ वाऽन्यप्रकारेण प्रयोगः कथ्यते शृणु।।१५९८।।
नवरात्रे निराहारो गुरुभक्तो महाव्रती।
कुण्डं पुरुषमात्रं तु कृत्वा तत्र विशङ्कितः।।१५९९।।
पञ्चपल्लवकाष्ठानां वह्निं तत्र समाचरेत्।
अङ्गुष्ठान्मस्तकं यावत् स्वदेहं होमयेदव्रती।।१६००।।
अग्निशय्यां च वा कृत्वा देवीं पश्यति निश्चितम्।
अर्चापरः क्रमेणैव लतागेहप्रवेशनात्।।१६०१।।
भवेत् कल्पलतातुल्यः साधको नात्र संशयः।
अथ वाऽन्यप्रकारेण प्रयोगः कथ्यते शृणु।।१६०२।।
नवरात्रं निर्विकल्पो निराहारो दृढव्रतः।
यमुद्दिश्य क्रियां कुर्यात् तमेव वशमानयेत्।।१६०३।।
कामबीजं साध्यनाम वशीकुर्विति चोच्चरेत्।
स्वाहामुच्चार्य देवेशि! प्रदीप्ते जठरानले।।१६०४।।
होमयेद्यत्नतो देवि! तद्गृहं वशमानयेत्।
अथ वाऽन्यप्रकारेण प्रयोगः कथ्यते शृणु।।१६०५।।
नवरात्रं निराहारः सत्यवादी जितेन्द्रियः।
सहदेवीरस गृह्य नवम्या परमेश्वरि!।।१६०६।।
पूर्वोक्तमनुना देवि पत्राण्यापिण्डमाहरेत्।
आजन्मान्तं वशीकुर्यात् तमेव सकुटुम्बकम्।।१६०७।।
अथ वाऽन्यप्रकारेण प्रयोगः कथ्यते शृणु।
नवरात्रं मौनयुक्तो वृक्षासनसमन्वितम्।।१६०८।।
पारणादिवसे प्राप्ते गोमुखं कारयेत प्रिये।
पूर्वोक्तमनुना देवि होमयेज्जठरानले।।१६०९।।

स्वगेहे तत्त्वरात्रेण तद्गेहे दिवसत्रयात् ।।१६१०।।
आजन्मान्तं वशं कुर्यान्महादेवाधिकं नरम्।
अथ वाऽन्यप्रकारेण प्रयोगः कथ्यते शृणुः ।।१६११।।
नवरात्रं निराहारो गुरुभक्तो महाव्रती।
वामाङ्गुष्ठोपरि स्थित्वा वेदरात्रं महेश्वरिः ।।१६१२।।
नवम्यां पारणं कुर्याद्बिल्वे पिण्डं प्रदापयेत्।
जगत्त्रयं वशीकुर्यान्नात्र कार्या विचारणा ।।१६१३।
अथ वाऽन्यप्रकारेण प्रयोगः कथ्यते श्रृणु।
नवरात्रं पर्यटन् वैरोचनासंयुतः ।।१६१४।।
होमं कुर्यान्महाष्टम्यां नवम्यां पारणं चरेत्।
सर्वस्वदानं कृत्वा तु त्रैलोक्यविजयी भवेत् ।।१६१५।।
अथ वाऽन्यप्रकारेण प्रयोगः कथ्यते शृणु।
गोमूत्राशी महेशानि नवरात्रं महेश्वरि ।।१६१६।।
यं कं चिद्वै जपेन्मन्त्रं नवम्यां होममाचरेत्।
नवम्यां पारणं कुर्याद्गोमुखेन महेश्वरि ।।१६१७।।
देवतादर्शनं भूयाद्रात्रौ स्वप्ने महेश्वरिः।
अथ वाऽन्यप्रकारेण प्रयोगं शृणं पार्वति! ।।१६१८।।
नवरात्रं जितग्रासो मौनव्रतधरः शुचिः।
निर्द्वन्द्वो निरहङ्कारः सत्यवादी महामतिः ।।१६१९।।
राजाकर्षणकामश्चेद्राज्ञः सदनदिङ्मुखः।
पारणामिच्छया कुर्याद्रात्रिजापी सदा भवेत्।
त्रैलोक्यं वशमायाति नात्र कार्या विचारणा ।।१६२०।।

अथ दशमीकृत्यम्

तत्रैव (महाकालसंहितायाम्)

ततो दशम्यां निर्वाह्य स्नातो नित्यक्रियां निजाम्।
यावच्छक्त्युपचारैस्तु पूजयेन्न्यासमुज्जहन् ।।१६२१।।
कृताञ्जलिः पठेत् पश्चाद्विसर्जनमनूनिमान्।
विधिहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं यदर्चितम् ।।१६२२।।
पूर्णं भवतु तत्सर्वं त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।
शक्नुवन्ति न ते पूजां कर्त्तुं ब्रह्मादयः सुराः ।।१६२३।।
अहं किं वा करिष्यामि मृत्युधर्मा नरोऽल्पधीः।
न जानेऽहं तेऽम्ब रूपं न शरीरं न वा गुणान् ।।१६२४।।

एकामेव हि जानामि भक्तिं त्वच्चरणाब्जयोः।
तां भक्तिं हृदि सम्भाव्य शारद्यर्चां प्रगृह्य च।।१६२५।।
गच्छ देवि निजस्थानं मह्यं दत्त्वा वरान् बहून।
एतान्मन्त्रान् समुच्चार्य चरलग्ने चरांशके।।१६२६।।
प्रतिमां पत्रिकां वाऽपि चालयेत् पूजकः शनैः।
निर्माल्येन ततो देव्याः पूजयेत् कलशोपरि।।१६२७।।
निर्माल्यवासिनीं देवीं ङेन्तां नमः पदेन हि।
प्रदर्श्ययोनिमुद्रां च ऐशान्यां दिशि निःक्षिपेत्।।१६२८।।
निर्माल्यं भगवत्यास्तच्चण्डेश्वर्यै नमो वदन्।
मृन्मूर्तिं पत्रिकां वाऽपि जलेऽगाधे विनिःक्षिपेत्।।१६२९।।
स्रोतस्यथो मज्जयित्वा नदीवेगेन हारयेत्।
पीठमूर्त्तौ स्वके स्थाने चालयित्वा निवेशयेत्।।१६३०।।
चालने यन्मनुद्वन्द्वं तदिदानीं निशामयः।
उत्तिष्ठ देवि चामुण्डे शुभां पूजां प्रगृह्य मे।।१६३१।।
कुरुष्व मम कल्याणमष्टाभिः शक्तिभिः सह।
गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं देवि चण्डिके।।१६३२।।
यत् पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु ते।
गम्यतामर्थलाभाय क्षेमाय विजयाय च।।१६३३।।
शत्रोर्दर्पविनाशाय पुनरागमनाय च।
व्रज त्वं स्रोतसि जले मद्गेहे तिष्ठ भूतये।।१६३४।।
आगामिवत्सरे च त्वं पुनरायास्यसि ध्रुवम्।
इति देवीं चालयित्वा मनुना कथयिष्यता।।१६३५।।
महावाद्यरवं कुर्यान्नभोदिक्पूरि सर्वतः।
तारत्रपारुषश्चैव शाकिनी डाकिनी तथा।।१६३६।।
चामुण्डे चल युग्मं च चालय द्वितयं तथा।
कूर्चास्त्रनलकान्ताभिर्मनुश्चालनकर्मणि ।।१६३७।।
शङ्खतूर्यनिनादैश्च मृदङ्गैः पटहैस्तथा।
ढक्काभेरीझर्झरैश्च पणवानकगोमुखैः।।१६३८।।
तालवादित्रवीणाभिरातोद्यैर्डिण्डिमरैरपि ।
मुरजैर्वेणुभिर्हिक्कैस्तालमानलयान्वितैः ।।१६३९।।
धूलीकर्दमविक्षपैः क्रीड़ाकौतूकमङ्गलैः।
वेशयुग्वेशानिचयैर्विविधैः शाबरोत्सवैः।।१६४०।।

भगलिङ्गाभिधानैश्च भगलिंङ्गप्रगीतकैः।
भगलिङ्गक्रियाशब्दैर्वेशचेष्टाभिरुक्तिभिः ।।१६४१।।
विसर्जनस्यावसरे क्रीडितव्यं निजेच्छया।
कार्यं जरद्भिरप्येतद्देवीसन्तोषहेतवे।।१६४२।।
परैर्वा क्षिप्यते यस्तु यः परान् नाक्षिपत्यपि।
तस्या क्रुद्धा भगवती शापं दद्यात् सुदारुणम्।।१६४३।।
एतत्प्रासङ्गिकी देव्या उक्तिं समवधारय।
ममानन्दे सदानन्दः सदानन्दो भविष्यति।।१६४४।।
ममानन्दे निरानन्दो निरानन्दो भविष्यति।
यथा यथा ममानन्दे भवत्युन्मत्तवज्जनः।।१६४५।।
तथा, तथाऽहं तुष्यामि तत्कृतार्चासु वल्लभः।
ख्यातं मम भगं चिह्नं लिङ्गं चिह्नं तव प्रभो।।१६४६।।
लिङ्गाङ्कत्वद्भगाङ्कत्वादियं माहेश्वरी प्रजा।
त्वां मां विहाय नैवान्यत् किञ्चित् त्रिभुवनोदरे।।१६४७।।
तस्मान्मत्पूजनस्यान्ते त्वन्मच्चिह्नोक्तिभिर्जनः।
यः क्रीडति महाभाग स मे मनसि तिष्ठति।।१६४८।।
अकुर्वाणोऽपि सुरतं भगं भगमिति ब्रुवन्।
लिङ्गं लिङ्गमिति प्रोच्य मां तोषयति तत्क्षणात्।।१६४९।।
रेतः सिक्तं भवेद्यादृक् तादृश्यत्र प्रजायते।
भगं त्रिजगतां स्रष्टृ को वा निन्दितुमर्हति।।१६५०।।
इत्यादिवचनैर्देव्या यथेष्टं विहिरेज्जनः।
उपस्थयोनिभाजनशब्दैस्तत्तत्क्रियान्वितैः ।।१६५१।।
ततो नित्योदकाभ्यासं स्वयमम्भः प्रविश्य च।
पत्रिकां मृन्मयीं मूर्तिं तदन्तः स्थापयेच्छनैः।।१६५२।।
निमज्जयाम्भसि सम्पूज्य पत्रिकां वर्जितां जले।
मया देवि वरान् दत्त्वा ततो गच्छेन्निजालयम्।।१६५३।।
इत्यनेन तु मन्त्रेण देवीं संस्थापयेज्जले।
पीठमूर्त्योरिदं कर्म न कार्यं त्रिदशेश्वरि।।१६५४।।
ततः सर्वैर्जनैः सार्धं जलक्रीडां समाचरेत्।
निमज्जनोन्मज्जनैश्च तथा पिञ्जलताम्बुभिः।।१६५५।।
अन्यैर्जलविहारैश्च क्षणं कौतुकमाचरेत्।
प्रदद्याद्दक्षिणां पूजां कारयित्वा स्वभक्तितः।।१६५६।।

हिरण्यं रजतं धेनुं भूमिं वासांसि मन्दिरम्।
यावच्छक्यं च यच्छक्यं दातव्यं दक्षिणां ततः।।१६५७।।
यानि देव्यै प्रदत्तानि महोपकरणान्यपि।
विभज्य तानि सर्वेभ्यो दातव्यानीति निश्चयः।।१६५८।।

पूजाफलान्याहः

एवमुक्तप्रकारेण कृत्वा शारदपूजनम्।
यदाप्नोति फलं देवि तदिदानीं निशामय।।१६५९।।
सप्तलोकोपरि शिवे बैकुण्ठो लोक उच्यते।
तदूर्ध्वं शिवलोको हि गोलोकस्तदनन्तरम्।।१६६०।।
तस्योपरि प्रियतमे देवीलोको विराजते।
योजनानां कोटिशतं विस्तीर्णं तावदायतम्।।१६६१।।
विभवा वा गुणा यस्य मम वाचामगोचराः।
कल्पकोटिशतं साग्रं तत्रायं वसति प्रिये!।।१६६२।।
अव्याहतगतिर्भूत्वा षडानन इवापरः।
त्रिलोकीं विचरत्येष द्वितीयां द्विरदाननः।।१६६३।।
यदीहावतरत्येष कदाचित् कालपर्ययात्।
शतसंवत्सरायुः स्यात् समस्तपृथिवीपतिः।।१६६४।।
तेजसा सूर्यसदृशः कान्त्या चन्द्रमसा समः।
कुवेरसन्निभो वित्ते क्षमया क्षमया समः।।१६६५।।
स्थैर्ये सुमेरुणा तुल्यो गाम्भीर्ये सागरोपमः।
विद्यया वाक्पतिसमः सौन्दर्ये मन्मथोपमः।।१६६६।।
प्रियंवदो विनीतश्च दाताऽमितपराक्रमः।
किं बहूक्तेन देवेशि यावन्तो हि गुणाः स्मृताः।।१६६७।।
तमेकं संश्रयन्ते हि समुद्रं सरितो यथा।
प्रत्येकमस्या बाहुल्यं वर्त्तते फलसम्भवे।।१६६८।।
न विस्तारभयाद्वच्मि डामरेषु तदीरितम्।
न तादृशं फलं किञ्चिद्यन्न स्याच्छारदार्चनात्।।१६६९।।

ततोऽपराजिता सम्पूज्य यात्रां कुर्यात्। तदुक्त (निर्णयामृते) पुराणान्तरे-

दशम्यां पूजयित्वा तु मृन्मयीं वाऽपराजिताम्।
कलशं तोयसंपूर्ण जयन्तीपल्लवाननम्।।१६७०।।

चतुर्वर्णैस्तदां यात्रा कर्त्तव्या साधनेन च।
दशम्यां च बली राजा पूजयित्वाऽपराजिताम्।।१६७१।।
दशदिक्षु मनोयोगाद्यात्रां कृत्वाऽथ वा नृपः।
नीराजनं स्वस्य कृत्वा ततो नीराजयेद्बलम्।।१६७२।।

नीराजनमन्त्रस्तत्रैव

चतुरङ्गबलं मह्यं सुस्थिरत्वं व्रजत्विह।
विजयो मम सर्वत्र अस्तु मेऽग्निप्रसादतः।।१६७३।।
सर्वत्र विजयो मेऽस्तु त्वत्प्रसादात् सुरेश्वरि। इति(कृत्यरत्ने)

अपराजितापूजने संक्षिप्तप्रकारस्तु अपराह्णे ईशानेदिशमाश्रित्य सीमानमुल्लङ्घ्य-

आश्विनशुक्लदशम्यां क्षेमसिद्ध्यर्थमपराजितापूजां करिष्ये-

इति सङ्कल्प्य कलशेऽष्टदलपद्मयन्त्रमध्ये-अपराजितायै नमः-इत्यपराजिताम्। तद्दक्षिणे-क्रियाशक्त्यैः नमः-इति जयाम्। वामे-उमायै नमः-इति विजयां चावाह्य। ॐ अपराजितायै नमः। ॐ जयाय नमः। ॐ विजयायै नमः। इति मन्त्रैः सम्पूज्य प्रणम्य।

इमां पूजां मया देवि यथाशक्ति निवेदितम्।
रक्षार्थं तु समादाय व्रज स्वस्थानमुत्तमम्। इति विसर्जयेत्

महाकालसंहितायाम्

अथ नीराजनं राजाऽपराह्णे विदधीत वै।
विचित्रवेशवसनः सह स्वजनबान्धवैः।।१६७४।।
चूड़ामणिपरिस्फूर्यत्किरीटकुण्डलोज्ज्वलः।
लसत्प्रालम्बिको मुक्तामाली कटकमण्डितः।।१६७५।।
केयूरी शृङ्खली तद्वदङ्गुलीयकभूषितः।
उष्णीषी बद्धनिस्त्रिंशश्चर्चितो मलयद्रवैः।।१६७६।।
चन्द्रकुङ्कुमकस्तूरीविलेपनसुवासितः।
नानाविषयजानश्वान् भूषाभिः परिबृंहयेत्।।१६७७।।
गान्धारजानुत्तरजान् पारसीकोद्भवानपि।
काम्बोजवानायुभवान् वाह्लीकमणिमन्थजान्।।१६७८।।
युक्ताँस्तदीयभूषाभिः कुथाभिरुपशोभितान्।
एवमेव गजेन्द्राँश्च कुथघण्टाङ्कुशोज्ज्वलान्।।१६७९।।
कलिङ्गजङ्गलभवांश्चेदितैलङ्गसम्भवान्।
एवं रथानपि व्यूहे तदुपस्करसंयुतान्।।१६८०।।

पदातींश्च भटाँश्चापि नानाप्रहरणान्वितान्।
कोदण्डशरनिर्स्त्रिशशूलपट्टीशतोमरान् ।।१६८१।।
गदापरिघचक्रर्ष्टिभुशुण्डीपाशकौरजान् ।
भिन्दिपालहुताशक्तिपर्शुकुन्ताहिमुद्गरान् ।।१६८२।।
खट्वाङ्गवज्रमुशलपाशयोगुडकर्त्तरीः ।
शतघ्नीशल्यकुद्दालक्रकचच्छुरिकास्तथा ।।१६८३।।
एतान्यन्यानि चास्त्राणि दधतः स्फुरितौजसः।
चतुरङ्गबलं चेत्थं कृत्वाऽग्रेसरमीश्वरि।।१६८४।।
नानाविधैर्वाहनैश्च पौरजानपदानपि।
वादित्राणि च सर्वाणि वादयित्वा विशेषतः।।१६८५।।
महाकोलाहलं कृत्वा समराभिप्रयाणवत्।
जय जीवेति निनदैः स्तूयमानो महीपतिः।।१६८६।।
विनिर्गच्छेत् पुरात् स्वीयादनुकूलां दिशं प्रति।
ब्राह्मणानग्रतः कृत्वा ताम्बूलं चर्वयन्मुहः।।१६८७।।
नटान् मल्लान् वन्दिनश्च शिल्पिनो गणिकास्तथा।
दैवज्ञान् वणिजो दूतानन्यान् वै देशिकानपि।।१६८८।।
विलोकयन् हृष्टमना एतेभ्यः पारितोषिकम्।
ददन्नुत्साहसंयुक्तो विजिगीषुरिव व्रजेत्।।१६८९।।
एतन्नीराजनं नाम घटनाया बलास्त्रयोः।
एतत् कृत्वा महीपालो भूषितस्तेन चान्वितः।।१६९०।।

अथ खञ्जनादिदर्शनविधिस्तत्रैव

खञ्जनं सारसं चाषं प्रयत्नेन विलोकयेत्।
अनूपकच्छगोष्ठानगोविडम्बुरुहादिषु ।।१६९१।।
स्थितो रुवन् विधुन्वानः पक्षती खञ्जनः शुभः।
मङ्गल्यं खञ्जनं दृष्ट्वा मध्यस्थाने मनोरमे।
शुभं स्यादशुभं ज्ञेयं विपरीते न संशयः।।१६९२।।
वृक्षेषु गोषु गजवाजिमहोरगेषु
राज्यप्रदः कुशलदः शुचिशाद्बलेषु।
भस्मास्थिकाष्ठतुषलोमतृणेषु दृष्टो
ऽरिष्टं ददाति बहुशः खलु खञ्जरीटः।।१६९३।।

तस्मिन् निधिर्भवति मैथुनमेति यस्मिन्
यस्मिन् पुनर्वसति तत्र दिशन्ति काचम्।
अङ्गारमप्युपदिशन्ति पुरीषणेऽस्य
तत् कौतुकाय च शुभाय च खञ्जरीटः॥१६९४॥
दृष्टा तु खञ्जनं राजा प्रणमेद्विहिताञ्जलिः।
इमं मन्त्रं समुच्चार्य श्लोकरूपं वरानने॥१६९५॥
खञ्जनः खञ्जरीटश्च शङ्खमौलिः शुभप्रदः।
महापद्मो नीलगलश्चपलाङ्गो हरिद्विजः॥१६९६॥
यः खञ्जरीटं प्रणमेदेभिर्नामभिरष्टभिः।
जायते मङ्गलं तस्य सतो गेहे यतः पथि॥१६९७॥
नारायणशरीरोत्थं संवत्सरशुभप्रद।
शालग्रामशिलाकण्ठ खञ्जरीट नमोऽस्तु ते॥१६९८॥
वासुदेवस्वरूपेण सर्वकामफलप्रद।
पृथिव्यामवतीर्णोऽसि खञ्जरीट नमोऽस्तु ते॥१६९९॥
त्वं योगयुक्तो मुनिपुत्रकस्त्वमदृश्यतामेषि हिमोद्गमेन।
त्वं दृश्यसे प्रावृषि निर्गतायां त्वं खञ्जनाश्चर्यमयो नमस्ते॥१७००॥
अशुभं खञ्जनं दृष्ट्वा देवब्राह्मणपूजनम्।
शान्तिं कुर्वीत कुर्याच्चे स्नानं सर्वौषधीजलैः॥१७०१॥
अयं खगस्तु विज्ञेयो विष्णुरूपी सुरेश्वरि!।
संसूचयति वर्षोत्थं मङ्गलामङ्गलद्वयम्॥१७०२॥

सारसदर्शनफलम्-

देवीरूपस्तु विज्ञेयः सारसः पक्षिराडपि।
तं दृष्ट्वा तोयतर्वद्रिसदूर्वोर्वीतलेषु हि॥१७०३॥
प्रणमेच्छुभदं केशशवास्थिगमभद्रदम्।
तथा कुर्वाण आहारं चञ्च्वा कण्डुं तनावपि॥१७०४॥
तिष्ठन् कुलाये शावाय ददद्वा भोजनं शुभम्।

सारसस्य प्रणतिमन्त्रः

सारसः सरसीवासः पुष्करः पुष्करालयः॥१७०५॥
विघ्नापहर्त्ता पक्षीन्द्रो देवीरूपो महाबलः।
विघ्नं नाशय पक्षीन्द्रशुभं देहि महाबलः॥१७०६॥

पुष्कराब्दफलं ब्रूहि जहि शत्रून महाबल।
पठित्वेदं पद्ययुगं प्रणमेत् सारसं बुधः।।१७०७।।
विपरीते तथैतस्य पूर्ववच्छान्तिकं चरेत्।

चाषदर्शनफलम्-

अथ चाषं निरीक्ष्यापि महारुद्रस्वरूपिणम्।।१७०८।।
पूर्वोदितेषु स्थानेषु प्रणमेन्मङ्गलप्रदम्।
अन्यत्राशुभदातारं विहगं शिवरूपिणम्।।१७०९।।

चाषस्य प्रणतिमन्त्रः-

अशोकश्च विशोकश्च नन्दीशः पुष्टिवर्धनः।
ताम्रचूड़ो मणिग्रीवः स्वस्तिकश्चापराजितः।।१७१०।।
अष्टावेतानि नामानि चाषं दृष्ट्वा तु यः पठेत्।
अग्रतो धनलाभाय पार्श्वतो विजयाय च।।१७११।।
पृष्ठतः क्षेमवित्ताभ्यां दिव्य चाष नमोऽस्तु ते।
अशोकाय नमस्तुभ्यं सर्वाभीष्टप्रदाय च।।१७१२।।
नीलकण्ठाय भद्राय भद्ररूपाय ते नमः।
भद्रत्वं देहि मे भद्रमाशां पूरय पूरक।।१७१३।।
स्वस्तिकोऽसि कुरु स्वस्ति त्वं मां नन्दीश नन्दय।
अशोक कुर्वशोकं मां पुष्प त्वं पुष्टिवर्धनम्।।१७१४।।

शमीवृक्षप्रदक्षिणम्-

एषं चाषं नमस्कृत्य प्रणमेच्च शमीतरुम्।
अमङ्गलानां शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च।।१७१५।।
दुःस्वप्नशमनीं धन्यां प्रपद्येऽहं शमीं शुभाम्।
शमी शमयते पापं शमी लोहितकण्टका।।१७१६।।
धारिण्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियवादिनि।
करिष्यमाणयात्राया यथाकालं सुखं मया।।१७१७।।
तत्र निर्विघ्नकर्त्त्री त्वं भव श्रीरामपूजिते।
इति सम्प्रार्थ्य मूलस्थां गृहीत्वा पीतमृत्तिकाम्।।१७१८।।
प्रदक्षिणीकृत्य तथा शमीवृक्षं महीपतिः।

विविधकर्तव्यविधिः-

नियुद्धं प्रेक्ष्य मल्लानां भटानां शस्त्रलाघवम्।।१७१९।।

भरतानां प्रेषणं च धावनं गजवाजिनाम्।
अस्तं गते दिनमणौ दीपिकाशतसंवृतः।।१७२०।।
प्रविशेन्नगरं राजा कोलाहलपुरःसरम्।
अनेन विधिना यस्तु कुरुते शारदं महम्।।१७२१।।
तस्य देवी सदा तुष्टा सदा नैव विमुञ्चति।
फलं यच्छारदार्चाया वक्तुं तत् केन शक्यते।।१७२२।।
ईदृशेव च वासन्ती पूजा कार्या मधौ सिते।।१७२३।।

।। इति श्रीमन्महेश्वरानन्द विरचिते श्रीदुर्गामन्त्रराजकल्पतन्त्रे
श्रीदुर्गोत्सव विधिः नाम पञ्चमोऽध्यायः।।५।।

अथ षष्ठोऽध्यायः

श्री रुद्रचण्डी पाठः

प्रथमः पटलः

चण्डीरहस्यम्

श्री पार्वत्युवाच

भगवन् भूतभव्येश! त्रैलोक्याधिपते हर!।
यदुपाख्यानमाश्चर्यं सौरथेयं वदस्व मे।।१।।

रुद्र उवाच

चण्डिकेयं चतुर्वर्गफलदा साधकेश्वरी।
कोटिजन्मार्जितात् पुण्यादत्र श्रद्धा विधीयते।।२।।

मूल पाठ प्रारभ्यते

ॐ नमो गणेशाय। ॐ नमों वाण्यै। ॐ नमो ब्रह्मणे। ॐ नमो विष्णवे। ॐ नमः शिवाय। ॐ नमश्चण्डिकायै।

विनियोगः-श्री रुद्रचण्डिकायाः ब्रह्मादयः ऋषयः, अनुष्टुप्प् छन्दः, चण्डिका देवता, चतुर्वर्गसाधने रुद्रचण्डिकापाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः-ब्रह्मादिभ्यः ऋषिभ्यो नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। चण्डिकादेवतायै नमः हृदि। चतुर्वर्गसाधने रुद्रचण्डिकापाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

ध्यानम्

ॐ रक्तवर्णां महादेवीं लसच्चन्द्रविभूषिताम्।
पट्टवस्त्रपरीधानां सर्वालङ्कारभूषिताम्।।३।।
वराभयकरां देवीं मुण्डमालाविभूषिताम्।
कोटिचन्द्रसमासीनां वदनैः शोभितां पराम्।।४।।
करालवदनां देवीं किञ्चिज्जिह्वां च लोलिताम्।
स्वर्णवर्णमहादेवहृदयोपरिसंस्थिताम् ।।५।।
अक्षमालाधरां देवीं जपकर्मसमाहिताम्।
वाञ्छितार्थप्रदायिनीं रुद्रचण्डीमहं भजे।।६।।

मानसपूजनम्

ॐ लं पृथ्वीतत्त्वात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः।
ॐ हं आकाशतत्त्वात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः।

ॐ यं वायुतत्त्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः।
ॐ रं अग्नितत्त्वात्मकं दीपं दर्शयामि नमः।
ॐ वं जलतत्त्वात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि नमः।
ॐ सं सर्वतत्त्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मूल श्री रुद्रं चण्डी पाठः

ॐ सावर्णिरिति विख्यातो मनुरासीन्महेश्वरि!।
वक्ष्ये त्वयि तदुत्पत्तिं श्रृणुष्व त्वं समाहिता।।७।।
पूर्वं यत् सूचितं कान्ते! न श्रुतं क्वापि तद यथा।
श्रूयतां श्रूयतां रम्ये! देवि! प्रौढ़े! वराङ्गने!।।८।।
इत्युक्त्वा सव्यहस्तेन चिबुकं गृह्य चुम्बितम्।
वक्त्रारविन्दं सुन्दर्याः कृत्वा चोवाच शङ्करः।।९।।
अधुनैवागतस्तत्र गणेशस्तन्त्रविद् गुरुः।
प्रणम्य साम्बिकं रुद्रं उषितं भैरवैः सह।।१०।।
नायिका योगिनीभिः सा सावधानेन शङ्करी।
कैलासे योगसंस्थाने, महद्गुह्यानि श्रूयते।।११।।
महामायाऽनुभावेन योऽष्टमः सूर्यसम्भवः।
चैत्रान्मन्वधिपो राजा, स नाम्ना सुरथः सुधीः।।१२।।
पूर्वं स्वारोचिषे जातः सकलेऽवनिमण्डले।
जितः काले नृपैरन्यैः सोऽभूत् कोलाख्यकैर्नृपः।।१३।।
तथाऽमात्यैरेव स तैर्वनं धातो नृपाग्रणीः।
विवेकेनैव यत्रास्ते वर्यो मेधा महामुनिः।।१४।।
तत्रातिष्ठत् कियत्कालं विचरन् स तदाश्रमे।
दृष्टवान् जनमेकं च वैश्यं विरहिणं वने।।१५।।
तमपृच्छन्महाराज! कस्मान् म्लानो भवांस्ततः।
राज्ञा पृष्टः कृतार्थः सन् दुःखितोऽहं भवान् यथा।।१६।।
विवेकिनौ तौ मिलितौ प्राप्तावेवान्तिकं मुनेः।
पृष्टो नृपेण विप्रेन्द्रोऽप्ययं पुत्रैर्निराकृतः।।१७।।
अहं ममत्वमापन्नो, राज्ये राज्याङ्गकेष्वपि।
तथाऽप्येवावयोः कस्माद् हार्दी भवति तेषु च।।१८।।
मेधसोक्तं बलवती महामाया गदाभृतः।
तया सम्मोह्यते विश्वं सृजत्यवति हन्ति च।।१९।।

चेतः सुज्ञानिनां देवी नित्या भगवती हि सा।
वरदा मुक्तये लोके योगनिद्राऽभिधीयते।।२०।।
विश्वाधारा जगन्मूर्तिर्दैत्यारेरीश्वरी च सा।
उत्पन्ना परमोत्पन्ना विष्णुनिद्रा मृषार्दिनी।।२१।।
नन्दजा विन्ध्यसंस्थाना हैमी हरिहरप्रिया।
स्तुतिः प्रीतिः सुरप्रीता कृतिः प्रीतिः पुरावहा।।२२।।
मुनेस्तस्योपदेशेन मृण्मयीं मधुमासतः।
मूर्तिं निर्माय तौ पूजां चक्रतुर्वत्सरत्रयम्।।२३।।
तत आगत्य सा देवी ताभ्यामिष्ट वरं ददौ।
दुर्गावरं समालभ्य सूर्यवीर्यसमुद्भवः।।२४।।
मन्वन्तराधिपः श्रीमान् सुरथः सम्भविष्यति।
समाधिर्ज्ञानमासाद्य मुक्तोऽभूत् तत्प्रसादतः।।२५।।
योगनिद्रासम्पन्नो यदा विष्णुर्जगद्गुरुः।
तदा द्वावसुरौ घोरौ मधुकैटभसंज्ञकौ।।२६।।
हरिकर्णमलोद्भूतौ ब्रह्माणं हन्तुमुद्यतौ।
भीतो ब्रह्मा भक्तियुतस्तामसीं शरणं गतः।।२७।।
भयाद् वाग्भिः स्तुतो ब्रह्मा तामसीं स्तौति तादृशीं।
अतुलां योगनिद्राख्यां भक्ताभीष्टां सुरात्मिकाम्।।२८।।
स्वाहास्वधावषड्रूपां शुभां पीयूषवादिनीम्।
अक्षरां बीजरूपां च पालयित्रीं विनाशिनीम्।।२६।।
त्रिधामात्रात्मिकास्थां च अनुच्चार्यां महेश्वरीम्।
माहेश्वरीं महामायां मातरं सर्वमातरम्।।३०।।
अर्द्धमात्रां च सावित्रीं महाविद्यां विनोदिनीम्।
इत्थं स्तुता त्यक्तवती षडङ्ग मधुवैरिणः।।३१।।
स्र चोतस्थो जगद्वन्धुर्युयुधे बाहुयुद्धतः।
वर्षपञ्चसहस्राणि सतस्तौ दानवौ मृतौ।।३२।।
ततो देवासुरं युद्धं शतवर्षमभूत् पुरा।
पराजितोऽभूद् देवेन्द्रः इन्द्रोऽभून्महिषासुरः।।३३।।
ततः सा तामसी देवीं देवतेजः समुद्भवा।
जघान सप्तसेनान्यश्चिक्षुराख्य मुखांस्तथा।।३४।।
उग्रवीर्यादिकानां च सेनाश्च चतुरङ्गिणीः।
खुरक्षेपादिकोन्मत्तं मायिकं महिषं रणे।।३५।।

माहिषं सैंहिकं रूपं पौरुषं हास्तिकं तदा।
द्वैरूप्यं च यथा कृत्वा जघान वरवर्णिनी।।३६।।
हिमालये स्थितैर्देवैः स्तुता दैत्यनिपीडितैः।
कालिका शिवदूती चामुण्डामूर्तिधरा परा।।३७।।
सुग्रीवस्य वचः श्रुत्वा धूम्रनेत्रं निपातितम्।
चण्डं मुण्डं रक्तबीजं रक्तबिन्दु समुद्भवम्।।३८।।
कम्ब्वन्वयं कोटिवीर्यं कालकेयं च कालकम्।
धौम्रं मौर्य दौर्हृदं च षडशीतिसहस्रकम् ।।३६।।
कालकेयादिसैन्यं च सर्वं नायकभूषितम्।
पुनः शुम्भं निशुम्भं च दैत्यराजं जघान सा।।४०।।
देवानां स्थानमादत्तं शेषं पातालसंस्थितम्।
कृत्वा रमति कल्याणी रणस्थल्यां रणप्रिया।।४१।।
तदा वृहस्पतिमुखा महर्षिसुरसिद्धकाः।
स्तोत्रैर्नानाविधैरन्यैः स्तुतिं चक्रुरनुत्तमाम्।।४२।।
कात्यायनी मातृकाख्या अपां रूपां विशोकिनी।
वैष्णवी नारसिंही च वाराही च महेश्वरी।।४३।।
कौमारी च तथेन्द्राणी ब्रह्माणी चाग्निरुपिणी।
महाकाली महालक्ष्मीर्महाकल्पा सरस्वती।।४४।।
एकवीरा भ्रामरी च तथैवाष्टभुजा शिवा।
दशहस्ता सहस्रभुजा सर्वशक्तिरुपिणी।।४५।।
इत्थं चण्डीं पठेद् यस्तु द्विजो वा प्रतिवासरम्।
कुजे वा शनिवारे वा पठन् सर्वफलं लभेत्।।४६।।
एकावृत्त्या भवेत् सौख्यं त्रिरावृत्त्योपसर्गतः।
स्यान्मुक्तो ग्रहदोषाच्च पञ्चावृतं पठेद् यदि।।४७।।
सप्तावृत्तं महाभीतौ नवावृत्तं च शान्तितः।
वाजपेयफलं चापि रुद्रावृत्त्याऽश्वमेधिकम्।।४८।।
गोमेधनरमेधस्य शत्रुनाशं तथाऽर्द्धतः।
मन्वावृत्त्या सुखी भूयात् कलावृत्त्या भवेद् धनी।।४६।।
यथाकामं सप्तदशे तथा चाष्टदशे शुभम्।
नारीप्रियतमो याति विंशावृत्त्या ऋणं हरेत्।।५०।।
पञ्चविंशाद् भवेत् स्वर्गी शतावृत्त्या तव प्रियः।
अष्टोत्तरशतावृत्त्या राजसूयफलं लभेत्।।५१।।

अग्निहोत्री नित्यपाठात् त्यजेद् देहं हरेर्द्रवे।
सहस्रावृत्तिपाठस्य फलं किं स्याद् वरानने!।।५२।।
तद् वक्तुं न हि शक्नोमि सत्यं वर्षायुतैरपि।
इत्युक्तं मम सर्वेशिः अरिसङ्घविघातकम्।।५३।।
सर्वेषां चैव वर्णानां विद्यानां च यशस्विनी।
इयं योनिः समाख्याता सर्वतन्त्रेषु सर्वदा।।५४।।

।। इति श्रीमदागमसन्दर्भे श्रीमद्रुद्रयामले रुद्रचण्डिकायां हरगौरीसंवादे चण्डीरहस्यं नाम प्रथमः पटलः।।

●

मध्यमः पटलः

साधना रहस्यम्

श्रीरुद्र उवाच

रहस्यं चण्डिकादेव्या विदितं भुवनत्रये।
कायवाक्चित्तशुद्धः सन् पठन् प्रियतमो भवेत्।।१।।
रुद्रचण्डी महापुण्या त्रिगुणाख्या विधातृका।
तारिणी तरुणी तन्वी तन्त्रिका विश्वरूपिका।।२।।
विरोधिनी विप्रचिता वाणीवर्णावबोधिका।
वासिनी वनिता विद्या वरारोहा विमोहिनी।।३।।
बगला शङ्करी शान्तिः शुभा क्षेमङ्करी दया।
महात्मिका मनोरूपा सीतामाया मलापहा।।४।।
माता भगवती शक्तिः शिवा साध्या सुरेश्वरी।
सर्वाणी सिंह संवाहा शम्भुवक्षःस्थलस्थिता।।५।।
एकावृतिं संश्रृणोति नन्दिकेशो महामनाः।
विनायकस्त्रिरावृत्तिं ग्रहाः पञ्चाथ भैरवाः।।६।।
श्रृण्वन्ति कामदाः सप्त मानवो नवधाऽऽवृत्तिम्।
अर्कावृत्तिं च देवेन्द्रो देवैः सिद्धादिभिस्तथा।।७।।
रुद्रावृत्तिं रुद्रगणः सादराः सुमनास्तथा।
नवावृत्तिं यक्षराजः कलावृत्तिं तथा शची।।८।।
समुद्रजा सप्तदश ऋषिदारा दशाष्टधा।
विंशावृत्तिं च शमनः पञ्चविशं गदाधरः।।६।।
शतावृत्तिं योगिनीनां ब्रह्मा साष्टशतं सुरैः।
सहंस्रार्द्धं नायिकानां तदूर्ध्वं शक्तिभिः सह।।१०।।

शतावृत्तिं नवावृत्तिमष्टावृत्तिं महेश्वरी।
श्रुत्वाऽभीष्टं फलं दद्याद् अन्यथा सुतघातिनी।।११।।
महामायावरं लब्ध्वा सावर्णिरष्टमो मनुः।
अभवत् परमेशानि! दुर्गापाठमिदं महत्।।१२।।
हरिकर्णमलोद्भूतौ महावीर्यमदोद्धतौ।
उभयासुरसंहन्त्री हरिणा परमेश्वरी।।१३।।
जघान महिषं संख्ये पञ्चविंशतिकोटिभिः।
सेनाभिः परमेशानि! त्वां नतोऽस्मि नतोऽस्मि तां।।१४।।
नियुतैरष्टभिः संख्ये निशुम्भशुम्भनाशिनी।
विन्दूद्भवैर्द्वादशभिस्तथाऽक्षौहिणीभिः शुभे!।।१५।।
जघान दितिजं संख्ये शतसप्ततिकोटिभिः।
विष्णुप्रीता व्यासरता गणमाता सरस्वती।।१६।।
पर्वस्तुताऽष्टमीरता षट्प्रणामस्वरूपिणी।
नारायणश्लोकरूपा चण्डिकाऽऽह्लादरुपिणी।।१७।।
तत्कुक्षिप्रभवा देवी तद्गुह्यपरिवादिनी।
तद्विकारा तदाधारा शतसप्तपरायणा।।१८।।
मुक्तिरुपा नियोगाख्या न्यासरूपाधिदेवता।
त्रिधामूर्तिः शक्तिसारा त्रिचरितार्गलाऽधुना।।१९।।
कीलका सूक्तसम्भावा कवचाह्लादिनी महा।
उल्लासिनी षड्गुणाख्या त्रिदशाध्यायरूपिणी।।२०।।
माहात्म्यवाचिनी बाला सुरथराज्यसाधिका।
पुनश्चासौ शारदीये शारदीयामिषे रमे।।२१।।
अरण्ये रघुनाथोऽपि महापूजां करिष्यति।
कात्यायनि! बुद्धिरुपेण! अपवर्ग प्रदायिनी।।२२।।
निमेथादि स्वरूपेण नारायणि! नमोऽस्तु ते।
शरण्ये! नायिके! घोरे! शक्तिसिंहसमन्विते!।।२३।।
रुद्रे! रौरवरुद्धे! च नारायणि! नमोऽस्तु ते।
स्त्रीसमस्ते! सर्वविद्ये! सर्वभूताशयस्थिते!।।२४।।
कात्यायनि! विप्रतापे! नारायणि! नमोऽस्तु ते।
चिक्षुरश्चामरोदग्रविडालोग्रास्यवाष्कलाः।।२५।।
तथोग्रवीर्यताम्राख्यासुरदुर्द्धरदुर्मुखाः।
महाहनूद्धताद्याश्च नाशिताश्चण्डिकेः! त्वया।।२६।।

तस्मात् सर्वाणि सर्वेशि! नारायणि! नमोऽस्तु ते।
जयन्ती मङ्गला काली, भद्रकाली कपालिनी।।२७।।
दुर्गा शिवा क्षमा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।
शिवे! दुर्गे! महामाये! भीमे! भयविनाशिनि।।२८।।
चण्डिके! चण्डदैत्यघ्नि! सुराध्यक्षे! परे! शिवे!।
नारायणि! नारसिंहि! वाराहि! वरदे वरे!।।२९।।
शरण्ये! सर्वदे! देवि! दुर्गे! दुर्गविनाशिनि!।
भवानि! परमाराध्ये! कौमारि! निगमावहे!।।३०।।
नित्यस्मेरे! निधे! दौर्गे! सर्वाशुभविनाशिनि!।
कृतार्थोऽस्मि कृतार्थोऽस्मि कृतार्थोऽस्मीति भाग्यवान्।
नमस्तुभ्यां नमस्तुभ्यं प्रसीद परमेश्वरि!।।३१।।
भवानीसन्निधौ यस्तु चण्डीमेतामुदीरयेत।
दरिद्रोऽपि धनी भूत्वा शिवलोकं ब्रजेत् किल।।३२।।
शनिभौमदिने देवि! यदि चेन्दुक्षयो भवेत्।
तदा देवमुनीन्द्राणां शरण्यः प्रपठन् भवेत्।।३३।।
भौमवारे कृष्णपक्षे यदि स्यादष्टमीतिथिः।
बिल्वपत्रसहस्रैश्च सम्पूज्य तत्र पार्वतीम्।।३४।।
बलिं दत्वा विधानेन जपेदागमचण्डिकाम्।
यद् यदिष्टतमं लोके तत्तदाप्नोति निश्चितम्।।३५।।
कृष्णाष्टमीसमायुक्ता विशाखा वा शनौ भवेत्।
तत्र जप्ते दृर्शी कृत्वा साधकः साधयेत् शिवाम्।।३६।।
अपराजिताशतकैः सम्पूज्य परमेश्वरीम्।
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां वापि पार्वतीम्।।३७।।
पूजयित्वाऽग्रमनसा दुर्गापाठमिमं जपन्।
लभेत वाञ्छितं सर्वमिहलोके परत्र च।।३८।।

।। इति श्रीमदागमसन्दर्भे श्रीमद्रुद्रयामले रुद्रचण्डिकायां
हरगौरी संवादे साधन रहस्यं नाम मध्यमः पटलः।।

•

उत्तमः पटलः

फलरहस्यम्

रुद्र उवाच

चण्डिकां हृदये न्यस्य स्मरणं यः करोत्यपि।
अनन्तफलमाप्नोति देवि! चण्डीप्रसादतः।।१।।

रविवारे यदा चण्डीं पठेदागम सम्मताम्।
नवावृत्तिफलं तस्य जायते नात्र संशयः।।२।।
सोमवारे यदा चण्डीं पठेद् यस्तु समाहितः।
सहस्रावृत्तिपाठस्य फलं जानीहि सुव्रते!।।३।।
कुजवारे जगद्धात्रि! पठेदागमसम्मताम्।
शतावृत्तिफलं तस्य बुधे लक्षफलं भवेत्।।४।।
गुरौ वारे महामाये लक्षयुग्मफलं ध्रुवम्।
शुक्रे देवि! जगद्धात्रि! चण्डीपाठेन शङ्करि।।५।।
ज्ञेयं तुल्यं फलं दुर्गे! पठेद् यदि समाहितः।
शनिवारे जगद्धात्रि! कोट्यावृत्तिफलं ध्रुवम्।।६।।
अतएव जगद्धात्रि! यश्च चण्डीं समभ्यसेत्।
स धन्यश्च कृतार्थश्च राजराजाधिपो भवेत्।।७।।
आरोग्यं विजयं सौख्यं वस्त्ररत्नप्रवालकम्।
पठनात् श्रवणाच्चैव, जायते नात्र संशयः।।८।।
धनं धन्यं प्रवालं च राजवस्त्रविभूषितम्।
चण्डीश्रवणमात्रेण कुर्यात् सर्वं महेश्वरी।।९।।
ॐ घोरचण्डी महाचण्डी चण्डमुण्डविखण्डिनी।
चतुर्वक्त्रा महावीर्या महादेवविभूषिता।।१०।।
रक्तदन्ता वरारोहा महिषासुरमर्दिनी।
तारिणी जननी दुर्गा चण्डिका चण्डविक्रमा।।११।।
गुह्यकाली जगद्धात्री चण्डी च यामलोद्भवा।
श्मशानवासिनी देवी घोरचण्डी भयानका।।१२।।
शिवा घोरा रुद्रचण्डी महेषी गणभूषिता।
जाह्नवी परमा कृष्णा महात्रिपुरसुन्दरी।।१३।।
श्रीविद्या परमा विद्या चण्डी वैरिविमर्दिनी।
दुर्गा दुर्गशिवा घोरा चण्डहन्त्री प्रचण्डिका।।१४।।
माहेशी बगला देवी भैरवी चण्डविक्रमा।
प्रमथैर्भूषिता कृष्णा चामुण्डा मुण्डमर्दिनी।।१५।।
रणखण्डा चण्डघण्टा रणरामा रणप्रिया।
भवानी भद्रकाली च शिवा घोरा भयानका।।१६।।
विष्णुप्रिया महामाया नन्दगोपगृहोद्भवा।
मङ्गला जननी चण्डी महाक्रुद्धा भयङ्करी।।१७।।

विमला भैरवी निद्रा जातिर्बुद्धिः स्मृतिः क्षमा।
तृष्णा सुधा तथा छाया शक्तिर्माया मनोहरा।।१८।।
तस्यै देव्यै नमो या वै सर्वरूपेण संस्थिता।
प्राणप्रिया जातिमाया निद्रारूपा महेश्वरी।।१९।।
या देवी सर्वभूतेषु सर्वरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२०।।
महाचण्डी शिवा घोरा भयानका वरप्रदा।
काञ्चनी कमला विद्या महारोगविमर्दिनी।।२१।।
गुह्यचण्डी घोरचण्डी चण्डी त्रैलोक्यदुर्लभा।
देवानां दुर्लभा चण्डी रुद्रयामलसम्मता।।२२।।
अप्रकाश्या महादेवी प्रिया रावणमर्दिनी।
मत्स्यप्रिया मांसरता मत्स्यमांसबलिप्रिया।।२३।।
मधुमत्ता महानृत्या भूतप्रमथसङ्गता।
महाभागा महारामा धान्यदा धनरत्नदा।।२४।।
वस्त्रदा मणिराज्यादिप्रजाविषयवर्धिका।
मुक्तिदा सर्वदा चण्डी महाऽऽपत्तिविनाशिनी।।२५।।
रुद्रध्येया रुद्ररूपा रुद्राणी रुद्रवल्लभा।
रुद्रशक्ती रुद्ररूपा रुद्रभूषासमन्विता।।२६।।
शिवचण्डी महाचण्डी शिवप्रेतगणान्विता।
भैरवी परम विद्या महाविद्या च षोडशी।।२७।।
सुन्दरी परमा पूज्या महात्रिपुरसुन्दरी।
गुह्यकाली भद्रकाली महाकालविमर्दिनी।।२८।।
कृष्णा कृष्णस्वरूपा सा जनसम्मोहकारिणी।
अतिमात्रा महालज्जा सर्वमङ्गलदायिका।।२९।।
घोरतन्द्रा भीमरूपा भीमा देवी मनोहरा।
मङ्गला बगला सिद्धिदायिनी सर्वदा शिवा।।३०।।
स्मृतिरूपा कीर्तिरूपा बुद्धिरूपा मनोहरा।
विष्णुप्रिया शक्रपूज्या योगीन्द्रैरपि सेविता।।३१।।
भयानका महादेवी भवदुःखविनाशिनी।
चण्डिका शक्तिहस्ता कौमारी सर्वकामदा।।३२।।
वाराही च वराहास्या इन्द्राणी शक्रपूजिता।
माहेश्वरी महेशास्या महेशगण भूषिता।।३३।।

रविवारे यदा चण्डीं पठेदागम सम्मताम्।
नवावृत्तिफलं तस्य जायते नात्र संशयः।।२।।
सोमवारे यदा चण्डीं पठेद् यस्तु समाहितः।
सहस्रावृत्तिपाठस्य फलं जानीहि सुव्रते!।।३।।
कुजवारे जगद्धात्रि! पठेदागमसम्मताम्।
शतावृत्तिफलं तस्य बुधे लक्षफलं भवेत्।।४।।
गुरौ वारे महामाये लक्षयुग्मफलं ध्रुवम्।
शुक्रे देवि! जगद्धात्रि! चण्डीपाठेन शङ्करि।।५।।
ज्ञेयं तुल्यं फलं दुर्गे! पठेद् यदि समाहितः।
शनिवारे जगद्धात्रि! कोट्यावृत्तिफलं ध्रुवम्।।६।।
अतएव जगद्धात्रि! यश्च चण्डीं समभ्यसेत्।
स धन्यश्च कृतार्थश्च राजराजाधिपो भवेत्।।७।।
आरोग्यं विजयं सौख्यं वस्त्ररत्नप्रवालकम्।
पठनात् श्रवणाच्चैव, जायते नात्र संशयः।।८।।
धनं धन्यं प्रवालं च राजवस्त्रविभूषितम्।
चण्डीश्रवणमात्रेण कुर्यात् सर्वं महेश्वरी।।९।।
ॐ घोरचण्डी महाचण्डी चण्डमुण्डविखण्डिनी।
चतुर्वक्त्रा महावीर्या महादेवविभूषिता।।१०।।
रक्तदन्ता वरारोहा महिषासुरमर्दिनी।
तारिणी जननी दुर्गा चण्डिका चण्डविक्रमा।।११।।
गुह्यकाली जगद्धात्री चण्डी च यामलोद्भवा।
श्मशानवासिनी देवी घोरचण्डी भयानका।।१२।।
शिवा घोरा रुद्रचण्डी महेषी गणभूषिता।
जाह्नवी परमा कृष्णा महात्रिपुरसुन्दरी।।१३।।
श्रीविद्या परमा विद्या चण्डी वैरिविमर्दिनी।
दुर्गा दुर्गशिवा घोरा चण्डहन्त्री प्रचण्डिका।।१४।।
माहेशी बगला देवी भैरवी चण्डविक्रमा।
प्रमथैर्भूषिता कृष्णा चामुण्डा मुण्डमर्दिनी।।१५।।
रणखण्डा चण्डघण्टा रणरामा रणप्रिया।
भवानी भद्रकाली च शिवा घोरा भयानका।।१६।।
विष्णुप्रिया महामाया नन्दगोपगृहोद्भवा।
मङ्गला जननी चण्डी महाक्रुद्धा भयङ्करी।।१७।।

विमला भैरवी निद्रा जातिर्बुद्धिः स्मृतिः क्षमा।
तृष्णा सुधा तथा छाया शक्तिर्माया मनोहरा।।१८।।
तस्यै देव्यै नमो या वै सर्वरूपेण संस्थिता।
प्राणप्रिया जातिमाया निद्रारूपा महेश्वरी।।१९।।
या देवी सर्वभूतेषु सर्वरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२०।।
महाचण्डी शिवा घोरा भयानका वरप्रदा।
काञ्चनी कमला विद्या महारोगविमर्दिनी।।२१।।
गुह्यचण्डी घोरचण्डी चण्डी त्रैलोक्यदुर्लभा।
देवानां दुर्लभा चण्डी रुद्रयामलसम्मता।।२२।।
अप्रकाश्या महादेवी प्रिया रावणमर्दिनी।
मत्स्यप्रिया मांसरता मत्स्यमांसबलिप्रिया।।२३।।
मधुमत्ता महानृत्या भूतप्रमथसङ्गता।
महाभागा महारामा धान्यदा धनरत्नदा।।२४।।
वस्त्रदा मणिराज्यादिप्रजाविषयवर्धिका।
मुक्तिदा सर्वदा चण्डी महाऽऽपत्तिविनाशिनी।।२५।।
रुद्रध्येया रुद्ररूपा रुद्राणी रुद्रवल्लभा।
रुद्रशक्ती रुद्ररूपा रुद्रभूषासमन्विता।।२६।।
शिवचण्डी महाचण्डी शिवप्रेतगणान्विता।
भैरवी परम विद्या महाविद्या च षोडशी।।२७।।
सुन्दरी परमा पूज्या महात्रिपुरसुन्दरी।
गुह्यकाली भद्रकाली महाकालविमर्दिनी।।२८।।
कृष्णा कृष्णस्वरूपा सा जनसम्मोहकारिणी।
अतिमात्रा महालज्जा सर्वमङ्गलदायिका।।२९।।
घोरतन्द्रा भीमरूपा भीमा देवी मनोहरा।
मङ्गला बगला सिद्धिदायिनी सर्वदा शिवा।।३०।।
स्मृतिरूपा कीर्तिरूपा बुद्धिरूपा मनोहरा।
विष्णुप्रिया शक्रपूज्या योगीन्द्रैरपि सेविता।।३१।।
भयानका महादेवी भवदुःखविनाशिनी।
चण्डिका शक्तिहस्ता कौमारी सर्वकामदा।।३२।।
वाराही च वराहास्या इन्द्राणी शक्रपूजिता।
माहेश्वरी महेशास्या महेशगण भूषिता।।३३।।

चामुण्डा नारसिंही च नृसिंही शत्रुनाशिनी।
सर्वशत्रुप्रशमनी सर्वारोग्यप्रदायिनी।।३४।।
इमां चण्डीं जगद्धात्रि! ब्राह्मणस्तु सदा पठेत्।
नान्यस्तु पाठको देवि! पठने ब्रह्महा भवेत्।।३५।।
नारदः पाठकश्चैव कैलासे रत्नभूषिते।
वैकुण्ठे ब्रह्मलोके च देवराजपुरे शिवे!।।३६।।
यः श्रृणोति धरायां च मुच्यते सर्वपातकैः।
ब्रह्महत्या च गोहत्या स्त्रीबधोद्भवपातकम्।।३७।।
तत्सर्वं पातकं दुर्गे! मातृगमनपातकम्।
स्वश्रूगमनपापं व कन्यागमनपातकम्।।३८।।
सुतस्त्रीगमनं चैव यद्यत् पापं प्रजायते।
परदाराकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति।।३९।।
जन्मजन्मान्तरात् पापाद् गुरुहत्यादिपातकात्।
मुच्यते मुच्यते देवि! गुरुपत्नीषु सङ्गमात्।।४०।।
मनसा वचसा पापं यत् पापं ब्रह्महिंसने।
मिथ्याजन्यं च यत् पापं तत् पापं नश्यति क्षणात्।।४१।।
श्रवणं पठनं चैव यः करोति धरातले।
स धन्यश्च कृतार्थश्च राजराजाधिपो भवेत्।।४२।।
यः करिष्यत्यवज्ञां रुद्रयामलचण्डिकाम्।
पापैरेतैः समायुक्तो रौरवं नरकं व्रजेत्।।४३।।
अश्रद्धां ये च कुर्वन्ति ते च पातकिनो नराः।
रौरवं नरककुण्डं कृमिकुण्डं मलस्य वै।।४४।।
शुक्रस्य कुण्डं स्त्रीकुण्डं याति ते ह्यचिरेण वै।
ततः पितृगणैः सार्द्धं विष्ठायां जायते कृमिः।।४५।।
श्रृणु देवि! महामाये! चण्डी पाठं श्रृणोत्यपि।
गयायां चैव यत् पुण्यं काश्यां विश्वेश्वराग्रतः।।४६।।
प्रयागे मुण्डने चैव हरिद्वारे हरेगृहे।
तुल्यपुण्यं भवेद् देवि! सत्यं दुर्गे! शिवे! रमे!।।४७।।
त्रिगयायां त्रिकाश्यां वै यच्च पुण्यं समुत्थितं।
तच्च पुण्यं तच्च पुण्यं तच्च पुण्यं न संशयः।।४८।।
भवानी च भवानी च भवानीत्युच्यते बुधैः।
भकारश्च भकारश्च भकारः केवलः शिवः।।४९।।

वाणी चैव जगद्धात्री वरारोहे भकारकः।
प्रेतवद् देवि! विश्वेशि! भकारः प्रेतवत्सलः।।५०।।
आरोग्यं च जयं दुःखनाशनं सुखवर्द्धनम्।
धनं पुत्रं जरारोग्यं कुष्ठं गलितनाशनम्।।५१।।
अर्द्धाङ्गरोगान्मुच्येत दद्रुरोगाच्च पार्वति!।
सत्यं सत्यं जगद्धात्रि! महामाये! शिवे! शिवे!।।५२।।
चण्डे! चण्डे! महाघोरे! चण्डिके! व्याधिनाशिनि!।
मन्दे दिने महेशानि! विशेषफलदायिनी।।५३।।
सर्वदुःखात् प्रमुच्येत् भक्त्या चण्डीं शृणोति यः।
ब्राह्मणो हितकारी च पठेन्नियतमानसः।।५४।।
मङ्गलं मङ्गलं ज्ञेय मङ्गलं जयमङ्गलम्।
भवेद्धि पुत्रपौत्रैश्च कन्यादासादिभिर्युतः।।५५।।
तत्त्वज्ञानं च निधने काले निर्वाणमाप्नुयात्।
महादानोद्भवं पुण्यं तुलाहिरण्यके यथा।।५६।।
चण्डीस्मरणमात्रेण पठनाद् ब्राह्मणोऽपि सः।
निर्वाणमेति देवेशिः महास्वस्त्ययनं हि तत्।।५७।।
सर्वत्र विजयी जन्तुः श्रवणाद् ग्रहदोषतः।
मुच्यते च जगद्धात्रि! राजराजाधिपो भवेत्।।५८।।
इमां च चण्डीं पठते मनुष्यः
शृणोति भक्त्या परमां तु शिवस्य।
चण्डीं धरण्यामतिपुण्ययुक्तां
भक्त्यावगच्छेद् वरमन्दिरं शुभम्।।५९।।
यो यन्मनोरथं दुर्गे! तनोति धरणीतले।
रुद्रचण्डीप्रसादने किं न सिद्ध्यति भूतले।।६०।।
इति सत्यं महादेवि! सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।
नैव दुःखभयं किञ्चित् पाठात् श्रवणाद् यतः।।६१।।
गुह्यमेकं प्रवक्ष्यामि नैव जानन्ति केचन।
स्मृतिभ्रंशाद् वरारोहे! त्वयैवापि न जायते।।६२।।
इति सत्यं महेशानि! सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।
नैव दुःखं नैव शोकं नैव रोगभयं तथा।।६३।।
आरोग्यं मङ्गलं नित्यं करोति शुभमङ्गलम्।
महेशानि! वरारोहे! ब्रवीमि सत्यमुत्तमम्।।६४।।

अभक्ताय न दातव्य मम प्राणाधिकं शुभम्।
मम भक्ताय शान्ताय शिवविष्णुप्रियाय च।।६५।।
दद्यान् कदाचिद् देवेशि! सत्यं सत्यं महेश्वरि!।
अनन्तफलमाप्नोति शिवचण्डीप्रसादतः।।६६।।
अश्वमेधवाजपेयराजसूयशतेन वै।
तुष्टाश्च पितरो देवास्तथा च सर्वदेवताः।।६७।।
दुर्गायां मृण्मयीज्ञानं रुद्रयामलपुस्तकमे्।
मन्त्रमक्षरंसज्ञानं करोति हि नराधमः।।६८।।
अतएवं महामाये! किं वक्ष्ये तव सन्निधौ।
लम्बोदराधिकश्चण्डीपठनात् श्रवणाद् यतः।।६९।।
तत्त्वमसीति वाक्येन मुक्तिमाप्नोति दुर्लभाम्।
तथास्याः पठनाद् देवि! संसृतिः स्यात् सुदुर्लभा।।७०।।
सत्यं सत्यं महेशानि! पुनः सत्यं मयोदितम्।
कपिलाशतदानस्य फलं यत् प्रतिवासरम्।।७१।।
तत्फलं लभते नित्यं रुद्रचण्डीप्रसादतः।
अन्यथा नैवं सम्भाव्यं सत्यं सत्यं वदामि ते।।७२।।

।। इति श्रीमदागमसन्दर्भे श्रीमद्रुद्रयामले रुद्रचण्डिकायां हरगौरी सम्वादे फलरहस्यं नाम उत्तमः पटलः।।

•

तुरीयः पटलः

दुर्गाप्रीतिवचने माहात्म्यम्

रुद्र उवाच

पुराऽऽसीद् दिवि दुर्द्धर्षः प्रलम्बो नामतोऽसुरः।
इन्द्र निर्जित्य शक्रत्वं नीतवान् नितितेजसा।।१।।
मया दत्तवरोन्मत्तः कालकङ्कालप्रोष्कलान्।
सुकालं विकलं कौलं निष्कालं कालसञ्चयम्।।२।।
प्रतिकालं कार्यकालं हर्षकालं हलाहलम्।
सङ्कालं कालकुलकं कालहाढ्यं हटाहटम्।।३।।
हटत्कालं वृहत्कालं कालचक्रं कलाकलम्।
महाकालं कालरूपं सैन्यैर्द्विकोटिसंज्ञकम्।।४।।
अमारयत् सुरप्रीत्यै विड़ोजप्रमुखैः स्तुता।
दुन्दुभीर्वादयित्वा च घन्टाद्यैर्घोररावणैः।।५।।

विडोजास्तद्भयात् शीघ्रं ब्रह्माद्यैरगमत् ततः।
कारणाख्यजलानां वै उपरिस्था परेश्वरी।।६।।
यत्रास्ते ताभिः सखीभिर्नायिकादिभिरेव सा।
स्तुत्वा बहुविधैः स्तोत्रैरपृच्छन् मृदुवाक्यतः।।७।।
प्रलम्बं नाशय शुभे! नान्यथा मृत्युमेष्यति।
इति स्तुत्वा शिवां देवाः कथितं मातुरग्रतः।।८।।
भव्या प्राह शवे! गच्छ, प्रलम्बनाशनाय च।
आज्ञां लब्ध्वा च सा देवी गत्वाऽमरपुरे वरे।।९।।
शतैश्च योगिनीसैन्यैर्युयुधे प्रहरद्वयम्।
महिषप्रतिमं तं च जघान परमेश्वरी।।१०।।
ततस्ताभिः स्तुता तत्र चण्डिका विश्वरूपिणी।
वरारोहा भगवती स्वाश्रमा सुखिनी शुभा।।११।।
मधुपा माधवी मात्रा मित्रा मित्रं मनस्विनी।
मनोभवा मधून्मत्ता महिषघ्नी सुमन्त्रिणी।।१२।।
इमां च चण्डिकां नित्यं यः पठेत् पाठयेन्नरः।
सर्वतीर्थावगाहस्य फलमाप्नोति निश्चितम्।।१३।।
यः पठेत् प्रयतो नित्यं रुद्रचण्डीमिमां सुधीः।
गात्रोत्थाने गुरोरग्रे गुहायां गवि घूमतः।।१४।।
गोष्ठे गौड़े गोकुले वा गोविन्दाग्रे गयोपरि।
गङ्गायां गिरिजायज्ञे गिरिजाप्रतिपूजने।।१५।।
ग्रहणे गोकोटिदाने यत्यत्तीर्थं महीतले।
तस्मात् कोटिगुणं पुण्यं जायते श्रुयते यदि।।१६।।
चण्डिकां रुद्रवक्त्रारविन्दवाक्यविनिर्गताम्।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यमेतन्मयोदितम्।।१७।।
रुद्रचण्डीसमं पुण्यं किञ्चिन्नास्ति क्षितेस्तले।
नित्यं यस्तां स्तवैरेतैः स्तूयते च समाहितः।।१८।।
बाधाजालं च तस्यां वा समस्ताचार एव हि।
मधुकैटभनैपात्यं महिषासुरसंहरम्।।१९।।
पठन्ति पाठयन्त्येव बधं शुम्भनिशुम्भयोः।
श्रोष्यन्ति नित्यं ये भक्त्या माहात्म्यं तव चण्डिके!।।२०।।
नवम्यां कृष्णपक्षे वा चतुर्दश्यां तथैव च।
शुक्लाष्टम्यां पर्वतो वा भक्ताश्चैवेकचेतसः।।२१।।

न चैषां दुष्कृतं किञ्चिन्न दारिद्र्यं न चापदः।
न च शत्रुभयं किञ्चिन् न चैवेष्टवियोजनम्।।२२।।
दस्युतो न राजतो च न शस्त्रानलयोरपि।
न जले नोपसर्गे च महामारीभयं न च।।२३।।
यत्रैतत् पठ्यते भक्त्या नित्यमायतने मम।
तत् स्थानं न विमोक्ष्यामि सान्निध्यं मम सर्वदा।।२४।।
महास्वस्त्ययनं पुण्यं पापजालविनाशनम्।
चतुर्वर्गप्रदं सत्यं तथाऽक्षयदिवःप्रदम्।।२५।।
वह्निकर्मणि पूजायां बलिदाने तथोत्सवे।
ममैतां चण्डिकां श्रुत्वा तत् सर्वभक्षयं लभेत्।।२६।।
युद्धे वीरवरो भूयात् निर्भयो रिपुसंकुले।
कल्याणं लभते नित्यं लभते कुलवर्द्धनम्।।२७।।
शान्तिकर्मणि दुःस्वप्ने प्रपठेद् मित्रकर्मणि।
सङ्घातभेदने चैव रक्षोभयविनाशने।।२८।।
आरोग्ये शत्रुसंहारेऽरण्ये याने वनाग्नितः।
शून्ये सिंहादि जन्तूनां भये सर्वभयेऽपि च।।२९।।
स्मरन्नेतत् परं गुह्यं सङ्कटान्मुच्यते नरः।
एकधा दशधा चैव शतधा च सहस्रधा।।३०।।
अयुतं लक्षं नियुतं कोट्यर्बुदमहाऽर्बुदम्।
पदमं चापि महापद्मं खर्वं च लघुखर्वकम्।।३१।।
हंसं चैव महाहंसं महाशङ्खं च धूलकम्।
अक्षौहिणीमहाधूलं महाक्षौहिणिका क्रमात्।।३२।।
यथाशक्ति यथाऽऽवृत्ति यावज्जीवं भवार्णवे।
तावद् वा जन्मनि दिनं कियत्कालं कलौ कुले।।३३।।
भवानीत्युच्चरन् जन्तुर्भवान्मुच्येत् नान्यथा।
भवानीत्युच्चरन् व्याजात् न योनौ जायते जनः।।३४।।
अथानुक्रमिकां वक्ष्ये शृणु देवि! शुचिस्मिते!।
न्यासं विधानं पूजां च नत्वा सर्वमुदीरयेत्।।३५।।
आदौ द्वितूर्यपञ्चानां चत्वारिंशद्द्वितीयके।
अष्टोत्तरशतं तिस्रोऽप्यष्टोत्तरशतद्वयम्।।३६।।
संख्यातमेव श्लोकानां मयोक्तं खलु पार्वति!।
गृहेऽपि लिखितं तिष्ठन्नूक्तं फलमवाप्नुयात्।।३७।।

इति श्रीमदागमसन्दर्भे श्रीमद्रुद्रयामले रुद्रचण्डिकायां तुरीयपटले दुर्गाप्रीतिवचने माहात्म्यां रुद्रोक्ता रुद्रचण्डी सम्पूर्णा।

●

श्री रुद्रचण्डी कवचम्

श्री कार्तिकेय उवाच

कवचं चण्डिकादेव्याः श्रोतुमिच्छामि ते शिव!।
यदि तेऽस्ति कृपानाथ! कथयस्व जगत्प्रभो!।।१।।

श्री शिव उवाच

शृणु वत्स! प्रवक्ष्यामि चण्डिकाकवचं शुभम्।
भुक्तिमुक्तिप्रदातारमायुष्यं सर्वकामदम्।।२।।
दुर्लभं सर्वदेवानां सर्वपापनिवारणम्।
मन्त्रसिद्धिकरं पुंसां ज्ञानसिद्धि करं परम्।।३।।

विनियोगः- श्री रुद्रचण्डिकाकवचस्य श्री भैरव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः श्रीचण्डिका देवता, चतुर्वर्गफलप्राप्त्यर्थं पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः-श्रीभैरवऋषये नमः शिरसि। अनुष्टप् छन्दसे नमः मुखे। श्री चण्डिकादेवतायै नमः हृदि। चतुर्वर्गफलप्राप्त्यर्थं पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

चण्डिका मेऽग्रतः पातु, आग्नेय्यां भवसुन्दरी।
याम्यां पातु महादेवी नैऋत्यां पातु पार्वती।।४।।
वारुणे चण्डिका पातु चामुण्डा पातु वायवे।
उत्तरे भैरवी पातु ईशाने पातु शङ्करी।।५।।
पूर्वे पातु शिवा देवी ऊर्ध्वे पातु महेश्वरी।
अधः पातु सदाऽनन्ता मूलाधारनिवासिनी।।६।।
मूर्ध्नि पातु महादेवी ललाटे च महेश्वरी।
कण्ठे कोटीश्वरी पातु हृदये नलकूबरी।।७।।
नाभौ कटिप्रदेशे च पायाल्लम्बोदरी सदा।
ऊर्वोर्जान्वोः सदा पायात् त्वचं मे मदलालसा।।८।।
ऊर्ध्वे पार्श्वे सदा पातु भवानी भक्तवत्सला।
पादयोः पातु मामीशा सर्वाङ्गे विजया सदा।।९।।
रक्तमांसे महामाया त्वचि मां पातु लालसा।
शुक्रमज्जास्थिसङ्घेषु गुह्यं मे भुवनेश्वरी।।१०।।
ऊर्ध्वकेशी सदा पायान् नाड़ी सर्वाङ्गसन्धिषु।
ॐ. ऐं ऐं ह्रीं ह्रीं चामुण्डे स्वाहामन्त्रस्वरूपिणी।।११।।
आत्मानं मे सदा पायात् सिद्धविद्या दशाक्षरी।
इत्येतत् कवचं देव्याश्चण्डिकायाः शुभावहम्।।१२।।

गोपनीयं प्रयत्नेन कवचं सर्वसिद्धिदम्।
सर्वरक्षाकरं धन्यं न देयं यस्य कस्यचित्।।१३।।
अज्ञात्वा कवचं देव्याः यः पठेत् स्तवमुत्तमम्।
न तस्य जायते सिद्धिर्बहुधा पठनेन च।।१४।।
धृत्वैतत् कवचं देव्या दिव्यदेहधरो भवेत्।
अधिकारी भवेदेतच्चण्डीपाठेन साधकः।।१५।।

।। इति श्रीरुद्रयामलतन्त्रे शिवकार्तिकेयसम्वादे रुद्रचण्डीकवचं सम्पूर्णं शिवंभूयात्।।

रुद्रचण्डी त्रैलोक्यमंगल कवचम्

श्रीपार्वत्युवाच

देवदेव! महादेव! दयालो! दीनवत्सल!।
केन सिद्धिं ददात्याशु चण्डी त्रैलोक्यदुर्लभा।।१।।

श्रीमहादेव उवाच

रुद्रेणाराधिता चण्डी महासिद्धिर्भवेत् तदा।
रुद्ररूपा रुद्रभावा रुद्रभूषा सदा स्थिता।।२।।
रुद्रध्येया रुद्रगेहा रुद्राणी रुद्रवल्लभा।
सर्वदा वरदा देवी ब्रह्मज्ञानप्रदायिनी।।३।।
सर्वपापहरा देवी सर्वरोगक्षयङ्करी।
सर्वारिष्टगतैर्दात्री सर्वग्रहनिवारिणी।।४।।
शिवं देहि शुभं देहि सुखं देहि सदा प्रिये!।
तुष्टिं पुष्टिं जयारोग्यं मङ्गलानां च मङ्गलम्।।५।।
अकालमरणं वापि काले मृत्युर्यदा भवेत्।
चण्डीस्मरणमात्रेण मृत्योर्मृत्युकरं परम्।।६।।
ज्ञात्वा देवगणाः सर्वे चण्ड्यभूद् रुद्रगेहिनी।
रुद्रचण्डी तदा ख्याता त्रैलोक्ये परमेश्वरी।।७।।
रुद्रोऽभवन्महारुद्रश्चण्डीपाठप्रसादतः।
तदा शापः प्रदातव्यः स्वीयसिद्धिर्यदा शिवे!।।८।।
कृष्णेनाराधिता चण्डी कृष्णचण्डी न सिद्धिदा।
कृष्णानामधरा देवी सर्वतन्त्रेषु गोपिता।।९।।
कृष्णचण्डी महादेवी प्राणान्ते न प्रकाशिता।
ज्ञात्वा चण्डीं जगत् सर्वं कृष्णशापोऽभवत् तदा।।१०।।

तदन्ते चण्डिकां ज्ञात्वा कृष्णशापोऽभवन्मुदा।
स्वीयभावे तदा देवी अभिशापं करोति हि।
तेन तेन स्वीयपापेन न सिद्धयन्ति कदाचन।।११।।

श्री पार्वत्युवाच

देव देव! दीननाथ! दीनबन्धो! दयानिधे!।
इदानीं वद मे नाथ! चण्डीसिद्धिकरं परम्।।१२।।
विना ध्यानं विना पूजां विना जपपरायणम्।
विना होमं विना मन्त्रं विना साधनसंज्ञकम्।।१३।।
अनायासेन सिद्ध्यन्ति केनोपायेन तद् वद।

श्रीमहादेव उवाच

शृणु पार्वति! सुभगे! चण्डीसिद्धिकरं परम्।
रुद्रध्येया रुद्रचण्डी प्रसन्ना सर्वदा सती।।१४।।
तस्याहं कवचं देवि! कथयामि शुचिस्मिते!।
त्रैलोक्ये सर्वदेवानां साधनेनैव यत् फलम्।।१५।।
तत् फलं लभते सद्यः कवचाध्यायमात्रतः।
शतमष्टौ पठेद् यस्तु सर्वसिद्धीश्वरो भवेत्।।१६।।
शतावृत्तिं पठेद् यो हि सप्तद्वीपेश्वरो भवेत्।
पञ्चाशत्पाठमात्रेण पञ्चाशद्वर्णसिद्धये।।१७।।
अष्टाविंशतिपाठेन अष्टसिद्धिः करे स्थिता।
एकादश पठेद् यस्तु रुद्रस्तस्य प्रसन्नधीः।।१८।।
दशविद्याः प्रसिद्ध्यन्ति यः पठेद् दशधा शिवेः।
नवावृत्तिं पठेद् यो हि ग्रहदेवप्रसन्नधीः।।१९।।
अष्टावृत्तिं पठेद् यस्तु अष्टपाशैर्विमुच्यते।
सप्तधा पाठमात्रेण चिरायुर्भवेत् ध्रुवम्।।२०।।
पठेत् षष्ठं कर्मभेदे षट्कर्मसिद्धये ध्रुवम्।
पञ्चमं प्रपठेद् यस्तु पञ्चात्मा च प्रसन्नधीः।।२१।।
चतुर्थं प्रपठेद् यस्तु चतुर्वेदविदां वरः।
त्रिधा पाठे महेशानि! सर्वशान्तिर्भविष्यति।।२२।।
पाठद्वयं कृतं यद्धि सर्वकाम्यं प्रसाधयेत्।
एकधा पाठमात्रेण चण्डीसिद्धिर्भविष्यति।।२३।।
अतः परमहं वक्ष्ये कवचं च परात्परम्।
रक्षाकरं महामन्त्रं त्रैलोक्यमङ्गलाभिधम्।।२४।।

प्रणवो वाग्भवो माया ततः सद्यः सनातनी।
स्थिरा माया ततः कामो लज्जायुग्मं ततः परम्।।२५।।
ॐ ऐं ह्रीं ॐ क्रीं ह्लीं क्लीं ह्रीं ह्रीं।
एष नवाक्षरो मन्त्रः सर्वाशापरिपूरकः।
अग्निस्तम्भं जलस्तम्भं वायुस्तम्भं ततः परम्।।२६।।
बहु किं कथ्यते देवि! त्रैलोक्यंस्तम्भनं भवेत्।
कर्षयेदखिलं देवि! शोषयेदखिलं जगत्।।२७।।
मोहयेदखिलान् लोकान् मारयेत् सकलं जगत।
वशयेत् सर्वदेवादीन् ऋतुभेदे महेश्वरि!।।२८।।
सर्वरक्षाकरो मन्त्रः साक्षाद् ब्रह्म न संशयः।
शिखायां प्रणवः पातु शिरसि वाग्भवः प्रियेः।
भ्रूमध्ये रक्षते माया हृदयं कालिकाऽवतु।।२९।।
नाभिं पातु स्थिरा माया तदधः काम रक्षतु।
लिङ्गमूलं पातु लज्जा यजुर्गुह्ये सदाऽवतु।।३०।।
कटिं पृष्ठं कूर्परं च स्कन्धं कर्णद्वयं तथा।
प्रणवो रक्षते देवि! मातृभावेन सर्वदा।।३१।।
कण्ठं गलं च चिच्बुकं ओष्ठद्वयं ततः परम्।
दन्त जिह्वां तथा रन्ध्रं तदन्ते मुखमण्डलम्।।३२।।
वाग्भवो रक्षते देवि! पितृभावेन सर्वदा।
नासिकां हनुयुग्मं च चाक्षुषी भ्रूयुगं तथा।।३३।।
ललाटं च कपालं च चन्द्रसूर्याग्निमण्डलम्।
सर्वदा रक्षते माया शक्तिरूपे महेश्वरि!।।३४।।
बाहुद्वयं ततः सर्वं पञ्जरं हृदिमण्डलम्।
रक्षते कालिकाबीजं कन्यारूपेण सर्वदा।।३५।।
उदरं मूलदेशं च चण्डिके! त्वं सदाऽवस्तु।
रक्तं मांस तथा मज्जा शुक्राणि मेद एव च।।३६।।
रक्षेल्लज्जा शक्तिरूपे सगुणा परमा कला।
नखकेशानि सर्वाणि यजुः पातु सदा प्रिये!।।३७।।
सर्वाङ्गं रक्षते चण्डी सर्वमन्त्रं सकीलकम्।
आत्मा परात्मा जीवात्मा चण्डिका पातु सर्वदा।।३८।।
साधने चण्डिका पातु सज्ज्ञानं चण्डिकाऽवतु।
सत्सङ्गं चण्डिका पातु सद्‌योगं चण्डिकाऽवतु।।३९।।

सत्कथां चण्डिका रक्षेत् सच्चिन्तां चण्डिकाऽवतु।
पूर्वस्यां चण्डिका पातु आग्नेय्यां चण्डिकाऽवतु।।४०।।
दक्षिणस्यां तथा चण्डी सर्वदा परिरक्षतु।
नैर्ऋत्यां चण्डिका रक्षेत् पश्चिमे चण्डिकाऽवतु।।४१।।
वायव्यां चण्डिका पातु उत्तरे चण्डिकाऽवतु।
ऐशान्यां चण्डिका पातु ऊर्ध्वाधश्चण्डिका तथा।।४२।।
चण्डिका रक्षते कन्यां सुतं स्त्रीं चण्डिकाऽवतु।
भ्रातरं भगिनीं सर्वं चण्डिका रक्षते सदा।।४३।।
बन्धुवर्गकुटुम्बानि दासीदासं ततः परम्।
रक्षते चण्डिका देवी मातृभावान्महेश्वरी।।४४।।
गजवाजिगवान् सर्वान् जन्तूनां सर्वपर्वसु।
रक्षते चण्डिका देवी स्वीय भावेन शाम्भवी।।४५।।
वातुवास्तुवृक्षादिकं सर्वं चण्डिका रक्षते सदा।
सैन्यं स्वसैन्यवर्गाणां चण्डिका परिरक्षतु।।४६।।
श्मशाने प्रान्तरेऽरण्ये चण्डिका पातु सर्वदा।
राजद्वारे रणे घोरे पर्वते वा जले स्थले।।४७।।
अग्निवज्रादिदुर्योगे विवादे शत्रुसङ्कटे।
चण्डिका पातु सर्वत्र यथा धेनुः सुतं प्रति।।४८।।
इति ते कथितं कान्ते! त्रैलोक्यमङ्गलाभिधम्।
त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कवचं परिकथ्यते।।४६।।
इदं कवचमज्ञात्वा रुद्रचण्डीं पठेद् यदि।
सिद्धिर्न जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि।।५०।।
इदं कवचमज्ञात्वा चण्डी पाठं करोति यः।
विपरीतं भवेत् सर्वं विघ्नस्तस्य पदे पदे।।५१।।
तदनन्तं भवेत् सर्वं कवचाध्यायमात्रतः।
धारणे कवचं देवि! फलसंख्याप्रपूरकम्।।५२।।
तत्रैव कवचं देवि! सर्वशापरिपूरकम्।
पञ्चवक्त्रेण कथितं किं मया कथ्यतेऽधुना।।५३।।
भूर्जे गन्धाष्टकेनैव लिखेत् तु कवचं शुभम्।
समन्त्रं कवचं देवि! स्वमन्त्रपुटितं ततः।।५४।।
गोत्रं नाम ततः कामं पुनर्मन्त्रं लिखेत् प्रिये!।
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां पक्षयोरुभयोरपि।।५५।।

प्राणप्रतिष्ठामन्त्रेण प्रतिष्ठां कुरुते ततः।
पूजयेद् विधियुक्तेन पञ्चाङ्गं तदनन्तरम्।।५६।।
एवं ते धारयेद् यस्तु स रुद्रो नात्र संशयः।
कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ हृन्नाभिकटिदेशतः।।५७।।
योषिद् वामभुजे धृत्वा साक्षात् काली न संशयः।
धनं पुत्रं जयारोग्यं यद् यन्मनसि कामदम्।।५८।।
तत्तत् प्राप्नोति देवेशि! निश्चितं मम भाषितम्।
न सन्देहो न सन्देहो न सन्देहः कदाचन।।५९।।
देयं शिष्टाय शान्ताय गुरुभक्तिरताय च।
शक्तिध्येयाः शक्तरताः शक्तिप्राणाः सदाशयाः।।६०।।
एवं तल्लक्षणैर्युक्तं कवचं दीयते क्वचित्।
नित्यं पूजा प्रकर्तव्या कवचं परमं शिवे!।।६१।।
अशक्तौ परमेशानि! पुष्पधूपं प्रदापयेत्।
तस्य देहे तस्य गेहे चण्डिका त्वचला भवेत्।।६२।।
खले दुष्टे शठे मूर्खे दाम्भिके निन्दके तथा।
शक्तिनिन्दां शक्तिहिंसां यः करोति सः पामरः।।६३।।
एतेषां परमेशानि! सुकृतिर्न कदाचन।
न दद्यात् कवचं देवि! यदीच्छेदात्मनो हितम्।।६४।।
दत्ते च सिद्धिहानिः स्याद् दत्ते च शिवहा भवेत्।।६५।।

।। इति श्रीरुद्रयामलतन्त्रे श्रीपार्वतीरहस्ये त्रैलोक्यमङ्गलं नाम रुद्रचण्डीकवचं सम्पूर्णं शुभं भूयात्।।

●

श्री लघु चण्डी

श्रीनारद उवाच

नारायण! धराधार! सर्वपालनकारण!।
भवतोदीरितं देवीचरितं पापनाशनम्।।१।।
मन्वन्तरेषु सर्वेषु सा देवी यत्स्वरूपिणी।
यदाकारेण कुरुते प्रादुर्भावं महेश्वरी।।२।।
तान् नः सर्वान् समाख्याहि देवीमाहात्म्य मिश्रितान्।
यथा च येन येनेह पूजिता संस्तुताऽपि हि।।३।।
मनोरथान् पूरयति भक्तानां भक्तवत्सला।
तन्नः शुश्रूषमाणानां देवीचरितमुत्तमम्।
वर्णयस्व कृपासिन्धो! येनाप्नोति सुखं महत्।।४।।

प्रथमचरितम्

मधुकैटभवधः

श्रीनारायण उवाच

आकर्णय महर्षे! त्वं चरितं पापनाशनम्।
सप्तमो मनुराख्यातो मनुर्वैवस्वतः प्रभुः।
श्राद्धदेवः परानन्दभोक्ता मान्यस्तु भूभुजाम्।।५।।
स च वैवस्वतमनुः परदेव्याः प्रसादतः।
तथा तत्तपसा चैव जातो मन्वन्तराधिपः।।६।।
अष्टमो मनुराख्यातः सावर्णिः प्रथितः क्षितौ।
स जन्मान्तर आराध्य देवीं तद्वर लाभतः।।७।।
जातो मन्वन्तरपतिः सर्वराजन्यपूजितः।
महापराक्रमो धीरो देवीभक्तिपरायणः।।८।।

श्री नारद उवाच

कथं जन्मान्तरे तेन मनुनाऽऽराधनं कृतम्।
देव्याः पृथिव्युद्भवायास्तन्ममाख्यातुमर्हसि।।६।।

श्रीनारायण उवाच

चैत्रवंशसमुद्भूतो राजा स्वारोचिषेऽन्तरे।
सुरथो नाम विख्यातो महाबलपराक्रमः।।१०।।
गुणग्राही धनुर्धारी मान्यः श्रेष्ठः कविः कृती।
धनसंग्रहकर्ता च दाता याचकमण्डले।।११।।
अरीणां मर्दनो मानी सर्वास्त्रकुशलो बलो।
तस्य कदा बभूवुस्ते कोलाविध्वंसिनो नृपाः।।१२।।
शत्रवः सैन्यसहिताः परिवार्यैनमूर्जिताः।
रुरुधर्नगरीं तस्य राज्ञो मानधनस्य हि।।१३।।
तदा स सुरथो नाम राजा सैन्यसमावृतः।
निर्ययौ नगरात् स्वीयात् सर्वशत्रुनिबर्हणः।।१४।।
तदा स समरे राजा सुरथः शत्रुभिर्जितः।
अमात्यैर्मन्त्रिभिश्चैव तस्य कोशगतं धनम्।।१५।।
हृतं सर्वमशेषेण ततोऽतप्यत भूमिपः।
निष्कासितश्च नगरात् स राजा परमद्युतिः।।१६।।
जगामाश्वमथारुह्य मृगयामिषतो वनम्।
एकाकी विजनेऽरण्ये बभ्रामोद्भ्रान्तमानसः।।१७।।

मुनेः कस्यचिदागत्य स्वाश्रमं शान्तमानसः।
प्रशान्तजन्तुसंयुक्तं मुनिशिष्यगणैर्युतम्।।१८।।
उवास कञ्चित् कालं स राजा परमशोभने।
आश्रमे मुनिवर्यस्य दीर्घदृष्टेः सुमेधसः।।१९।।
एकदा स महीफलो मुनिं पूजावसानके।
काले गत्वा प्रणम्याशु पप्रच्छ विनयान्वितः।।२०।।

राजा सुरथ उवाच

मुने! मम मनोदुःखं बाधते चाधिसम्भवम्।
ज्ञाततत्त्वस्य भूदेव! निष्प्रज्ञस्य च सन्ततम्।।२१।।
शत्रुभिर्निर्जितस्यापि हृतराज्यस्य सर्वशः।
तथापि तेषु मनसि ममत्वं जायते स्फुटम्।।२२।।
किं करोमि? क्व गच्छामि? कथं शर्म लभे मुने!।
त्वदनुग्रहमाशासे वद वेदविदां वर!।।२३।।

सुमेधामुनिरुवाच

आकर्णय महीपाल! महाऽऽश्चर्यकरं परम्।
देवीमाहात्म्यमतुलं सर्वकामप्रदं पराम्।।२४।।
जगन्मयी महामाया विष्णुब्रह्महरोद्भवा।
सा बलादपहृत्य जन्तूनां मानसानि हि।।२५।।
मोहाय प्रतिसंयच्छेदिति जानिहि भूमिप!।
सा सृजत्यखिलं विश्वं सा पालयति सर्वदा।।२६।।
संहारे हररुपेण संहरत्येव भूमिप!।
कामदात्री महामाया कालरात्रिर्दुरत्यया।।२७।।
विश्वसंहारिणी काली कमला कमलालया।
तस्यां सर्वं जगज्जातं तस्यां विश्वं प्रतिष्ठितम्।
लयमेष्यति तस्यां च तस्मात् सैव परात्परा।।२८।।
तस्या देव्याः प्रसादश्च यस्योपरि भवेन्नृप!।
स एवं मोहमत्येति नान्यथा धरणीपते!।।२९।।

राजा सुरथ उवाच

का सा देवी त्वया प्रोक्ता ब्रूहि कालविदां वर!।
का मोहयति सत्त्वानि कारणं किं भवेद् द्विज?।।३०।।
कस्मादुत्पद्यते देवी? किं रूपा सा? किमात्मिका?।
सर्वमाख्याहि भूदेव! कृपया मम सर्वतः।।३१।।

सुमेधा मुनिरुवाच

राजन्! देव्याः स्वरूपं ते वर्णयामि निशामय।
यथा चोत्पतिता देवी येन वा सा जगन्मयी।।३२।।
यदा नारायणे देवो विश्वं संहृत्य योगराट्।
आस्तीर्य शेषं भगवान् समुद्रे निद्रितोऽभवत्।।३३।।
तदा प्रस्वापवशगो देवदेवो जनार्दनः।
तत्कर्णमलसञ्जातौ दानवौ मधुकैटभौ।।३४।।
ब्रह्माणं हन्तुमुद्युक्तौ दानवौ घोररूपिणौ।
तदा कमलजो देवो दृष्ट्वा तौ मधुकैटभौ।।३५।।
निद्रितं देवदेवेशं चिन्तामाप दुरत्ययाम्।
निद्रितो भगवानीशो दानवौ च दुन्तसदौ।।३६।।
किं करोमि? क्व गच्छामि? कथं शर्म लभे ह्यहम्?।
एवं चिन्तयतस्य पद्मयोनेर्महात्मनः।।३७।।
बुद्धिः प्रादुरभूत् तात! तदा कार्यप्रसाधिनी।
यस्या वशं गतो देवो निद्रितो भगवान् हरिः।।३८।।
तां देवीं शरणं यामि निद्रां सर्वप्रसूतिकाम्।

ब्रह्मोवाच

देवदेवि! जगद्धात्रि! भक्ताभीष्टफलप्रदे!।।३९।।
जगन्माये! महामाये! समुद्रशयने! शिवे!।
त्वदाज्ञावशगाः सर्वे स्वस्वकार्यविधायिनः।।४०।।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिर्मदोत्कटा।
व्यापिनी वशगा मान्या महाऽऽनन्दैकशेवधिः।।४१।।
महनीया महाऽऽराध्या माया मधुमती मही।
परापराणां सर्वेषां परमा त्वं प्रकीर्तिता।।४२।।
लज्जा पुष्टिः क्षमा कीर्तिः कान्तिकारुण्यविग्रहा।
कमनीया जगद्वन्द्या जाग्रदादिस्वरूपिणी।।४३।।
परमा परमेशानी परानन्दपरायणा।
एकाऽप्येकस्वरूपा च सद्वितीया द्वयात्मिका।।४४।।
त्रयी त्रिवर्गनिलया तुर्या तुर्यपदात्मिक।
पञ्चमी पञ्चभूतेशी षष्ठी षष्ठेश्वरीति च।।४५।।
सप्तमी सप्तवारेशी सप्तसप्त वरप्रदा।
अष्टमी वसुनाथा च नवग्रहमयीश्वरी।।४६।।

नवरागकला रम्या नव संख्या नवेश्वरी।
दशमी दशदिक्पूज्या दशाशाव्यापिनी रमा।।४७।।
एकादशात्मिका चैकादशरुद्रनिषेविता।
एकादशीतिथिप्रीता एकादशगणाधिपा।।४८।।
द्वादशी द्वादशभुजा द्वादशादित्यजन्मभूः।
त्रयोदशात्मिका देवी त्रयोदशगणप्रिया।।४९।।
त्रयोदशाभिधा भिन्ना विश्वेदेवाधिदेवता।
चतुर्दशेन्द्रवरदा चतुर्दशमनुप्रसूः।।५०।।
पञ्चाधिकदशीवेद्या पञ्चाधिकदशी तिथिः।
षोडशी षोडशभुजा षोडशेन्दुकलामयी।।५१।।
षोडशात्मकचन्द्रांशुव्याप्तदिव्यकलेवरा ।
एवं रूपाऽसि दवेशि! निर्गुणे तामसोदये।।५२।।
त्वया गृहीतो भगवान् देवदेवो रमापतिः।
एतौ दुरासदौ दैत्यो विक्रान्तौ मधुकैटभौ।।५३।।
एतयोश्च बधार्थाय देवेशं प्रतिबोधय।।५४।।

सुमेधा मुनिरुवाच

एवं स्तुता भगवती तामसी भगवत्प्रिया।
देवदेवं तदा त्यक्त्वा मोहयामास दानवौ।।५५।।
तदैव भगवान् विष्णुः परमात्मा जगत्पतिः।
प्रबोधमाप देवेशो ददृशे दानवोत्तमौ।।५६।।
तदा तौ दानवौ घोरौ दृष्टा तं मधुसूदनम्।
युद्धाय कृतसङ्कल्पौ जग्मतुः सन्निधिं हरेः।।५७।।
युयुधे च ततस्ताभ्यां भगवान् मधुसूदनः।
पञ्चवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः।।५८।।
तौ तदाऽतिबलोन्मतौ जगन्मायाविमोहितौ।
व्रियतां वर इत्येवमूचतुः परमेश्वरम्।।५९।।
एवं तस्य वचः श्रुत्वा भगवानादिपूरुषः।
वव्रे बध्यावुभौ मेऽद्य भवेतामिति निश्चितम्।।६०।।
तौ तदाऽतिबलौ देवं पुनरेवोचतुर्हरिम्।
आवां जहि न यत्रोर्वी पयसा च परिप्लुता।।६१।।
तथेत्युक्त्वा भगवता गदाशङ्खभृता नृप!।
कृत्वा चक्रेण वै छिन्ने जघने शिरसी तयोः।।६२।।

एवं देवी समुत्पन्ना ब्रह्मणां संस्तुता नृप!।
महाकाली महाराज! सर्वयोगेश्वरेश्वरी।।६३।।
महालक्ष्म्यास्तथोत्पत्तिं निशामय महीपते।।६४।।

।। श्रीमद्देवीभागवते महापुराणे दशस्कन्धे लघुचण्डी पाठे प्रथमचरितं सम्पूर्णम्।।

•

मध्यमचरितम्

महिषासुरवधः

सुमेधामुनिरुवाच

महिषीगर्भसम्भूतो महाबलपराक्रमः।
देवान् सर्वान् पराजित्य महिषोऽभूज्जगत्प्रभुः।।१।।
सर्वेषां लोकपालानामधिकारान् महाऽसुरः।
बलान्निर्जित्य बुभुजे त्रैलोक्यैश्वर्यमद्भुतम्।।२।।
ततपराजिताः सर्वे देवाः स्वर्गपरिच्युताः।
ब्रह्माणं च पुरस्कृत्य ते जग्मुर्लोकमुत्तमम्।।३।।
यत्रोत्तमौ देवदेवौ संस्थितौ शङ्कराच्युतौ।
वृत्तान्तं कथयामासुर्महिषस्य दुरात्मनः।।४।।
देवानां चैव सर्वेषां स्थानानि तरसाऽसुरः।
विनिर्जित्य स्वयं भुंक्ते बलवीर्यमदोद्धतः।।५।।
महिषासुरनामाऽसौ दुष्टदैत्योऽमरेश्वरौ।
बधोपायश्च तस्याशु चिन्त्यतामसुरार्दनौ।।६।।
एवं श्रुत्वा सा भगवान् देवानामार्त्तियुगवचः।
चक्रतु परमं कोपं तदा शङ्करपद्मजौ।।७।।
एवं कोपयुतस्यास्य हरेरास्यान् महीपते!।
तेजः प्रादुरभूद्द दिव्यं सहस्रार्कसमद्युतिः।।८।।
अथानुक्रमतस्तेजः सर्वेषां त्रिदिवौकसाम्।
शरीरादुद्भवं प्राप हर्षयद्द विबुधाधिपान्।।९।।
यदभूच्छम्भुजं तेजो मुखमस्योदपद्यत।
केशा बभूवुर्याम्येन वैष्णवेन च बाहवः।।१०।।
सौम्येन च स्तनौ जातौ माहेन्द्रेण च मध्यमः।
वारुणेन ततो भूप! जङ्घोरु सम्बभूवतुः।।११।।
नितम्बौ तेजसा भूमेः पादौ ब्राह्मेण तेजसा।
पादांगुल्यो भानवेन वासवेन करांगुली।।१२।।

कौबेरेण तथा नासा दन्ताः संजज्ञिरे तदा।
प्राजापत्येनोत्तमेन तेजसा वसुधाधिप!।।१३।।
पावकेन च सञ्जातं लोचनत्रितयं शुभम्।
सान्ध्येन तेजसा जाते भृकुट्यौ तेजसां निधी।।१४।।
कर्णौ वायव्यतौ जातौ तेजसो मनुजाधिप!।
सर्वेषां तेजसा देवी जाता महिषमर्दिनी।।१५।।
शूलं ददौ शिवो विष्णुश्चक्रं शङ्खं च पाशभृत्।
हुताशनो ददौ शक्तिं मारुतश्चापसायकौ।।१६।।
वज्रं महेन्द्रः प्रददौ घण्टां चैरावताद् गजात्।
कालदण्डं यमो ब्रह्मा चाक्षमालाकमण्डलू।।१७।।
दिवाकरो रश्मिमालां रोमकूपेषु सन्ददौ।
कालः खड्गं तथा चर्म निर्मलं वसुधाधिप!।।१८।।
समुद्रो निर्मलं हारमजरे चाम्बरे नृप!।
चूड़ामणिं कुण्डले च कटकानि तथाऽङ्गदे ।।१९।।
अर्द्धचन्द्रं निर्मलं च नूपुराणि तथा ददौ।
ग्रैवेयकं भूषणं च तस्यै देव्यै मुदान्वितः।।२०।।
विश्वकर्मा चोर्मिकाश्च ददौ तस्यै धरापते!।
हिमवान् वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च।।२१।।
पानपात्रं सुरापूर्णं ददौ तस्यै धनाधिपः।
शेषश्च भगवान् देवो नागहारं ददौ विभुः।।२२।।
अन्यैरशेषविबुधैर्मानिता सा जगन्मयी।
तां तुष्टुवुर्महादेवीं देवा महिषपीड़िताः।।२३।।
नाना स्तोत्रैर्महेशानीं जगदुद्भवकारिणीम्।
तेषां निशम्य देवेशी स्तोत्रं विबुधपूजिता।।२४।।
महिषस्य वधार्थाय महानादं चकार ह।
तेन नादेन महिषश्चकितोऽभूद् धरापते!।।२५।।
आससाद जगद्धात्रीं सर्वसैन्यामावृतः।
ततः स युयुधे देव्या महिषाख्यो महाऽसुरः।।२६।।
शस्त्रास्त्रैर्बहुधा क्षिप्तैः पूरयन्नम्बरान्तरम्।
चिक्षुरो ग्रामणीः सेनापतिर्दुर्धुर दुर्मुखौ।।२७।।
वाष्कलस्ताम्रकश्चैव विडालवदनोऽपरः।
एतैश्चान्यैरसंख्यातैः सं संग्रामान्तकसन्निभैः।।२८।।

योधैः परिवृतो वीरो महिषो दानवोत्तमः।
ततः सा कोपताम्राक्षी देवी लोकविमोहिनी।।२९।।
जघान योधान् समरे देवी महिषमाश्रितान्।
ततस्तेषु हतेष्वेव स दैत्यो रोषमूर्छितः।।३०।।
आससाद तदा देवीं तूर्णं मायाविशारदः।
रूपान्तराणि सम्भेजे मायया दानवेश्वरः।।३१।।
तानि तान्यस्य रूपाणि नाशयामास सा तदा।
ततोऽन्ते माहिषं रूपं बिभ्राणममरार्दनम्।।३२।।
पाशेन बद्ध्वा सुदृढं छित्वा खड्गेन तच्छिरः।
पातयामास महिषं देवी देवगणान्तकम्।।३३।।
हाहाकृतं ततः शेषं सैन्यं भग्नं दिशो दश।
तुष्टुवुर्देवदेवेशीं सर्वे देवाः प्रमोदिताः।।३४।।
एवं लक्ष्मी समुत्पन्ना महिषासुरमर्दिनी।
राजन्! शृणु सरस्वत्याः प्रादुर्भावो यथाऽभवत्।।३५।।

।। श्रीमद्देवीभागवते लघुचण्डीपाठे मध्यमचरितं सम्पूर्णम्।।

•

उत्तमचरितम्

शुम्भनिशुम्भवधः

सुमेधामुनिरुवाच

एकदा शुम्भनामाऽसीद् दैत्यो मदबलोत्कटः।
निशुम्भश्चापि तद्भ्राता महाबलपराक्रमः।।१।।
तेन सम्पीड़िता देवाः सर्वे भ्रष्टश्रियो नृप!।
हिमवन्तमथासाद्य देवीं तुष्टुवुरादरात्।।२।।

देवा ऊचुः

जय देवेशि! भक्तानामार्त्तिनाशनकोविदे!।
दानवान्तकरूपे त्वमजराऽमरणेऽनघे।।३।।
देवेशि! भक्तिसुलभे! महाबलपराक्रमेः।
विष्णुर्शङ्करब्रह्मादिस्वरूपेऽनन्तविक्रमे! ।।४।।
सृष्टि स्थितिकरे! नाशकारिके! कान्तिदायिनि!।
महाताण्डवसुप्रीते! मोददायिनि! माधवि!।।५।।

प्रसीद देवदेवेशि! प्रसीद करुणानिधे!।
निशुम्भशुम्भसम्भूतभयापाराम्बुवारिधे! ।
उद्धरास्मान् प्रपन्नार्तिनाशिके! शरणागतान्।।६।।

सुमेधा मुनिरुवाच

एवं संस्तुवतां तेषां त्रिदशानां धरापते!।
प्रसन्ना गिरिजा प्राह ब्रूत स्तवनकारणम्।।७।।
एतस्मिन्नन्तरे तस्याः कोशरूपात् समुत्थिता।
कौशिकी सा जगत्पूज्या देवान् प्रीत्येदमब्रवीत्।।८।।
प्रसन्नाऽहं सुरश्रेष्ठाः स्तवेनोत्तमरूपिणी।
व्रियतां वर इत्युक्ते देवाः संवव्रिरे वरम्।।६।।
शुम्भनामाऽवरो भ्राता निशुम्भस्तस्य विश्रुतः।
त्रैलोक्यमोजसाऽऽक्रान्तं दैत्येन बलशालिना।।१०।।
तद्वधश्चिन्त्यतां देवि! दुरात्मा दानवेश्वरः।
बाधते सततं देवि! तिरस्कृत्य निजौजसा।।११।।

श्रीदेव्युवाच

देवशत्रुं पातयिष्ये निशुम्भं शुम्भमेव च।
स्वस्थास्तिष्ठन्तु भद्रं वः कण्टकं नाशयामि वः।।१२।।

सुमेधा मुनिरुवाच

इत्युक्त्वा देवदेवेशी देवान् सेन्द्रान् दयामयी।
जगामादर्शनं सद्यो मिषतां त्रिदिवौकसाम्।।१३।।
देवाः समागता हृष्टाः सुवर्णाद्रिगुहां शुभाम्।
चण्डमुण्डौ पश्यतः स्म भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः।।१४।।
दृष्ट्वा तां चारुसर्वाङ्गी देवीं लोकविमोहिनीम्।
कथयामास तु राज्ञे भृत्यौ तौ चण्डमुण्डकौ।।१५।।
देव! सर्वासुरश्रेष्ठ! रत्नभोगार्ह! मानद!।
अपूर्वा कामिनी दृष्टा चावाभ्यां रिपुमर्दन!।।१६।।
तस्याः संम्भोगयोग्य त्वमस्त्येव तव साम्प्रतम्।
तां समानय चार्वङ्गीं भुंक्ष्व सौख्यसमन्वितः।।१७।।
तादृशी नासुरी नारी न गन्धर्वी न दानवी।
न मानवी नापि देवी यादृशी सा मनोहरा।।१८।।
एवं भृत्यवचः श्रुत्वा शुम्भः परबलार्दनः।
दूतं सम्प्रेषयामास सुग्रीवं नाम दानवम्।।१६।।

स दूतस्त्वरितं गत्वा देव्याः . सविधमादरात्।
वृत्तान्तं कथयामास देव्यै शुम्भस्य यद्वचः।।२०।।

दूत उवाच

देवि! शुम्भासुरो नाम त्रैलोक्यविजयी प्रभुः।
सर्वेषां रत्नवस्तूनां भोक्ता मान्यो दिवौकसाम्।।२१।।
तदुक्तं शृणु मे देवि! रत्नभोक्ताऽहमव्ययः।
त्वं चापि रत्नभूताऽसि भज मां चारुलोचने।।२२।।
सर्वेष यानि रत्नानि देवासुरनरेषु च।
तानि मय्येव सुभगे! भज मां कामजै रसैः।।२३।।

श्रीदेव्युवाच

सत्यं वदसि हे दूत! दैत्यराजप्रियंकरम्।
प्रतिज्ञा या मया पूर्वं कृता साऽप्यनृता कथम्।।२४।।
भवेत् तां श्रृणु मे दूत! या प्रतिज्ञा यथाकृता।।२५।।
यो मे दर्पं बिधुनुते सो मे बलमपोहति।
यो मे प्रतिबलो भूयात् स एव मम भोगभाक्।।२६।।
तत एनां प्रतिज्ञां मे सत्यां कृत्वाऽसुरेश्वरः।
गृह्णातु पाणिं तरसा तस्याशक्यं किमत्र हि।।२७।।
तस्माद् गच्छा महादूत! स्वामिनं ब्रूहि चादृतः।
प्रतिज्ञां चापि मे सत्यां विधास्यति बलाधिकः।।२८।।

सुमेधामुनिरुवाच

एवं वाक्यं महादेव्याः समाकर्ण्य स दानवः।
कथयामास शुम्भाय देव्या वृत्तान्तमादितः।।२६।।
तदाऽप्रियं दूतवाक्यं शुम्भः श्रुत्वा महाबलः।
कोपमाहारयामास महान्तं दनुजाधिपः।।३०।।
ततो धूम्राक्षनामानं दैत्यं दैत्यपतिः प्रभुः।
आदिदेश शृणु वचो धूम्राक्ष! मम चादृतः।।३१।।
तां दुष्टां केशपाशेषु धृत्वाऽप्यानीयतां मम।
समीपमविलम्बेन शीघ्रं गच्छस्व मे पुरः।।३२।।
इत्यादेशं समासाद्य दैत्येशो धूम्रलोचनः।
षष्ठ्याऽसुराणां सहितः सहस्राणां महाबलः।।३३।।
तुहिनाचलमासाद्य देव्याः सविधमेव सः।
उच्चैर्देवीं जगादाशु भत दैत्यपतिः शुभे!।।३४।।

शुम्भं नाम महावीर्यं सर्वभोगानवप्नुहि।
नोचेत् केशान् गृहीत्वा त्वां नेष्ये दैत्यपतिं प्रति।।३५।।
इत्युक्ता सा ततो देवी दैत्येन त्रिदशारिणा।
उवाच दैत्य! यद् ब्रूषे तत् सत्यं ते महाबल।।३६।।
राजा शुम्भासुरस्त्वं च किं करिष्यसि तद् वद्।
इत्युक्तो दैत्यपो धावत् तूर्णं शस्त्रसमन्वितः।।३७।।
भस्मसात् तं चकाराशु हुंकारेण महेश्वरी।।३८।।
ततः सैन्यं वाहनेन देव्या भग्नं महीपते!।
दिशो दशाभजच्छीघ्रं हाहाभूतमचेतनम्।।३९।।
तद् वृत्तान्तं समाश्रुत्य स शुम्भो दैत्यराड् विभुः।
चुकोप च महाकोपाद् भ्रुकुटीकुटिलाननः।।४०।।
ते च गत्वा त्रयो दैत्या विक्रान्ता बहुविक्रमाः।
देवीं ग्रहीतुमारब्धयत्नास्ते ह्यभवन् बलात्।।४२।।
तानपतत एवासौ जगद्धात्री मदोत्कटा।
शूलं गृहीत्वा वेगेन पातयामास भूतले।।४३।।
स सैन्यान् निहिताञ्छ्रुत्वा दैत्यांस्त्रीन् दानवेश्वरौ।
शुम्भश्च निशुम्भश्च द्रुतं समाजग्तुरोजसा।।४४।।
निशुम्भश्चैव शुम्भश्च कृत्वा युद्धं महोत्कटम्।
देव्याश्च वशगौ जातौ निहतौ च तयाऽसुरौ।।४५।।
इति दैत्यं वरं शुम्भं घातयित्वा जगन्मयी।
विबुधैः संस्तुता तद्वत् साक्षाद् वागीश्वरी परा।।४६।।
एवं ते वर्णितो राजन्! प्रादुर्भावोऽतिरम्यकः।
काल्याश्चैव महालक्ष्म्याः सरस्वत्या क्रमेण च।।४७।।
पराऽपरेश्वरी देवी जगत्सर्गं करोति च।
पालनं चैव संहारं सैव देवी दधाति हि।।४८।।
तां समाश्रय देवेशीं जगन्मोहनिवारिणीम्।
महामायां पूज्यतमां सा ते कार्य विधास्यति।।४९।।
इति राजा वचः श्रुत्वा मुनेः परमशोभनम्।
देवीं जगाम शरणं सर्वकामफलप्रदाम्।।५०।।
निराहारो यतात्मा च तन्मनाश्च समाहितः।
देवीमूर्तिं मृन्मयीं च पूजयामास भक्तितः।।५१।।
पूजानान्ते बलिं तस्यै निजगात्रासृजं ददत्।।५२।।

तदा प्रसन्न देवेशी जगद्योनिः कृपावती।
प्रादुर्बभूव पुरतो वरं ब्रूहीति भाषिणी।।५३।।
स राजा निजमोहस्य नाशनं ज्ञानमुत्तमम्।
राजं निष्कण्टकं चैव याचति स्म महेश्वरीम्।।५४।।

श्रीदेव्युवाच

राजन्! निष्कण्टकं राज्यं ज्ञान वै मोहनाशनम्।
भविष्यति मया दत्तमस्मिन्नेव भवे तव।।५५।।
अन्यच्च शृणु भूपाल! जन्मान्तरविचेष्टितम्।
भानोर्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता भवान्।।५६।।
तत्र मन्वन्तरस्यापि पतित्वं बहुविक्रमम्।
सन्ततिं बहुलां चापि प्राप्स्यते मद्वराद्दृ भवान्।।५७।।

सुमेधा मुनिरुवाच

एवं दत्वा वरं देवी जगामादर्शनं तदा।
सोऽपि देव्याः प्रसादेन, जातो मन्वन्तराधिपः।।५८।।
एवं ते वर्णितं साधो! सावर्णेर्जन्म कर्म च।
एतत् पठंस्तथा शृण्वन् देव्यनुग्रहमाप्नुपात्।।५९।।

।। श्री मद्देवीभागवते महापुराणे दशमस्कन्धे लघुचण्डीपाठे उत्तम चरितं सम्पूर्णम्।।

●

सिद्धिचण्डी महाविद्या सहस्राक्षर मन्त्रः

वन्दे परागमविद्यां सिद्धिचण्डीं सङ्गिताम्।
महासप्तशतीमन्त्रस्वरूपां सर्वसिद्धिदाम्।।१।।

विनियोगः-ॐ अस्य सर्वविज्ञान महाराज्ञीसप्तशती रहस्यातिरहस्यमयीपराशक्ति श्रीमदाद्याभगवतीसिद्धिचण्डिकासहस्राक्षरी महाविद्यामन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेयसुमेधा ऋषी गायत्र्यादि नानाविधानि छन्दांसि नवकोटिशक्तियुक्ताश्रीमदाद्याभगवतीसिद्धिचण्डी देवता श्रीमदाद्याभगवती सिद्धिचण्डी प्रसादादखिलेष्टार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास-श्रीमार्कण्डेय सुमेधाऋषिभ्यां नमः शिरसि। गायत्र्यादिनानाविध छन्दोभ्यो नमः मुखे। नवकोटिशक्तियुक्ताश्रीमदाद्याभगवतसिद्धिचण्डीदेवतायै नमः हृदि। श्रीमदाद्याभगवतीसिद्धिचण्डीप्रसादादखिलेष्टार्थे जपे विनियोगाय नमः सवङ्गि।

महाविद्यान्यास-ॐ श्रीं नमः सहस्रारे। ॐ हें नमः भाले। क्लीं नमः नेत्रयुगले ॐ ऐं नमः कर्णद्वये। ॐ सौं नमः नासापुटद्वये। ॐ नमो मुखे। ह्रीं ॐ नमः कण्ठे। ॐ श्रीं नमो हृदये। ॐ ऐं नमो हस्तयुगे। ॐ क्लें नमः उदरे। ॐ सौं नमः कटयां।

ॐ ऐं नमो गुह्ये। ॐ क्लीं नमो जङ्घायुगे। ॐ ह्रीं नमो जानुद्वये। ॐ श्रीं नमः पादादिसर्वाङ्गे।

ॐ या चण्डी मधुकैटभप्रमथनी या माहिषोन्मूलिनी।
या धूम्रेक्षणचण्डमुण्डदलनी या रक्तबीजाशनी।।२।।
शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्यमथनी या सिद्धलक्ष्मी परा।
सा देवी नवकोटिमूर्तिसहिता मां पातु विश्वेश्वरी ।।३।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्यौं श्रीं ह्रीं क्लौं ऐं सौं ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौं ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं जय जय महालक्ष्मि जगदाद्ये बीजसुरासुरत्रिभुवननिदाने दयांकुरे सर्वतेजोरूपिणि महामहामहिमे महामहारूपिणि महामहामाये महामायास्वरूपिणि विरञ्चिसंस्तुते! विधिवरदे सच्चिदानन्दे विष्णुदेहव्रते महामोहिनि मधुकैटभजिह्वासिनि नित्यवरदानतपरे! महास्वाध्यायवासिनि महामहातेज्यधारिणि! सर्वाधारे सर्वकारणकरणे अचिन्त्यरूपे! इन्द्रादिनिखिलनिर्जरसेविते! सामगानं गायन्ति पूर्णोदयकारिणि! विजये जयन्ति अपराजिते सर्वसुन्वरि रक्तांशुके सूर्यकोटिशशांकेन्द्रकोटिसुशीतले अग्निकोटिहदनशीले यमकोटिक्रूरे वायुकोटिवहनसुशीतले ॐ कारनादबिन्दुरूपिणि निगमागममार्गदायिनि महिषासुरनिर्दलनि धूम्रलोचनवधपरायणे चण्डमुण्डादिशिरच्छेदिनि रक्तबीजादिरुधिरशोषणि रक्तपानप्रिये महायोगिनि भूतवैताल-भैरवादितुष्टिविधायनि शुम्भनिशुम्भशिरच्छेदिनि! निखिलासुरबलखादिनि त्रिदशराज्यदायिनि सर्वस्त्रीरत्नरूपिणि दिव्यदेहनिर्गुणे सगुणे सदसत्रूपधारिणि सुरवर दे भक्तत्राणतत्परे! वरवरदे सहस्राक्षरे अयुताक्षरे सप्तकोटिचामुण्डा रूपिणि नवकोटिकात्यायनीरूपे अनेकल-क्षालक्षस्वरूपे इन्द्राणि ब्रह्माणी रुद्राणि ईशानि भ्रामरि भीमे नारसिंहे! त्रयत्रिंशत्कोटिदैवते अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायिके चतुरशीतिमुनिजनसंस्तुते! सप्तकोटिमन्त्रस्वरूपे महाकाले रात्रि-प्रकाशे कलाकाष्ठादिरूपिणि चतुर्दशभुवनभावा विकारिणि गरुड़गामिनि! कोंकार हौंकार ह्रींकार श्रींकार दलेकार जूँकार सौंकार ऐंकार क्लेंकार ह्रींकार ह्रौंकार हौंकार नानाबीजकूटनिर्मितशरीरे नानाबीजमन्त्रागविराजते!।

सकलसुन्दरीगणसेवते! करुणारसकल्लोलिनि कल्पवृक्षाधिष्ठिते चिन्तामणिद्वीपेऽवस्थिते मणिमन्दिरनिवासे! चापिनि खड्गिनि चक्रिणि गदिनि शङ्खिनि पद्मिनि निखिलभैरवाधि-पतिसमस्तयोगिनीपरिवृते! कालि कङ्कालि तोरतोतले सुतारे ज्वालामुखि छिन्नमस्तके भुवनेश्वरि! त्रिपुरे लोक जननि विष्णुवक्षस्थलालङ्कारिणि! अजिते अमिते अमराधिपे अनूपसरिते गर्भवासादि दुःखापहारिणि मुक्तिक्षेमाधिषयनि शिवे शान्तिकुमारि देवि! सूक्तदशशताक्षरे चण्डि चामुण्डे महाकालि महालक्ष्मि महासरस्वति त्रयीविग्रहे! प्रसीदप्रसीद सर्वमनोरथान् पूरय सर्वारिष्टविघ्नं छेदयछेदय सर्वग्रहपीड़ाज्वरोग्रभयं विध्वंसयविध्वंसय सर्वत्रिभुवन जातं वशयवशय मोक्षमार्गं दर्शय दर्शय ज्ञानमार्गं प्रकाशयप्रकाशय अज्ञानतमो नाशय नाशय धनधान्यादि कुरुकुरु सर्वकल्याणानि कल्पयकल्पय मां रक्षरक्ष सर्वापद्भ्यो निस्तारय निस्तारय मम वज्रशरीरं साधयसाधय ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमोऽस्तु ते स्वाहा।।

१. ॐ ऐं ह्रीं क्ली नमो देव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।४।।
२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वमङ्गलमाङ्गल्यै शिवे सर्वार्थसाधिके!।
शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।५।।
३. ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि! दुर्गे देवि! नमोऽस्तुते।।६।।
सिद्धिचण्डीमहामन्त्रं यः पठेत् प्रयतो नरः।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत्।।७।।
संग्रामेषु जयेत् शत्रुन् मातङ्ग इव केसरी।
वशयेत् सदा निखिलान् विशेषेण महीपतीन्।।८।।
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं सर्वैश्वर्यपुरःसरम्।
तस्य नश्यन्ति विघ्नानि ग्रहपीड़ाश्च वारणम्।।९।।
पराभिचारशमनं तीव्रदारिद्र्यनाशनं।
सर्वकल्याणनिलयं देव्याः सन्तोषः कारकम्।।१०।।
सहस्रावृत्तितस्तु देवि! मनोरथसमृद्धिदम्।
द्विसहस्रवृत्तितस्तु सर्वसङ्कटनाशनम्।।११।।
त्रिसहस्रावृत्तितस्तु वशयेद् राजयोषितम्।।१२।।
अयुतं प्रपठेद यस्तु सर्वत्र चैवातन्द्रितः।
स पश्येच्चण्डिकां साक्षात् वरदानकृतोद्यमाम्।।१३।।
इदं रहस्यं परमं गोपनीयं प्रयत्नतः।
वाच्यं न कस्यचित देवि! विधानमस्थ सुन्दरि!।।१४।।

।। श्रीसिद्धिडामरे शिवदेवी संवादे सहस्राक्षरं सिद्धिचण्डीमहाविद्योत्तमाम् सम्पूर्णम्।।

श्रीचण्डिकाहृदय स्तोत्र (मन्त्रात्मक)

विनियोगः-ॐ अस्य श्रीचण्डीकाहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः श्रीचण्डिका देवता, ह्रां बीजं ह्रीं शक्तिः ह्रूं कीलकं श्रीचण्डिकाप्रीतये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः-श्रीमार्कण्डेय ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। श्रीचण्डिकादेवतायै नमः हृदि। ह्रां वीजाय नमः लिङ्गे। ह्रीं शक्तये नमः नाभौ। ह्रूं कीलकाय नमः पादयो। श्रीचण्डिकाप्रीतये जपे विनियोगाय नमः सवङ्गि।

षडङ्गन्यासः	करन्यासः	अङ्गन्यासः
ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्रीं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा

ह्रूं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ह्रैं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ह्रैं	कनिष्ठाभ्यां वौषट्	नेत्रत्रायाय वौषट्
ह्रः	करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानम्-

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।

ऐं ह्रीं क्लीं ह्रां ह्रीं ह्रूं जय चामुण्डे चण्डिके त्रिदशमणिमुकुटकोटीरसङ्घट्टित-चरणारविन्दे गायत्रिसावित्रि सरस्वति महाऽहिकृताभरणे भैरवरुपधारिणि प्रगटितदंष्टोग्रवदने घोरे घोराननने ज्वलज्वल ज्वालासहस्रपरिवृते महाऽट्टहासबधिरीकृतदिगन्तरे सर्वायुधपरिपूर्णे कपालहस्ते गजाजिनोत्तरीय भूतवेतालवृन्दतपरिवृते प्रकम्पितचराचरे मधु कैटभमहिषासुर-धूम्रलोचनचण्डमुण्डरक्तबीजशुम्भनिशुम्भादिदैत्यनिष्कण्टके कालरात्रि महामाये शिवे नित्ये इन्द्राग्नियमनिर्ऋतिवरुणवायुसोमेशानप्रधानशक्तिभूते ब्रह्मविष्णुशिवस्तुते त्रिभुवनधराधारे वामे ज्येष्ठे वरदे रौद्रि अम्बिके ब्राह्मि माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि शङ्खिनि वाराहीन्द्राणि चामुण्डे शिवदूति महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपे नादमध्यस्थिते महोग्रविषोरगफणा-फणिघटितमुकुटकटकादिरत्नमहाज्वालामयपादबाहुकण्ठोत्तमाङ्गे, मालाऽऽकुले महामहिषोपरि-गन्धर्वविद्याधराराधिते नवरत्ननिधिकोशे तत्त्वस्वरूपे वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मिके शब्द-स्पर्शरूपरसगन्धादिस्वरूपे त्वक्चक्षुश्रोतृजिह्वाघ्राणमहाबुद्धिस्थिते ओंकार ऐंकार ह्रींकार-क्लींकारहस्ते आं क्रों आग्नेयनयनपात्रे प्रवेशय प्रवेशय द्रॉं शोषय शोषय द्रीं सुकुमारय सुकुमारय श्रीसर्वं प्रवेशय प्रवेशय त्रैलोक्यवरवर्णिनि! समस्तचित्तं वशी कुरु कुरु मम शत्रून् शीघ्रं मारय मारय जाग्रतस्वप्नसुषुप्त्यवस्थास्वस्मान् राजचौराग्नि जलवात-विषभूतशत्रुमृत्युज्वरादिस्फोटकादिनानारोगेभ्यो नानापवादेभ्यः परकर्ममन्त्रतन्त्रयन्त्रौषधिशल्य-शून्यक्षुद्रेभ्यः सम्यङ् मां रक्ष रक्ष। ओं ऐं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रूं स्फ्रैं स्फ्रौं मम सर्वकार्यकर्माणि साधयसाध्य हुँ फट् स्वाहा। राजद्वारे श्मशाने वा विवादे शत्रुसङ्कटे। भूतानिचोरमध्यस्थे मम कार्याणि साधय स्वाहा।।

चण्डिकाहृदयं गुह्यं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
सर्वकामप्रदं पुंसां भुक्तिंमुक्तिं प्रयच्छति।।

कष्टशमनार्थे श्रीवनदुर्गामन्त्रविधानम्

सङ्कल्प-देशकालौ स्मृत्वा अमुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहं अमुककार्यसिद्धियर्थे मनोऽभिलषित कार्य सिद्ध्यर्थे वा श्रीवनदुर्गामन्त्रस्य एकादशशतसंख्यकजपं करिष्ये।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीवनदुर्गादेवतामन्त्रस्य श्री आरण्यक ऋषिः अत्यनुष्टुप् छन्दः सर्वदुर्गतिमोचिनीश्रीवनदुर्गा देवता, दुं बीजं स्वाहा शक्तिः सङ्कल्पोद्दिष्टकार्य सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः-श्री आरण्यकऋषये नमः शिरसि। अत्यनुष्टुपूछन्दसे नमः मुखे, सर्वदुर्गतिमोचिनीश्रीवनदुर्गा देवतायै नमः हृदि। दुं वीजाय नमो गुह्ये, स्वाहाशक्तये नमः पादयोः सङ्कल्पोद्दिष्टकार्यसिद्धिर्यर्थे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः-उत्तिष्ठ पुरुषि अंगुष्ठाभ्यां नमः। किं स्वपिषि तर्जनीभ्यां नमः। भयं मे समुपस्थितं मध्यमाभ्यां नमः। यदि शक्यमशक्यं वा अनामिकाभ्यां नमः। तन्मे भगवति कनिष्ठिकाभ्यां नमः। शमय स्वाहा करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यासः-उत्तिष्ठ पुरुषि हृदयाय नमः। किं स्वपिषि शिरसे स्वहा। भयं मे समुपस्थितं शिखायै वषट्। यदि शक्यमशक्यं वां नेत्रत्रयाय वषट्।
तन्मे भगवति कवचाय हुं। शमय स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानम्-

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां सौदामिनीसन्निभाम्।
शङ्ख चक्रवराभयानि दधतीमिन्द्रोः कलां विभ्रतीतम्।।
ग्रैवेयाङ्गदहारकुण्डलधरामाखण्डलाद्यैः स्तुताम्।
ध्यायेद् विन्ध्यनिवासिनीं शशिमुखीं पार्श्वस्थ पञ्चाननाम्।।

मन्त्रः-ॐ उत्तिष्ठ पुरुषि किं स्वपिषि भयं मे समुपस्थितम् यदि शक्य मशक्यं वा तन्मे भगवति! शमय स्वाहा।

विधानः-किसी भी कार्य की सिद्धि के लिए उपरोक्त मन्त्र का २१ दिन तक ११ माला जप करें। इतने पर भी कार्य न हो तो इसे ४१ दिन तक जप करें।

श्रीपरदेवीसूक्त विधानम्

विनियोगः-ॐ अस्य श्रीपरदेवीसूक्तमालामन्त्रस्य मार्कण्डेयमेधाऋषी गायत्र्यादिनानाविधानि छन्दासि, त्रिशक्तिरूपिणी चण्डिका देवता ऐं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं मम चिन्तितसकलमनोरथसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः-मार्कण्डेयमेधाऋषिभ्यां नमः शिरसि। गायत्र्यादिनानाविधछन्दोभ्यो नमः मुखे, त्रिशक्तिरूपिणीचण्डिकादेवतायै नमः हृदये। ऐं वीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः नाभौ (सवाङ्गे वा)। मम चिन्तितसकलमनोरथसिद्ध्यर्थे विनियोगाय नमः।

करन्यासः-ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वहा। ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ ऐं अनामिकाभ्यां हुं। ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ क्लीं

करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

अंगन्यास-ॐ ऐं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ क्लीं शिखायै वषट् । ॐ ऐं कवचाय हुँ। ॐ ह्री नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ क्ली अस्त्राय फट् ।

दिग्बन्धन-ऐं ह्रीं क्लीं से छोटिका मुद्रा के द्वारा

ध्यानम्- **ॐ योऽग्न्याद्यामर कार्यनिर्गतमहत्तेजः समुत्पद्यते।**
भास्वत्पूर्णशशाङ्कचारुवदना नीलोल्लसद्भ्रूलताम ।।
गौरीतुङ्गकुचद्वया तदुपरि स्फूर्जत्प्रभामण्डलम्।
बन्धूकारुणकायकान्तिरतिभिः श्रीचण्डिकामाश्रये ।।

मानसोपचारपूजनः-श्रीत्रिशक्तिरूपिणीचण्डिकादेवतायै ॐ लं पृथ्वी तत्त्वात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशतत्त्वात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। ॐ यं वायुतत्त्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नितत्त्वात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। ॐ वं जलतत्त्वात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। ॐ सं सर्वतत्त्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। जय जय महालक्ष्मि जगदानन्द बीजे सुरासुरत्रिभुवन निदाने दयांकुरे सर्वदेवतेजोरूपिणि महामहामहिमे महामहामयस्वरूपिणि विरञ्चीशतः सुरवरदे चिदानन्दे विष्णुदेहावृते महाऽमृत मोहिनि।।१।।

मधुकैटभविध्वंसिनि सत्वरदानेतत्परे महासुधाब्धिवासिनि महामहितेजाऽवधारिणि सर्वाधारे सर्वकार्यकारणेऽचिन्त्यरूपे इन्द्रादिनिखिलनिर्जरसेविते सामगायनगायिनि पूर्णोदयाकारिणि विजये जयन्त्यपराजिते रक्तांशुके सूर्यकोटिसङ्काशे चन्द्रकोटिसुशीतले।।२।।

अग्निकोटिदहनशीले यमकोटिक्रूरे ॐ कारनादबिन्दुरूपे निगमागममार्गदायिनि महिषासुरनिर्दलिनि धूम्रलोचनवधपरायणे चण्डमुण्डादिशिरछेदिनि रक्तबीजादिरुधिरशोषिणि रक्तपानप्रिये महायोगिनि भूतवेतालभैरवादितनु-विधायिनि।।३।।

निःशुम्भशुम्भशिरछेदिनि अखिलसुखदायिनि त्रिदशराज्यदायिनि सर्वस्त्रीरत्नरूपिणि दिवे देहे निर्गुणे सगुणे सदसद्रूपधारिणि सुरवरदे सहस्रारे अयुताक्षरे सप्तकोटि-चामुण्डारूपिणि नवकोटिकात्यायिनि अनेकरूपे लक्षालक्षस्वरूपे।।४।।

इन्द्राणि ब्रह्माणि ईशानि भीमे भ्रामरि नारसिंहि त्रयस्त्रिंशत्कोटिदेवते अनन्तकोटि-ब्रह्माण्डनायिके चतुर्दशशतलक्षमुनिजनसंस्तुते सप्तकोटिमन्त्ररूपे महाकालरात्रिप्रकाशे कलाकाष्ठादिरूपिणि चतुर्दशभुवनाभयकारिणि गरुड़गर्भिणि।।५।।

कंक्रौ ह्रौंकाराश्रींकारा क्षौंकारजूंकारसौंकारऐंकारह्वं ह्रींकारह्रैंकारनानावीज-कूटनिर्मितशरीरे सकलसुन्दरिगणसेवितचरणारविन्दे त्रिपुरसुन्दरि कामेशदयिते करुणा-रसकल्लोलिनि कल्पवृक्षवनान्तस्थे चिन्तामणिमन्दिरनिवासे चापिनि खड्गिनि।।६।।

चक्रिणि गदिनि पद्मिनि नीलभैरवाधिते समस्तयोगिनीचक्रपरिवृते कालि कङ्कालि

तारे तुतारे सुतारे ज्वालामुखि छिन्नमस्तके भुवनेश्वरि त्रिपुरे लोकजननि विष्णुवक्षःस्थलान्तःकारिणि अमिते अमराधिपे अनुपम चरिते गर्भभयादिदुः खापहारिणि।।७।।

मुक्तिक्षेत्राधिष्ठायिनि शिवे शान्ते कुमारिके देवीसूक्तदशशताक्षरे चण्डिचामुण्डे महाकालि महालक्ष्मि महासरस्वति त्रयीविग्रहे प्रसीद प्रसीद सर्वमनोरथान् पूरय पूरय सर्वारिष्ट विघ्नान् छेदय छेदय सर्वग्रहपीड़ाज्वरोग्रभयं विध्वंसय विध्वंसय।।८।।

सर्वत्रिभुवनजीवजातं वशयवशय मोक्षमार्गं प्रदर्शय प्रदर्शय अज्ञानमार्गं प्रणाशय प्रणाशय अज्ञानतमं निरशय निरशय धनधान्यादिवृद्धिं कुरु कुरु सर्वकल्याणिनि कल्पय कल्पय मां रक्ष रक्ष सर्वापद्भ्यो निस्तारय निस्तारय मम वज्र शरीरं साधय साधय।।९।।

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा।।१०।।

परदेव्या इदं सूक्तं यः पठेत् प्रयततो नरः।
सर्वसिद्धिमाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत्।।

वशीकारणार्थे श्रीदुर्गा आसुरीकल्प

विनियोगः-ॐ आसुरीमन्त्रस्य, अङ्गिरा ऋषिः विराट् छन्दः, श्रीदुर्गा आसुरी देवता ॐ वीजं स्वाहा शक्तिः वशीकरणे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः-ॐ अङ्गिराऋषये नमः शिरसिः, ॐ विराट्छन्दसे नमः मुखे, ॐ श्री दुर्गा आसुरीदेवतायै नमो हृदि, ॐ बीजाय नमो गुह्ये, स्वाहाशक्तये नमः पादयोः, वशीकरणे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः-ॐ कटुके कटुकपत्रे अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ सुभगे आसुरि तर्जनीभ्यां नमः। ॐ रक्ते रक्तवाससे मध्यमाभ्यां नमः। ॐ अथर्वणस्य दुहिते अनामिकाभ्यां नमः। ॐ अघोरे अघोरकर्मकारिके कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ अमुकस्य गतिं दह दह उपविष्टस्य गुदं दह दह सुप्तस्य मनो दह दह प्रबुद्धस्य हृदयं दह दह हन हन पच पच तावत् दह तावत् पच यावन्मे वशमायान्ति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यासः-ॐ कटुके कटुकपत्रे हृदयाय नमः। ॐ सुभगे आसुरि शिरसे स्वाहा। ॐ रक्ते रक्तवाससे शिखायै वषट्। ॐ अथर्वणस्य दुहिते कवचाय हुम्। ॐ अघोरे अघोरकर्मकारिके नेत्रत्रयाय वौषट। ॐ अमुकस्य गतिं दह दहं उपविष्टस्य गुदं दहं दह सुप्तस्य मनो दह दह प्रबुद्धस्य हृदयं दह दह हन हन पच पच तावत् दह तावत पच यावन्मे वशमायान्ति अस्त्राय फट् सर्वाङ्गे।

ध्यानम्-

शतरचन्द्रकान्तिं वराभीतिशूलं शृणिं हस्तपद्मैर्दधानाम्बुजस्थाम्।
विभूषाम्बराढ्यां हि यज्ञोपवीति मुदाऽथर्वपुत्रि! करोत्यासुरी नः।।

मन्त्रः-ॐ कटुके कटुकपत्रे सुभगे आसुरि रक्तवाससे अथर्वणस्य दुहिते अघोरे

अघोरकर्मकारिके सर्वदुष्टस्य गति दह दह उपविष्टस्य गुदं दह दह सुप्तस्य मनो दह दह प्रबुद्धस्य हृदयं दह दह हन हन पच पच तावत् दह तावत् पच यावन्मे वशमायान्ति हुं फट् स्वाहा।।

विधानम्-नित्य ११२ जप। पुरश्चरण २०००। घृत तथा राई से दशांश होम उसका दशांश शर्करोदक द्वारा तर्पण। उसका दशांश मार्जन। उसका दशांश कुमारी भोजन।

श्रीइन्द्राक्षी दुर्गादण्डक

विनियोगः-ॐ अस्य श्रीइन्द्राक्षीस्तोत्रमहामन्त्रस्य श्रीशची पुरन्दर ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीइन्द्राक्षी दुर्गा देवता महालक्ष्मीः बीजं भुवनेश्वरी शक्तिः भवानी कीलकं मम श्रीइन्द्राक्षीप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः-श्रीशचीपुरन्दरऋषये नमः शिरसिः, अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे, श्रीइन्द्राक्षीदुर्गादेवतायै नमः हृदि, महालक्ष्मीवीजाय नमः लिङ्गे, भुवनेश्वरे शक्त्यै नमः नाभौ, भवानीकीलकाय नमः पादयोः, मम श्री इन्द्राक्षी दुर्गाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

करन्यासः-इन्द्राक्ष्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः। महालक्ष्म्यै तर्जनीभ्यां नमः। माहेश्वर्यै मध्यमाभ्यां नमः। अम्बुजाक्ष्यै अनामिकाभ्यां नमः। कात्यायन्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः। कौमार्यै करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यासः-इन्द्राक्ष्यै हृदयाय नमः। महालक्ष्म्यै शिरसे स्वाहा। माहेश्वर्यै शिखायै वषट्। अम्बुजाक्ष्यै कवचाय हुं। कात्यायन्यै नेत्र त्रयाय वौषट्। कौमार्यै अस्त्र फट्।

दिग्बन्धनम्-ॐ भूर्भुवः स्वः से दिग्बन्धन कर ध्यान करे।

ध्यानम्- **नेत्राणां दशभिः शतैः परिवृतामत्युग्रचर्माम्बराम।**
हेमाभां महतीं विलिम्बतशिखामामुक्तकेशान्विताम्।।
घण्टामण्डितपादपद्मयुगलां नागेन्द्र कुम्भस्तनीम्।
इन्द्राक्षीं परचिन्तयामि मनसा कल्पोक्तसिद्धिप्रदाम्।।१।।
इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीवस्त्रद्वयान्विताम्।
वामहस्ते वज्रधरां दक्षिणेन वरप्रदाम्।
इन्द्रादिभिः सुरैर्वन्द्यां वन्दे शङ्करवल्लभाम्।
एवं ध्यात्वा महादेवीं पठामि सर्वसिद्धये।।२।।
इन्द्राक्षी पूर्वतः पातु पात्वाग्नेय्यां तथेश्वरी।
कौमारी दक्षिणे पातु नैर्ऋत्यां पातु पार्वती।।३।।
वाराही पश्चिमे पातु वायव्यां नारसिंह्यपि।
उदीच्यां कालरात्रिर्मां ऐशान्या सर्वशक्तयः।।४।।

भैरव्यूर्ध्वं सदा पातु पात्वधरे च वैष्णवी।
एवं दशदिशो रक्षेत् सर्वाङ्ग भुवनेश्वरी।।५।।

दण्डकः-ॐ नमो भगवति इन्द्राक्षि महालक्ष्मि सर्वजनवशङ्करि सर्वदुष्टग्रह स्तम्भिनि! स्वाहा। ॐ नमो भगवति पिङ्गलभैरवि त्रैलोक्यलक्ष्मिः त्रैलोक्यमोहिनि इन्द्राक्षि मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवति भद्रकालि महादेवि, कृष्णवर्णे तुङ्गस्तने शूर्पहस्ते कपाटवक्षः स्थले कपालमालाधरे परशुधरे चापधरे विकृतरूपधरे विकृतमहाकृष्णसर्पयज्ञोपवीतिनि, भस्मोद्धूलितसर्वगात्रि इन्द्राक्षि! मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवति प्राणेश्वरि प्रेतासनि सिंहवाहने महिषासुरमर्दिनि! उष्णज्वर-पित्तज्वर-वातज्वर-श्लेष्मज्वर-कफज्वर-आलापज्वर-सन्निपातज्वर-माहेन्द्रज्वर- कृत्यादिज्वर-एकाह्निकज्वर-द्व्याह्निकज्वर-त्र्याह्निकज्वर-चातुरह्निकज्वर-पाञ्चाह्निकज्वर-पक्षज्वर-मासज्वर-षाण्मासज्वर-सम्वत्सरज्वर-सर्वाङ्गज्वर नाशय नाशय हर हर हन हन दह दह पच पच ताडय ताडय आकर्षय आकर्षय विद्वेषय विद्वेषय स्तम्भय स्तम्भय मोहय मोहय उच्चाटय उच्चाटय हुं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं ॐ नमों भगवती प्राणेश्वरि प्रेतासने लम्बोष्ठि कम्बुकण्ठि कालकालि कामरूपिणि परमन्त्रपरयन्त्रपरतन्त्रप्रभेदिनि प्रतिभटविध्वंसिनि परबलंतुरगविमर्दिनि शत्रुकरच्छेदिनि शत्रुमांसभक्षिणि सकलदुष्टज्वरनिवारिणि भूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसयक्षयमदूत-शाकिनीडाकिनीकामिनि स्तम्भिनीमोहिनीवशङ्करि कुक्षिरोगशिरोरोगनेत्ररोगक्षयापस्मारकुष्ठादिमहारोगनिवारिणि! मम सर्वरोगं नाशय नाशय ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं श्रीं हुं हुं इन्द्राक्षि! मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् नाशय नाशय जलरोगं शोषय शोषय दुःखव्याधीन् स्फोटय स्फोटय क्रूरान् अरीन्। भञ्जय भञ्जय मनोग्रन्थिं प्राणग्रन्थिं शिरोग्रन्थिं घातय घातय इन्द्राक्षि! मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवति माहेश्वरि महाचिन्तामणि सकलसिद्धेश्वरि सकलजनमनोहारिणि कालकालरात्रि अनले अजिते अभये महाघोरप्रतिहतविश्वरूपिणि मधुसूदनि महाविष्णुस्वरूपिणि नेत्रशूलकर्णशूलकटिशूलपक्षशूलपाण्डुरोगादीन् नाशय नाशय वैष्णवि! ब्रह्मास्त्रेण विष्णु चक्रेण रुद्रशूलेन यमदण्डेन वरुणपाशेन वासववज्रेण सर्वान् अरीन् भञ्जय भञ्जय यक्षग्रहराक्षसग्रहस्कन्दग्रहविनायकग्रहबालग्रहचोरग्रहकूष्माण्डग्रहीदीन् निग्रह निग्रह राजयक्ष्माक्षयरोगतापज्वरनिवारिणि ! मम सर्वज्वरं नाशय नाशय सर्वग्रहान् उच्चाटय उच्चाटयं हुं फट् स्वाहा।

इन्द्राक्षी नाम सा देवी दैवतैः समुदाहृता।

गौरी शाकम्भरी देवी दुर्गानाम्नीति विश्रुता।
नित्यानन्दी निराहारी निष्कलायै नमोऽस्तु ते।।
कात्यायनी महादेवी वज्रघण्टा महातपाः।।
सावित्री सा च गायत्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी।
नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिङ्गला।।
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिः तपस्विनी।
मेघस्वना सहस्राक्षी विकटाङ्गी जडोदरी।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला।
अजिता भद्रदाऽनन्ता रोगहन्त्री शिवप्रिया।।
शिवदूतीं कराली च प्रत्यक्ष परमेश्वरी।
एकाक्षरी पर ब्रह्मी स्थूलसूक्ष्म प्रवर्धिनी।।
नित्यं सकलकल्याणी भोगमोक्षप्रदायिनी।
महिषासुरसंहर्त्री चामुण्डा सप्तमातृका।
वाराही नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी।
श्रुतिः स्मृतिर्मेधा गौरी विद्यालक्ष्मीः सरस्वती।।
अनन्ता विजयाऽपर्णा मानस्तोकाऽपराजिता।
शिवा भवानी रुद्राणी शङ्करार्धशरीरिणी।।
ऐरावतगजारूढ़ा वज्रहस्ता वरप्रदा।
धूर्जटी विकटी घोरी अष्टाङ्गी नरभोजिनी।।
भ्रमरी काञ्चिकामाक्षी क्वणन्माणिक्यनूपुरा।
ह्रीङ्कारी रौद्रबेताली हुङ्कारा मृतपायिनी।।
त्रिपादभस्मप्रहरणा त्रिशिरा रक्तलोचना।
शिवा च शिवरूपा च शिवभक्तिपरायणी।।
मृत्युञ्जयी महामायी सर्वरोगनिवारिणी।
ऐन्द्री देवी सदा काल शान्तिमाशु करोतु मे।।

गायत्रीः-

भस्मायुधाय विद्महे रक्तनेत्राय धीमहि तन्नो ज्वरः प्रचोदयात्।
एतत् स्तोत्रं जपेन्नित्यं सर्वव्याधिनिवारणम्।
रणे राजभये चौर्ये सर्वत्र विजयी भवेत्।।
एतैर्नामपदैः दिव्यं स्तुता शक्रेण धीमता।
आयुरारोग्यमैश्वर्यमपमृत्युभयापहम् ।।

क्षयापस्मारकुष्ठादि तापज्वरनिवारणम्।
शतमावर्तयेद् यस्तु मुच्यते व्याधिबन्धनात्।
आवर्तयन सहस्रं तु लभते वाञ्छितं फलम्।।

''इन्द्राक्ष्यै'' आदि मन्त्रों के द्वारा तदुपरान्त करन्यास एवं अंगन्यास करके ॐ भूर्भुवः स्वः इस मन्त्र से दिग्विमोक करे।

रिपुरोगऋणनाशार्थप्रयोगः

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीमार्कण्डेयपुराणान्तर्गतभवानीचरितान्तर्गतरिपुरोगऋणनाशार्थ सर्वाबाधेत्यस्य मन्त्रस्य श्रीभगवान् वेदव्यास ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः शुम्भासुरविध्वंसिनि श्री दुर्गा देवता रिपुरोगऋणनाशार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः-श्रीभगवान्वेदव्यास ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुपछन्दपे नमः मुखे शुम्भासुरविध्वंसिनीश्रीदुर्गा देवतायै नमः हृदि रिपुरोगऋणनाशार्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यासः	**करन्यासः**	**हृदयादिन्यासः-**
ॐ ह्रीं सर्वा ॐ	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ बाधाप्रशमनं ॐ	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ॐ	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ एवमेव ॐ	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ त्वया कार्यं ॐ	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्रत्रयाय वौषट्

ॐ अस्मद्वैरिविनाशनम् हुं फट् स्वाहा ॐ. करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः अस्त्राय फट्

ध्यानम्-

ॐ पाणिग्रन्थनमिलितान् रिपुणान्निघ्नन्त्यभीक्ष्णं,
मुहुर्विघ्नध्वंसनकारिणी निजपदप्लाप्तानवन्ती जनान्।
भक्तत्राणपरायणांभयकरी विद्वेषिणां सर्वतो भूयान्
मे भवभूतये भगवती दुर्गारिगर्वापहा।।

मानसपूजनम्-ॐ लं पृथ्वीतत्त्वात्मकं गन्धं शुम्भासुरविध्वंसिनीश्रीदुर्गाप्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाशतत्त्वात्मकं पुष्पं शुम्भासुरविध्वंसिनी श्रीदुर्गाप्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायुतत्वात्मकं धूपं शुम्भासुरविध्वंसिनीश्रीदुर्गाप्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नितत्त्वात्मकं दीपं शुम्भासुरविध्वंसिनी श्रीदुर्गाप्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जलतत्त्वात्मकं नैवेद्यं दीपं शुम्भासुरविध्वंसिनी श्रीदुर्गाप्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ सं सर्वतत्त्वात्मकं ताम्बूलं शुम्भासुरविध्वंसिनी श्रीदुर्गाप्रीतये समर्पयामि नमः।

मन्त्रः-ॐ ह्रीं सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि! एवमेव त्वया कार्यम-स्मद्वैरिविनाशनम् हुँ फट् स्वाहा।।

इति श्री मन्महेश्वरानन्दविरचिते श्री दुर्गामन्त्रराजकल्पतन्त्रे षष्ठोऽध्यायः।।६।।

।। समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।।





हमारे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

मार्कण्डेय महापुराण– हिन्दी व्याख्या सहित – डॉ० नरेश चन्द्र द्विवेदी	६००.००
उड्डामरेश्वर तंत्र - हिन्दी व्याख्या सहित – अजय कुमार उत्तम	७५.००
गौरीकाञ्चालिका तंत्र – अजय कुमार उत्तम	३०.००
गुप्तसाधन तंत्र–संस्कृत, हिन्दी व्याख्या सहित – अजय कुमार उत्तम	४०.००
घेरण्डसंहिता – हिन्दी व्याख्या सहित– उद्धव प्रसाद उत्तम	४०.००
चाणक्यनीति – हिन्दी व्याख्या सहित– आचार्य धुरन्धर पाण्डेय	७०.००
दिव्याङ्गनातंत्रम् – हिन्दी व्याख्या सहित – अजयकुमार उत्तम	४०.००
निरूत्तरतंत्रम्–भाषा टीका सहित – अजय कुमार उत्तम	५०.००
भूत-डामर-महामंत्र-भाषाटीका सहित–अजय कुमार उत्तम	५०.००
भारतीय दर्शन का परिशीलन – डॉ० रामशंकर त्रिपाठी	१२०.००
भुवनेश्वरीरहस्यम् – अजय कुमार उत्तम	१००.००
महानिर्वाण तंत्र–संस्कृत, हिन्दी व्याख्या सहित –अजयकुमार उत्तम	५००.००
महापुराण-समकथा-कोश – डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी	४००.००
यक्षिणीसाधनतंत्र – हिन्दी व्याख्या सहित – उद्धव प्रसाद उत्तम	४०.००
योगरत्नमाला–नागार्जुन प्रणीत-संस्कृत, हिन्दी व्याख्या सहित – अजय कुमार उत्तम	२५.००
योनितंत्रम्–भाषा टीका सहित – अजय कुमार उत्तम	२५.००
षट्चक्रनिरूपण – संस्कृत, हिन्दी व्याख्या सहित – अजय कुमार उत्तम	(प्रेस में)
मंत्रमहार्णव – (देवता खण्ड) – हिन्दी व्याख्या सहित	(प्रेस में)
मंत्रमहोदधि – हिन्दी व्याख्या सहित –ऊद्धव प्रसाद उत्तम	(प्रेस में)

BHARATIYA VIDYA SANSTHAN

भारतीय विद्या संस्थान

प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

सी. 27/59, जगतगंज, वाराणसी-221002 (उ०प्र०)

श्रीदुर्गामन्त्रराजकल्पतन्त्रम् *

ISBN : 81-87415-89-4



Rs. 350.00